कर्मयोग का पथिक

जुगल किशोर जैथलिया अभिनन्दन ग्रंथ

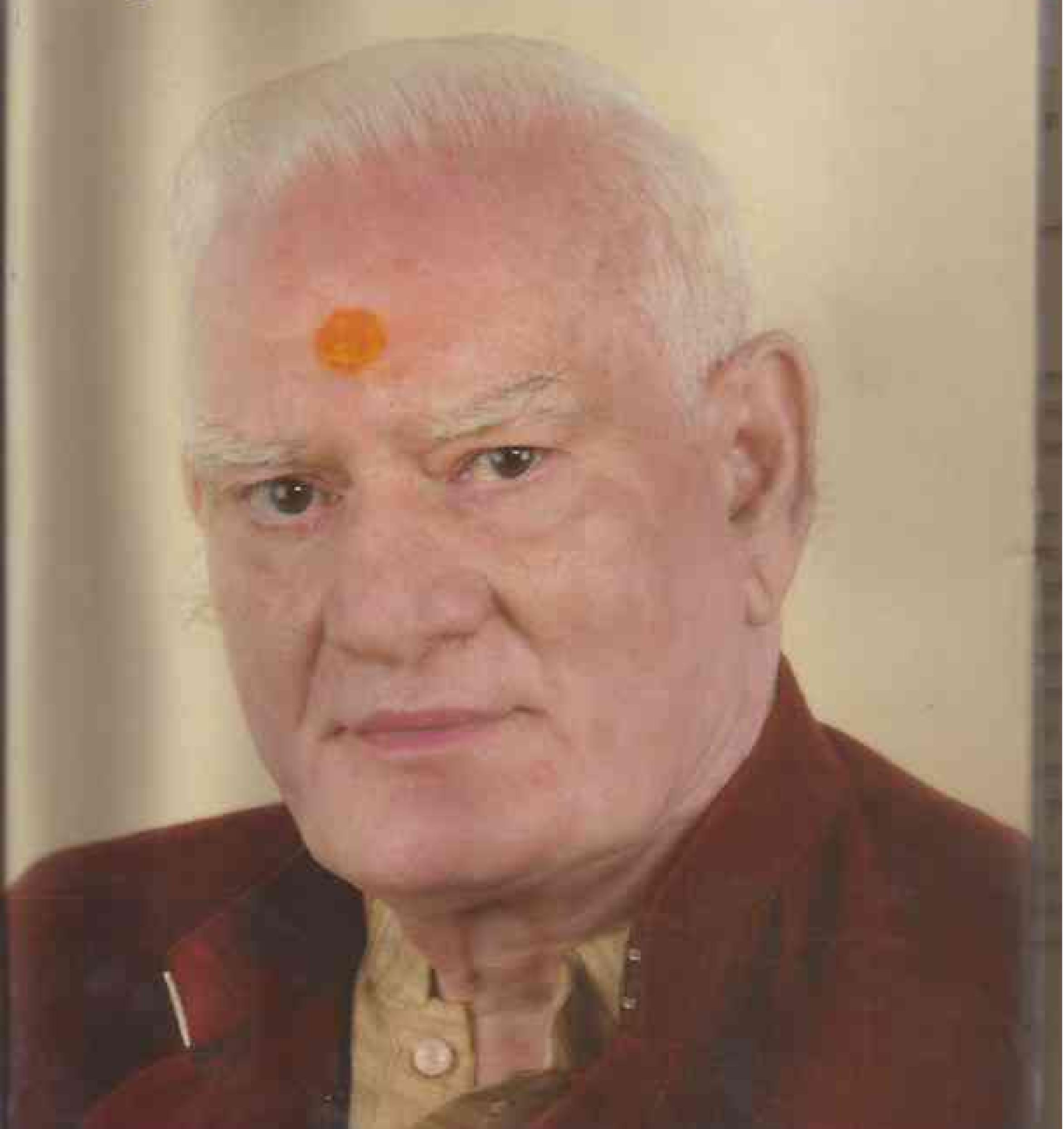

विरले ही होते हैं जुगलकिशोर जैथलिया जैसे लोग।

– आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री

जुगलकिशोर जी आज भी भारतीय संस्कृति के सार को अपनी मति, भक्ति व कृति में ओजस्विता से अभिव्यक्त कर रहे हैं।

– स्वामी संवित् सोमगिरि महाराज

जैथलियाजी में अपने सहयोगियों को चुनने की अद्भुत क्षमता है। यही उनकी प्रबन्धन की कुशलता है।

– त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी

जुगलजी अनावश्यक नहीं बोलते। बहुत सोच-समझ कर नपी-तुली भाषा में अपनी बात कहते हैं किन्तु हास्य-विनोद और रोचकता बनी रहती है। योजनायें उनके साथ-साथ चलती हैं पर वे योजना विलासी नहीं, कर्मठ व्यक्ति हैं।

– डॉ. नरेन्द्र कोहली

जैथलियाजी कर्त्तव्यपरायणता की जीवन्त मूर्ति हैं, सत्यान्वेषी साधक हैं, नैतिकता के संस्थापक हैं एवं सरल हृदय व उदारचेता मनीषी हैं।

– डॉ. देव कोठारी

मेरी दृष्टि में जुगलजी परोपकार के पुरोधा, पुरुषार्थ के प्रतीक एवं प्रज्ञा के पर्याय हैं।

– पं. नरेन्द्र मिश्र

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क से कर्म के प्रति निष्ठा एवं राष्ट्रप्रेम; कर्मयोगी भंवरलाल मल्लावत के सान्निध्य से संगठन कौशल; समाजसेवी राधाकृष्ण नेवटिया की प्रेरणा से समाज-सचेतनता तथा आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के स्नेह-आशीष से साहित्यिक-सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में रचनात्मक दृष्टि प्राप्त कर जुगलजी ने कुशल समाज में विशिष्ट स्थान बनाया है।

– डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी

कर्मयोग का पथिक

(जुगल किशोर जैथलिया अभिनन्दन ग्रंथ)

सम्पादक

महावीर प्रसाद बजाज

प्रकाशक

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

१-सी, मदनमोहन बर्मन स्ट्रीट, कोलकाता-७०० ००७

टेलिफैक्स : (०३३) २२६८-८२१५

ई-मेल : kumarsabha@kumarsabha.org

वेबसाइट : www.kumarsabha.org

प्रकाशन समिति :
श्री शार्दूल सिंह जैन
श्री विमल लाठ
डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी
श्री रूगलाल सुराणा जैन
श्री मोहनलाल पारीक
श्रीमती दुर्गा व्यास
श्री अरुण प्रकाश मल्लावत
डॉ. गिरिधर राय

•

प्रथम संस्करण :
२ अक्टूबर, २०१२ ई०
१५०० प्रतियाँ

•

मूल्य : ₹ ५००/-

•

ISBN 978-81-902967-5-5

•

आवरण :
श्री हिमांशु सोनी

•

मुद्रक :
हाईमेन कम्प्यूप्रिंट
2, रूपचंद राय स्ट्रीट, कोलकाता-7 (प.बं.)
दूरभाष : 033-22712501

'KARMAYOG KA PATHIK'
(Jugal Kishore Jethalia Abhinandan Granth) *₹ 500/-*

कर्मयोगी जुगलकिशोर जैथलिया अमृत–महोत्सव समिति

प्रधान संरक्षक

डॉ. मुरली मनोहर जोशी, सांसद

अध्यक्ष : संसदीय लोकलेखा समिति

संरक्षक मण्डल

- स्वामी संवित् सोमगिरिजी, बीकानेर
- डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, कोलकाता
- महाकवि गुलाब खण्डेलवाल, ओहायो
- श्री विमल लाठ, कोलकाता
- श्री घनश्याम दास बेरीवाल, कोलकाता
- श्री श्रीकांतशर्मा 'बाल व्यास', कोलकाता
- श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका, कोलकाता
- श्री सरदार मल कांकरिया, कोलकाता
- श्री विश्वम्भर नेवर, कोलकाता
- श्री छोटूलाल नाहटा, कोलकाता
- श्री संतोष कुमार दुगड़, कोलकाता
- श्री गोविन्द राम ढाणेवाला, कोलकाता
- श्री जयदीप चितलांगिया, कोलकाता
- डॉ. नरेन्द्र कोहली, दिल्ली
- डॉ. कमल किशोर गोयनका, दिल्ली
- श्री श्याम सुन्दर आचार्य, जयपुर
- न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त, इलाहाबाद
- पद्मश्री डॉ. मुजफ्फर हुसैन, मुंबई
- श्री बेणुगोपाल बांगड़, कोलकाता
- श्री पुष्करलाल केडिया, कोलकाता
- श्री रणेन्द्रलाल बन्द्योपाध्याय, कोलकाता
- श्री तपन सिकदर, कोलकाता
- श्री ईश्वरी प्रसाद टांटिया, कोलकाता
- श्री सज्जन भजनका, कोलकाता
- श्री नन्दलाल शाह, कोलकाता
- श्री सीताराम शर्मा, कोलकाता
- श्री राहुल सिन्हा, कोलकाता
- श्री बशीरअहमद मयूख, कोटा
- डॉ. पुरुषोत्तमलाल चतुर्वेदी, जयपुर
- श्री बनवारीलाल सोती, कोलकाता
- श्री लक्ष्मीकांत तिवारी, कोलकाता
- श्री सज्जन बंसल, कोलकाता

कर्मयोगी जुगलकिशोर जैथलिया अमृत–महोत्सव समिति

अध्यक्ष : श्री शार्दूल सिंह जैन

उपाध्यक्ष : डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी • श्री रुगलाल सुराणा जैन

सचिव : श्री महावीर प्रसाद बजाज

संयुक्त सचिव : श्री मोहनलाल पारीक • श्री अरुण प्रकाश मल्लावत

सदस्य

- श्री महावीर प्रसाद नारसरिया
- डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी
- श्री शांतिलाल जैन
- श्री कृष्णस्वरूप दीक्षित
- श्री जयप्रकाश सेठिया
- श्री सज्जन कुमार तुलस्यान
- डॉ. शिवओम अंबर
- श्री गोविन्द नारायण काकड़ा
- श्री मांगीलाल जैन
- डॉ. किरणचंद नाहटा
- डॉ. तारा दूगड़
- श्रीमती दुर्गा व्यास
- श्री शिवभगवान बगड़िया
- श्री मुकुन्द राठी
- श्रीमती स्नेहलता बैद
- श्रीमती मीना पुरोहित
- श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
- श्री दुर्गाप्रसाद नाथानी
- श्री सुशील ओझा
- श्री बंशीधर शर्मा
- श्री रमेशचन्द्र जैन
- वैद्य महावीर प्रसाद अग्रवाल
- श्री किसन झंवर
- श्री प्रभाकर तिवारी
- श्री भागीरथ चांडक
- श्री पुरुषोत्तम दास मीमाणी
- श्री भँवरलाल मूँधड़ा
- श्री शंकरलाल अग्रवाल
- श्री धनपतराम अग्रवाल
- श्री विद्यासागर मंत्री
- श्री विजय ओझा
- श्री प्रकाशचन्द बेताला
- श्रीमती सुनीता झंवर
- डॉ. भंवर कसाना
- श्री रामगोपाल सूंघा
- श्री शिवकुमार गोयल
- श्री शंकरलाल परसावत
- श्री सागरमल गुप्त
- श्री राजेन्द्र कुमार माथुर
- श्री हीरजी भाई भावसर
- श्री दाऊलाल कोठारी
- श्री बिमलचन्द भण्डारी
- श्री बिरदीचंद तोसनीवाल
- श्री लक्ष्मीनारायण भाला
- श्री जगदीशप्रसाद शाह
- श्री अशोक पारीक
- श्री श्रीराम तिवारी
- श्री कपूरचन्द बेताला
- श्री रिखपाल चंद मेहता
- सुश्री अंजू सिंह

अमृत महोत्सव समिति के प्रधान संरक्षक

डॉ. मुरली मनोहर जोशी के उद्गार

बंधुवर श्री जुगलजी के अमृत-महोत्सव पर किए जाने वाले आयोजन की रूपरेखा सुनिश्चित होने पर मुझे बहुत ही आनंद हुआ और सबसे अधिक प्रसन्नता इस बात की हुई कि जुगलजी ने इसे स्वीकार कर लिया। मुझे थोड़ा संशय था कि संभवत: वे आसानी से हाँ नहीं कहेंगे। समिति के सब मित्रों ने उन्हें इस कार्यक्रम के लिए सहमत करा लिया, इसके लिए मेरी बधाई स्वीकारें।

जुगल जी से मेरा संबंध लगभग छ: दशक पुराना है, तब से वे संघ का काम करते थे और विद्यार्थी परिषद् की अखिल भारतीय टोली में उनका प्रमुख स्थान हुआ करता था। मैं भी विद्यार्थी-परिषद् में उनके साथ काम करता था। जुगलजी की शांत किन्तु दृढ़ मुद्रा उन दिनों भी ऐसी ही हुआ करती थी जैसी कि आज है। पर अंदर से तब भी उतने ही कोमल थे जैसे कि आज। बाद में वे और मैं दोनों ही राजनीति के क्षेत्र में आए और जनसंघ का काम करने लगे। जुगलजी से संबंध निरंतर बना रहा। यह संबंध और अधिक घनिष्ठ हुआ जब मुझे श्री अटलजी ने जिन प्रदेशों का संगठन प्रभार दिया, उनमें पश्चिम बंगाल भी शामिल था। उन दिनों श्री दुर्गा प्रसाद नाथानीजी, स्व. विद्यासागरजी, सुकुमार बनर्जी, तपन सिकदर सहित सभी प्रमुख कार्यकर्ता स्व. पं. विष्णुकांत जी शास्त्री के नेतृत्व और जुगलजी के संगठन-कुशल स्वभाव के कारण बंगाल में भाजपा के बहुआयामी प्रसार में संलग्न रहा करते थे। जुगलजी अपने सम्पूर्ण पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करते हुए संगठन के लिए सदैव उपलब्ध रहते थे।

स्व. विष्णुकांत शास्त्री जी के जीवन और विचारों ने जुगलजी को बहुत प्रभावित किया है। शास्त्री जी का स्नेह उन्हें सदा मिलता रहा और जुगलजी ने सदा श्रद्धाभाव से उनके निर्देशों का पालन किया। जुगलजी का साहित्यानुराग शास्त्रीजी से उनकी निकटता एवं आत्मीयता का प्रमुख कारण रहा। राजनीति और साहित्य उन दोनों के ही जीवन का महत्वपूर्ण आयाम रहा।

मेरी दृष्टि में जुगलजी राजनीति के क्षेत्र में आज की पीढ़ी के लिए एक आदर्श चरित्र हैं। इस क्षेत्र में बहुत फिसलन है। रपटने की बहुत गुंजाइशें रहती हैं। पर जुगलजी इन रपटीली

राहों में चलते और संतुलित बने रहे। जुगलजी अद्भुत संयम के धनी हैं। उन्होंने अपने जीवन से सिद्ध कर दिखाया कि सिद्धान्त और अनुशासन के सहारे बड़ी से बड़ी फिसलन को पार किया जा सकता है। सार्वजनिक जीवन में आर्थिक शुचिता और चारित्रिक दृढ़ता के प्रतीक जुगलजी हम सबके प्रेरणा के स्रोत हैं। सार्वजनिक धन का व्यवहार कैसे होना चाहिए, वह भी जुगलजी से सीखने को मिलता है।

जुगलजी न केवल राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय रहे परन्तु वे साहित्य एवं जनसेवा के कार्यों से भी घनिष्ठ रूप से संबंधित रहे। छात्र जीवन में ही उन्होंने अपने जन्मस्थान में एक पुस्तकालय की स्थापना की थी जिसने देशव्यापी ख्याति अर्जित की है। मुझे उस पुस्तकालय को देखने का सुअवसर मिला था। एक छोटे से गाँव में आज से लगभग पचपन वर्ष पूर्व स्थापित पुस्तकालय ने बड़े-बड़े साहित्यकारों तथा लब्धप्रतिष्ठ समाजसेवियों एवं राजपुरुषों को आकर्षित किया। ऐसा सामान्य उद्यम से संभव नहीं होता। इस गाँव में ही नहीं वरन् संपूर्ण अंचल में अध्ययन एवं पुस्तकालय के सदुपयोग करने का मानस बना देना जुगलजी की रचनात्मकता का सुंदर उदाहरण है। उस प्रारंभिक सोच का प्रस्फुटन श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की गतिविधियों में उनके अत्यंत सक्रिय एवं दीर्घकालीन योगदान में दृष्टिगोचर होता है। आज यह पुस्तकालय नई पीढ़ी के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है।

यदि किसी अत्यंत संवेदनशील, दृढ़व्रती एवं देश हित समर्पित व्यक्ति को देखना हो तो जुगलजी अनायास ही सामने आ खड़े होते हैं। उन्हें दोहरी मानसिकता बिल्कुल पसंद नहीं। मन, वचन और कर्म में एकता रखना ही उनका स्वभाव है। अन्याय और असत्य उन्हें स्वीकार्य नहीं। सिद्धान्तों से समझौता पूर्णतः अस्वीकार।

आज के सार्वजनिक जीवन में जहाँ आचरण की शुचिता शब्दकोष से बाहर होती जा रही है और भ्रष्टाचार शिष्टाचार का समानार्थी बनता जा रहा है, जहाँ निष्कलंक व्यक्तित्व एक असंभव कल्पना बन गई हो वहाँ घोर अंधकार में एक ज्योतिपुंज के रूप में जुगल जी हमारे मार्ग को आलोकित कर रहे हैं। उनका जीवन एक साधक का जीवन रहा है। वे गीता-परिक्रमा के प्रकाशक ही नहीं हैं अपितु गीता के उपदेशों को जीवन में चरितार्थ करने की दुष्कर साधना भी करते रहे हैं। वे निर्मम और निरहंकार हैं और निर्मोही भी। मैंने उनमें लोभ की रंचमात्र भी उपस्थिति नहीं पाई और न ही संपत्ति और व्यापार का मोह देखा। वे अखण्ड कर्मा हैं या कहूँ कर्मधर्मा हैं। जुगल जी भूमि से जुड़े हैं। उन्हें राजस्थान की अपने गाँव और अंचल की की भूमि और भाषा से बेहद प्यार है और उतना ही ध्यान अपनी कर्मभूमि के हित के लिए है। वे भारत के पश्चिम और पूरब को जोड़ने वाले सेतु हैं पर जहाँ भी हैं वहाँ मिट्टी से गहरे तक जुड़े हैं। जुगलजी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। संघर्ष प्रवण भी हैं।

आपातकाल में उनकी भूमिका इसका प्रमाण है। पश्चिमबंग की मार्क्सवादी सरकार से लोहा लेने में भी वे कभी नहीं चूके। भाजपा के अनेक आंदोलनों के संचालन एवं मार्गदर्शन में वे सदा अग्रणी रहे। यदि कभी कहा गया इस काम के लिए साधन का अभाव है तो जुगल जी का उत्तर होता था आप काम कीजिए, साधन की चिंता मत कीजिए। बड़े-बड़े प्रदर्शन, बहुत बड़ी सभाएँ-सम्मेलन पार्टी ने आयोजित किए और जुगलजी ने कभी साधन का अभाव नहीं होने दिया। उनकी साख इस विषय में अद्भुत है। सब जानते हैं कि उनके द्वारा संग्रहीत एक-एक पाई जिस काम के लिए आई है उसमें ही लगेगी। उसके दुरुपयोग होने को सोचा भी नहीं जा सकता।

पिछले कई वर्षों से जुगलजी पूर्णतः लोक-कल्याण के लिए ही समर्पित हैं। वैसे भी वे सारा जीवन उसी दृष्टि से काम करते रहे हैं। अब हम उनका अमृत-महोत्सव मना रहे हैं। जुगलजी का सारा जीवन ही अमृतमय रहा है। वे जहाँ भी होते हैं सदा अमृत ही बिखेरते हैं। ऐसे अमृतत्व के उपासक एवं साधक के अमृत-महोत्सव में इसी अमृत का चहुँओर वितरण होगा, यही विश्वास है। जुगलजी दीर्घजीवी हों, यशस्वी हों, कर्मधर्मा बने रहें और अपनी कर्मचेतना के अमृत से सभी सहयोगियों को कर्मचेतन बनाए रखें और देशवासियों को यह विश्वास दिलाते चलें कि सार्वजनिक जीवन में ऐसे लोग हैं जो यह कह सकते हैं कि यह चदरिया जितनी निर्मल बुनी गई थी उसकी निर्मलता और बढ़ी है यह सिर्फ जस की तस नहीं धरी जाएगी बल्कि और उजरी और साफ-सुथरी निखरती रहेगी।

यह मेरा अपना भी सौभाग्य है कि जुगलजी जैसे आत्मीय बंधु का साहचर्य मिला। उनके जीवन से नई पीढ़ी अनुप्राणित होती रहे, यही प्रभु से याचना। जुगलजी का अभिनंदन और उनके स्फटिक स्वच्छ जीवन का पावित्र्य प्रवहमान रहे और आज जैसे उनके उत्सव बार-बार आते रहें, यही मंगल कामना। शुभकामनाओं सहित-

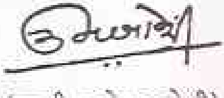

(मुरली मनोहर जोशी)
संसद सदस्य (लोकसभा)
अध्यक्ष: लोक लेखा समिति

नई दिल्ली
१३ सितम्बर, २०१२

सम्पर्क : ५१, संसद भवन, नई दिल्ली-११०००१, दूरभाष : २३०३४६०५, २३०१७५६४

ॐ

परमादरणीयानां, देशभक्तानां, शिक्षा-संस्कृति-संस्कृत-संरक्षणबद्धपरिकराणां, कुशललेखकानां, रा.स्व.संघप्राणपुरुषाणां, कुमारसभापुस्तकालयाद्यनेक सारस्वतयज्ञ समर्पित संस्थानां प्रबन्धन-संवर्धन-संचालन-समर्पित

श्री जुगलकिशोर जैथलिया महाभागानां

पंच सप्तति वर्ष-पूर्त्यवसरे अमृतमहोत्सवे समर्पितम्

अभिनन्दन पत्रम्

जु
पुत्रान् यशोवहान् दात्री वीरान् राणाप्रतापवत्।
भक्तिनिर्झरिणीर्मीरा: जना: शृण्वन्ति विस्मिता: ।।१।।

कर्मवीरा हि अत्रत्या: पूज्यन्ते विश्वसंसदि।
धर्मे च देशसेवायाम् अत्रत्या: सन्ति भूषणा: ।।२।।

ग
नागौरे हि जनपदे छोटीखाटू हि ग्रामोऽस्ति।
स एव जन्मग्रामोहि जुगलस्य तु धीमत: ।।३।।

कन्हैयाललाततोऽयं पुष्पादेवी जनन्यपि।
परमाह्लादितौ जातौ पुत्ररत्नस्य दर्शनात् ।।४।।

ल
जायन्ते च म्रियन्ते च उदरंभरिणो जना:।
जुगल सदृशोजना: न म्रियन्ते कदाचन ।।५।।

* * *

सदा सुधीनां विमलौजसानां मनो वच: कर्म धनानि सन्ति।
कि धर्मस्य देशस्य च रक्षणार्थं कृतं यथा त्वं निज जीवने भो।। ६।।

नैवास्ति शक्तिर्मम वर्णने ह्यलम् कर्माणि सर्वाणि कृतानि यानि ते।
नूनं त्वया कर्म कृतं यशोवहम् सदानुकार्यं कलिकल्मषघ्नम्।। ७।।

शो धाम्ना हि ते बंगधरा प्रदीप्यते मोमुद्यते संघसुवीर–सेवक:।
बाही बलं सिंहबलाभिनिन्दकम् वाण्यां प्रसूनं सुजनाय सन्ततम्।। ८।।

जिह्वा प्रदीप्ताग्निशिखा शठाय ते बुद्धि: सदाचित्य नयं नवं नवम्।
संघस्य भक्ताय ददात्यहर्निशम् देशाय धर्माय च ते नु जीवनम्।। ९।।

र सेयं कुमारेति सभा विवर्धते साहित्यकेन्द्रेव विराजतेऽधुना।
प्राय: समागत्य 'सभा' निमंत्रिता: मोदं लभन्ते कवयश्च लेखका:।।१०।।

* * *

परित्यज्य चिन्तां निजामर्थजाताम् सुखाप्तानि वैदुर्य योनीन् पदानि।
जै त्वया देशभक्तेन दत्ता सुशिक्षा सदा सेवनीय: स्वदेश: स्वधर्म:।।११।।

भवेदेधमान: भवेद् वर्धमान: स्वदेशे विदेशेऽपि हिन्दुत्व भाव:।
थ यथोदेत्यपूर्वोहि हि प्राच्यां दिनेश: तथा वर्धमाना भवेत्ते सुकीर्ति:।।१२।।

त्वया चेतकस्थो हि राणाप्रताप: पटेलोऽपि संस्थापित: प्रेरणार्थम्।
द्वयं त्वद्वितीयं स्वदेशाय जातम् भवेत्प्रेरकं कोलकाताऽऽगतेभ्य:।।१३।।

लि अलं नैव नालं त्वदीयाभिषेक: कृतोऽद्यावधिस्ते प्रबुद्धै: समाजै:।
तथा सर्वकारैर्णतै: राजनीत्या तथापीह चिन्ता न ते वीतराग।।१४।।

गुणीनां समाज: प्रबुद्ध: समाज: करोतीह संवर्धनां ते प्रवीर।
या मुखे शारदाया: वितन्द्रो निवास: भवेदेधमानं यशस्ते यतीन्द्र।।१५।।

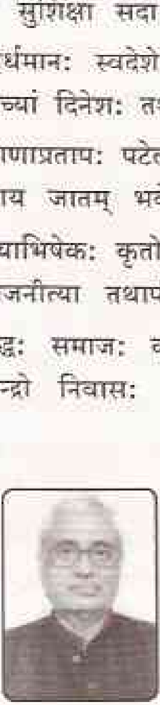

आश्विन कृष्ण द्वितीया
संवत् २०६९, युगाब्द: ५११४

आशंसक :
आचार्य: राधामोहनोपाध्याय:

✍ सम्पादकीय

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्त्वावधान में 'कर्मयोग का पथिक' ग्रंथ का प्रकाशन करते हुए हमें आंतरिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। कृति श्री जुगलकिशोर जैथलिया के व्यक्तित्व-कर्तृत्व पर केन्द्रित है तथा अवसर है उनकी ७५ वर्ष पूर्ति का।

अपनी बहुआयामी सक्रियता, सर्जनशील कर्मठता तथा समर्पित समाज-निष्ठा के कारण विविध क्षेत्रों में जैथलियाजी को अपार स्नेह-समादर प्राप्त हुआ है। कुमारसभा पुस्तकालय की विभिन्न गतिविधियों की परिकल्पना से लेकर उसके समुचित क्रियान्वयन तक उनकी दूरदर्शिता तथा सजगता से संस्था निरन्तर लाभान्वित हो रही है, यह हमारे लिए गौरव की बात है। पुस्तकालय के संस्थापक स्व. राधाकृष्णजी नेवटिया की तपोनिष्ठ साधना तथा साहित्य-मनीषी आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की साहित्यिक-सामाजिक-राजनीतिक सक्रियता के धारक और वाहक बनकर जुगलजी ने पुस्तकालय की प्रगति-यात्रा में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

१९७३ ई. में कुमारसभा पुस्तकालय से सक्रिय रूप से सम्बद्ध होने के बाद उन्होंने संस्था के मंत्री एवं अध्यक्ष जैसे विशिष्ट पदों का दायित्व तो बखूबी निभाया ही है, अपनी व्यावहारिक एवं अनुभवी दृष्टि से संस्था को आर्थिक रूप से समर्थ बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। केवल कुमारसभा पुस्तकालय ही नहीं, कोलकाता की अनेक संस्थाएँ जैथलियाजी की सामाजिक सक्रियता तथा उनके सद्परामर्श से लाभान्वित हुई हैं। चुनौतियों से जूझना, संकटों से पंजा लड़ाना तथा कठिन परीक्षाओं से गुजरकर अनवरत गतिशील रहना उनकी सहज जीवनशैली है। कुमारसभा पुस्तकालय का दायित्व सँभालते ही आपने इसे आर्थिक संकट से उबारने का जटिल कार्य किया। राष्ट्रीयता का भाव जागृत करने तथा राष्ट्र-देवता के चरणों में प्रणति-निवेदित करनेवाले विचार-प्रधान कार्यक्रमों/गोष्ठियों की योजनाएँ रूपायित करने का रचनात्मक कार्य आपने अपने हाथों में लिया। आपातकाल के दिनों में कुमारसभा के तत्त्वावधान में हल्दीघाटी चतु:शती समारोह के अवसर पर आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के संयोजन में एक विराट वीर रस कवि-सम्मेलन आयोजित किया जिसमें हल्दीघाटी काव्य के रचयिता स्वनामधन्य ओजस्वी कवि श्यामनारायण पाण्डेय एवं श्री मणि मधुकर सहित कई प्रतिष्ठित कवियों ने अपनी ओजपूर्ण रचनाओं द्वारा आपातकाल को चुनौती दी। परिणामस्वरूप पुस्तकालय अध्यक्ष नंदलाल जैन को गिरफ्तार होना पड़ा, उनका प्रेस सील हुआ तथा स्वयं जुगलजी को भूमिगत

होना पड़ा। एक के बाद एक चुनौतियाँ लेकिन निष्ठा एवं संकल्प में कहीं भी कमी नहीं। उमाकांत मालवीय की चार पंक्तियाँ मानो जुगलजी पर सटीक बैठती हैं -

जन्म से ही मिली जिसको कठिन अग्नि-दीक्षा,
उसको क्या है संकट, चुनौती, परीक्षा।
सोना तो सोना है, टीन नहीं होगा,
सूर्य कभी कौड़ी का तीन नहीं होगा।।

श्री जैथलियाजी के ७० वें जन्मदिवस के अवसर पर, आज से ५-६ वर्ष पूर्व पुस्तकालय के कार्यकर्त्ताओं के मन में यह भाव जागृत हुआ था कि पुस्तकालय एवं समाज के प्रति की गई बहुमूल्य सेवाओं के लिए, उनका अभिनन्दन किया जाय। प्रख्यात राजनेता डॉ. मुरलीमनोहर जोशी तथा कार्यसमिति के वरिष्ठ सदस्य श्री विमल लाठ के परामर्श एवं आग्रह से इस बात को बल भी मिला परन्तु जैथलियाजी ने इसे अस्वीकारते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा- '*अभी काम करने का समय है, सम्मान ग्रहण करने का नहीं। मैंने ऐसा कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया है जिसके लिए मुझे सम्मानित किया जाय।*' उनकी टिप्पणी पर रहीम का दोहा याद आ गया -

बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोलें बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मेरो मोल।।

श्री जैथलियाजी ने अनवरत सक्रिय रहकर इधर के वर्षों में, अपनी बढ़ती उम्र को नकारते हुए कई उल्लेखनीय कार्य किए। कविवर कन्हैयालाल सेठिया की रचनाओं के समग्र का संकलन-संपादन किया; आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री : चुनी हुई रचनाएँ (दो खंड); महाराणा प्रताप, कन्हैयालाल सेठिया, मीराबाई, लोहिया, सावरकर, मदनमोहन मालवीय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति पर संग्रहणीय स्मारिकाएँ सम्पादित की; अनवरत सक्रिय रहकर कोलकाता की एक प्रमुख सड़क पर महाराणा प्रताप की मूर्ति स्थापित करने का असंभव सा कार्य संभव बनाया; आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के गीता-प्रवचनों की संपादन-प्रक्रिया में सहयोग किया तथा सामाजिक-साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। महाकवि गुलाब खंडेलवाल ने ऐसे ही लोगों के लिए लिखा होगा -

नहीं विराम लिया है/ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ रही/मैंने चलना तेज किया है।

श्री जैथलियाजी की ७५ वर्ष पूर्ति पर कई संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने पुस्तकालय के पदाधिकारियों के पास 'अमृत-महोत्सव समारोह' आयोजित करने का प्रस्ताव रखा।

राजस्थान परिषद के श्री शार्दूलसिंह जैन तथा श्री रुगलाल सुराना, पारीक सभा के

अध्यक्ष श्री मोहनलाल पारीक, राजस्थान ब्राह्मण संघ के श्री सुशील ओझा तथा कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से श्री विमल लाठ, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, श्रीमती दुर्गा व्यास, श्री अरुण मल्लावत ने समारोहपूर्वक भव्य कार्यक्रम करने का परामर्श दिया।

इन सबके दबाव के कारण ही आरंभिक ना-नुकर के बाद अंततः जैथलियाजी को सबका आग्रह स्वीकार करना पड़ा। 'अमृत-महोत्सव' अभिनंदन समारोह तथा यह प्रकाशन उसी परिकल्पना की साकार परिणति है। इसमें जैथलियाजी द्वारा समय-समय पर विभिन्न विषयों पर लिखे गए लेख एवं कवितायें संग्रहीत हैं जिन्हें पढ़कर आपको प्रसन्नता होगी।

विभिन्न क्षेत्रों में जैथलियाजी की व्यापक सक्रियता को ध्यान में रखकर एक अभिनंदन समिति गठित की गई, जिसमें सामाजिक-साहित्यिक-राजनीतिक क्षेत्रों के प्रतिनिधि शामिल हैं। जैथलियाजी का सामाजिक-वृत्त बहुत बड़ा है, पर आकार की स्वाभाविक सीमा के कारण उनमें से कई लोगों के नाम इस समिति में शामिल नहीं किए जा सके, इसका हमें खेद है।

यह आयोजन एवं प्रकाशन समाज-सचेतन निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्त्ता के प्रति समाज का कृतज्ञता-ज्ञापन तो है ही, अनुज पीढ़ी तथा परवर्ती कार्यकर्त्ताओं के लिए एक प्रेरक-प्रसंग भी है। विशेष रूप से आज के स्वार्थपूरित माहौल में, जहाँ सब कुछ लाभ-लोभ और मैं-मेरा पर ही केन्द्रित है - श्री जैथलियाजी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का स्मरण नई दिशा एवं नवीन ऊर्जा प्रदान करेगा ऐसा हमारा विश्वास है।

इस आयोजन तथा प्रकाशन के लिए हमारे शुभ-चिन्तकों ने जिस आत्मीय-भाव से सहयोग प्रदान किया, इस हेतु हम उनके आभारी हैं। हम कृतज्ञ हैं, उन रचनाकारों के भी, जिन्होंने हमारे आग्रह को स्वीकार कर अपनी रचनाएं प्रेषित कीं। दो माह के अत्यल्प समय में हाईमेन कम्प्यूप्रिंट के श्री श्रीरामजी सोनी एवं उनके पुत्र श्री हिमांशु सोनी, टंकण प्रमुख श्री सोमनाथ साहा एवं अन्य कर्मचारियों ने रात-दिन एक करके इस वृहत् ग्रन्थ को समय पर प्रकाशित किया है, वे सभी हमारी बधाई के पात्र हैं। श्री श्रीराम तिवारी एवं श्रीमोहन तिवारी तथा प्रकाशन समिति के सभी सदस्यों के सहयोग हेतु भी हम आभारी हैं।

ग्रन्थ आपके हाथों में है आशा है यह आपको अवश्य पसन्द आएगा।

गणेश चतुर्थी, सम्वत् २०६९
१९ सितम्बर, २०१२ ई.

(महावीर प्रसाद बजाज)
सम्पादक

प्राक्कथन

जुगलजी का अमृत महोत्सव : यात्रा बिन्दु से सिन्धु की

समाज के लिए कुछ करने का संकल्प सँजोए आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व जब एक पुस्तक-प्रेमी, साहित्य-रसिक, राष्ट्रीय-चेतना सम्पन्न सामान्य कार्यकर्त्ता ने श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के लिए काम करने की इच्छा जाहिर की थी, तब शायद पुस्तकालय के संस्थापक स्व. राधाकृष्ण नेवटिया को भी यह अनुमान नहीं रहा होगा कि यह साधारण कार्यकर्त्ता एक दिन न केवल पुस्तकालय को अखिल भारतीय प्रसिद्धि प्रदान करेगा अपितु महानगर की विविध संस्थाओं में सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रेरणा का अक्षय-स्रोत भी बनेगा। अथक परिश्रम, निष्ठा तथा कर्मठता के बल पर स्वयं को विश्वसनीय बनाकर संस्था को सुप्रतिष्ठित करते हुए कार्यकर्ता-निर्माण का जो कार्य श्री जुगल किशोर जैथलिया ने किया है, वह कुमारसभा पुस्तकालय की विकास-यात्रा से अविच्छिन्न रूप से संबद्ध है।

पुस्तकालय केवल पुस्तकों के आदान-प्रदान का केन्द्र ही नहीं होता; समाज एवं राष्ट्र को सम्यक् दिशा देने का विशिष्ट मंच भी होता है - इस धारणा को हृदय में सँजोकर अनवरत सक्रिय रहने वाले दृढ़-निश्चयी व्यक्ति का नाम है जुगल किशोर जैथलिया। अपनी बहुआयामी सक्रियता एवं युवकोचित ऊर्जा के साथ काम करने के कारण वे सभी के समादरणीय हैं। ७५ वर्षीय जीवन-यात्रा में समाज के लिए स्वयं को तपा-खपा कर जुगलजी आज व्यक्ति नहीं - एक संस्था एवं तेजस्वी विचारधारा के संवाहक के रूप में समादृत हैं।

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के श्रीमुख से कभी यह पंक्ति सुनी थी -

यादें ज्यादा, सपने कम / लगता बूढ़े हो गए हम।

यानी जो व्यक्ति बूढ़ा हो जाता है, वह बीते दिनों की घटनाओं को बार-बार याद करता है; नई कल्पनाएँ करना, नए स्वप्न देखना वह बन्द कर देता है। नवीन संकल्प, नई योजनाएँ बनाकर चुनौतियों का योग्य प्रत्युत्तर देना युवकों की फितरत है। उम्र के कारण भले ही जुगलजी का अमृत महोत्सव समारोह आयोजित हो रहा है, नए-नए सपने देखने तथा नवीन प्रकल्पों को रूपायित करने की ऊर्जा के कारण उनका युवकोचित उत्साह उम्र को झुठलाता ही है।

कुमारसभा पुस्तकालय के तत्त्वावधान में संकल्पित विभिन्न सम्मान प्रकल्पों (विवेकानंद

सेवा सम्मान; डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान, मातृशक्ति सम्मान, राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान) की पृष्ठभूमि में जैथलियाजी का गंभीर चिन्तन एवं गहन विवेचन परिलक्षित होता है। स्वामीजी से प्रेरित होकर 'सेवा एवं त्याग' की भावना से काम करनेवाले समर्पित साधक को *'विवेकानन्द सेवा सम्मान'*; भारत की सनातन प्रज्ञा को अपने जीवन का पाथेय बनाकर राष्ट्रजीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों को *'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान'*; नारी की क्षमता एवं तेजस्विता को समादृत करने की भावना से *'मातृशक्ति सम्मान'* तथा पुस्तकालय की आसन्न शताब्दी को ध्यान में रखकर *'राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान'* की योजना के अंतर्गत राष्ट्र-जीवन के किसी विशिष्ट पक्ष को समृद्ध करने वाले शिखर व्यक्तित्व को समादृत करने का संकल्प श्री जैथलिया की नव-नवोन्मेषशालिनी दृष्टि का परिचायक है। सौभाग्य से जुगलजी को इन सम्मान-योजनाओं में आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, डॉ. सुजित धर, श्री विमल लाठ सरीखे विद्वानों-चिन्तकों का सहयोग सहज-सुलभ रहा है। जुगलजी ने राजस्थान स्थित अपने गाँव छोटीखाटू के हिन्दी पुस्तकालय में भी, जिसके वे संस्थापक हैं, *'पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान'* तथा *'महाकवि कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान'* की परिकल्पना की और प्रतिवर्ष इन आयोजनों के माध्यम से देश के शीर्षस्थ साहित्यकारों-चिन्तकों को आमंत्रित कर उस अंचल में साहित्यिक माहौल निर्मित किया।

कुमारसभा पुस्तकालय अपने पुस्तकालयीय दायित्वों का पालन करते हुए संस्कार-सक्षम प्रकाशनों एवं साहित्यिक-सामाजिक महत्त्व की कृतियों/स्मारिकाओं के कारण समाज-सचेतन प्रबुद्धजनों का स्नेह प्राप्त कर सके, जुगलजी इस हेतु सदैव सचेष्ट रहते हैं। ग्रंथ-प्रकाशन के ये प्रकल्प आर्थिक दृष्टि से भले ही अलाभकारी हों, परन्तु उन प्रकाशनों के माध्यम से साहित्यिक-सामाजिक दायित्व की पूर्ति करते हुए पुस्तकालय ने अखिल भारतीय स्तर पर अपार कीर्ति अर्जित की है। जैथलियाजी की दूर-दृष्टि, राष्ट्र के ज्वलंत प्रश्नों पर केन्द्रित व्याख्यान-मालाओं के साथ साहित्यिक गोष्ठियों के आयोजन हेतु पदाधिकारियों को अनवरत प्रेरित करती रहती है। इन समायोजनों ने पुस्तकालय को महानगर की प्रमुख सामाजिक-साहित्यिक संस्था के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान की है।

जुगलजी का हिन्दी-प्रेम सुविदित है। पुस्तकालय में हिंदी दिवस का आयोजन गरिमापूर्ण ढंग से हो तथा हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति लोगों के मन में सच्चा अनुराग जागृत हो इसके लिए वे सदैव सचेष्ट रहते हैं। उनके मन में पुस्तकों के प्रति अपार श्रद्धा है। वे व्यक्तिगत बातचीत में तो हिन्दी पुस्तकों के पठन-पाठन पर जोर देते ही हैं – कार्यसमिति की बैठकों में भी यह बात जोर देकर समझाते हैं कि पुस्तकालय से जुड़े हर सदस्य को अपनी रुचि के अनुसार हिंदी के रचनाकारों की कृतियाँ अवश्य पढ़नी चाहिए। पढ़ी हुई अच्छी पुस्तकों की

चर्चा करते हुए दूसरों के मन में पुस्तक-प्रेम जागृत करने पर भी वे बल देते हैं। भवानी भाई की पंक्तियाँ हैं-

कुछ लिख के सो, कुछ पढ़ के सो
तू जिस जगह जागा सवेरे, उस जगह से बढ़ के सो।

जुगलजी के प्रिय कवि कन्हैयालाल सेठिया की पंक्तियाँ हैं -

तुम अपने से जुड़ो, चाहते बनना अगर विराट।
अगर भीड़ से जुड़े, खण्ड भर रह जाओगे बंधु
नहीं कभी व्यक्तित्व बनेगा, बूँद न होगी सिंधु
रहना बने नगण्य, न होगा तिलकित कभी ललाट
तुम अपने से जुड़ो, चाहते बनना अगर विराट।

अपने से जुड़कर, अपनी जीवन दृष्टि को ठीक-ठीक समझकर सक्रिय रहनेवाला व्यक्ति ही समाज के लिए कुछ कर सकता है। इसी गीत की एक पंक्ति है- '*दृष्टि नहीं तो सृष्टि रहेगी केवल दैहिक बोध*'।

अपने जीवन-दर्शन पर दृढ़ रहते हुए विपरीत विचारधारा के लोगों का सम्मान करना जुगलजी के स्वभाव में है। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के सान्निध्य से उनमें यह गुण विकसित हुआ है। यही कारण है कि वैचारिक दृष्टि से धुर-विरोधी व्यक्ति भी उनका सम्मान करते हैं। जुगलजी में वैचारिक दृढ़ता के साथ वैचारिक स्पष्टता भी है। सिद्धांतों पर अडिग रहकर कभी विनम्र-विरोध और कभी प्रखर-प्रतिरोध करते हुए कई मंचों पर जुगलजी ने अपनी स्पष्टवादिता और वाक्पटुता की छाप छोड़ी है। वसीम बरेलवी की पंक्तियाँ हैं -

उसूलों पर अगर आँच आए टकराना जरूरी है,
जो जिन्दा हो तो फिर जिंदा नजर आना जरूरी है।
नई उम्रों की खुद-मुख्तारियों को कौन समझाए,
कहाँ से बच के चलना है, कहाँ जाना जरूरी है।

दो वर्ष पूर्व आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला में एक सम्मानित वक्ता की असंगत बातों का प्रभावी विरोध करते हुए जुगलजी ने हिन्दी के उस विशिष्ट विद्वान को जिस विनम्रता एवं दृढ़ता से समुचित उत्तर दिया था, वह अविस्मरणीय प्रसंग है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क से कर्म के प्रति निष्ठा एवं प्रखर राष्ट्रप्रेम, स्व. भँवरलाल मल्लावत के सान्निध्य से संगठन कौशल; स्व. राधाकृष्ण नेवटिया की संगति से समाज-सचेतनता तथा आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के स्नेह-सत्संग से साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक

क्षेत्र में रचनात्मक दृष्टि प्राप्त कर जुगलजी ने समाज में विशिष्ट स्थान बनाया है। अपनी संस्कृति को भूलकर विदेश एवं विदेशी के प्रति भारतीयों का अतिरिक्त आकर्षण उन्हें पीड़ा देता है। राजस्थान के कवि गिरिवरदान सिंह की ये पंक्तियाँ मुझे जुगलजी से ही प्राप्त हुई थीं –

धीरे-धीरे बंद हुई जाती संध्या की शंखध्वनियाँ,
मंद हुई जाती मंत्रों की लय, प्रभात के मृदु आँगनियाँ।
जीवन के आखिरी मोड़ पर मैं अपनों से पूछ रहा हूँ,
हम दुनिया को बदल रहे, या हमको बदल रही है दुनिया।।

इस लंबी कविता का समापन करते हुए कवि ने अंत में लिखा है –

जीवन के प्रत्येक मोड़ पर खुले दृगों से देख रहा हूँ,
परमपूज्य यह देश, एक दिन इसको नमन करेगी दुनिया।
हम ही बदल सकेंगे इसको, आखिर यह बदलेगी दुनिया।

भारत अपनी गरिमा-महिमा को पुनः प्राप्त कर विश्व में तभी पूज्य बन सकेगा जब हम सब अपने-अपने स्तर पर इसके लिए काम करेंगे। 'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्थान' के प्रति अपार आदर रखने वाले श्री जुगल किशोर जैथलिया राष्ट्र की अर्चना-वंदना में समर्पित भाव से स्वयं तो सन्नद्ध हैं ही, निष्ठावान कार्यकर्ताओं की पंक्ति को प्रेरित-प्रभावित कर उन्हें भी इस काम में सहभागी बना रहे हैं – यह उनका बहुत बड़ा अवदान है।

उनके इसी प्रदेय के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए; विगत चार दशकों से पुस्तकालय की बहुविध उन्नति हेतु प्रभावी योगदान के लिए तथा कार्यकर्त्ता निर्माण की उनकी प्रचेष्टा हेतु कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से उनके अमृत-महोत्सव अभिनंदन का आयोजन किया गया है। 'कर्मयोग का पथिक' शीर्षक अभिनंदन ग्रंथ उसी महोत्सव का एक अंग है। जुगलजी के अत्यन्त स्नेहभाजन तथा पुस्तकालय के व्यवस्थापटु मंत्री श्री महावीर बजाज ने ग्रंथ संपादन का दायित्व ग्रहण कर कठिन परिश्रम से इसे पूरा किया है, इस हेतु वे बधाई के पात्र हैं। हमें विश्वास है कि इस आयोजन एवं प्रकाशन से सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को नई-दिशा, नया संदेश तथा समुचित पाथेय प्राप्त होगा।

प्रेमशङ्कर त्रिपाठी

(डॉ. प्रेमशङ्कर त्रिपाठी)

अध्यक्ष: श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय
संयोजक: प्रकाशन समिति

विश्वकर्मा दिवस, सम्वत् २०६९
१७ सितम्बर, २०१२ ई.

:: अनुक्रम ::

खण्ड : १

शुभकामनाएँ

•

खण्ड : २

वंशावली, आत्म कथ्य एवं
परिजनों के उद्‌गार

•

खण्ड : ३

चित्रावली

*(श्री जैथलिया की विविध गतिविधियों
के उल्लेखनीय चित्र)*

•

खण्ड : ४

विशिष्टजनों की नजर में
श्री जैथलिया

•

खण्ड : ५

विचार वीथिका

*(श्री जैथलिया की ५ दशकों की
कतिपय महत्त्वपूर्ण रचनाएं)*

खण्ड-१

शुभकामनाएँ

⁂ गणमान्य शुभाकांक्षी ⁂

स्वामी सत्यमित्रानन्दजी गिरि
आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज
स्वामी विश्वदेवानन्दजी
स्वामी संवित् सोमगिरिजी
श्री लालकृष्ण आडवाणी
श्री अशोक सिंहल
न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय
श्री केदारनाथ साहनी
श्री गुलाबचन्द कटारिया
श्री राहुल सिन्हा
श्री यूनुस खान
श्री उमाकान्त उपाध्याय
देवर्षि कलानाथ शास्त्री
पं. नरेन्द्र मिश्र
श्री बालकवि बैरागी
श्री वेणुगोपाल बांगड़
श्री सन्तोष सराफ
श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका
श्री सरदारमल कांकरिया
श्री गोविन्दराम अग्रवाल
श्री नन्दलाल रूंगटा
श्री रुगलाल सुराना जैन
श्री केशव दीक्षित
श्री नन्दकुमार लढ़ा
श्री महावीर प्रसाद नारसरिया
श्री नन्दलाल सिंघानिया
श्री कमलकिशोर पारीक

श्री दुर्गाप्रसाद नाथानी
श्री द्वारका प्रसाद गनेड़ीवाल
श्रीमती मीनादेवी पुरोहित
श्रीमती सुनिता झंवर
श्री मदनलाल जोशी
श्री प्रह्लादराय अग्रवाल
श्री बाबूलाल धनानिया
सरदार गुरचरन सिंह गिल
श्री सत्यनारायण होलानी
श्री सुशील सितानी
श्री शंकरलाल परसावत
श्री मनोजकुमार स्वामी
श्री हरिकृष्ण चौधरी
श्री आत्माराम सौंथलिया
श्री माणकचन्द
श्री गुरुशरण प्रसाद
श्री किसन झंवर
श्री संजय हरलालका
श्री त्रिभुवन पाल गोयल
श्री हरिराम जालुका
श्री बिहारी लाल रूणवाल
श्री परशुराम मून्धड़ा
श्री भंवरलाल टाक
श्री देवदत्त शर्मा
श्री छोटीखाटू नागरिक परिषद्, जयपुर
श्री अजीत सिंह जैन
श्री सत्यनारायण भैया

श्री शंभु चौधरी
श्री केशव प्रसाद कार्वां
श्री विश्वम्भर नेवर
श्री सीताराम शर्मा
श्री दाऊलाल कोठारी
श्री सुशील ओझा
श्री तरुण विजय
श्री नागराज शर्मा
श्री महेन्द्रप्रताप गनेड़ीवाल
कविराज शकुन्तला शर्मा
श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल
श्रीमती देवकी-महावीर खंडेलिया
श्री पुरुषोत्तम लाल बजाज
श्री श्रीनिवास मंत्री
डॉ. नित्यानन्द
श्री पुष्करलाल केडिया
श्री बैजनाथ पँवार
श्री जयदीप चितलांगिया
श्री सज्जन भजनका
श्री बंकटलाल गगड़
प्रो. वासुदेव देवनानी
श्री प्रेमनाथ सिंह
श्री घनश्यामदास बेरीवाल
श्री शान्तिलाल जैन
डॉ. बी. डी. चारण
न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त
डॉ. एन.सी. दिवाकर
श्री रणेन्द्रलाल बंद्योपाध्याय ●

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि
संस्थापक, भारतमाता मंदिर
समन्वय कुटीर, सप्त सरोवर
हरिद्वार (उ.प्र.)
दूरभाष : (०१३३) ४२६२५६

शुभकामना

कर्मयोगी जुगलकिशोर जैथलिया जी भारतीय समाज के प्रेरणापुरुष हैं। वर्तमान समय में स्वार्थवृत्ति की वृद्धि हो रही है। व्यक्तिगत उपलब्धियों का प्रदर्शन हो रहा है। निष्काम सेवा और निष्काम सेवक उपेक्षित हो रहें हैं, ऐसे कठिन काल में श्री जैथलिया जी का सम्मान करना नितांत समीचीन कार्य है। सामाजिक कार्यों को उन्होंने संबल दिया है। साहित्य जगत में उनके पुरुषार्थ से 'विवेकानन्द सेवा सम्मान' एवं 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' से समर्पित श्रेष्ठ व्यक्तियों का यशोगान हो रहा है। ऐसे प्रशंसनीय कार्य उन्हें ईश्वरीय आशीर्वाद से मंडित करेंगे, इसमें संदेह नहीं है।

उनके अभिनन्दन ग्रंथ के व्यापक प्रचार हेतु मेरी सादर शुभकामनायें प्रेषित हैं। श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी शतायु हों, यह मेरी प्रभु से प्रार्थना है।

– स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि

आचार्य स्वामी श्री धर्मेन्द्र महाराज

मठ : 'पावनधाम' (पंचखण्डपीठ)

विराटनगर-३०३१०२, जिला-जयपुर (राज.)

निवास: पावन परिसर, महात्मा रामचन्द्र वीरमार्ग

एयरपोर्ट, टोंक रोड, जयपुर-३०२०११ (राज.)

मोबाइल : ०९३१४६५५३५५

श्रावणी पूर्णिमा, २०६९ वि.

शुभाशंसा

कोलकाता महानगर में, श्री जुगलकिशोर जैथलिया का नाम साहित्य, संस्कृति और समाज की अनवरत सेवा का पर्याय बन गया है।

जैथलिया जी की प्रेरणा और प्रयत्नों से, देश की अनेक अभिनन्दनीव विभूतियों के अभिनन्दनोत्सव कोलकाता और राजस्थान में सम्पन्न हुए हैं।

अब कोलकाता के गुणग्राहक कृतज्ञ जन, स्वयं उनका अभिनन्दन कर रहे हैं, यह प्रशंसनीय उपक्रम है। उनके यशस्वी जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण हुए, भक्तवत्सल भगवान उन्हें स्वास्थ्य एवं सुयश से सम्पन्न शतायु प्रदान करें।

– आचार्य स्वामी धर्मेन्द्र महाराज

आचार्य महामण्डलेश्वर

स्वामी श्री विश्वदेवानंदजी महाराज

अध्यक्ष: सत्संग भवन, कोलकाता एवं

विश्व कल्याण साधनायतन, हरिद्वार

दूरभाष : (०३३) २२५९१६७३

६ जुलाई २०१२

शुभकामना

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय (जिसकी प्रगति में श्री जैथलियाजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है) के कार्यकर्ताओं ने यह निश्चय किया है कि कर्मयोगी श्री जुगलकिशोर जैथलिया के ७५वें वर्षपूर्ति पर उनका सार्वजनिक अभिनंदन करते हुए उन पर एक ग्रंथ भी प्रकाशित किया जाए। इस पुस्तकालय के साथ जुड़कर जैथलियाजी ने अपने जीवनकाल में जो सामाजिक कार्य किए हैं, उसे समाज लम्बे समय तक याद रखेगा। उनके कार्यों से आने वाली पीढ़ी को दिशा-निर्देश मिलेगा।

भारतवर्ष के शास्त्रानुमोदित मानवजीवन की दुर्लभता एवं प्रशस्ति का गुणगान देवगण भी करते हैं। श्रेष्ठ भूमि, सद्गुरु एवं ज्ञानबोधक साहित्य और शस्त्रों के सानिध्य में जिया गया जीवन अभिनंदनीय है। स्वस्तिमान श्री जैथलियाजी को मैं पिछले दो दशकों से जानता हूँ। उनकी प्रेरणा, सक्रियता, सहयोग एवं साहस को कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। वे धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और परिवार के दायित्वों का निर्वहन करते हुए प्रशंसनीय जीवनयापन कर रहे हैं।

७५ वर्ष पूर्ति पर आयोजित अमृत महोत्सव समारोह हेतु मेरी अनंत शुभकामनाएं और आशीर्वाद ! मैं उनके दीर्घ और स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए आशा करता हूँ कि वे दीर्घकाल तक इसी तरह जनसेवा के कार्यों में रत रहें। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व नई पीढ़ी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा।

– स्वामी विश्वदेवानन्द

स्वामी संवित् सोमगिरि
श्री लालेश्वर महादेव मन्दिर,
शिवमठ, शिवबाड़ी
बीकानेर-३३४००३ (राजस्थान)
दूरभाष : (०१५१) २२३०९८२

शुभकामना

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आपकी संस्था, श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया की आयु के ७५ वर्ष पूर्ण होने के मंगलमय अवसर पर एक भव्य अमृत-महोत्सव का आयोजन करने जा रही है। उनके निर्मल, उज्ज्वल व तेजस्वी व्यक्तित्व तथा उनके सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अवदान को देखते हुए आपकी संस्था द्वारा इस आयोजन को करने का निश्चय न केवल समीचीन है अपितु आवश्यक भी है।

मानव अनन्त पथ का पथिक है। अनादि काल से गमनशील वह अच्युत की ओर प्रधावित है। उसकी अविभाजित जीवनधारा ईश्वरीय संकल्प से एक विशेष प्रयोजन को सिद्ध करने के लिये एक विशिष्ट देश-काल में अभिव्यक्त होती है। स्वातन्त्री कर्म-शक्ति को लेकर मनुष्य उस दिव्य संकल्प की पूर्ति का सात्त्विक सशक्त माध्यम भी बन सकता है।

श्री जुगलकिशोर जी की जीवन-यात्रा छोटीखाटू ग्राम की शौर्य, शान्ति, भक्ति व प्रबुद्ध लोक-चेतना, लोक-संस्कृति व लोक-ऊर्जा को लेकर विराट के शिखर पर पहुँचने के लिये एक त्वरा से गतिशील रही। वे आज भी भारतीय संस्कृति के सार को अपनी मति, भक्ति व कृति में ओजस्विता से अभिव्यक्त कर रहे हैं।

आपनी मायड़ भाषा के प्रति अगाध प्रेम को लिये हुए वे संस्कृत, हिन्दी, बंगला व अन्य भारतीय भाषाओं तथा आंग्ल भाषा को लेकर सतत चिन्मयी साधना में रत हैं।

उनकी बलिष्ठ, स्वस्थ व भव्य देह-यष्टि समष्टि से लयान्वित रहते हुए एक चतुरंगिणी आभा को निरन्तर नि:सृत करती है जो आबाल वृद्ध को अनुप्राणित करती है।

माँ भारती के इस लाडले युवक में राजस्थान की तापसी चेतना तथा सागर में लय हो रही गंगा की भावभरी चेतना का सामरस्य हिलोरें लेता रहता है।

श्री जुगलजी का सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक व सांस्कृतिक कृतित्व तो श्लाघनीय है ही, किन्तु उससे भी अधिक उनके अन्तस का उज्ज्वल मधुर परिपाक वन्दनीय है।

उनके अनाविल व्यक्तित्व का आत्मीय स्पर्श मेरे लिये अमूल्य निधि है।

श्री जुगलकिशोर जी के अमृत-महोत्सव के इस पुण्य अवसर पर प्रभु से हार्दिक प्रार्थना है कि वे दीर्घकाल तक पूर्णतः स्वस्थ रहते हुए, अपने श्रद्धा-सुरभित भक्ति-पूरित शास्त्रीय कर्म से अकर्म की ब्रह्मद्रवा भागीरथी को प्रवाहित करते रहें... प्रवाहित होते रहें - पूर्णता का आनन्द-सागर होने के लिये।

- संवित् सोमगिरि

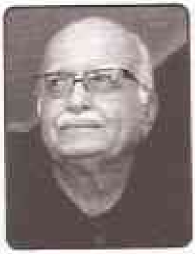

सत्यमेव जयते

लालकृष्ण आडवाणी

अध्यक्ष, भाजपा संसदीय दल

३०, पृथ्वीराज रोड

नई दिल्ली-११००११

दूरभाष : (०११) २३७९४१२४

१६ अगस्त २०१२

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि भा.ज.पा., पं. बंगाल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री जुगलकिशोर जैथलिया आगामी २ अक्टूबर, २०१२ को अपनी जीवन यात्रा के ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता द्वारा उनका अमृत महोत्सव समारोह आयोजित किया जा रहा है तथा एक अभिनन्दन ग्रंथ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं श्री जैथलिया को बधाई देता हूँ तथा परमपिता परमेश्वर से उनके स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की कामना करता हूँ। अमृत महोत्सव की सफलता एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

- लालकृष्ण आडवाणी

अशोक सिंहल

संरक्षक : विश्व हिन्दू परिषद

सेक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-२२

दूरभाष : (०११) २६१७८९९२

६ अगस्त, २०१२

शुभकामना

हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत सोच समझकर जीवन को चार आश्रमों में बांटा है। यह पद्धति स्वयं में परिपूर्ण तथा विशुद्ध वैज्ञानिक है। यदि इस व्यवस्था का ठीक से पालन हो, तो परिवार, कारोबार और संसार ठीक से चल सकेंगे।

गत हजार वर्ष के विदेशी और विधर्मियों के क्रूर आक्रमण और उनसे चले सतत संघर्ष के दौरान हिन्दुओं के लिए अपना धर्म और जीवन बचाना ही कठिन हो गया था। अत: अपनी गौरवशाली परम्पराओं की ओर से ध्यान हट गया। इसी का परिणाम है कि आज परिवार टूट रहे हैं तथा सबका ध्यान कम से कम समय में, वैध-अवैध किसी भी तरह से, अधिकाधिक धन बटोरना हो गया है। पर ऐसे वातावरण में भी अनेक नन्दादीप ऐसे हैं, जिन्हें देखकर समाज की नयी पीढ़ी दिशा प्राप्त कर सकती है। श्री जुगलकिशोर जैथलिया उनमें से एक हैं, जो अपने यशस्वी जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं।

श्री जुगलजी का अब तक का काफी समय देश, धर्म, समाज और साहित्य की आराधना में बीता है। राजस्थान के मूल निवासी सभी हिन्दू समुदायों को संगठित कर, उनकी योग्यता और क्षमता का समाज हित में उपयोग करना भी एक बहुत बड़ा काम है।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार और सम्मानों को अब देश भर में एक विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त हो गयी है। इसमें स्व. विष्णुकांत शास्त्री जी के साथ जुगलजी के योगदान भी अविस्मरणीय हैं।

मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे स्वस्थ रहकर इसी प्रकार समाज सेवा में सक्रिय रहें। उनके अभिनंदन समारोह में लगे हुए सभी कार्यकर्ताओं को भी मेरा सप्रेम अभिवादन।

– अशोक सिंहल

गिरिधर मालवीय

पूर्व न्यायाधीश, इलाहबाद उच्च न्यायालय

२६, अमरनाथ झा मार्ग, जार्ज टाउन, इलाहाबाद-२

दूरभाष : (०५३२) २४६८६६४

१७ अगस्त, २०१२

संदेश

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता के मार्गदर्शक श्री जुगलकिशोर जैथलिया से मैं पिछले कुछ वर्षों से परिचित हूं। हम सबके श्रद्धेय आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की चुनी हुई रचनाओं के दो खंडों का संपादन कर आपने महत्वपूर्ण कार्य किया है। 'इटावा हिन्दी सेवा निधि' के आयोजनों में कोलकाता से इलाहाबाद/इटावा आकर वे उसमें रुचिपूर्वक भाग लेते हैं, यह उनके प्रखर हिन्दी प्रेम का परिचायक है। २००८ ई. में निधि ने उन्हें 'विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान' प्रदान किया है।

गत अप्रैल महीने में मुझे राजस्थान परिषद् के एक महत्वपूर्ण आयोजन में कोलकाता जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अवसर था महामना पं. मदन मोहन मालवीय एवं कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर केंद्रित स्मारिका का लोकार्पण तथा इन विभूतियों की १५०वीं जयंती पर कार्यक्रम। स्मारिका का संपादन श्री जैथलिया ने ही किया है। स्मारिका के भव्य कलेवर तथा महत्वपूर्ण आलेखों को देखकर मुझे आंतरिक प्रसन्नता हुई। कार्यक्रम में जैथलियाजी की प्रबंध पटुता तथा व्यवहार कुशलता से मैं अभिभूत हो गया। उसी दिन कोलकाता में आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की पुण्यतिथि के अवसर पर कुमारसभा पुस्तकालय के एक आयोजन में भी मुझे आचार्यजी को श्रद्धांजलि देने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उस आयोजन में मुझे इस बात का हार्दिक संतोष हुआ कि आचार्य शास्त्री के संरक्षण में कोलकाता में साहित्य प्रेमियों एवं निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्ताओं का एक बड़ा वर्ग तैयार हुआ है। कहने की आवश्यकता नहीं कि श्री जुगलकिशोर जैथलिया उनमें अन्यतम हैं।

७५वें जन्म दिवस पर मैं श्री जैथलिया की कर्मनिष्ठा के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए उनके स्वस्थ, सक्रिय एवं दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

– गिरिधर मालवीय

केदार नाथ साहनी
पूर्व राज्यपाल सिक्किम एवं गोवा
जी-१२, एन.डी.एस.आई-II
नई दिल्ली-११००४९
दूरभाष : (०११) २६२६१८६३

२५ जुलाई, २०१२

शुभकामना

श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी के ७५ वर्षीय हो जाने और उनका अभिनन्दन किए जाने का सुखद समाचार भेजने के लिए कृपया मेरा आभार स्वीकार करें। अभिनन्दन ग्रन्थ के माध्यम से उनके प्रेरणादायी जीवन और जीवन-कार्यों को दर्शाने का निर्णय भी सचमुच अभिनन्दनीय है।

इस प्रकल्प के लिए मेरा साधुवाद तथा इसकी सफलता के लिए हार्दिक शुभ कामनाएँ।

जैथलिया जी को मैं गत ५० से भी अधिक वर्षों से जानता हूँ। अपने मध्यवर्गीय धार्मिक परिवार से मिले तथा बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्राप्त देशभक्ति और समाज सेवा के संस्कारों को उन्होंने अपने जीवन में उतार लिया है। उनके आचार, व्यवहार तथा विचारों में यह संस्कार सजीव दिखायी देते हैं। उनके सम्पर्क में जो भी आया है, वह उनका हो गया है। उनकी आत्मीयता मन मोह लेती है। वे अजातशत्रु हैं। समाज और देश सेवा सम्बन्धी ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जिससे वे न जुड़े हों।

जैथलिया जी भारतीय जनसंघ के जन्मकाल से ही, एक सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। भारतीय जनसंघ, जनता पार्टी और बाद में भाजपा के विभिन्न पदों का दायित्व उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया है। अनेक सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा धार्मिक संस्थाओं से जैथलिया जी जुड़े हैं। उनका रचनात्मक चिन्तन, समर्पण भाव और सबको साथ लेकर काम करने की कला के सब मुरीद है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हर सेवा प्रकल्प को सदा उनका सक्रिय सहयोग प्राप्त है।

राजस्थान से जुड़ी हर गतिविधि से वह केवल जुड़े ही नहीं अपितु उसमें लगे सक्रिय कार्यकर्त्ताओं की अगली कतार में खड़े, उनको प्रेरणा देते दिखाई देते हैं।

कलकत्ता के सबसे पुराने 'श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय' को जैथलिया जी के निर्देशन तथा अन्य साथियों के सहयोग ने एक बहुआयामी संस्था बना दिया है। अब वह मात्र पुस्तकालय नहीं रहा अपितु अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बन चुका है, जहाँ कवि सम्मेलन, साहित्यिक गोष्ठियाँ, सम्मेलन एवं कार्यशालाएँ तो होती ही हैं, देश के प्रख्यात साहित्यकार भी आमन्त्रित किए जाते हैं और उनको सम्मानित किया जाता है। साथ ही पुस्तकालय में समाज सेवा के अनेक परोपकारी कार्यक्रम भी होते हैं।

पुस्तकालय द्वारा प्रतिवर्ष स्वामी विवेकानन्द जी और डा. हेडगेवार जी के नामों से साहित्य और समाज सेवा को समर्पित लोगों को पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। यह जैथलिया जी के चिन्तन की उपज है।

जैथलिया जी ने अपने मूल गाँव में जो पुस्तकालय आज से ५४ वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया था, वह विलक्षण है। उस छोटे गाँव में जैथलिया जी प्रतिवर्ष एक बड़ा आयोजन करते है। उसमें पास पड़ोस के गाँवों के लोग भी सम्मिलित होते हैं। कुछ वर्ष पूर्व इस आयोजन में वहाँ जाने का मुझे भी अवसर मिला था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक, जो उस समय सरकार्यवाह थे तथा राजस्थान भाजपा के पूर्व अध्यक्ष और राज्यसभा के सदस्य श्री महेश चन्द्र शर्मा समारोह के मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की भव्यता देख कर बहुत अच्छा लगा। छोटे गाँव में उस पुस्तकालय का अपना सुन्दर भवन है। पुस्तकों का बड़ा भण्डार भी है। और अनेक पत्र पत्रिकाएँ भी यहाँ आती है। काफी संख्या में लोग नित्य समाचार भी पढ़ते हैं और उन पर चर्चा भी करते हैं।

मैंने जैथलिया जी से पूछा कि इस छोटे गाँव में इतना बड़ा पुस्तकालय कैसे बन गया है। वह मुस्कराकर कहने लगे कि इसकी स्थापना में तो स्वयं आप का भी हाथ है। उन्होंने बताया कि १९५८ में कलकत्ता में समाचार पत्रों में छपे एक समाचार को पढ़कर उन्हें लगा कि ऐसे समाचार उनके गाँव के लोगों तक भी पहुँचने चाहिए। तभी उन्होंने अपने गाँव में एक वाचनालय की स्थापना का निर्णय किया था। शुरू में कुछ दैनिक समाचार पत्र मंगवाना प्रारम्भ किया गया। गाँव के लोगों को अच्छा लगा और अब वही छोटा सा वाचनालय इतना बड़ा पुस्तकालय बन गया है। जैथलिया जी ने बताया कि वह समाचार मेरे नाम के साथ जुड़ा था।

१९५८ में दिल्ली में नगर निगम की स्थापना हुई थी और चुनावों में भारतीय जनसंघ को अच्छी सफलता मिली थी। मैं सदन में नेता प्रतिपक्ष था। दिल्ली नगर निगम सीधे केन्द्र सरकार के अधीन था। गृहमंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पन्त थे। निगम की पहली सभा में उनका

अभिनन्दन होना था। उनको भेंट किए जाने वाले सम्मान-पत्र के मसौदे में महात्मा गांधी जी के लिए **'राष्ट्र पिता'** शब्द का प्रयोग किया गया था। मैंने उस शब्द को बदलने और उसके स्थान पर गांधी जी के लिए **'भारत माता के अनन्य सपूत'** शब्द लिखने का संशोधन, यह कह कर प्रस्तुत किया था कि 'राष्ट्र पिता' शब्द का प्रयोग देश भर में इस धारणा को फैलाने वाला है कि जैसे हमारा राष्ट्र १९४७ में ही बना हो जबकि हमारा राष्ट्र तो अति प्राचीन है। यह भी कहा कि **'राष्ट्र'** शब्द का प्रयोग तो वेद काल से है और हमारे देश में भगवान राम और भगवान कृष्ण तक को अवतारी पुरुष भले ही कहा हो, किन्तु उन्हें भी भारत माता के सपूत ही माना है। लम्बी बहस हुई और देश भर में वह समाचार प्रमुखता से छपा। जैथलिया जी ने कहा कि इस बहस ने ही मुझे अपने गाँव में वाचनालय स्थापित करने की प्रेरणा दी थी।

जैथलिया जी का जीवन बहुआयामी है। राजनीतिक, साहित्यिक, धार्मिक, शैक्षिक अथवा समाज सेवा सम्बन्धी अनेक संगठनों के माध्यम से वे जिस ऊर्जा तथा सक्रियता के साथ कार्य करते हैं, उससे आश्चर्य तो होता ही है, किन्तु वे ७५ वर्षों के हो गए हैं, यह कभी नहीं लगा। प्रभु उन्हें शतायु प्रदान करें, स्वस्थ रखें ताकि वे इसी ऊर्जा के साथ अपने सेवा संकल्पों को पूरा करते रहें और हमें प्रेरणा मिलती रहे।

– केदार नाथ साहनी

सत्यमेव जयते

गुलाबचन्द कटारिया
पूर्व गृह मंत्री एवं सदस्य
राजस्थान विधानसभा
१०१/०१, पटेल मार्ग,
मानसरोवर, जयपुर (राज.)
दूरभाष : (०१४१) २७८६११६

१६ अगस्त, २०१२

शुभकामना

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि कई संस्थाओं के प्रेरक तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं के निर्माता श्री जुगलकिशोर जैथलिया आगामी २ अक्टूबर २०१२ ई. को अपने ७५ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के साथ जुगल जी का पिछले चार दशकों से जो अंतरंग संबंध है, उससे मैं व्यक्तिशः परिचित हूँ।

इस अवसर पर आप एक अभिनन्दन ग्रंथ के प्रकाशन की योजना बना रहे हैं, वह स्तुत्य है।

मैं श्री जुगलकिशोर जैथलिया की दीर्घायु एवं 'अमृत महोत्सव' हेतु हार्दिक मंगलकामनायें ज्ञापित करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि श्री जैथलिया का मार्गदर्शन समाज को अनवरत रूप से मिलता रहेगा।

– गुलाबचन्द कटारिया

राहुल सिन्हा

भाजपा अध्यक्ष, प. बंगाल

६, मुरलीधर सेन लेन, कोलकाता-७३

मोबाइल : ९८३१००७७७२

शुभकामना

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया के ७५ वर्ष पूरे होने पर उनका अमृत महोत्सव एक शानदार समारोह के रूप में मना रही है एवं एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रही है।

श्री जुगलजी से मेरा विशेष परिचय उनके १९८२ ई. में जोड़ाबगान क्षेत्र से भाजपा के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने के समय ही हुआ। यह सम्बन्ध क्रमशः समय बीतने के साथ और भी घनिष्ठ एवं दृढ़ होता गया। फिर भी मैं उन्हें एक अच्छे राजनेता एवं समाजसेवी के रूप में ही जानता था। इतनी निकटता के बावजूद भी मैं यह नहीं जानता था कि साहित्य के क्षेत्र में भी वे इतने सिद्ध हस्त हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि उन्होंने कभी भी अपने बारे में ऐसा प्रकट नहीं किया। मैंने यह देखा है कि वे स्वभाव से ही प्रचार से दूर रहते आये हैं। पार्टी के नेता के रूप में कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आदर्श पर टिके रहने की दृढ़ता उनमें मैंने शुरू से ही देखी। पार्टी आज जिस जगह पर पहुंची है उसमें इनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

इनके जीवन के और एक महत्वपूर्ण पक्ष का उल्लेख नहीं करने से इनके बारे में सही आकलन नहीं हो पायेगा। सबके साथ सहज रूप से मिलना और कभी भी किसी बात पर अहंकार प्रकट करने की कोई भी घटना मेरे सामने नहीं आई। इतना सहज व्यवहार रहते हुये भी उचित बात कहने से वे कभी पीछे नहीं हटे। बहुत नजदीक से स्वर्गीय विष्णुकान्त शास्त्री के सानिध्य में रहने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। लेकिन इन्होंने विष्णुजी के बहुत सारे गुणों को अपने अंदर समाहित कर लिया। वह चाहे साहित्य का क्षेत्र हो, संगठन हो, राजनीतिक क्षेत्र हो या संयमी जीवन हो।

मैं इश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे विद्वान दयालु और कर्मठ व्यक्ति को वे शतायु होने का आशीर्वाद प्रदान करें ताकि देश और समाज के लिए वे अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहें।

– राहुल सिन्हा

यूनुस खान

पूर्व यातायात मंत्री, राजस्थान सरकार

६२, गौरव नगर, सिविल लाईन्स

जयपुर (राज.)

मोबाइल : ०९९१८६६२४४४२

२७ अगस्त २०१२

शुभकामना

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हमारे डीडवाना क्षेत्र के छोटीखाटू की पवित्र धरती पर जन्मे श्री जुगलकिशोर जैथलिया का २ अक्टूबर २०१२ ई. को जन्मदिन है। इस जन्मदिन पर जुगल जी ७५ वर्ष के हो रहे हैं यह हम सबके लिए हर्ष का दिन होगा। इस दिन श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता द्वारा अमृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, यह कार्यक्रम हम सब राजस्थानियों के लिए गौरव की बात है।

छोटीखाटू श्री जैथलिया जी की जन्मस्थली है। सौभाग्यवश मुझे भी इस क्षेत्र का राजस्थान विधानसभा में प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला एवं मैं इस कालखण्ड में लगातार श्री जैथलिया जी के सम्पर्क में रहा जिसमें इनको नजदीक से समझने का मौका मिला। मैं यह दृढ़ विश्वास से कह सकता हूँ एक व्यक्ति जिनका नाम श्री जुगलकिशोर जैथलिया है वह एक सामाजिक कार्यकर्ता, मंजा हुआ राजनीतिज्ञ, छुपा हुआ साहित्यकार एवं अपनी जन्मभूमि खाटू के प्रति समर्पित पुत्र है। इनका जन्मस्थली खाटू एवं कर्मस्थली कोलकाता के प्रति अगाध, निस्वार्थ, समर्पित एवं गहरा प्रेम है जो कम लोगों में मिलता है, ये मिलनसार व्यक्तित्व के धनी हैं। मुझे विश्वास है कि हम सबकी प्रार्थना से शेष जीवन भी समाज के लिए ये समर्पित रखेंगे। मैं ईश्वर से कामना करता हूँ कि ये दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें एवं सक्रिय रहकर हम सबका मार्गदर्शन करें, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ। धन्यवाद।

– यूनुस खान

उमाकान्त उपाध्याय

आचार्य, आर्यसमाज कोलकाता

३०, कालिन्दी, कोलकाता-७०००८९

मोबाइल : ९४३२३०१६०२

शुभकामना

श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी का स्मरण होने पर हमारे हृदय में यह भाव जागृत होता है कि हिन्दू स्वाभिमान और भारतीयता के गौरव की यदि कोई मूर्ति बनायी जाये तो वह श्री जुगलकिशोर जैथलिया जैसी होगी। श्री जैथलिया जी में हिन्दुत्व और भारतीय स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ है। ऐसा होना इसलिए अधिक सम्भव हुआ कि शैशव से ही आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के व्रती बालक के रूप में दीक्षित हो गये और पाठ करने लगे-

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे।

इस नैष्ठिक दीक्षा का फल यह निकला कि आज श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार पुस्तकालय, राजस्थान परिषद् आदि हिन्दी- हिन्दुत्व के जितने भी गौरवशाली संगठन हैं; श्री जुगलकिशोर जी सभी में प्रेरणा पुरुष के रूप में सक्रिय हैं। आप की कर्मठता पर आपकी परिपक्व आयु का कोई प्रभाव ही नहीं है, अपनी कर्मठता में श्री जैथलिया जी चिर-युवा की स्फूर्ति रखते हैं।

आपके ७५ वर्षीय जीवन पर विचार करने से एक प्यारी सूक्ति ध्यान में आ जाती है-

''सुशीलो मातृपुण्येन, पितृपुण्येन बुद्धिमान्।
यशस्वी वंश पुण्येन, आत्म पुण्येन भाग्यवान्।।''

श्री जुगलकिशोर जी इन सभी पुण्यों से परिपूर्ण प्रतीत होते हैं। आपके अमृत महोत्सव के अभिनन्दन में मंगलकामना के रूप में आशीर्वचन-

त्वं जीव शरदः शतम् वर्धमानः
भूयश्च शरदः शतात्।

- उमाकान्त उपाध्याय

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

अध्यक्ष- मंजुनाथ स्मृति संस्थान

सी-८, मंजु निकुंज, पृथ्वीराज रोड

सी-स्कीम, जयपुर-३०२००१

दूरभाष : (०१४१)२३७६००८

२ अगस्त २०१२

शुभाशंसा

यह सुखद समाचार मन को प्रफुल्लित कर गया कि समाज, संस्कृति, साहित्य और जनहित के लिए पिछले पाँच दशकों से समर्पित तथा पूर्वी भारत में राजस्थान की संस्कृति का ध्वज फहराने वाले श्री जुगलकिशोर जैथलिया अपने यशस्वी जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं और उनकी इस अमृत जयन्ती के अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित कर रहा है। ऐसे समर्पित देशरत्न का सम्मान समाज का प्रथम कर्त्तव्य होता है। इस दृष्टि से संस्था शतशः बधाइयों की पात्र है।

मैं श्री जैथलिया जी से गत तीन दशकों से सुपरिचित हूँ। समर्पित साहित्यसेवियों के अभिनन्दन ग्रन्थों के प्रकाशन द्वारा, विद्वानों की कृतियों का सम्मान एवं प्रकाशन कर, पुस्तकालयों और साहित्यसेवी संस्थाओं को प्रोत्साहित कर जैथलियाजी ने साहित्य की भी उतनी ही सेवा की है जिस प्रकार समाजिक गतिविधियों में अथक योगदान के द्वारा समाज की सेवा की है। इनकी समर्पण भावना भी उतनी ही प्रेरणादायक है जितनी इनकी सक्रियता। राजस्थान के साहित्यसेवी इनके कृतित्व से उसी प्रकार सुपरिचित और प्रहृष्ट हैं जिस प्रकार बंगभूमि के साहित्यसेवी और समाजसेवी।

हम सब की यही कामना है कि श्री जैथलियाजी शतायु हों और आगे भी अनेक दशकों तक इसी सक्रियता से स्वस्थ और प्रसन्न रहते हुऐ, समाज और साहित्य को अपना बहुमूल्य योगदान देते रहें। अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन का तथा अमृत महोत्सव के आयोजन का यह स्तुत्य उपक्रम हाथ में लेकर एक अनुकरणीय सत्कार्य करने के उपलक्ष्य में अमृत महोत्सव समिति के सभी बन्धुओं को मैं अनेक हार्दिक साधुवाद एवं बधाइयाँ प्रेषित करता हूँ।

- देवर्षि कलानाथ शास्त्री

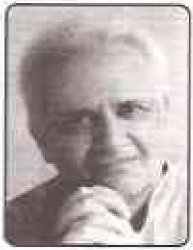

पं. नरेन्द्र मिश्र
वरिष्ठ कवि एवं प्रवक्ता
महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन
सिटी पैलेस, उदयपुर-३१३००१ (राज.)
मोबाइल : ०९४१३६४०००९

शुभकामना

यह जानकर हर्ष हुआ कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया की कर्मनिष्ठ मनीषी प्रज्ञा के सम्मानार्थ उनके अमृत महोत्सव को समारोह पूर्वक मनाने जा रहा है। इस अवसर पर अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन मेरे लिये सुखद अनुभूति है। आपके इस संकल्प को मैं अपनी प्रणति निवेदित करता हूँ।

श्री जैथलिया जी की समर्पित जनसेवी मनीषा की आदरणीया महादेवी वर्मा जैसी कालजयी कवयित्री से लेकर मूल्याधारित राजनीति तक ने समय-समय पर भूरि-भूरि प्रशंसा की है। श्री जुगलजी अनेक संकल्पित आलोक पुरुषों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन अनुकरणीय है। इसी कारण विभिन्न यशस्वी राष्ट्रीय संस्थानों ने उनको अनेक सम्मानों से सम्मानित कर स्वयं को आत्मधन्य माना है।

मेरी दृष्टि में जुगलजी परोपकार के पुरोधा, पुरुषार्थ के प्रवक्ता और प्रज्ञा के पर्याय हैं। यह अमृत महोत्सव इस बात का संकेत है कि ईमानदारी की पवित्र कमाई में आनन्द भी है और तृप्ति भी, संतोष भी है और सुकून भी। वे अपने जीवन से इस बात का संदेश देते हैं कि नैतिक बल से परिपूर्ण व्यक्तित्व के सामने दम्भी और दुष्ट व्यक्ति उसी प्रकार निस्तेज हो जाता है जैसे सूर्य के समक्ष अंधकार।

जैथलिया जी सदैव परमार्थ की पगडंडी के पथिक रहे हैं, जो पथ पर परोपकार के पद चिन्ह छोड़ जाता है। वे अहंकार मुक्त व्यक्तित्व और संस्कार युक्त कृतित्व के प्रतीक हैं।

इतिहास खड़ा होता उन पर, जो सत का मूल समझते हैं।
पैसों को ऐसे लोग सदा, पैरों की धूल समझते हैं।।
लेकिन कविता की वाणी ने केवल उनका यश गाया है।
जो जनसेवा को जीवन में सबसे बहुमूल्य समझते हैं।

मैं उनके यशस्वी, विजयी और दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

– नरेन्द्र मिश्र

सत्यमेव जयते

बालकवि बैरागी

पूर्व सांसद

'धापूधाम', १६९ डॉ. पुखराज वर्मा मार्ग

पोस्ट–नीमच, मध्यप्रदेश–४५८ ४४१

दूरभाष : ०७४२३–२२१८१९

३ जुलाई, २०१२

शुभकामना

यह प्रसन्नता की बात है कि श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया की आयु का आप सभी अमृत महोत्सव मना रहे हैं। आपको धन्यवाद और उन्हें बधाई।

उनसे मेरा समय–समय पर पत्राचार बना रहता है। पत्राचार से उनकी सक्रियता और सज्जनता उजागर होती है। ईश्वर उन्हें दीर्घायु करें। उनकी शतायु शताब्दी का महोत्सव हम सभी मनायें। मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ उन्हें अर्पित हैं।

आशा है समारोह शालीनता के साथ उमंग से मनाया जायेगा।

आप सभी को विशेष बधाई कि आप यह महोत्सव आयोजित कर रहे हैं।

पुनः प्रणाम।

– बालकवि बैरागी

वेणुगोपाल बांगड़
२१, स्ट्रांड रोड
कोलकाता – ७००००१
दूरभाष : २२३० ९६०१

२७ अगस्त २०१२

शुभकामना

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय वरिष्ठ समाजसेवी श्री जुगलकिशोर जैथलिया के ७५ वर्ष पूर्त्ति पर 'अमृत महोत्सव' मना रहा है एवं उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर एक ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रहा है। इस हेतु संस्था बधाई की पात्र है।

श्री जैथलियाजी से मेरा बहुत वर्षों का सम्बन्ध है। अच्छे समाजसेवी के रूप में समाज में उन्हें मान्यता मिली है। श्री डीडवाना नागरिक सभा एवं पं. बच्छराज व्यास आदर्श विद्यामन्दिर के कतिपय कार्यक्रमों में भी हमारा आपस में मिलना हुआ है जिनमें एक सुवक्ता के नाते भी उन्होंने अपनी छाप छोड़ी है। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी एवं मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी जैसी सेवा संस्थाओं से भी वे वर्षों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। अपने गांव छोटीखाटू के विकास में भी उनका काफी प्रशंसनीय योगदान रहा है। राजस्थानी एवं हिन्दी साहित्य सेवी के रूप में भी उनका योगदान सराहनीय है। मैं उनकी उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करें।

समारोह की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

– वेणुगोपाल बांगड़

संतोष सराफ

महामंत्री-अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२-बी, एम.जी. रोड, कोलकाता-७

मोबाइल : ९८३००२१३१९

शुभकामना

पौरुषदीप्त चेहरे के धनी, निर्भीक, स्पष्टवादी, न्यायप्रिय, समाजोन्मुख धर्मप्रेमी व्यक्तित्व आदरणीय श्री जुगलकिशोर जैथलिया का जीवन एक खुली किताब की तरह प्रेरणा और विवेक का सौरभ बिखेरते हुए जिया गया है। व्यवस्थित और सक्षम कार्यशैली के प्रतीक जुगलकिशोरजी के चरित्र की निर्मल किरणें हमारे जीवन को प्रज्वलित ही नहीं करती, बल्कि उसे प्राणों से भी भरती है।

आदरणीय भाईसाहब जैथलियाजी के समक्ष जब कभी बैठा हूँ तो मुझे लगा कि मैं सत्संग कर रहा हूँ। अपने हंसमुख व्यक्तित्व, व्यवहार कुशलता, कुशल नेतृत्व एवं दूसरों की मदद करने के लिए सदा तत्पर होने के कारण हर कोई इन्हें आदर एवं सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रायः देखता हूँ कि ज्ञानी व्यक्ति अपनी शान में ऐंठे रहते हैं, लेकिन जुगलजी भाईसाहब से मिलने के बाद उनके बारे में आप जरूर सोचेंगे। हमारे भाईसाहब के चेहरे से देवत्व झलकता है। हर पल उनके चेहरे पर रमती मुस्कान प्रथम परिचय में ही उन्हें स्नेह-सम्मान का अधिकारी बना देती है। अपने सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक कार्यों के माध्यम से बिना किसी स्वार्थ या लोभ के समाज में ज्ञान की ज्योति जगाने वाले, सच्चे कर्मयोगी की तरह हर खट्टे-मीठे अनुभवों को आत्मसात करने वाले जैथलियाजी की कर्म निष्ठा को प्रणाम करता हूँ। आने वाली पीढ़ियों के लिए स्थायी यादगार भाईसाहब के आयु के ७६वें वर्ष प्रवेश पर मंगलकामनाओं के साथ प्रभु से विनती है कि इनकी अच्छाइयों का लाभ समाज को लम्बे समय तक मिलता रहे और हमारा सानिध्य यूँ ही बना रहे।

– संतोष सराफ

विश्वम्भर दयाल सुरेका
३/१, डॉ. यू.एन. ब्रह्मचारी स्ट्रीट
कोलकाता-७०००१७
दूरभाष : २२८७ १२२१

शुभकामना

श्री जुगलकिशोर जैथलिया का जिक्र आते ही मेरे मन-मस्तिष्क के दृश्य पटल पर एक ऐसे व्यक्ति का चित्र उभरता है, जो पूर्णतः सादा, सहज, सच्चा और नेक इन्सान है। उनसे दीर्घकाल का परिचय और अनेकानेक संस्थाओं के माध्यम से अक्सर मिलना-जुलना भी होता ही रहता है हालांकि हम दोनों के बीच बहुत नैकट्य नहीं था फिर भी एक मानसिक नज़दीकी हमेशा बनी रही और इसका कारण उनका सच्चापन ही था।

आज के युग में चारों ओर शब्दों का माया जाल फैला हुआ है। विरले ही ऐसे होते हैं, जिनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होता और जुगलकिशोर जैथलिया उन्हीं में से एक हैं। जैथलियाजी उस विलुप्त होती सहजता की भी मिसाल हैं जो आज की आपाधापी में कहीं भी नज़र नहीं आती। सीधे रास्ते चलनेवाला आदमी, जीवन में अनायास ही औरों को भी अपने कार्यों से सुख प्रदान करता रहता है और जैथलियाजी ने अपने संयम और कर्मठता से इसे सिद्ध कर दिखाया है।

आपने बंगाल में रहकर हिन्दी भाषा की जो सेवा की है, वह सराहनीय है। बंगाल सहित भारत के विभिन्न प्रदेशों में भी आपके कार्यों का सम्मान किया गया है, जिनमें प्रमुख है – 'शारदा ज्ञानपीठ सम्मान', 'भगवतीचरण वर्मा स्मृति सम्मान', 'भामाशाह सेवा सम्मान', 'राजश्री स्मृति साहित्य सम्मान', 'कुरजां सम्मान', 'विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान', 'कर्मयोगी सम्मान' आदि। वैसे मेरी दृष्टि में इन पुरस्कारों और सम्मानों से भी ज्यादा महत्व जैथलियाजी की उस उज्ज्वल छवि का है, जो कलकत्तावासियों के हृदय-मन्दिर में प्रतिष्ठित हैं। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि उनसे अपने परिचय को मैं अपनी धरोहर मानता हूं।

आज उनके अमृत-महोत्सव पर उन्हें साधुवाद और दीर्घायु की प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि वे सदा ऐसे ही बने रहें।

– विश्वम्भर दयाल सुरेका

सरदारमल कांकरिया

अध्यक्ष: श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा

१८-डी, फूसराज बच्छावत पथ (सुकियास लेन)

कोलकाता - ७००००१

मोबाइल : ९३३१०१४४६५

शुभकामना

भाई श्री जुगलकिशोर जैथलिया से मेरा दीर्घ काल से सम्पर्क रहा है। अपने कर्त्तव्य के प्रति इतनी अधिक निष्ठा रखने वाले व्यक्ति विरल है। परोपकार तथा समाजसेवा के प्रति इनकी समर्पण भावना अनुकरणीय है। भाई जैथलिया एक प्रसन्नचित व्यक्ति तो हैं ही, समाज के हर कार्य में अग्रसर रहते हैं। साहित्य सेवा, समाज सेवा, राजनीति और इन सबसे बढ़कर प्राणी मात्र के प्रति गहरी सहानुभूति इनके व्यक्तित्व को एक नई गरिमा प्रदान करती है।

भारतीय जीवन पद्धति को सही मायने में अपने जीवन में उतारते हुए पिछले दस वर्षों से वे पूरी तरह लोक कल्याण के कार्यों में अपने जीवन को समर्पित कर चुके हैं। आज के भौतिकतावादी परिवेश में इस तरह आदर्श भारतीय जीवन पद्धति का अनुसरण समाज के लिए अनुकरणीय है। विविध संस्थाओं से आप न केवल विगत कई वर्षों से जुड़े हुए हैं वरन् उन्हें नए शिखर तक पहुँचाने में आपने सक्रिय योगदान दिया है। ७५ वर्ष की उम्र में १०-१२ घंटे प्रतिदिन समाज एवं देशकार्य में आपका जुटा रहना दूसरों को राष्ट्रहित और समाजहित के लिए प्रेरित करता है।

ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि ये इसी प्रकार साहित्य और समाज की सेवा करते हुए दीर्घ जीवन जियें और समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहें।

- सरदारमल कांकरिया

गोविन्दराम अग्रवाल
मानद प्रधानमंत्री: मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी
२२५/२२७, रवीन्द्र सरणी
कोलकाता-७००००७
मोबाइल : ९८३००३४१७१

१७ जुलाई २०१२

शुभकामना

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया जैसे महान् सामाजिक कार्यकर्ता, चिन्तक के जीवन के ७५ वर्ष पूरे करने पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से 'अमृत महोत्सव' मनाने का संकल्प किया जा रहा है। यह वास्तव में एक पुनीत कार्य है।

श्री जैथलिया जी से मेरा सम्बन्ध इनके मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्य होने के नाते दो दशक से भी ज्यादा समय से रहा है। मुझे सदैव इनका मार्गदर्शन मिलता रहा है। आप बड़े सरल, सूझ-बूझ व्यक्तित्व के धनी हैं। विवादास्पद विषयों में अपनी प्रखर प्रतिभा से आप ने मुझे बहुत ही सहयोग दिया है। मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि ऐसे व्यक्तित्व के धनी आदरणीय जैथलियाजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, समाज उनसे हमेशा प्रेरित होता रहे।

– गोविन्दराम अग्रवाल

नन्दलाल रूंगटा

पूर्व अध्यक्ष

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

चाईबासा-८३३२०१ (झारखंड)

मोबाइल : ९८३५१५६४६१

शुभकामना

आदरणीय श्री जैथलिया के ७५ वर्ष पूर्ण करने पर हार्दिक बधाई एवं सादर प्रणाम।

श्री जैथलिया जी से मेरा परिचय विगत ६ वर्षों का है। मैंने इनको एक ज्ञानी, अनुभवी, कर्मशील तथा स्पष्ट वक्ता के रूप में पाया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'राजस्थानी सहज व्याकरण' के प्रकाशन में आपका बहुत बड़ा योगदान है। आप राजस्थानी भाषा तथा साहित्य के प्रचार एवं प्रसार के लिए सदैव सचेष्ट एवं तत्पर रहते हैं।

परमपिता परमेश्वर से यह प्रार्थना है कि श्री जैथलिया जी हरदम तन्दुरुस्त- क्रियावान रहें और शतायु हों।

– नन्दलाल रूंगटा

रुगलाल सुराणा जैन
ओसवाल भवन
२बी, नन्दो मल्लिक लेन
कोलकाता-७०० ००६
मोबाइल : ९८३०६९०९८५

शुभकामना

कर्मयोगी श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के स्नेह का पात्र बन सका इसके लिए मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ। मैंने आपको निकट से देखा है और आपसे बहुत कुछ सीखा भी है।

आप सरल हृदय, स्पष्टवादी, चिन्तनशील, श्रमशील एवं साहित्य मर्मज्ञ हैं। आपने साहित्य जगत की जो सेवा की है उसे युगों तक भुलाया नहीं जा सकेगा। आप वर्षों पहले से ही निज काम-काज से निवृत होकर समाज एवं साहित्य की सेवा में लगे हुये हैं जो बहुत कठिन काम है। मोह-माया से दूर आप एक साधु प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। अहंकार से कोसों दूर आपका निश्छल जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी है। राजनीति में सक्रिय होने पर आपके जैसा सदाशयता का व्यवहार कम लोग ही कर पाते हैं। अनेक सामाजिक संस्थायें आपकी सूझ-बूझ, मार्ग दर्शन एवं संरक्षण से पल्लवित-पुष्पित हुई हैं और हो रही हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आपको लम्बी आयु प्रदान करे एवं स्वस्थ रखें ताकि वे हमारा मार्ग-दर्शन एवं समाज की निरन्तर सेवा करते रहें।

– रुगलाल सुराणा जैन

केशव दीक्षित

केशव भवन, १ए, अभेदानन्द मार्ग

कोलकाता- ७००००६

मो.: ९४७४८९२४०४

शुभकामना

श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया जी से कब से मेरा संबंध है यह बताना कठिन है लेकिन अंदाज से यह कह सकता हूँ कि पचास या पचपन वर्षों से उनके साथ कार्य करने का मेरा भाग्य रहा है। १९५० के जून महीने में मैं कलकत्ता आया तथा श्रद्धेय श्री एकनाथजी रानाडे के आदेश के अनुसार बाँगड़ बिल्डिंग में कमरा नं ५१ में मेरा आवास स्थान रहा। मैं लगभग १९५७ तक बड़ाबाजार क्षेत्र में कार्यरत रहा। बाद में बंगाल के जिलों में भ्रमण करने का आदेश हुआ लेकिन मेरा बड़ाबाजार के साथ लगाव सदा ही रहा और तब से जुगलजी से परिचय और सहकारिता से कार्य करने का सिलसिला आज तक चल रहा है।

प्रथम उनसे संबध रहा मैं प्रचारक और वे एक कार्यकर्ता इस नाते। किन्तु मैं आज अनुभव कर रहा हूँ कि इतने वर्षों में विभिन्न प्रकार के दायित्व निभाते हुये उनका कद बहुत ऊंचाई को प्राप्त हुआ है। अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द कई स्थानों पर जाते थे भाषण देने के लिये उनके उस भ्रमण काल में एक अँसिच्वेम नाम के शहर में श्रोताओं के सामने स्वामीजी का परिचय देते समय उस व्यक्ति को लगा कि स्वामीजी की ऊँचाई बहुत है। उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसको लगा स्वामीजी लगभग ४० फीट की ऊँचाई पा गये हैं। वह बेचारा घबरा गया और मंच से नीचे उतर कर उसने अपना काम पूरा किया। मेरी स्थिति भी उसी प्रकार की हो गयी है। मैं अनुभव कर रहा हूँ कि श्री जुगल जी का कद वास्तव में काफी ऊँचा हो गया है और इसके कारण मुझे आनंद हो रहा है।

इसका मूल कारण है उनके स्वभाव की मधुरता। अपनी यह विशेषता उन्होंने कभी भंग नहीं होने दी। सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करते समय कई बार मतभेदों के प्रसंग भी आते हैं। उस कारण कभी-कभी गरमाहट भी होती है और मन भी बिगड़ते हैं। संस्थाएं भी टूटती हैं। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय का कार्यभार संभालते समय उनके सामने भी ऐसे प्रसंग आये होंगे लेकिन उस स्वभाव के कारण कार्यकर्ता टूटे नहीं किन्तु बढ़ते गये और कई संस्थाओं का कार्य करने के लिए प्रेरित हो गये। आज ऐसे देव दुर्लभ कार्यकर्ताओं की बड़ी टोली उन्होंने तैयार की है जो विभिन्न संस्थाओं को सम्हाल रही है।

श्री जुगलजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य में सफलतापूर्वक कार्य करते रहे हैं। जब श्रद्धेय सुंदरसिंह भंडारीजी ने उन्हें आग्रहपूर्वक भारतीय जनता पार्टी का कार्य करने का आग्रह किया तो उसमें भी सराहनीय कार्य किया। आज वे भारतीय जनता पार्टी के चुने गिने कार्यकर्ताओं में केवल प्रादेशिक स्तर पर नहीं तो अखिल भारतीय स्तर पर भी सम्मान पा गये और भी नाना प्रकार के क्षेत्रों में उन्होंने ऊँचाई प्राप्त की है। प्रभावी वक्ता के रूप मे आज सभी उनको जानते हैं। सिद्धहस्त लेखक, संगठक, नवीन कल्पनाओं को वास्तविक रूप देने वाले सफल कार्यकर्ता के रूप में वे आज हम सबों के सामने प्रेरणा स्वरूप हैं।

७५ वर्ष पूर्ति के उपलक्ष्य मे सम्मानित होने से पूर्व विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार की संस्थाओं ने उनको सम्मानित कर स्वयं को ही सम्मानित किया है।

भगवान उन्हें आरोग्यपूर्ण आयुष्य प्रदान करें जिसके कारण और भी अधिक संख्या में समाज के लोग स्वधर्म और स्वदेश की भलाई के लिये कार्य प्रवण हो सकेंगे। मेरी सदिच्छाएँ, शुभकामनायें सदा सर्वदा के लिये।

इति शुभं अस्तु। तुष्टिरस्तु। स्वस्तिरस्तु। गृहीते देशकार्य साफल्यमस्तु।

– केशव दीक्षित

नन्दकुमार लढ़ा

पूर्व सचिव, विधाननगर माहेश्वरी सभा

१-ई, बर्मन स्ट्रीट, २ तल्ला, कोलकाता-७

मो.: ९८३१२०८०७१

शुभकामना

सन् १९९५ ई. से जब से मेरा आदरणीय जुगलजी से सम्पर्क आया, वे मेरे लिए प्रणम्य रहे हैं। वे सामाजिक कार्यों में ही नहीं, मेरे व्यक्तिगत जीवन में भी सदैव मेरा मार्गदर्शन करते रहे हैं। मैं आपके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के प्रति नतमस्तक हूँ। आपकी ७५वीं वर्षपूर्ति पर हृदय से अभिनन्दन करते हुए प्रभु से आपके दीर्घायु होने की प्रार्थना करता हूँ।

– नन्दकुमार लढ़ा

महावीर प्रसाद नारसरिया

पूर्व अध्यक्ष: राजस्थान परिषद

५४/४-सी, स्ट्राण्ड रोड, कोलकाता-६

दूरभाष : (०३३) २२५९२४४५

१० जुलाई २०१२

हार्दिक शुभकामना

मेरा सम्पर्क जुगल जी से गत ५० वर्षों से अधिक समय से है। कलकत्ता, राजस्थान ही नहीं पूरे देश में सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक सेवा के क्षेत्र में अत्यन्त आदर एवं श्रद्धा से लिया जाने वाला एक सुपरिचित नाम है श्री जुगल किशोर जी जैथलिया (संक्षेप में जुगलजी)। जो व्यक्ति एक बार आपके सम्पर्क में आया वह सदा के लिए आपका प्रशंसक होकर रह गया।

कलकत्ता व छोटीखाटू (राजस्थान) के कार्यकर्ताओं का यह परम सौभाग्य है कि आज तीव्र गति से अवमूल्यन होते हुए सार्वजनिक जीवन में श्री जैथलियाजी जैसा प्रेरक व मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित दृढ़ व्यक्तित्व हम सबके साथ है। एक बार किसी कार्य से जुड़े तो उस कार्य को पूरा होने तक कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखते। यह ७५ वर्ष की उम्र में भी उनका सहज स्वभाव बना हुआ है।

श्री जैथलियाजी एक कुशल संगठनकर्त्ता भी हैं। इनके साथ कई गतिविधियों में सैकड़ों युवकों का योगदान इस समय का बड़ा श्लाघ्य कार्य है। चाहे पुस्तकालय हो, चाहे कोई परिषद व चाहे कोई सभा गोष्ठी अथवा सम्मेलन, सबको साथ रखकर प्रोत्साहित कर उनको कार्य का श्रेय प्रदान कर ये स्वयं गौरव का अनुभव करते हैं।

श्री जैथलियाजी विरल व्यक्तित्व के धनी हैं। अनेक सामाजिक-साहित्यिक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त करके भी वे सदैव नम्रता का आभास देते हैं।

श्री जैथलियाजी का काफी बड़ा जन सम्पर्क है। उदारमना उद्योगपतियों से लेकर साधारण कार्यकर्त्ताओं को भी सम्मान देकर उन्हें संस्थाओं से जोड़ कर कार्य को बढ़ाने की सदैव ललक बनी ही रहती है।

राजस्थान परिषद के तत्वावधान में महाकवि श्री कन्हैयालाल सेठिया के सम्पूर्ण साहित्य को आपने चार खण्डों में सम्पादित कर प्रकाशन का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया है। आप मेरे साथ गत २५ वर्षों से राजस्थान परिषद के माध्यम से जुड़े हुए हैं। एक तन, एक मन की भांति सदैव आत्मीय सम्बन्ध रहा है। आज राजस्थान परिषद् का जो गौरवशाली इतिहास है वह श्री जैथलियाजी की सबको एक सूत्र में पिरोनेवाली निष्ठा का ही प्रतिफल है।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ऐसे कर्मयोगी का अमृत महोत्सव आयोजित कर उनका हार्दिक अभिनन्दन करने जा रहा है।

समारोह की सफलता हेतु हार्दिक मंगल कामनाएँ प्रेषित करते हुए मैं प्रभु से श्री जैथलिया जी के दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

– महावीर प्रसाद नारसरिया

नन्दलाल सिंघानिया
७-बी, किरण शंकर राय रोड
कोलकाता-७०० ००१
मो.: ९८३१६८१९४७

शुभकामना

श्री जुगलजी के अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन के समाचारों से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मेरा उनसे सम्पर्क १९८० ई. में नेशनलिस्ट लॉयर्स फोरम के माध्यम से आया, जिसकी एक मीटिंग में उनके भाषण ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। उसके बाद जब भी सूचना मिलती है, मैं उन्हें सुनने जाता हूँ। उनके प्रयत्न से मैं १९९६ एवं २०११ ई. में विधानसभा चुनाव भी लड़ा। समाचार पत्रों में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित उनके लेखों को मैं बड़े शौक से पढ़ता हूँ।

भगवान उन्हें दीर्घायु दे एवं वे कीर्ति की नई ऊँचाइयों को छूते रहें यही प्रार्थना है।

– नन्दलाल सिंघानिया

शंकर शर्मा

संपादक: सत्संग पत्रिका

४, बड़तल्ला स्ट्रीट, कोलकाता-७

मोबाइल : ९८३१८२८००६

शुभकामना

श्री जुगलकिशोर जैथलिया जैसे व्यक्तित्व के लिए न तो स्मारक की आवश्यकता है, न किसी स्मृतिग्रंथ की, क्योंकि उनका जीवन तो स्वयं ही एक प्रकाश स्तंभ है। उनका अक्षय स्मारक तो उनके अगणित सहयोगियों, मित्रों एवं कृतार्थ होने वाले कितने ही जनों की मानसभूमि में बना हुआ है। ऐसे पूज्य जनों की संगति में एक अनिवर्चनीय आनन्द की प्राप्ति होती है। ललकार भरी बुलन्द आवाज, श्वेत पोशाक, सादा जीवन, उच्च विचार के धनी, मान-सम्मान, नाम-यश की कामना से रहित, गौरवर्णी, सुगठित काया वाले आदरणीय जैथलियाजी से मेरा परिचय सन् १९८४ में पूर्व पार्षद श्री ओमप्रकाश पोद्दार ने करवाया था। भाई ओमी पोद्दार ने मुझे कहा था चारों तरफ अकर्मण्यता की मादकता में जब लोग स्वार्थ के पालने में झूल रहे हैं तो ऐसे ही महापुरुष जीवन में श्रेष्ठ मार्ग दिखाते हैं। ओमीभाई ने मुझे ज्ञान दिया था कि मैं जब कभी जैथलियाजी से मिलूं, उनकी पग-धूलि जरूर ले लूँ। जब सन् १९९२ में मैंने भाजपा के टिकट पर उत्तर हावड़ा से काउंसिलर का चुनाव लड़ा तो इन्होंने मेरे राजनैतिक पर्यवेक्षक की भूमिका निभाई। लगभग तीन दशकों के सानिध्य में श्रद्धेय बाबूजी का प्रेम हमेशा मुझ पर छलकता रहा है। मुझे अपने संबंधों की अंतरंग प्रगाढ़ता देकर मेरे लिए वे श्रद्धेय बन गए हैं।

विभिन्न साहित्यिक सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं में संलग्न जैथलियाजी निस्वार्थ भाव से अग्रणी भूमिका निभाते हुए भी स्वयं को किसी के सामने प्रकट नहीं करते। इनके एक और गुण का मैं कायल हूं। ये कभी भी कटु वचन नहीं बोलते। वाणी का संयम रखने वाले जैथलियाजी अक्सर कहते हैं कि इसी वाणी या जिव्हा से आप शत्रु या मित्र बना सकते हैं, अभीष्ट की सिद्धि कर सकते हैं और इसी से हम अपना बना बनाया कार्य भी बिगाड़ सकते हैं। ईश्वर के इस मूल्यवान वरदान का अपव्यय मूल्यहीन विषयों पर क्यों करें ? अतिशय शिष्टता व सरल स्वभाव पर नियम और अनुशासन में दृढ़, सच्चे कर्मयोगी की तरह हर खट्टे-मीठे अनुभव को आत्मसात करने वाले जैथलियाजी के कार्य के प्रति निष्ठा को सर्वदा प्रणाम करते हुए उनके स्वस्थ दीर्घ और मंगल जीवन की कामना करता हूँ।

– शंकर शर्मा

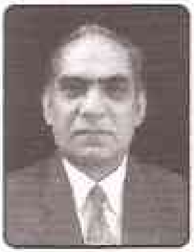

कमल किशोर पारीक

उप निदेशक (वित्त), बिरला एज्यूकेशन ट्रस्ट

विद्या विहार, पिलानी (राज.)

मोबाइल: ९८२९३४२८२७

शुभकामना

हम सभी के लिये बड़े हर्ष की बात है कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री जुगलकिशोर जैथलिया आगामी २ अक्टूबर २०१२ को अपने जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा श्री जैथलिया जी के इस अमृत महोत्सव को समारोह पूर्वक मनाने एवं इस आयोजन के सुअवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन करने के निर्णय पर मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्री जैथलिया जी को उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करें। मैं करीब ३५ वर्षों से उनके सम्पर्क में हूँ एवं उनका स्नेह मुझे बराबर मिलता रहा है।

श्री जैथलिया जी का साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राष्ट्रप्रेम आदि क्षेत्रों में एक अनूठा एवं सुदीर्घ योगदान रहा है। अपने ग्राम छोटीखाटू को निरंतर नई दिशा देने के लिये वे सदैव तत्पर रहते हैं एवं स्थायी रूप से रह रहे वहाँ के निवासियों से पूर्णतया इन विषयों पर चर्चा कर उन्हें कार्यान्वित करने में अपना पूर्ण योगदान देते हैं जिससे परिलक्षित होता है कि अपनी जन्मभूमि के लिये आज भी उनका विशेष लगाव है।

श्री जैथलियाजी का जनसम्पर्क सराहनीय है। एक दफा उनके सम्पर्क में आ जाने के बाद वे लगातार उनसे अपना सम्पर्क बनाये रखते हैं तथा त्यौहार एवं अन्य अवसरों पर वे अपनी शुभकामनाएँ नियमित रूप से ज्ञापन करने में कभी भी नहीं चूकते। सामने वाले की योग्यता को परखने में वे किसी जौहरी से कम नहीं हैं तथा उसकी योग्यता को समाज एवं देश के हित में लगाने की पूरी कोशिश करते हैं। हर वक्त उनके मन में यही विचार चलता रहता है कि कोई न कोई समाज एवं देश हित का कार्य चलता रहे, इसके लिये हमेशा मैंने उनको उत्साहित एवं तत्पर देखा है। इतने व्यस्त रहते हुए भी उनका समय प्रबंधन (टाइम मैनेजमेंट) बड़ा जबरदस्त है। किसी भी समय उनसे सम्पर्क करने पर वे अपनी सलाह एवं योगदान के लिये तैयार रहते हैं। वास्तव में उनका जीवन कर्मयोगी का है। उनकी सकारात्मक समझ हम सभी के लिये अनुसरणीय है। मैं पुन: उनकी दीर्घ आयु एवं स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ।

– कमल किशोर पारीक

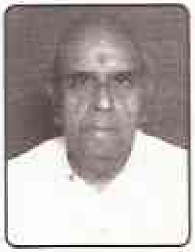

दुर्गा प्रसाद नाथानी

पूर्व पार्षद: कलकत्ता नगर निगम

१७, सरकार लेन, कोलकाता-७०० ००७

मोबाइल: ९८३००३१११८

शुभकामना

जुगलजी से मेरा करीब ३० वर्षो से घनिष्ठ सम्वन्ध रहा है। १९८२ की बात है विधान सभा चुनाव के लिये एक सशक्त प्रत्याशी की खोज हमलोग जोड़ाबागान के लिये कर रहे थे। कई नामों के बीच में जैथलियाजी की बात उठी। सभी का ऐसा मत था कि वे अच्छे प्रत्याशी हैं और सफल भी हो सकते हैं पर यह शंका भी बनी हुई थी कि संघ का काम छोड़कर वह राजनीति में नहीं आयेंगे। पार्टी के केन्द्रीय नेता श्री सुन्दर सिंह भंडारी जी ने जुगलजी के सामने प्रस्ताव रखा और अपने अधिकारियों से पूछ कर जुगलजी ने हाँ भर दी। सभी ने सब प्रकार की चेष्टा की। हमलोग चुनाव जीत तो नहीं सके पर उसी समय से भारतीय जनता पार्टी को एक सशक्त नेता मिल गया। जुगलजी अच्छे वक्ता हैं, स्पष्ट विचारों वाले है, अपनी बात को दृढ़ता से रखने का उनका स्वभाव है और जो भी जिम्मेदारी सम्भालते है उसे निष्ठापूर्वक निभाते है। वे चुनाव तो हारे पर उन्होंने हिम्मत नही हारी और उसी समय से भाजपा के कामों में निष्ठा के साथ लग गये।

संस्थाओं में सबसे ज्यादा समस्या धन की रहती है और जुगलजी ने वही काम सम्भाल लिया और पार्टी के काम के लिये सुचारु रूप से धन संग्रह की व्यवस्था उन्होंने तब से अब तक लगातार की। उनके आने के बाद पार्टी का कोई भी काम कभी भी पैसे के लिये नहीं रुका। साथ ही जुगलजी खर्च में लगे हुए हर पैसे का पूरा हिसाब रखने की चेष्टा करते रहते और बाकी लोगों को भी इसके लिये प्रेरित करते रहते। जुगलजी से देश की राजनीति, राष्ट्र की समस्याओं और पार्टी के कार्यों के बारे में मेरी चर्चा चलती रहती है। कभी सहमति होती तो कभी मतभेद भी सामने आता रहता है पर कभी मन भेद नहीं हुआ। मैंने हर समय उन्हें केवल प्रेमी और मित्र ही नहीं बल्कि भाई की तरह माना है। ऐसे कर्मठ व्यक्ति का अमृत महोत्सव ७५ वर्ष पूरा होने पर धूमधाम से मनाया जा रहा है यह अत्यन्त हर्ष का विषय है। भगवान उन्हें शतायु बनायें यह प्रार्थना है।

– दुर्गा प्रसाद नाथानी

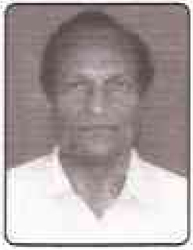

द्वारका प्रसाद गनेड़ीवाल
पी-४, कलाकार स्ट्रीट
कोलकाता-७००००७
दूरभाष : २२७४ ४४६६

२३ जुलाई, २०१२

शुभकामना

श्रद्धेय भाई जुगलजी जैथलिया का अनोखा व्यक्तित्व है, इनमें अदभुत विशेषताएँ हैं, हमेशा से कर्मठ, निष्ठा, लगन से काम किये हैं। इनमें अगाध सादगी एवं सरलता है, इनकी सभी बातों में इतनी गहराई रहती है कि सुनने वाले मुग्ध हो जाते हैं।

अपने परिवार में इकलौते पुत्र होने पर भी काफी वर्षों से जीवन को समाज के उत्थान में लगाने वाले इनके कार्यों को देखते हुए जो भी सम्मान मिले, उनसे काफी ज्यादा इन्होंने काम किया है।

राजस्थान के सर्वमान्य योद्धा महाराणा प्रताप की मूर्तियों की कोलकाता के दो प्रमुख स्थानों पर स्थापना एवं उनकी जयन्ती पर प्रतिवर्ष मुझे भी इनके साथ प्रातः शेक्सपीयर सरणी में जाने का सौभाग्य एवं विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

भारतवर्ष की महान विभूतियों में से एक रत्न हैं भाई जुगलजी जैथलिया और ऐसी ही विभूतियों के साथ इनका जीवन समर्पित रहा है। इनमें राष्ट्रीय भावना का जुझारूपन हमेशा साफ झलकता है। इनके बारे में ज्यादा लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है।

ऐसे साहित्यिक, सामाजिक एवं समर्पित जीवन वाले भाई जुगलजी के अमृत महोत्सव पर बार-बार प्रणाम एवं हृदय से बधाई। हम सभी को उनसे प्रेरणा मिलती रहे और वे इसी तरह अपना शताब्दी महोत्सव मनाएँ, यही प्रभु से प्रार्थना है।

– द्वारकाप्रसाद गनेड़ीवाल
एवं समस्त परिवार

मीना देवी पुरोहित
पूर्व उपमेयर एवं पार्षद वार्ड नं. २२
४२, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट, कोलकाता-७
मो: ९८३०७१२२९७

शुभकामना

माननीय जुगलकिशोर जैथलिया जी के जन्मदिवस के ७६वें वर्ष में प्रवेश पर हार्दिक-शुभकामना एवं अभिनन्दन। वे शतायु हों इसी मंगल कामना के साथ, जैथलिया जी के जन्म के ७५ वर्ष के पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव समारोह के आयोजन के लिए बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं सभी शुभेच्छु-जनों को भी बधाई।

श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया असाधारण व्यक्तित्व के धनी, मृदुभाषी के साथ-साथ हमेशा से ही सभी के बीच में घुलमिल कर रहने वाले और हमेशा आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देनेवाले कर्मयोगी पुरुष हैं। सामाजिक चेतना का प्रश्न हो या राजनीतिक जागृति की, जैथलिया जी ने हमेशा विभिन्न माध्यमों से कुशल संगठक के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज की है।

साहित्य के प्रति उनका अगाध प्रेम जगजाहिर है; साहित्य में ही उनकी आत्मा बसती है। आज के आधुनिक युग में भी १२ से १५ घण्टे तक अपनी लेखनी के माध्यम से काव्य एवं साहित्य साधना द्वारा अनेकों पुस्तकों की रचना कर आज भी समाज के संचेतना-जागृति के लिए अबाध रूप से कार्य कर रहे हैं। अपना सर्वस्व देशहित एवं मानवमात्र की सेवा में समर्पित कर श्री जैथलिया जी पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद को अंगीकार कर एवं श्री विष्णुकान्त शास्त्री जी से प्रेरणा एवं आशीर्वाद प्राप्त कर आजतक अनवरत रूप से एक सच्चे कर्मयोगी पथिक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

उनका मार्गदर्शन हमेशा से ही मुझे प्राप्त रहा है। समय-समय पर अपने सुझावों द्वारा एक अग्रज के रूप में उनकी भूमिका हमेशा सकारात्मक रही है। आगे भी उनका आशीर्वाद मिलता रहेगा इसी के साथ, श्री जैथलिया जी के ७६ वें जन्म दिवस एवं अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पुनः शुभकामनाएँ एवं बधाइयाँ।

– मीना देवी पुरोहित

सुनिता झंवर
पार्षद, वार्ड-४२
मोबाइल : ९८३०२ ३१७१५

२५ अगस्त २०१२

शुभकामना

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई की आगामी २ अक्टूबर को श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय श्रीमान् जुगलकिशोर जी जैथलिया के ७५ वर्ष पूर्ति पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे पार्षद चुने जाते हुए लगभग २० वर्ष होने जा रहे हैं, मैंने जाना व अनुभव किया है कि श्री जुगलकिशोरजी उम्र के इस पड़ाव में भी निरन्तर समाज-राष्ट्र की सेवा हित विभिन्न रूपों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। साहित्यिक क्षेत्र में तो उनकी अपनी एक मिशाल है।

कोलकाता में प्रवासी राजस्थानियों में एक प्रबुद्ध चिन्तक के रूप में आपका एक विशिष्ट स्थान है। फिर वह चिन्तन चाहे मारवाड़ी भाषा को संविधान में मान्यता के सम्बन्ध में हो या समाज-राष्ट्र हित कोई भी अन्य कार्य। उनका हर कार्य निस्वार्थ भाव से प्रेरित होता है।

राजनैतिक दल में कार्य करते हुए भी अपनी सफेद चद्दर को कभी दाग नहीं लगने दिया। हम छोटे-छोटे कार्यकर्त्ताओं के लिए सीखने-समझने व ग्रहण करने लायक है उनका सारा जीवन।

मैं प्रभु से कामना करती हूँ की वे हमारे बीच रहकर, अपनी युवा कर्मशक्ति से हम सबका निरन्तर मार्गदर्शन करते रहें।

आपके स्वस्थ व दीर्घ जीवन की मंगल कामना करती हूँ। प्रकाशन की सफलता के लिए अग्रिम शुभेच्छा प्रकट करती हूँ। धन्यवाद !

– सुनिता झंवर

मदनलाल जोशी
५२२, सिटी सेन्टर
१९, सिनागोग स्ट्रीट, कोलकाता-१
मोबाइल : ९८३१०६७११०

२० जुलाई, २०१२

युग पुरुष श्री जैथलियाजी

बड़ा ही गर्व होता है जब राजस्थान की धरा का व्यक्तित्व बंगाल प्रदेश में अपने नाम को इस प्रकार कामयाबी के शिखर पर पहुँचा दे कि प्रत्येक समाज तथा संस्थाएँ श्री जैथलियाजी के सान्निध्य को प्राप्त करने हेतु लालायित रहे। श्री जैथलिया जी ही ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने परम श्रद्धेय विद्वान ब्रह्मलीन श्री विष्णुकांत जी शास्त्री की सारगर्भित बातों का पूर्णत: अनुसरण किया है। ओजस्वी वाणी एवं सफलतम नेतृत्व के धनी श्री जैथलियाजी के समकक्ष हमारे इर्द-गिर्द कोई नहीं है।

श्री जैथलिया जी ने हमारे टेक्सटाइल सेक्टर की संस्थाओं के आतिथ्य को कई बार स्वीकार किया है तथा इस सेक्टर के उन पहलुओं पर प्रकाश डाला जो बिलकुल जानकारी में नहीं थे। प्रत्येक क्षेत्र में अपनी गूढ़ जानकारी के कारण आपको विविध संस्थाओं में बहुत सम्मान मिलता है तथा आपकी दी गयी जानकारियों का वे प्रचार-प्रसार भी करते हैं।

श्री जैथलियाजी जैसे सादगीपूर्ण व्यक्तित्व ने महाराणा प्रताप की मूर्ति लगाने का जो कार्य किया वास्तव में एक अदम्य साहसिक कदम है। परम श्रद्धेय स्व. श्री कन्हैयालालजी सेठिया के ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार एवं लेखन का जो अद्भुत कार्य किया, राजस्थानी समाज आपको कभी भुला नहीं पायेगा।

मुझे तो श्री जैथलिया जी का निरन्तर सहयोग प्राप्त हो रहा है तथा आयोजनों हेतु विचार-विमर्श कर उनकी विचारधाराओं का अनुसरण करना बेहद सफलता प्रदान करता है। ऐसे युगपुरुष श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के 'अमृत महोत्सव' पर हम सभी अत्यन्त आह्लादित हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इनकी कृपा सदैव हमारे ऊपर बनी रहे।

– मदनलाल जोशी

प्रहलाद राय अग्रवाल

चेयरमेन, रूपा एण्ड कम्पनी लि.

१, हो-ची-मिन्ह सरणी

कोलकाता-७०००७१

दूरभाष : (०३३) ३०५७३१००

१९ जुलाई, २०१२

सहज व्यक्तित्व के धनी हैं श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि आप ७८वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं और श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा 'अमृत महोत्सव' अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया जा रहा है, आपको बहुत बहुत बधाई।

भाई जुगलकिशोर जी मेरे सहपाठी रहे हैं। इन्होंने श्रम और मिलनसारिता से अपनी सामाजिक पहचान बनाई है। सादगी इनका पर्याय है। अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने के बाद सामाजिक कार्मों में समय देना इनकी महानता है। ईश्वर की उनपर बड़ी अनुकम्पा है। वे इस उम्र में भी सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनीतिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। जन कल्याण का कोई भी कार्य हो तो उसमें मदद करने में उनकी तत्परता अनुकरणीय है। व्यवहार में सरलता, कार्य में निष्ठा, सहयोग का हाथ उनकी प्रकृति के अभिन्न अंग बन गये हैं। गृहस्थ-जीवन में बहुत सी कठिनाइयाँ होती हैं। व्यक्ति अपने पराक्रम से जीवन का संचालन करता है। ऐसे में कई बार धूप-छाँव भी बहुत देखनी होती है। फिर भी संयम के साथ और ईश्वर पर आस्था रखते हुए यदि कोई समाज का हित करता है तो वही व्यक्ति सही मायने में सम्मान करने योग्य है। प्रसन्नता की बात है कि हमारे श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया ऐसे ही सज्जन व साधु पुरुष हैं, जो समाज सेवा को अपने जीवन का आधार मानते हैं।

मैं श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ। सभी को उनके जीवन से सीख एवं प्रेरणा लेनी चाहिये।

– प्रहलाद राय अग्रवाल

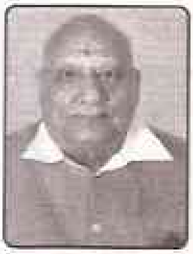

बाबूलाल धनानिया
अध्यक्ष: हरियाणा नागरिक संघ
४, फेयरली प्लेस, कमरा-१२८
कोलकाता-७००००१
मोबाइल : ९८३००६२५७१

१ सितम्बर २०१२

शुभकामना

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय महान समाजसेवी, परम सम्माननीय श्री जुगलकिशोर जैथलियाजी के ७५ वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर अमृत महोत्सव के रूप में उनका अभिनंदन करने जा रहा है एवं साथ ही इस पावन अवसर पर उनके सम्मान में अभिनन्दन ग्रंथ भी प्रकाशित कर रहा है। प्रभु कृपा से ही ऐसे आनन्द के अवसर आते हैं जहाँ व्यक्ति को अपने शुभ चिंतकों की शुभकामनाएं प्राप्त होती हैं।

श्री जुगलकिशोरजी से मेरा परिचय लगभग ३० वर्ष पुराना है जब हम लोग बड़ाबाजार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में साथ-साथ प्रशिक्षण लेते थे। आगे चलकर अपनी प्रखर प्रतिभा के कारण आपने अपना बहुआयामी व्यक्तित्व चरितार्थ किया। एक और आप यहां आयकर के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं, वहीं उच्चकोटि के समाजसेवी भी हैं। महानगर की कई समाजसेवी संस्थाओं का संचालन एवं उनकी सेवा से जुड़े हैं। उच्चतम वक्ता, साहित्यकार और संपादक हैं। साथ ही सक्रिय राजनीति में रहकर राष्ट्र सेवा कर रहे हैं।

मुझे हमेशा उनका प्यार और स्नेह मिला है। प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि वे शतायु हों ताकि मानवता की अधिक से अधिक सेवा कर सकें।

– बाबूलाल धनानिया

स. गुरचरन सिंह गिल
राष्ट्रीय अध्यक्ष : राष्ट्रीय सिख संगत
९५-हीरा नहर, डी.सी.एम.
अजमेर रोड, जयपुर (राज.)
मोबाइल : ०९४१४०२३२९७

शुभकामना

बड़े ही हर्ष का विषय है कि जुगलकिशोर जी अपने आयु के ७५ स्वर्णिम बसंत पूर्ण कर रहे हैं तथा यह और भी आनन्द का विषय है कि कुमारसभा व अन्य विभिन्न संस्थायें उनके अमृत जन्म दिवस २ अक्टूबर २०१२ को भव्य आयोजन कर श्री जैथलिया जैसे तपःपूत की साधना का सम्मान कर स्वयं को गौरवान्वित कर रही है। श्री जैथलिया जैसे मृदुभाषी, सर्वसहयोगी, सादगीपूर्ण जीने वाले लोग समाज में विरले ही पैदा होते हैं।

वैसे राजस्थान के लोगों की यह विशेषता है कि वे रोजगार हेतु देश के किसी कोने में भी गये हों, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में जहाँ वे वहाँ के समाज की सेवा करते हैं तथा वहाँ के समाज के अभिन्न अंग बनकर रहे हैं, वहीं वे अपनी मातृभूमि से भी अटूट नाता बनाये रखते हैं। वहाँ स्थापित होकर भी अपनी मातृभूमि के लिये उतना ही प्यार दिल में संजोकर रखते हैं, ऐसा प्रत्यक्ष दर्शन मुझे २७ मार्च २०११ ई. को ६२ वें राजस्थान स्थापना दिवस के उपलक्ष में कोलकाता में आयोजित राजस्थान परिषद् के कार्यक्रम में हुआ। अपने गांव-कस्बों के नाम पर आज भी कोलकाता में लगभग ६० संस्थायें अपनी मिट्टी को समय-समय पर याद करती हैं तथा राजस्थान के स्थापना दिवस एवं महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर राजस्थान परिषद के बैनर तले सामूहिक कार्यक्रम करती हैं। यूं तो कार्यक्रम सभी के सहयोग से होता है लेकिन श्री जुगलकिशोर जी इसमें न केवल फूलों को पिरोने वाले धागे की तरह हैं बल्कि इस संगठन की रीढ़ की हड्डी हैं जो सारे शरीर को खड़ा भी रखती है, वही सुष्मना नाड़ी को अपने साथ रख सारे शरीर को संवेदना युक्त बनाकर रखती है। मैं हमारे कार्यकर्ता सरदार सत्येन्द्र सिंह अटल का भी आभारी हूँ जिनके माध्यम से श्री जैथलिया जी को निकट से देखने व समझने का मौका मिला। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे एक जाने-माने साहित्यकार, सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं राजनेता तथा कुशल संगठक हैं। मैं उनके स्वस्थ दीर्घायु के लिए अकाल पुरख से अरदास करता हूँ।

– गुरचरन सिंह गिल

सत्यनारायण होलानी
अशोका इन्फोरमेशन सिस्टम्स
सी.टी.सी.३७९, ब्लाक-सी
१६०, पार्क लेन, सिकन्दराबाद-५००००३
मोबाइल : ०९८८५१२४६०७

१८ जुलाई २०१२

शुभकामना

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय सच्चे देश भक्त, निःस्वार्थ समाज सेवी, साहित्य प्रेमी एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता भाई श्री जुगलजी जैथलिया के ७६ वें जन्म दिवस पर अमृत महोत्सव अभिनन्दन समारोह आयोजित करने जा रहा है।

ऐसे व्यक्ति को जितना सम्मानित किया जाये, उतना ही थोड़ा है। कुशाग्र बुद्धि, सरल स्वभाव एवम् कर्मयोगी भाई श्री जुगलजी को सहपाठी, सहयोगी एवम् मार्गदर्शक के रूप में पाकर मुझे बड़े गर्व का अनुभव हो रहा है। उनकी प्रेरणा एवम् प्रयास से सैकड़ों कार्यकर्त्ता तैयार हो गये। उनका यह प्रयास अभी भी जारी है।

प्रभु से प्रार्थना है कि ऐसे व्यक्ति को शतायु करें एवम् उनको स्वस्थ बनायें रखें। अभिनन्दन समारोह की सफलता की शुभकामनाओं के साथ -

- सत्यनारायण होलानी

सुशील सितानी

संस्थापक मंत्री

अग्रवाल परिणय-सूत्र समिति

१, नारायण प्रसाद बाबु लेन

कोलकाता-७००००७

मोबाइल: ९४३२२२२४०२

शुभकामना

जुगलकिशोर जी जैथलिया वर्तमान समय में सम्मानित, प्रतिष्ठित समाजसेवकों में सर्वोच्च स्थान पर हैं। आप सौम्य, सरल, मिलनसार, शान्त स्वभाव के हैं। कथनी करनी एक, समय की पाबन्दी इत्यादि गुणों से आप भरपूर हैं। आपने हमेशा कार्यकर्त्ताओं को सम्मान देकर परख कर उन्हें आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है। निस्वार्थ सेवा भावना से संघ परिवार, भाजपा, कुमारसभा पुस्तकालय, राजस्थान परिषद् इत्यादि अनेक संस्थाओं से जुड़ कर उन्हें आगे बढ़ाने में आपका योगदान रहा है। आपके प्रयासों से ही आज मध्य कोलकाता में चेतक पर विराजमान महाराणा प्रताप की भव्य मूर्ति - पार्क एवं सड़क का नामकरण हुआ है। आपके प्रयास लगन से ही आज कुमारसभा पुस्तकालय का पूरे भारत में सुनाम है। आपने हमेशा विकास मार्ग को चुन कर काम किया है।

भारत के कई सांसद, मंत्री, उपराष्ट्रपति तक आपके निमन्त्रण पर कोलकाता के कार्यक्रमों में पधारे हैं। आपकी ऐसी ही लगन बनी रहे। यह मेरी हार्दिक इच्छा है। प्रभु से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु एवं निरोगी रहें।

– सुशील सितानी

शंकरलाल परसावत
डीडवाना विकास परिषद् समिति
डीडवाना-३४११०३ (राजस्थान)
मोबाइल : ०९९१८४७७३७१

शुभकामना

प्रसन्नता का विषय है कि हमारे अपने, हमारी अपनी डीडवाना तहसील के छोटीखाटू ग्राम के मूल निवासी, सम्माननीय श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के जीवन के ७५ बसन्त पूर्ण होने पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा उनके ७६ वें जन्म दिवस को समारोह पूर्वक एक अमृत महोत्सव के रूप में मनाने का सुनिश्चय किया गया है।

निराभिमानी श्री जैथलिया जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से, उनके सम्पर्क में आया हर व्यक्ति सुपरिचित है। मृदुभाषी श्री जैथलिया जी ने एक निःस्वार्थ समाजसेवी एवं कुशल साहित्यकार के रूप में न केवल अपनी मातृभूमि एवं कर्मभूमि की ही सेवा की है, बल्कि आप उन दुर्लभ समाज शिल्पियों में है, जिन्होंने अपने क्षेत्र में लोकाचरण का एक ऐसा दीप प्रज्वलित किया है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र को प्रेरणा का संचार कर रहा है।

प्रभु इन्हें शतायु प्रदान करें और इनका कर्ममय जीवन निरन्तर हम सबका मार्गदर्शन एवं प्रेरणा देता रहें। इन्हीं शुभ एवं मंगल कामनाओं के साथ।

– शंकरलाल परसावत

मनोज कुमार स्वामी

सम्पादक: सूरतगढ़ टाइम्स

पुराना बस स्टैण्ड

सूरतगढ़-३३५८०४ (राज.)

मोबाइल: ९४१४५८०९६०

२० जुलाई २०१२

शुभकामना

आज आप सा री कागद मिल्यो। बांच'र जी सोरो हुयो कै आप 'महामानव' जुगलकिशोर जी जैथलिया री उमर रा ७५ बरस पूरा हुवणै पर २ अक्टूबर नै अमृत महोत्सव मना रैया हो। इण सारू आप सा नै हियै तणी बधाई अर घणां घणां रंग। जुगलकिशोर जी जैथलिया साचा कर्मयोगी है। आज रै बगत में जितो काम समाज, साहित्य अर मायड़ भाषा राजस्थानी सारु बै करण लागर्‌या है स्यात ही कोई करतो हुसी।

जैथलिया जी री अगुवाई में कन्हैयालालजी सेठिया समग्र, डॉ. राम मनोहर लोहियाजी जयप्रकाश नारायण जी, गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर सू म्हानै के आखै समाज ने रूबरु करवाया। आपरी देखरेख मे दो पुरस्कार अर पुस्तकालय रो संचालन, लखदाद है सा। इस्या महामानव कोई कोई हुवै है अर जैथलिया जी आपरै जीवन मे कम सूं कम सौ बरस ईयांई जीवै आ म्हारी परमात्मा सूं अरदास है। म्हारी उमर भी आं महामानव नै लागज्यै। जैथलिया जी ने भी अमृत महोत्सव री हियेतणी बधाई, मोकला मोकला रंग।

– मनोज कुमार स्वामी

हरिकृष्ण चौधरी
१, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट,
कोलकाता-७००००१
मोबाइल: ९८३००४३२१०

११ जुलाई २०१२

शुभकामना

श्रद्धेय श्री जुगल जी के ७६वें वर्ष में प्रवेश पर कुछ लिखने का आपका पत्र मिला। खुशी भी बहुत हुई क्योंकि काफी कुछ इस बहाने स्मृति पटल से खोजने का, याद करने का भी यह माध्यम बना।

मैं १९६२ ई. में कोलकाता आया था। १९६४ में हमने बांगड़ बिल्डिंग में आफिस किया। श्री जुगल जी का ऑफिस एकदम बगल में था तभी से हमारा परिचय हुआ जो काफी आत्मीय होता चला गया। वहाँ हमारा ऑफिस ७ वर्ष रहा पर बाद में भी सम्पर्क वैसा ही रहा। लगातार विभिन्न संस्थाओं में मिलना भी होता रहा। बातचीत भी होती रही। उनके व्यक्तित्व से प्रारम्भ से ही अत्यधिक प्रभावित रहा हूँ। उनकी भारतीयता, भारतीय-सामर्थ्य, हिन्दुत्व की पुनर्स्थापना, स्वाभिमान को बढ़ाना इन विषयों पर उनकी सूझ-बूझ, विचारधारा व समर्पित चिन्तन, विवरण व आन्तरिक श्रद्धा मुझे उनमें मिली। राष्ट्र का पुनरुत्थान कैसे हो इसमें उनका प्रयास सराहनीय है। हमारे विचारों में हर विषय पर समानता चाहे नहीं भी रही हों परन्तु वे हमेशा से मेरे लिए पूजनीय रहे हैं। कोलकाता के समाज में उनका बहुत अच्छा स्थान है। अनेक संस्थाओं से उनका जुड़ाव है।

ईश्वर से, हृदय से प्रार्थना है कि उनको लम्बी स्वस्थ आयु प्रदान करें।

– हरिकृष्ण चौधरी

श्याम लाल गुप्ता
श्याम स्टुडियो
१२२, रवीन्द्र सरणी,
कोलकाता-७००००७
मोबाइल: ९८३०९५६११८

शुभकामना

आदरणीय श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया (भाईजी) के लिये कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। हमारे चालीस वर्षों के संपर्क में जितना मैंने जाना और अनुभव किया है निवेदन कर रहा हूँ।

अपनी असाधारण प्रतिभा, विद्वता तथा स्वीकृत कार्य को पूर्ण निष्ठा से संपन्न करने के सहज स्वभाव के कारण आपने जीवन के विविध क्षेत्रों में अपार कीर्ति अर्जित की है। साहित्यिक क्षेत्र में तो अपने रचनात्मक अवदान के कारण आप सर्वदूर सुप्रतिष्ठित हैं।

धार्मिक व पारिवारिक परम्परा एवं विभिन्न क्षेत्रों के श्रेष्ठ जनों के साहचर्य से आपका जीवन निखरा है। प्रत्येक छोटे बड़े कार्य को दायित्वपूर्ण ढंग से सम्पन्न करने की आदत ने आपके दीप्त व्यक्तित्व का निर्माण किया है।

श्री जुगलकिशोरजी का श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के साथ अत्यन्त आत्मीय संपर्क है। पुस्तकालय ने अखिल भारतीय स्तर पर जो ख्याति अर्जित की है, उसमें भाई जी का बहुमूल्य योगदान है।

ये इनकी थोड़ी सी बाते हैं बाकी तो इनके गुणों पर पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है। ये जब ६० वर्ष के हुए थे तब मैंने अपने स्टुडियो में बुलाकर इनका अभिनन्दन किया था। आज प्रभु कृपा से अमृत महोत्सव का समय आया है तो मैं प्रभु से इनकी दीर्घायु की प्रार्थना करता हूँ।

– श्याम लाल गुप्ता

आत्माराम सोंथलिया
२३/२४, राधा बाजार स्ट्रीट
तृतीय तल्ला, कोलकाता-१
मोबाइल: ९८३१०२६६५२

१० अगस्त २०१२

शुभकामना

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि कर्मठ प्रतिभा के धनी श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया आगामी २ अक्टूबर २०१२ को अपने जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। जुगलजी से मेरा परिचय छात्र जीवन में ही लॉ कॉलेज में सहपाठी के रूप में हुआ। बाद में श्री महावीरजी नारसरिया के साथ श्री जुगल जी से प्राय: सामाजिक समारोहों में मिलते रहने तथा उनके विचारों को सुनने तथा उनकी कार्यशैली को देखकर उनसे आत्मीयता और अधिक हो गई। सामाजिक के साथ-साथ अपनी माटी, संस्कार व भाषा के प्रति लगाव होना इस बात का परिचायक है वह व्यक्ति निश्चित रूप से अद्भुत व विलक्षण प्रतिभा का धनी है। ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी हैं जुगलजी। जीवन के ७५ बसंत में से ५० वर्ष से अधिक का समय उन्होंने पूर्ण आत्मीयता व लगन के साथ राष्ट्र व समाज को दिया है और दे रहे हैं। राजस्थानी भाषा के प्रति उनका लगाव तो जग जाहिर है। राजस्थान की शान स्व. कवि कन्हैयालाल सेठिया की रचनाओं को 'समग्र' रूप में चार विशाल खंडों में प्रकाशित करवाने में उनका अमूल्य सहयोग व उच्च सम्पादन रहा। ऐसे विरल व्यक्तित्व के धनी का अमृत महोत्सव मनाना एक सच्चे कार्यकर्ता का तो सम्मान है ही, औरों के लिए प्रेरणास्रोत भी होगा। इस मौके पर प्रकाशित होने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जुगलजी स्वस्थता के साथ इसी तरह कर्मरत रहते हुए शतायु की ओर अग्रसर हों, यही कामना है।

– आत्माराम सोंथलिया

माणकचन्द
प्रबन्ध सम्पादक, पाथेय कण
बी-१९, न्यू कॉलोनी, जयपुर-३०२००१
दूरभाष: (०१४१)२३७४५९०

भाद्र कृष्ण १२, सं. २०६९

शुभकामना

२ अक्टूबर २०१२ ई. को श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के अमृत महोत्सव को समारोह पूर्वक मनाने की सूचना पाकर अतीव हर्ष हुआ। माननीय जुगलकिशोर जी जैथलिया से मेरा प्रथम परिचय १९५७ में कुचामन सिटी में नागौर जिले के संघ शिविर में धनजी के बाग में हुआ था। उस समय पं. लेखराज जी शर्मा राजस्थान प्रान्त के प्रचारक थे। इसके बाद कई वर्षों तक मिलना नहीं हो सका।

सन् १९८९ में पाथेय कण जागरण पत्र राजस्थान क्षेत्र के प्रमुख के नाते मुझे बांसवाड़ा जिला से जयपुर बुला लिया गया एवं उसके बाद तो करीब हर वर्ष जयपुर कार्यालय 'भारती भवन' में मिलना हो जाता था। आपका स्नेह बराबर मिलता था।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के हर कार्यक्रम में विशेषकर पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान समारोह में तो अवश्य ही बुलाते तथा वहाँ पाथेय कण की दृष्टि से भी विशेष ध्यान एवं सहयोग करते। पाथेय कण के लिये जब भी आपको संदेश भिजवाता आप सहयोग कराते रहे हैं।

रजत जयंती वर्ष में २००९ में मा. श्यामजी आचार्य भी इसी निमित्त कलकत्ता गए। आपने आग्रह पूर्वक बुलाया तथा आजीवन १५ वर्षीय सदस्य भी अच्छी संख्या में बनवाये। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित सभी साहित्य सामग्री भी स्नेह पूर्वक मुझे भिजवाते रहे हैं।

आपकी संघ कार्य के प्रति निष्ठा एवं एक आदर्श स्वयंसेवक के नाते हम सबको आज भी प्रेरणा मिलती रहती है। मैं भगवान से उनको शतायु, दीर्घायु बनाने एवं सतत् सक्रिय रहकर राष्ट्र कार्य को करते हुए सबको उत्साह बढ़ाने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ।

– माणकचन्द

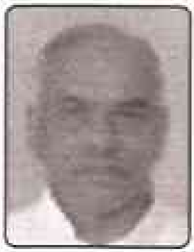

गुरुशरण प्रसाद
सह सचिव: राष्ट्रीय सेवा भारती
मोबाइल: ९४३११०४६४४

२२ अगस्त २०१२

शुभकामना

श्री जुगलजी जैथलिया से मेरी पहली भेंट २००३ ई. में वनबन्धु परिषद से जुडे कार्यकर्ताओं की दो दिवसीय बैठक, कलकत्ता में हुई। वे एक विषय प्रस्तुति हेतु मात्र कुछ घंटों के लिये उपस्थित थे, स्थान था तारकेश्वर, विषय का आधार था - सेवा।

कार्यक्रम में कलकत्ता महानगर के वरिष्ठ कार्यकर्ता बन्धु बड़ी संख्या में उपस्थित थे। मैं केप्टेन स्व. मनोज घोष (तत्कालीन कलकत्ता महानगर संघचालक) के साथ उस बैठक में उपस्थित हुआ था। मुझे भी सेवा क्षेत्र की नई-नई जिम्मेवारी मिली थी। बैठक में श्री जैथलिया जी के द्वारा प्रभावी रूप से सेवा विषय की प्रस्तुति की गयी, मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। मुझे एक नई दृष्टि और सेवा की प्रेरणा मिली।

सन् २०१० से मुझे नई जिम्मेदारी देकर झारखण्ड से कलकत्ता भेजा गया। स्वाभाविक रूप से श्री जुगलजी की छवि मेरे पटल पर थी ही। पुनः सम्पर्क जुड़ा। मैंने इतने कम समय में ही अनुभव किया कि देश के मूर्धन्य राष्ट्रीय लेखक, समालोचक, कलाकार, समाजसेवी, राजनीतिज्ञ आदि उनसे सहज भाव से जुड़े हुये हैं। प्रकृति के खेल को हम सब अनुभव करते रहते हैं कि आकाश के अनेक तारों का अपना प्रकाश नहीं होता, कहीं से प्रेरणा पाकर वे जग को प्रकाशित करते रहते हैं, ठीक उसी प्रकार प्रकाश का स्रोत श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी का व्यक्तित्व है। उनका जीवन एक महान सूत्रधार जैसा है। हम सबने उनसे पचहत्तर वर्ष पूर्ण करने तक जो पाया है वह शत वर्ष तक प्राप्त होता रहे- यही कामना है। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के पदाधिकारी भी उनका शानदार अमृत महोत्सव मनाने एवं अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने के लिए हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

– गुरुशरण प्रसाद

किसन झंवर

अध्यक्ष: भारतीय जनता पार्टी

उत्तर पश्चिम जिला, कोलकाता

मोबाइल: ९८३००५०४२५

२८ अगस्त २०१२

शुभकामना

बड़े हर्ष की बात है कि बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय आदरणीय जुगलकिशोर जी जैथलिया के कर्ममय जीवन के ७५ वर्ष पूर्ति पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रहा है। आपसे मेरा सम्पर्क गत २० वर्षों से अत्यधिक रहा है। मैंने देखा व पाया कि उनमें कार्यकर्त्ता निर्माण करने की, उनको प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाने की व कठिन परिस्थिति में भी अपने दृढ़ संकल्प को दर्शाना-फिर चाहे सामने वाला किसी भी ओहदे (कद) का व्यक्ति क्यों न हो एवं अपनी बात को निष्ठापूर्वक, बलपूर्वक कहने का अदम्य साहस देखने को मिलता है।

कोलकाता महानगर की शायद ही ऐसी कोई सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक संस्था हो जिनसे आपश्री का सम्पर्क न हो। आप अनेक संस्थाओं के संस्थापक, प्रेरणा-स्रोत रहे हैं व वर्तमान में समाज-राष्ट्र हित कार्यरत अनेक संस्थानों से जुड़े हुए हैं।

राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करते हुए भी संगठन में नैतिकता-चरित्र-विनम्र-सहज-सरल-पारदर्शी कैसे रहा जा सकता है, कोई आपसे सीखें।

आप दीर्घायु व शतायु हों, बराबर हमारा मार्गदर्शन करते रहें, ऐसी परमपिता परमेश्वर से मगंल कामना करता हूँ। धन्यवाद,

– किसन झंवर

संजय हरलालका

सह-सम्पादक: सेवासंसार

४२, पाथुरिया घाट स्ट्रीट, कोलकाता-६

मोबाइल : ९८३००८३३१९

शुभकामना

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि विलक्षण प्रतिभा की प्रतिमूर्ति श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया अपने जीवन के ७५ वर्ष पूरे कर ७६ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा उनके जीवन के यादगार पलों एवं संस्मरणों को एक माला में संजोकर अभिनंदन ग्रंथ के रूप में प्रकाशित करने की योजना भविष्य में कार्यकर्त्ताओं के लिए मील का पत्थर साबित होगी, ऐसी आशा है। इसके साथ ही उनका अमृत महोत्सव समारोहपूर्वक मनाने का निर्णय भी प्रशंसनीय व वंदनीय है।

पत्रकारिता के पेशे के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में भी तुच्छ भागीदारी होने के कारण आदरणीय जुगलजी से विभिन्न मंचों पर या श्रोता के रूप में मिलन होता रहता है। सादगी के साथ एक भूषा, एक भाषा एवं एक विचारधारा को धारण किये हुए वे मुझे हमेशा अपने कर्म में व्यस्त मिले। चाहे राजनीति का क्षेत्र हो या फिर सामाजिक या साहित्यिक, प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से न मिटने वाली अमिट छाप छोड़ी है। राजनीति में एक पार्टी विशेष के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के बावजूद उनका व्यक्तित्व किसी एक ही राजनैतिक पार्टी से बँधा हुआ नहीं दिखा। प्रत्येक राजनैतिक पार्टी के लोगों की नजर में उनका सम्मान पार्टी विशेष से ऊपर है- यह है उनकी व्यावहारिक कार्यशैली का नतीजा।

अपनी मातृभाषा के प्रति उनका लगाव तो शुरू से ही रहा किन्तु वह दृष्टिगोचर तब हुआ जब उन्होंने पद्मविभूषण से सम्मानित कवि स्व. कन्हैयालाल सेठिया की रचनाओं में दिलचस्पी ली और अधिक से अधिक लोगों तक उन कालजयी रचनाओं को पहुँचाने हेतु अथक परिश्रम व समय देकर उन्हें एक सूत्र में पिरोया और उन रचनाओं का कुशल सम्पादन कर पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाया। मूक सेवक की भाँति प्रचार से कोसों दूर रहते हुए उन्होंने अपना अब तक का जीवन जिया है।

ऐसे व्यक्तित्व के धनी के लिए परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि वे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हुए अपने कर्ममय जीवन में व्यस्त रहें और सामाजिक क्षेत्र में लोग उनसे प्रेरणा लेकर अग्रसर हों।

- संजय हरलालका

त्रिभुवन पाल गोयल
१००/१८, अलीपुर रोड,
कोलकाता-७०० ०२७
मोबाइल: ९३३१०२३२५०

१५ अगस्त २०१२

शुभकामना

हमारे आदरणीय चिरयुवा भाई जुगलकिशोरजी जैथलिया को २ अक्टूबर २०१२ के अमृत महोत्सव पर हार्दिक बधाइयां एवं शुभकामनायें - महात्मा गांधी व लालबहादुर शास्त्री जी जो इसी तारीख पर जन्मे थे इनके सभी सद्गुण जुगलजी में प्रस्फुटित एवं विकसित हुये हैं। इस शुभ अवसर पर उनको अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जायेगा जिसमें उनके बहु आयामी कर्मठ जीवन को मैं तो 'अमानी मानदो मानी' गुणों से सम्पन्न तथा श्रीमद्भगवतगीता प्रणीत स्थितप्रज्ञ के सभी रूपों में देखता हूँ।

श्रद्धेय श्रीनिवासजी शास्त्री ने ४० वर्ष पूर्व जुगलजी से मेरा परिचय कराया तब से वह निरंतर बना रहा है। कार्य में दक्षता, समय की पाबन्दी आदि सभी गुण आपके सम्पर्क में आये साथी कार्यकर्त्ताओं में समा गये हैं जिससे श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की वर्तमान गरिमा बढ़ी है। वानप्रस्थाश्रम के बाद आप चतुर्थ आश्रम में पधार रहे हैं पर एक कर्मठ कर्मयोगी आपका ''काम्यानाम् कर्मणान्यासं संन्यासं कवयो विदुः'' ही समर्पित जीवन रहे, यहीं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है। चरैवेति चरैवेति - शुभम् इत्यालयम्

- त्रिभुवनपाल गोयल

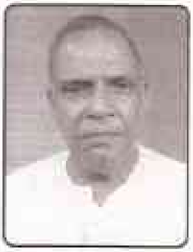

हरीराम जालुका
१६, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
कोलकाता - ७००००७
दूरभाष : २२४१-०१६२

शुभकामना

यह अत्यन्त आनन्द का विषय है कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के ७५ वर्ष पूर्ति पर अमृत महोत्सव का आयोजन कर रहा है एवं ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रहा है।

जुगलजी से मेरा २५-३० वर्ष का सम्पर्क है। किसी भी काम को वे पूरी निष्ठा एवं योजना बना कर करते हैं अत: उनके साथ काम करने में जो आनन्द मिलता है, उसकी व्याख्या करना कठिन है।

कोलकाता की जिन-जिन संस्थाओं से वे सम्बन्धित हैं, उनकी छवि के कारण समाज में उनके प्रति विश्वास व्याप्त है। कोलकाता में वीर शीरोमणि महाराणा प्रताप की भव्य कांस्य प्रतिमा की स्थापना उनकी योजकता का सबसे बड़ा उदाहरण है। विभिन्न कार्यों का उनका अनुभव अतुलनीय है।

मैं 'अमृत महोत्सव' एवं ग्रन्थ प्रकाशन की सफलता तथा उनकी दीर्घायु के लिए कामना करता हूँ।

- हरीराम जालुका

बिहारीलाल रूणवाल
४५९/२७८४, शुभलक्ष्मी नगर
गुजरात हाऊसिंग बोर्ड
चांदखेड़ा-३८२४२४ (गुजरात)
मोबाइल: ०९४२९३६५५८४

३१ जुलाई २०१२

शुभकामना

समाज के विविध क्षेत्र के अग्रणियों, बुद्धिजीवियों, समाज सेवियों द्वारा आयोजित महोत्सव समिति द्वारा ता.२ अक्टूबर २०१२ को श्री जैथलियाजी के अभिनन्दन पर आयोजित कार्यक्रम पर सभी का बहुत-बहुत अभिनंदन। धन्यवाद !!

प्रथम तो परमेश्वर से जैथलिया जी के सुस्वास्थ की कामना करते हुए दीर्घायु एवं सुखायु की प्रार्थना करता हूँ।

जुगलकिशोर जी जैथलिया का जीवन एक उच्चस्तरीय संत की तरह है, जो स्वयं श्रेष्ठ जीवन जीता है, और साथियों को श्रेष्ठ जीवन की कला, प्रेरणा व सहयोग देता है। मैं इनकी जीवन शैली, वाणी- व्यवहार से बेहद प्रभावित हूँ। करनी-कथनी में इनके भेद नहीं है। जैथलिया जी की साहित्य, संस्कृति एवं राष्ट्र भक्ति इनके व्यक्तित्व के परिचायक है। समाज में ऐसे व्यक्ति बहुत ही कम होते हैं। भौतिकवाद व व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की अंधाधुंधी में समाज सेवा बहुत ही बिरले लोग कर सकते हैं।

अमृत- महोत्सव में 'कर्मयोग' शब्द का उपयोग यथार्थ व प्रासंगिक है। आप सभी महानुभावों को मेरी ओर से बहुत हार्दिक अभिनंदन। नमस्कार। जय श्रीराम।

– बिहारीलाल रूणवाल

परशु राम मुन्धड़ा
सदस्य, अध्यक्ष क्लब, भारतीय जीवन बीमा निगम
१९बी, अलीपुर रोड, शुभम् अपार्टमेन्ट
फ्लेट-४ई, कोलकाता-७०० ०२७
मोबाइल: ९८३००५३६९३

१६ अगस्त, २०१२

शुभकामना

श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया अपने जीवन के ७५ बसंत पार कर रहे हैं। उस उपलक्ष्य पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन कर रहा है यह प्रसननता की बात है।

श्री जैथलिया जी समर्पित कार्यकर्ता, साहित्यिक, चिंतक एवं सबको साथ लेकर चलने वाले व्यक्ति हैं। वे कार्य स्वयं करते हैं परंतु श्रेय, दूसरों को देते हैं। वे पुस्तकालय के साथ-साथ राजस्थान परिषद् के भी प्राण हैं। श्री कन्हैयालालजी सेठिया के साहित्य का प्रकाशन एवं वार्षिक स्मारिकायें जो पठनीय एवं संग्रहणीय होती हैं, का प्रकाशन उनके ही प्रधान सम्पादकत्व में होता है फिर भी वे यही कहते हैं कि आप सबके सहयोग से ही यह सब हो रहा है।

आज प्राय: सभी पाश्चात्य पहनावा पहनते हैं। भारतीय परिधान धारण करना उनका वैशिष्ट्य है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें स्वस्थता एवं दीर्घायु प्रदान करें ताकि वे समाज एवं राष्ट्र की सेवा कर अन्यों को प्रेरित करते रहें।

– परशु राम मुन्धड़ा

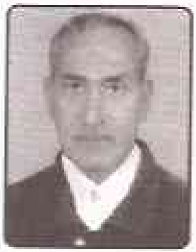

भंवरलाल टाक

मंत्री: श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

छोटीखाटू (राजस्थान)

मोबाइल: ०९४१३७२०३३६

२८ अगस्त, २०१२

शुभकामना

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा हमारी संस्था के संस्थापक एवं मार्गदर्शक श्री जुगलकिशोर जैथलिया का २ अक्टूबर २०१२ को उनके अमृत-महोत्सव पर अभिनन्दन किया जा रहा है। इस हेतु श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं अमृत महोत्सव समिति के समस्त पदाधिकारी व सदस्यों को धन्यवाद। वास्तव में आप इनका सम्मान करके समाज में एक प्रेरणा स्थापित कर रहे हैं।

इससे प्रेरित होकर हमारे पुस्तकालय एवं गांव के समस्त नागरिकों द्वारा भी श्री जैथलियाजी को उनके ७६ वें जन्म दिवस पर विक्रम संवत् की तिथि के अनुसार आश्विन शुक्ल १४, २०६९ वि. तदनुसार २८ अक्टूबर २०१२ ई. को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। वस्तुत: उनकी जन्मभूमि पर इस प्रकार का सम्मान पहले ही हो जाना चाहिये था। लेकिन 'देर आये, दुरस्त आये'।

परमपिता परमेश्वर से श्री जैथलियाजी की दीर्घायु की कामना करते हैं। धन्यवाद।

– भंवरलाल टाक

देवदत्त शर्मा 'दाधीच'

सभापति

ऑल इण्डिया वूल फैल्ट एण्ड नमदा एसोसियेशन

सुभाष चौक, जयपुर-३०२००२

मोबाइल : ०९४१४२५१७३९

०५ अगस्त २०१२

मंगल भावना

आदरणीय जैथलिया जी (भाई जी) मेरे बड़े भ्राता हैं। आगामी २ अक्टूबर २०१२ को उनके जीवन के ७५ बसन्त पूर्ण करने पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने अमृत महोत्सव मनाने का संकल्प किया है। आदरणीय जैथलियाजी एक निष्काम कर्मयोगी हैं, उनके बारे में लिखना, सूरज को दीपक दिखाना है। संघ कार्य उनके जीवन का अंग है। अपने बड़े भ्राता के बारे में कुछ कहना छोटे मुंह बड़ी बात होगी परन्तु सम्मानार्थ जो ग्रंथ आप प्रकाशित कर रहे हैं वह एक मूक साधक के योग्य ही है। ऐसे साधक की जानकारी समाज, राष्ट्र, धर्म-संस्कृति के लिये दीर्घकाल तक आवश्यक है। अमृत महोत्सव ग्रन्थ के माध्यम से समाज के सभी व्यक्तियों में समाज हित कार्य करने की इच्छा जागृत होगी। पुस्तकालय के इस शुभ विचार हेतु सभी संयोजक, सदस्यों एवं सहयोगियों को साधुवाद।

मैं तो ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे सत्पुरुष का आशीर्वाद आजीवन मिले और ऐसे श्रेष्ठ कर्मयोगी का अमृत महोत्सव मनाने का आपका संकल्प पूर्णरूपेण सफल हो। उनके सुस्वस्थ दीर्घ आयु की ईश्वर से कामना।

– देवदत्त शर्मा

श्री छोटीखाटू नागरिक परिषद, जयपुर

१४३१, चाणक्य मार्ग, सुभाष चौक
जयपुर-३०२००२

शुभकामना

आदरणीय जैथलिया जी का आगामी २ अक्टूबर २०१२ को उनके जीवन के ७५ बसन्त पूर्ण करने पर कुमारसभा पुस्तकालय ने अमृत महोत्सव मनाने का संकल्प किया है। उनके जीवन को चन्द शब्दों में यदि व्यक्त करें तो जैसे उन्होंने सारा जीवन यह सोच कर जिया कि क्या पता कल एक और मौका सेवा का मिले या ना मिले। उन्होंने बहुत से युवा वर्ग को अच्छे, नैतिक और सामाजिक कार्यों को करने के लिये प्रेरित किया है। अपनी जन्मभूमि छोटीखाटू के प्रति भी इनका अच्छा आकर्षण व ममत्व है, तब ही छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की साहित्यिक ज्ञान की सुगन्ध चारों ओर फैल रही है।

जयपुर में भी परिषद का गठन करने के लिये हमें आग्रह करते रहे हैं। जयपुर में नागरिक परिषद के प्रेरणास्रोत श्री जैथलिया जी और दशरथचन्दजी भण्डारी हैं। यहाँ पर जब छोटीखाटू नागरिक परिषद जयपुर की शुरुआत हुई तब उसकी पूर्व संध्या पर उन्होंने कहा कि कोई भी अच्छे कार्य के लिये पैसे की कमी नहीं रहती। जयपुर में इस संस्था का निर्माण एक बटवृक्ष की भाँति ले पावें, समय-समय पर हमें मार्गदर्शन करते रहते हैं। कवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ इनके जीवन पर खरी उतरती है -

जीवन में सुख-दुख आते जाते रहते हैं,
सुख तो सभी भोग लेते हैं, दुख तो धीर ही सहते हैं।
मनुज दुग्ध से, दनुज रुधिर से, अमर सुधा से जीते हैं,
किन्तु हलाहल भवसागर का, विष शिवशंकर ही पीते हैं।।

इसी ही आशा व विश्वास के साथ उनके लम्बे व दीर्घायु, स्वस्थ जीवन के लिये प्रभु से कामना व हार्दिक शुभकामनाएँ।

विनीत

देवदत्त शर्मा (अध्यक्ष), गणपत भंडारी (मंत्री) एवं डॉ. अनिल भंडारी (कोषाध्यक्ष) तथा परिषद के समस्त सदस्यगण।

अजीत सिंह जैन
५९-६०जे, नीलम बाटा रोड,
एन.आई.टी., फरीदाबाद-१२१००१
मोबाइल : ०९८११५ १७६५०

शुभकामना

मेरे परम मित्र श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया के अमृत महोत्सव पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा अभिनन्दन की सूचना पाकर मन को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। ४० वर्ष पूर्व की स्मृतियां, जब मैंने कलकत्ता में उनके साथ राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ का कार्य किया था, पुनः ताजा होकर मानस पटल पर उतर आई एवं हृदय आनन्द से भींग गया।

मैं जुलाई १९६६ ई. में पंजाब प्रान्त (वर्तमान में उत्तरक्षेत्र) के जिला प्रचारक के दायित्व से निवृत्त होकर अपने बड़े भाई स्व. बलवीर जी जैन के पास कलकत्ता में कामकाज हेतु आया था। संयोग से उसी दिन सायंकाल संघ स्थान के बाहर ही जुगल जी से भेंट हो गई, जो उस समय सायं विभाग का काम देखते थे और उनके आग्रह पर मैं वहाँ के संघकार्य से जुड़ गया। मेरे कलकत्ता के छह वर्षों के प्रवास में हम लोग और भी निकट आते गए। कलकत्ता प्रवास में माननीय भंवरलालजी मल्लावत एवं उसके बाद जुगलजी ही सब विधि मेरे सहयोगी एवं मार्गदर्शक थे। आज कलकत्ता छोड़े ४० वर्ष हो गए हैं फिर भी स्नेह सम्पर्क निरन्तर बना हुआ है। यह जुगलजी की विशेषता है। भंवरलालजी को तो भगवान ने अत्यन्त अल्पायु दी, वे तो सच्चे योगी पुरुष थे।

जुगलजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। संघ का कार्य अत्यन्त निष्ठापूर्वक करते हुए भी साहित्य एवं संस्कृति के कामों से उनका बड़ा लगाव रहा है। वे दृढ़ निश्चयी हैं और जो बात ठान लेते हैं, उसे पूरे मनोयोग से पूरा करते हैं।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं राजस्थान परिषद्, जिनके कार्यों की सुगंध देश भर में व्याप्त है, उसमें जुगलजी का बड़ा हाथ रहा है। कलकत्ता की और भी कई महत्वपूर्ण सार्वजनिक संस्थाओं की कार्यसमितियों में वे सहयोगी हैं एवं वहाँ भी उनकी विशिष्ट पहचान है। अपने गांव में भी विद्यार्थी काल में ही उन्होंने एक पुस्तकालय की स्थापना की थी, जिसके भवन उद्घाटन हेतु वैद्य गुरुदत्त जी को राजी करने हेतु उन्होंने मुझे पत्र लिखा था और मैंने दिल्ली संघ कार्यालय में वरिष्ठ प्रचारक माननीय चमनलालजी के माध्यम से गुरुदत्तजी की स्वीकृति

कराके उन्हें छोटीखाटू भिजवाया था। मुझे स्मरण है कि जुगलजी के आतिथ्य से वे बहुत प्रभावित होकर दिल्ली लौटे थे एवं उन्होंने अपनी उस यात्रा को माध्यम बनाकर 'सागर और सरोवर' नामक उपन्यास की रचना की थी।

जुगलजी विगत तीस वर्षों से राजनीति से भी जुड़े हुए हैं और वहाँ अनेक वर्षों से पहले कोषाध्यक्ष और अब उपाध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद पर भी हैं पर उनकी छवि एक निष्कलंक समाजसेवी की ही है। उन्होंने अपने को आचार्य विष्णुकांत जी शास्त्री सच्चा अनुयायी सिद्ध किया है। वे अपनी उम्र के ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं यह हम सब के लिए बहुत हर्ष एवं आनन्द का विषय है। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के सभी पदाधिकारी भी बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने उनके अमृतवर्ष को समारोह पूर्वक मनाने का निश्चय किया है।

मैं इस अवसर पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे उन्हें दीर्घायु दें एवं स्वस्थ रखें ताकि वे समाज और देश का काम सक्रिय रूप से करते रहें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

– अजीत सिंह जैन

सत्यनारायण भैया

सत्यम कम्पलेक्स

बिल्डिंग नं. ४, फ्लेट-३ए

९बी, बेचुलाल रोड, कोलकाता-४६

मोबाइल : ९८३१७८२४०६

शुभकामना

आदरणीय साहजी श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के अमृत महोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएँ एवं राम-राम।

– सत्यनारायण भैया

शम्भु चौधरी
सचिव, राजनैतिक चेतना मंच
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
एफ-डी.४५३/२, साल्टलेक सिटी
कोलकाता-७००१०६
मोबाइल: ९८३१०८२७३७

शुभकामना

श्रद्धेय श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी के साथ मेरा सर्वप्रथम सम्पर्क देवराला सतीकांड के समय हुआ। उस समय तक मेरा उनसे भली भाँति परिचय तो नहीं था, हाँ ! उनके नाम से मैं तब तक परिचित हो चुका था कि आप एक वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

मेरा सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश सा ही था। संभवत: वे मुझ से परिचित नहीं होंगे पर फोन पर बातचीत ने मुझे उनके करीब ला दिया। धीरे-धीरे हमें सामाजिक क्षेत्र में कई बार आपस में मिलने का अवसर मिलता रहा। आपके विषय में लिखना तो अपना सौभाग्य ही मानता हूँ कि कोलकाता शहर में मारवाड़ी समाज की छवि में श्री जुगल किशोर जैथलिया जी मेरे न सिर्फ अग्रज बन गये बल्कि मेरे आदर्श के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गये। पिछले समय जब मैं **समाज विकास** पत्रिका का संपादन का कार्य देख रहा था, आप उस समय मेरी छोटी-छोटी भूलों को हमेशा सुधार देते पर कभी भी आपने मेरी गल्तियों की सार्वजनिक रूप से निन्दा नहीं की। जबकि मेरे कई ऐसे भी मित्र थे जो इन बातों का सार्वजनिक लाभ लेने से नहीं चूकते थे। एक बार जब मैंने कन्हैयालाल जी सेठिया (उस समय आप जिंदा थे) पर विशेषांक निकालने की सोची तो मुझे भय था कि कहीं इस अंक में कोई गलती न रह जाए, मैंने सहज भाव से उनसे निवेदन किया कि आप इस अंक का संपादन करें। आपने मुझे सम्मान देते हुए कहा कि संपादक तो आप ही रहियेगा मुझसे कोई काम हो तो भेज दीजियेगा। मुझे तब अधिक आश्चर्य हुआ कि जितनी बार मैंने उनके पास सामग्री भेजी आप रात-रात भर जगकर उसे सुधार कर सुबह मेरे पास वापस भेज दिया करते। निःस्वार्थ भाव से काम, वह भी मुझसे इतने वरिष्ठ द्वारा, मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि आप मेरे निवेदन मात्र से इतना कार्य कर देंगे। हमें इनके आदर्श से जो भी सीखने का अवसर मिला इसे हम आगे ले जा पाएँ, यही मेरी इच्छा रहेगी।

- शम्भु चौधरी

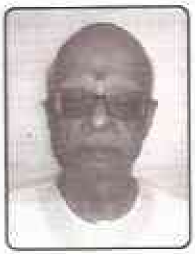

केशव प्रसाद कार्या

पी-३९७, ब्लॉक जी

न्यू अलीपुर, कोलकाता-७०००५३

मोबाइल : ९८३६५५२००६

शुभकामना

आदरणीय जुगलजी जैथलिया को जैसा मैंने जाना और समझा है वे एक आदर्श कर्मयोगी और कर्मवीर हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के दूसरे अध्याय में कर्मयोगी के जो लक्षण बताये गये हैं वे श्री जैथलिया जी पर पूर्णतः घटित होते हैं। 'सुख-दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जया-जयौ, ततो युद्धाय युज्यस्व...' - भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समबुद्धि में स्थित रह कर कर्म करने का उपदेश दिया था। श्री जैथलिया जी के द्वारा किये जा रहे कार्यों का विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि उन्होंने श्रीकृष्ण के द्वारा कथित उपदेश को जीवन में उतारा है। श्री जैथलिया जी राजनीति से जुड़े हुए हैं। राजनैतिक जीवन में उतार चढ़ाव होते रहते हैं लेकिन सफलता के समय फूलकर कुप्पा होते (सुखेषु विगत स्पृहाः) और असफलता में निराश होते (दुःखेष्वनुद्विग्न मनाः) मैंने उन्हें नहीं देखा। 'कर्मवीर को फर्क न पड़ता कभी जीत और हार' का इसी भावना से जैथलिया जी कर्मक्षेत्र में अहर्निश सक्रिय रहते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात है कि भाजपा के सर्वोच्च पदाधिकारियों एवं सम्मान्य नेताओं से घनिष्ठता के बावजूद इन्होंने इस घनिष्ठता का कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं उठाया। आज एक दूषित माहौल में इस प्रकार का उदाहरण मिलना विरल है।

एक बात और ध्यान देने योग्य है कि जैथलियाजी सामाजिक कार्यों में अपने साथी कार्यकत्ताओं के साथ पूरे सहयोग एवं सामञ्जस्य के साथ कार्य करते हैं। उनमें श्रेष्ठता (Superiority Complex) का किंचित् भी भाव नहीं है। एक सफल नेतृत्व के लिये यह आवश्यक गुण है।

ऐसे उत्कृष्ट कर्मयोगी के स्वस्थ एवं सक्रिय दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ ताकि वे दीर्घकाल तक समाज का मार्गदर्शन करते रहें।

- केशव प्रसाद कार्या

विश्वम्भर नेवर
मेम्बर: प्रेस कांउसिल ऑफ इंडिया
२६सी, क्रीक रो
कोलकाता-७०००१४
मोबाइल: ९८३१६६९९८८

एक अनुकरणीय व्यक्तित्व

श्री जुगलकिशोर जैथलिया का व्यक्तित्व जितना सहज है उनकी जीवन यात्रा उतनी ही कंटकपूर्ण रही है। एक परम्परागत मारवाड़ी मध्यम श्रेणी में जन्म लेने के बावजूद साहित्य-संस्कृति की सेवा में श्री जैथलिया ने अपने जीवन का अधिकांश भाग बिताया। एक विशेष राजनीतिक दल से संबंध रखते हुए भी उन्होंने अपनी पहचान एक साहित्यिक और सांस्कृतिक कर्मी के रूप में बनाई। उनका चिंतन स्पष्ट है एवं अपनी विचारधारा के वे साधक भी हैं। उनसे 'मत' भिन्नता हो सकती पर 'मन' भिन्नता नहीं क्योंकि विचारों की स्वतंत्रता एवं सम्मान में उनकी आस्था है। यही नहीं जैथलिया जी अपने मिशन का स्वयं निर्धारण करते हैं। लोगों को साथ लेकर चलने का उनमें हुनर है।

कुमारसभा पुस्तकालय के माध्यम से उन्होंने बड़ा सारस्वत कार्य किया है। पुस्तक प्रेमी हैं एवं पुस्तकालय के संचालन में उन्होंने अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया है। उनके साथ कई मंच पर एकसाथ काम करने का भी सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है। मुझ पर उनकी हमेशा अनुकम्पा रही है, एतदर्थ मैं उनका आभार मानता हूँ।

श्री जुगलकिशोर जैथलिया की ७५ वीं वर्ष पूर्ति पर मैं उनके सुस्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ ताकि वे देश एवं समाज की सेवा करते रहें। जयहिन्द !

– विश्वम्भर नेवर

सीताराम शर्मा

पूर्व अध्यक्ष: अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मानद कन्सुल जनरल, बेलारूस गणराज्य

३७, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-१७

मोबाइल: ९८३१००११५०

शुभकामना

श्री जुगलकिशोर जैथलिया के व्यक्तित्व से ही आत्मीयता की अनुभूति होती है। सौम्य और शालीन स्वभाव, सर्वदा मर्यादित आचरण एवं सकारात्मक सोच, मैंने जुगलजी को कभी नकारात्मक तो दूर, जोर से बोलते नहीं सुना। उनकी उपस्थिति ही एक गरिमा की सृष्टि करती हुई दूसरों को समृद्ध करती चली जाती है।

आयकर सलाहकार, समाजसेवी, साहित्यकार, राजनेता, ओजस्वी वक्ता, कुशल संगठक जुगलजी एक तरफ सरलता, सौहार्द एवं सदाचार की प्रतिमूर्त्ति हैं तो दूसरी तरफ देश और समाज की वर्तमान परिस्थितियों में उनके आक्रोशित स्वर भी उभरकर सामने आते हैं। आचार-विचार और व्यवहार में समानता के साथ उनकी वैचारिक क्षमता और दृढ़ता का मैं प्रशंसक रहा हूँ।

भारतीय संस्कृति के अनन्य अनुरागी, सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों के प्रति समर्पित, सामाजिक कार्यों के प्रति गहरी अभिरुचि, राजनैतिक चेतना से ओत-प्रोत-विद्या-साहित्य प्रेमी जुगलजी का जीवन एक प्रेरणास्रोत है। मुझे जुगलजी के साथ काम करने एवं उनकी बहुमुखी प्रतिभा को बहुत करीब से जानने-समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरी प्रभु से कामना है कि जुगलजी का आत्मीय सानिध्य एवं उनके लेखन और सेवाभावी कार्यों का लाभ हमें दीर्घ समय तक प्राप्त होता रहे।

– सीताराम शर्मा

दाऊलाल कोठारी

एन-बी-१, नार्थ अर्जुनपुर

शिवतल्ला, कोलकाता-५९

मोबाइल: ९२३१७६१६२४

शुभकामना

आदरणीय जुगलकिशोर जैथलिया (जुगलजी) के विषय में जब भी लिखने बैठता हूँ तो मुझे मेरी बड़ी नानी (माँ की दादी) की याद आने लगती है। वस्तुत: मेरी वह नानी जब भी मैं ननिहाल जाता तो अलग से मुझे अपने छोटे कमरे में ले जाती तथा कुछ विशेष जैसे काजू, किसमिस, बादाम, अंजीर, मिठाई आदि दिया करती थीं। यहाँ तक कि कभी-कभी जेब में भरकर भी ले जाने को दिया करती थीं। मेरे अन्य भाई बहन शायद इसके लिए मुझसे ईर्ष्या भी करते थे।

जुगलजी से समारोहों आदि में औपचारिक मुलाकातें होती रहती हैं उसी में वे कभी-कभी कहते हैं कि कभी फुर्सत में आइए, बहुत दिनों से आपसे अपनत्व का आलाप हुआ ही नहीं। उनके यहाँ जाने पर उस आलाप में वे काजू, किसमिस, मिठाई आदि तो देते ही हैं इसके अतिरिक्त काजू, किसमिस, बादाम की तरह ही अपने जुगलजी बनने की कहानियाँ अथवा कोई महत्ती योजना या कार्यक्रम के विषय में भी विचार-विमर्श करते हैं। वे तो सहज वार्तालाप करते होते हैं किन्तु मैं उसमें से उनकी कर्मठता, ध्येयनिष्ठा, स्पष्ट वैचारिकता एवं सबसे अलग व्यक्तिगत लगाव को परे रखकर संस्थागत प्रतिबद्धता आदि की जो दृष्टि मुझे उनमें देखने को मिलती है उसे ही मैं उस नानी के मेवे की तरह सहेज कर संजोये रखता हूँ। ईश्वर इन्हें कर्ममय शतवर्षीय आयु प्रदान करें।

– दाऊलाल कोठारी

सुशील ओझा
राष्ट्रीय संयोजक: विप्र फाउण्डेशन
अनमोल कॉमर्सियल कं.
८, लायन्स रेंज, कोलकाता-१
मोबाइल: ९८३०१६६६२१

हृदय के उद्‌गार

श्रद्धेय श्री जैथलिया जी से मेरा सम्बन्ध लगभग २५ वर्षो से है। इस दौरान साहित्यिक-समाजिक क्षेत्र में अनेक नाम तेजी से उभरते हुए दिखे तो ठीक उसी प्रकार तेजी से विलुप्त भी हो गये, परन्तु जुगलजी को मैंने जिस स्थिर भाव से साहित्य एवं समाज सेवा करते देखा, दुर्लभ है। चमक-दमक, प्रदर्शन से कोसों दूर रहते हुए आपने सतत सक्रिय रह कर समाज को जो पाथेय प्रदान किया है, वह अमूल्य-अनुपम तो है ही, आने वाली पीढ़ी के लिए धरोहर भी बनेगा। कुमारसभा पुस्तकालय के विविध प्रकाशन, बौद्धिक खुराक देने वाली गोष्ठियाँ, राजस्थान परिषद के सालाना कार्यक्रम एवं सन्दर्भ ग्रंथों जैसी स्मारिकायें, महाराणा प्रताप की मूर्ति स्थापना, छोटीखाटू पुस्तकालय आदि जुगलजी की कर्मठता के प्रतिबिम्ब हैं। मेरे जैसे असंख्य कार्यकर्ताओं को तराश कर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की प्रेरणा देने वाले आदरणीय जुगलकिशोरजी जैथलिया का व्यक्तित्व प्रणम्य है। इस शुभ अवसर पर कोटिश: नमन, अभिवादन।

जीवेम शरद: शतम् की शुभकामनायें।

- सुशील ओझा

तरुण विजय

संसद सदस्य: राज्यसभा

राष्ट्रीय प्रवक्ता, भारतीय जनता पार्टी

सदस्य भारत-चीन संसदीय मैत्री समूह

५, मीना बाग, मौलाना आजाद मार्ग,

नई दिल्ली-११०००१

मोबाइल: ९८११२५४८८८

शुभकामना

आत्मीय श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी के विषय में लिखना कठिन है। वे सरसता, सहजता, सौमनस्य और सामुदायिक सत्कार्यों के महनीय प्रतीक और अत्यंत विनम्र हैं। धूप है, धरती है, जल और पवन है। इन सबसे हमारा जीवन चलता है। इनके विषय में लिखना हो तो कहाँ से शब्द लाएँ? सत्य के निकटतम पहुँचने के लिए शब्दों के सहारे जितना संभव हो सकता है, पहुँचने का प्रयास ही किया जा सकता है। जो हमारे अत्यंत आत्मीय और समाज में सबको प्रिय अजातशत्रु स्वयंसेवक एवं अन्य कार्यकर्त्ता हैं, वे ही हमारी धरती का नमक और चंदन की सुगंध हैं।

श्री जैथलिया जी जिस सहजता एवं सरलता की प्रतिमूर्ति हैं, वह परमार्थ को ही जीवन की सार्थकता मानती है। संत विनोबा ने कहा था कि अच्छे लोग हमारे समाज की खाद, हवा और पानी बनाते हैं। ठीक ही कहा था। वरना जहाँ रक्त बंधु केवल आपसी विद्वेष, ईर्ष्या, छल और परपंचों में जुटे रह कर खुद को फ़रिश्ता और शेष सबको दानव घोषित करने में व्यस्त रहते हों, वहाँ जैथलिया जी जैसे व्यक्ति हैं जो विद्वेष और कटुता के व्याप को समाप्त करते हुए निर्मल संगठन शक्ति का भाव फैलाते हैं तथा अहंकार से भरी भीड़ में एक ऐसे अपनेपन के दीप हैं, जो जब भी जिससे मिलते हैं एक ही अहसास दिलाते हैं कि हम उनके परिवार के अंग हैं।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय देव दुर्लभ कार्यकर्त्ताओं की सामूहिक पुण्याई का प्रतिफल है और उसकी गतिविधियाँ राष्ट्रीय स्तर पर न केवल ख्याति प्राप्त करती रही हैं बल्कि राष्ट्रीय विचार के कार्यकर्त्ताओं को प्रेरित भी करती है। पूज्य डा. हेडगेवार जी के नाम पर पुरस्कार स्थापित करना और जिन्होंने समाज के लिए कुछ भी अच्छा किया हो,

उनका मानवर्द्धन करते हुए श्रेष्ठ कार्यों की परंपरा, वीरता, तेजस्विता, पराक्रम, शौर्य, राष्ट्र की विजिगीषु चेतना तथा सेवा, समर्पण, त्याग और बलिदान के मूल्य अधिक से अधिक प्रचारित हों, इसके लिए बौद्धिक सामग्री का प्रकाशन, यह सब श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की विशिष्ट गौरवशाली पहचान है। आज हिन्दू समाज संकट और चुनौतियों के कालखंड से गुजर रहा है जिसमें वामपंथियों की तरह सूचियाँ बनाना, मिटाना और अपनों को पराया बनाना, सोमनाथ विध्वंस की पुनरावृत्ति का दृश्य पैदा करता है। जैथलिया जी और उनकी यशस्वी टीम सोमनाथ निर्माण का वातावरण बनाती है।

श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी और श्री बड़ाबाजार कुमारसभा एक-दूसरे के समानार्थी ही मान लिए गए हैं। इन तमाम उपलब्धियों एवं मान बिंदुओं के पीछे उनकी सतत् विनयशील साधना, विमल लाठ जी-महावीर प्रसाद बजाज जी-त्रिपाठी जी प्रभृति का महनीय समर्पण एवं समाज के विनम्र साधकों का योगदान अप्रतिम रहा है।

राष्ट्रीय विचारों के साहित्यसाधकों के प्रति जैथलियाजी का विशेष अनुराग है। वे कलम के धर्म को पहचानते हैं। कलम की साधना करते हैं। ग्रंथानुरागी हैं। विद्वानों के प्रति विनम्रता से सम्मान प्रकट करते हैं। 'सर्वोषां अविरोधेन:' उनका राष्ट्रीय कार्य सतत् प्रवहमान है। वे शतायु हों। स्वस्थ चित्त से सौंवा वसंत मनाएँ। और देश में राष्ट्रीय शक्तियों की सशक्त प्रभुत्व स्थापित करने में अपनी ईश्वरप्रदत्त भूमिका निभाएँ। यह परमपिता परमेश्वर के श्रीचरणों में प्रार्थना है। उनके अमृत-महोत्सव के अवसर पर हम सबकी ओर से उन्हें प्रणाम।

– तरुण विजय

नागराज शर्मा
सम्पादक: बिणजारो
पिलानी-३३३०३१
मोबाइल: ९४६०२७६४२६

शुभकामना

जुगलकिशोर जी जैथलिया के अमृत महोत्सव पर मेरा हार्दिक अभिनन्दन। सामाजिक और साहित्य के क्षेत्र में जैथलिया जी का कार्य इतिहास के पन्नों में अंकित होगा। आने वाली पीढ़ी यह विश्वास ही नहीं कर पायेगी कि एक अकेला व्यक्ति इतना हिमालयी कार्य कर सकता है। आप एक प्रभावी वक्ता और कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुए।

– नागराज शर्मा

महेन्द्र प्रताप गनेड़ीवाल
मार्शल हाउस, रूम नं. ७५२
२५, स्ट्राण्ड रोड, कोलकाता-१
मो.: ९८३०१२०१७२

शुभकामना

श्री जुगलजी के अमृत महोत्सव पर मेरी और हमारे पूरे गनेड़ीवाल परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनायें। जुगलजी हमारे परिवार के सदस्य की तरह ही पिछले पचास वर्षों से है। उनके जीवन की उपलब्धियों पर हम सब गर्वित हैं। प्रभु उनको दीर्घायु करें।

– महेन्द्र प्रताप गनेड़ीवाल

कविराज शकुन्तला शर्मा
१४३/१/१, कॉटन स्ट्रीट
कोलकाता-७००००७
मो.: ९७४८५०४०६१

शुभकामना

श्री जुगलजी से हमारे परिवार का तीन पीढ़ियों का सम्पर्क है। मेरे पूज्य पिता वैद्य गोवर्धनजी शास्त्री बड़ाबाजार क्षेत्र के संघचालक थे एवं आपातकाल में सत्याग्रह करके कारावरण भी किया था। जुगलजी के पिताजी से भी उनका घनिष्ठ प्रेम था एवं संघ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता होने के नाते और सामाजिक क्षेत्र की उनकी विविध गतिविधियों के कारण भी जुगलजी के प्रति अत्यन्त स्नेह था। जुगलजी का हमारे घर पर भी निरन्तर आना होता था। मेरा भी उनके परिवार से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

मेरे पिताजी सिला हुआ वस्त्र नहीं पहनते थे पर जब वे संघचालक बने तो श्री भंवरलाल जी मल्लावत एवं जुगलजी ने उनसे अनुरोध किया कि वे संघ कार्य के समय संघ की गणवेश यानी खाकी निकर, सफेद कमीज इत्यादि पहनें तो इससे कार्य की मर्यादा बढ़ेगी। उन्होंने विचार करने का आश्वासन दिया एवं ६० वर्ष की उम्र में भी वेशभूषा में यह परिवर्तन किया।

जुगलजी के ७५ वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में उनका अभिनन्दन बड़े स्तर हो रहा है इससे मैं बहुत हर्षित हूँ एवं दीर्घायु की कामना करती हूँ।

– शकुन्तला शर्मा

वैद्य महावीर प्रसाद अग्रवाल

आयुर्वेदिक रत्न

जनसेवक औषधालय

६, बांसतल्ला गली, कोलकाता-७

मोबाइल: ९३३१९३३०७७

शुभकामना

जुगलजी से मेरा करीब ३५ वर्षों से सम्पर्क है। जो सादगी, सरलता, मृदुभाषा वर्षों पहले दिखती थी, उसमें और निखार आया है। किसी भी विषय पर उनका विचार बहुत ही सुलझा हुआ रहता है। राजनीति में सक्रिय होते हुए भी राजनीति उनसे कोसों दूर है।

बड़ाबाजार लाइब्रेरी में हमारी जो भी बैठकें होती हैं उनमें इनका बहुत ही सटीक विचार रहते हैं, मुझे तो इनसे बहुत कुछ सीखने को मिला है। जुगलजी सही मायने में कार्यकर्त्ताओं के निर्माता है।

आज के इस स्वार्थपूर्ण जीवन के माहौल में वे निस्वार्थ व्यक्ति हैं। वही सादगी, वही सरलता, वही अपनापन। कई वर्षों पहले एक बच्चा बहुत अधिक बीमार था, उसे पेट की लीवर की काफी परेशानी थी। जुगलजी ने उसे मेरे पास भेजा था। काफी प्रयास से वह बच्चा ठीक हो गया था। तो जुगलजी का फोन आया कि आपने बहुत ही परिश्रम कर उसे नया जीवन दिया है।

बातें तो बहुत हैं, सार एक ही है जुगलजी बेजोड़ व्यक्ति हैं। परमपिता से प्रार्थना है आप शतायु हों, देश, समाज एवं कार्यकर्त्ताओं को आपसे नव सन्देश, नवजागरण, नवचेतना मिलती रहे। इस चमन में आप इसी तरह मुस्कुराते रहें। समाज को एक नई राह दिखलाते रहें।

– महावीर प्रसाद अग्रवाल

देवकी–महावीर खण्डेलिया
१९१, बिनय बादल दिनेश रोड
हिन्दमोटर–७१२२३३ (प.बं.)
मोबाइल: ९८३११३३६६५

शुभकामना

२ अक्टूबर २०१२ का शुभ दिन और आदरणीय श्री जुगलकिशोर जैथलिया के अमृत महोत्सव का शुभ आयोजन है। ७५ वर्षों का परिपूर्ण सार्थक और सफल जीवन जीने के बाद वे ७६वें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं।

श्री जैथलियाजी एक ऐसे स्वस्थ, प्रखर और सुदर्शन व्यक्तित्व का नाम है जिसमें तीक्ष्ण बौद्धिक विवेक और राष्ट्र प्रेम तथा दृढ़ इच्छा शक्ति का अद्भुत संगम है। राजनैतिक क्षेत्र हो या सामाजिक कल्याण हेतु अनेक संस्थाओं के विकास के लिए कार्यकारिणी सहयोग या कुमारसभा पुस्तकालय के विकास कार्यक्रम सभी ओर उनकी कार्यकुशलता और नेतृत्व क्षमता का दिग्दर्शन होता है। आपके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपके चुम्बकीय आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। चरैवेति–चरैवेति में अटूट विश्वास रखने वाले श्री जैथलिया जी अनेक लोगों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। उनकी गतिशीलता अनुकरणीय है। सामाजिक विसंगतियों से आये बिखराव के लिए आपके हृदय की वेदना आपके सरल और बोधगम्य सटीक वक्तव्यों में स्पष्ट दिखता है। इस अमृत महोत्सव पर हम सबकी यही मंगल कामना है कि आपके अनथक कदम सदैव इसी प्रकार अपने निर्दिष्ट पथ पर निरंतर चलते रहें और हम सबका मार्गदर्शन करते रहें। जीवन मंथन के अनुभवों से हम सभी लाभान्वित होते रहें।

आपके नेतृत्व में पुष्पित पल्लवित होता कुमारसभा पुस्तकालय इसी प्रकार सुधीजनों को ज्ञान लाभ बांटता रहे तथा देश की ऐसी महान हस्तियों का सम्मान करता रहे जिन्होंने हिन्दू समाज के उत्थान के लिए और समाज के बहुमुखी विकास के लिए महती योगदान देकर सबका कल्याण किया है।

– देवकी-महावीर खण्डेलिया

पुरुषोत्तमलाल बजाज
सी-४, गोविन्द मार्ग, जनता कॉलोनी
जयपुर-३०२००४ (राज.)
मो.: ०९३५१४०४९७५

शुभकामना

कर्मयोगी जुगलकिशोर जैथलिया अमृत महोत्सव की सूचना मिली, हार्दिक आभार। आयोजकों को भी नमन।

पिछले पाँच दशकों से श्री जुगलजी का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन मुझे मिला जो मेरे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

ईश्वर आपको और अधिक क्षमता, ऊर्जा एवं शक्ति दे जो हम सबके लिए प्रेरणा और मार्गदर्शक का काम करें। आपके शतायु की कामना करता हूँ।

– पुरुषोत्तमलाल बजाज

श्रीनिवास मंत्री
६०१, विमल ज्योति बिल्डिंग
ओल्ड गोल्डेन नेस्ट, मीरा भयंदर रोड,
भयन्दर (पूर्व), मुंबई-४०११०५
मो.: ०९३२२१४३९५३

शुभकामना

यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय मेरे आदरणीय मामाजी जुगलकिशोरजी जैथलिया का अमृत महोत्सव मना रहा है।

ईश्वर आपको स्वस्थ रखें, दीर्घायु करें तथा लोककल्याण के मार्ग पर अबाध चलते रहने का सम्बल प्रदान करें।

– श्रीनिवास मंत्री

डॉ. नित्यानन्द
संरक्षक: उत्तरांचल दैवी आपदा पीड़ित
सहायता समिति (पंजीकृत)
सेवाश्रम, केशवपुरम, पो. मनेरी
उत्तरकाशी-२४९१९४ (उत्तराखंड)
फोन/फैक्स: ०१३७४-२३६२१७

शुभकामना

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी के अमृत महोत्सव का आप आयोजन करने जा रहें हैं।

श्री जैथलिया जी से मेरा सम्बन्ध उस समय आया जब मुझे जनवरी २००७ में विवेकानन्द सेवा सम्मान से विभूषित किया गया। इस दृष्टि से ३ दिन तक कोलकाता में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संचालन में उनका बहुत बड़ा योगदान है। बंगाल में हिन्दी साहित्य की इनके माध्यम से बड़ी सेवा हुई है।

श्री जैथलिया जी ने साहित्यिक, राजनैतिक और सामाजिक कार्यों में अपना सम्पूर्ण जीवन नि:स्वार्थ भाव से लगाया है। मैं उनके शतायु व स्वस्थ जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

– नित्यानन्द

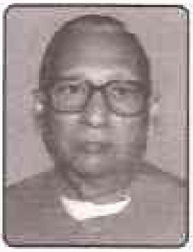

पुष्करलाल केडिया

संस्थापक अध्यक्षः मनीषिका

४३, कैलाश बोस स्ट्रीट

कोलाकाता-७००००६

मो.: ९८३१६१२७२३

प्रेरक जीवन चरित्र

बड़े ही हर्ष का विषय है कि श्री जुगल किशोर जी जैथलिया के अमृत वर्ष पूर्ति पर उनका अभिनन्दन करने का लिए एक विशेष समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर उनके सेवा-जीवन पर आधारित एक ग्रंथ का भी प्रकाशन किया जायेगा।

हमारा शरीर पाँच तत्वों से बना है। मिट्टी सहनशीलनता और ऊर्जा-स्रोत का प्रतीक है तो जल समन्वय का। अग्नि तेज उत्पन्न करती है तो आकाश शब्दों के द्वारा सबमें चेतना पैदा कर देता है। हवा अदृश्य रूप में प्रतिपल सेवारत रहती है। उन्हें ये पाँचों ही तत्व कार्यकर्त्ताओं को साथ में लेकर चलना और आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। सदैव नया चिन्तन और नई सोच को जन्म देता है। कार्यकर्त्ताओं के लिए श्री जैथलियाजी आदर्श और प्रेरणास्रोत हैं। श्री जुगलजी का बहुआयामी व्यक्तित्व न केवल चर्चा का विषय रहा है, बल्कि उससे लोगों को स्फूर्ति और प्रेरणा भी मिलती है। ऐसे व्यक्ति का मूल्यांकन सिर्फ उनकी आयु के बर्षों से नहीं अपितु उनके कार्यों से होता है।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया को शतायु दें जिससे देश और समाज को उनकी सेवाएं मिलती रहे।

- पुष्करलाल केडिया

॥ ॐ ॥

बैजनाथ पंवार

वार्ड नं. २२, चुरू-३३१००१ (राज.)

दूरभाष : ०१५६२-२५३३४२

शुभकामना

परमादरणीय श्रीमान् जुगलकिशोरजी जैथलिया साहब के शुभनाम से लगभग दो दशाब्दियों से सुपरिचित हूँ। मायड़ भाषा राजस्थानी के महाकवि श्री कन्हैयालाल सेठिया के समस्त साहित्य का, सेठिया समग्र शीर्षक से (चार खण्डों में) प्रकाशन करके आपने हिन्दी, राजस्थानी एवं अन्य भाषाओं के साहित्यकारों का उचित मार्गदर्शन किया है, जिसके लिए वे आपके ऋणी रहेंगे।

वैसे, आप से मेरा परिचय तो दीर्घकालीन है, किन्तु आपके दर्शनों का सर्वप्रथम, शुभअवसर आपकी पुण्य जन्मस्थली छोटीखाटू (जिला- नागौर) में हुआ। महाकवि सेठिया की पुण्य स्मृति में वर्ष २००८ का प्रथम पुरस्कार श्रीलाल नथमल जोशी बीकानेर को भेंट करने का कार्यक्रम था। द्वितीय वर्ष २००९ ई. का महाकवि सेठियाजी की पुण्य स्मृति का पुरस्कार छोटीखाटू में मुझे मिलने पर, मैंने पुनः आपके दर्शन किए। आपकी विनम्रता, विद्वता एवं अन्य सृजनात्मक-कल्याणकारी प्रवृत्तियों से परिचित हुआ। आप केवल साहित्यिक जगत ही नहीं वरन् अन्य लोक कल्याणकारी कार्यों के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिन्हें आप अपना अमूल्य समय देते रहते हैं। मैं आपके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से भाव-विभोर हूँ।

ऐसे, सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी श्रीमान जैथलिया साहब के अमृत महोत्सव पर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का निर्णय लेकर श्लाघनीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय कार्य किया है। इस अत्युत्तम कार्य के लिए श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता को कोटिशः साधुवाद।

अपनी हार्दिक बधाई देता हुआ - आपके सपरिवार उत्तम स्वास्थ्य एवं शतायु होने की कामना जगत नियंता से करता हूँ। सादर,

- बैजनाथ पंवार

जयदीप चितलांगिया
१२बी, जजेज कोर्ट रोड
कोलकाता - ७०००२७
दूरभाष: २४७९८३६०

१२ सितम्बर २०१२

शुभकामना

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री जुगल किशोर जी जैथलिया का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जा रहा है। मेरे पिता स्व. पी.डी. चितलांगिया एवं श्री जैथलिया जी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अनन्य सहयोगी थे। उनकी इस निकटता के कारण मुझे भी जैथलिया जी के साथ बैठने का, उन्हें समझने का मौका मिला। आज के युग में आप जैसे निस्वार्थ सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्त्ता मिलना अत्यन्त दुष्कर है। बिना किसी पद की लालसा अथवा चुनावी राजनीति से दूर रहते हुए सिर्फ विचारधारा का समर्थन करने के लिए राजनीति करने वाले कितने राजनीतिज्ञ मिलेंगे? राजनीति के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में भी आपने जो योगदान दिया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

जिस व्यक्ति ने प्रात: स्मरणीय स्व. आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री का आशीर्वाद एवं स्नेह प्राप्त किया है वह कोई साधारण व्यक्ति तो हो ही नहीं सकता। अपने व्यावसायिक कामकाज से पूर्णत: निवृत होकर आपने समाज एवं साहित्य जगत की जो सेवा की है वह वन्दनीय है। मैं आपके सुन्दर स्वास्थ्य एवं सुखमय दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

– जयदीप चितलांगिया

सज्जन भजनका
श्रीराम गार्डेन, फ्लैट-१०ए
१५, बेलवेडियर रोड, अलीपुर
कोलकाता - ७०००२७

१ सितम्बर २०१२

शुभकामना

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि मेरे आत्मीय श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया के ७५ वर्ष पूर्ति पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एक विशिष्ट समारोह आयोजित कर उनका अभिनन्दन कर रहा है एवं उस अवसर पर उनके व्यक्तित्व पर एक ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रहा है।

जुगलजी का व्यक्तित्व बहुमुखी है। उन्होंने विविध विधाओं से समाज एवं राष्ट्र की सेवा की है जिसमें साहित्य, समाजसेवा एवं राजनीति भी शामिल है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आपका स्वयंस्वीकृत राष्ट्रसेवा का मार्ग कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक एवं स्वान्त:सुखाय है, किसी लाभ या लोभ के लिए नहीं। आज ऐसे लोग विरल हो चले हैं। आपको इस शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि आपका स्नेह एवं सान्निध्य हम सबको दीर्घकाल तक प्राप्त होता रहे।

- सज्जन भजनका

बंकटलाल गगड़
ई-१, कमलकुंज
१५/२सी, चेतला रोड, कोलकाता-२७
दूरभाष : (०३३)२४७९९१४०

सुख-दुःख के साथी जैथलियाजी

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया के अमृत महोत्सव को समारोह के रूप में मनाने एवं एक ग्रन्थ भी उनके जीवन पर प्रकाशित करने की योजना बनाई है। इस हेतु मैं पुस्तकालय को बधाई देता हूँ। मेरा विश्वास है कि उनके जीवन से समाजसेवियों को नई ऊर्जा मिलेगी।

मेरा उनसे परिचय ४५-५० वर्ष का है जब १९६०-७० के दशक में उच्च शिक्षा लेने एवं रोजगार हेतु कलकत्ता आया। राजस्थान से उस समय हजारों विद्यार्थी इसी उद्देश्य से कलकत्ता आते थे। मैं बाँगड़ बिल्डिंग में 'डीडवाना नागरिक सभा' के कमरे में ही ठहरा था। वहाँ मेरे साथ और भी ऐसे करीब २० व्यक्ति थे। सुबह या सायंकाल कॉलेज और दिन में नौकरी। घर से दूर रहने पर नाना-प्रकार की असुविधायें जीवन में आती हैं, ऐसे समय जुगलजी को हमने अपने निकट पाया। वे मुझे संघ की शाखा में जाने की प्रेरणा भी देते एवं स्वयं कभी-कभी लेने भी आते !

सभी परिस्थितियों में मेरा मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्द्धन करते ! मेरे साथ ही नहीं औरों के साथ भी उनका ऐसा ही आत्मीय व्यवहार था। बाद के काल में तो यह सम्बन्ध और भी दृढ़ होता गया। आज भी वे मेरे अत्यन्त निकट के व्यक्तियों में से हैं।

ऐसे लोकोपकारी के ७५ वें वर्ष पूर्ति पर मैं प्रभु से उनकी उत्तरोत्तर उन्नति एवं दीर्घायु की कामना करता हूँ।

– बंकटलाल गगड़

प्रो. वासुदेव देवनानी
विधायक: अजमेर (उत्तर)
एवं पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री
२८, संत कंवरराम कॉलोनी
फॉयसगर रोड, अजमेर
दूरभाष: ०१४५-२६०१६०१

शुभकामना

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आगामी २ अक्टूबर को श्रद्धेय श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया जी के ७५वें जन्मदिवस के अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता द्वारा उनके अमृत महोत्सव को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

श्री जैथलिया जी एक कर्मयोगी, समाजसेवी व राष्ट्रवादी विचारधारा के व्यक्ति हैं। सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्र से आपका सुदीर्घ जुड़ाव तथा इनके विकास में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ७५ वर्ष की आयु में समाज, साहित्य एवं देशसेवा के कार्यों के प्रति आपका समर्पण अत्यन्त प्रेरणास्पद व अनुकरणीय है। पूर्व में पुस्तकालय के कार्यक्रमों के अवसर पर जैथलियाजी ने मुझे भी याद किया था, जहाँ मुझे भी उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर मिला है।

श्री जैथलिया जी के अमृत महोत्सव के अवसर पर ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें शतायु करें तथा हमें उनका स्नेह, सहयोग, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन सदा मिलता रहे। पुस्तकालय द्वारा इस अवसर पर प्रकाशित किये जा रहे अभिनंदन ग्रंथ हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

– वासुदेव देवनानी

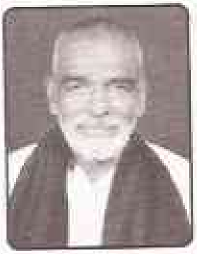

प्रेमनाथ सिंह
भृगु आश्रम
बलिया (उ.प्र.)
मोबाइल: ०९८३९१७५५६६

शुभकामना

अपने बयालीस वर्षों के दीर्घ संघ जीवन में अपने व्यवहार-आचरण-चरित्र तथा मन-बुद्धि-आत्मा को जीवन की सफलता-असफलता, सुख-दुःख, मान-अपमान, हताशा-निराशा आदि समस्त आयामों में विचलन की स्थिति में मैं जिन ध्येयनिष्ठ योगियों का दर्शन करने मात्र से अपने मनोविकारों को दूर कर अपने हृदय को पूर्ण श्रद्धा के साथ मातृभूमि के सेवा में सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा पाता रहा हूँ, उन तपस्वियों की श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया हैं।

आप सामाजिक-राजनैतिक-धार्मिक-आर्थिक सभी आयामों में समान रूप से सुप्रतिष्ठित हैं।

जुगलजी की साधु के सदृश्य सरलता, सज्जनता, हृदय की कोमलता तथा समशीतोष्ण सुख-दुखेषु सभी स्थितियों में सम में रहने की सिद्धता का मैं कायल हूँ। मैं अपने इष्टदेव से प्रार्थना करता हूँ कि वे दीर्घायु हों तथा स्वस्थ व सबल रह कर सौ वर्षों की आयु प्राप्त करें तथा हम जैसे कार्यकर्ताओं को बल प्रदान करते रहें।

– प्रेमनाथ सिंह

घनश्यामदास बेरीवाला

अध्यक्ष: कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी

१६७, चित्तरंजन एवेन्यू, कोलकाता-७

मो. ९८३०० ४७३६०

शुभकामना

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा मेरे परममित्र श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया के ७५ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर उनका अमृत-महोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है एवं एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

जुगलजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाल्यकाल से ही स्वयंसेवक रहे हैं एवं उन्होंने संघ के विभिन्न दायित्वों को पूरी निष्ठा से निभाया है। संघ से प्राप्त प्रेरणा से ही उन्होंने विभिन्न समाजसेवा के कामों में योगदान दिया एवं आगे बढ़कर साहित्यिक एवं राजनैतिक कार्यों में भी यश प्राप्त किया।

मैं भी अपने गाँव में १९४२ ई. में १२ वर्ष की उम्र में ही स्वयंसेवक बना। कलकत्ता आने पर भी मैं संघकार्य में सक्रियता से भाग लेता रहा। यहाँ माननीय भंवरलालजी मल्लावत हमसब लोगों के मार्गदर्शक रहे, सामाजिक कार्यों में भी, पारिवारिक कार्यों में भी। उनके स्वर्गारोहण के बाद श्री जुगलजी को मैं उसी भूमिका में रखता हूँ। भारतीय जनता पार्टी एवं कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी के मामलों में जुगलजी का मुझे सदैव सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला है। कुमारसभा के कार्यों में भी हमलोग साथ हैं जिसको इन्होंने अपने अथक परिश्रम से अखिल भारतीय स्तर की ऊँचाई पर पहुँचाया है।

मैं इस अवसर पर मेरे ईष्ट श्री बिहारीजी महाराज से प्रार्थना करता हूँ कि वे इन्हें दीर्घायु दें एवं स्वस्थ रखें।

– घनश्यामदास बेरीवाला

शांतिलाल जैन
चेयरमैन: कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी लिमिटेड
२३, महर्षि देवेन्द्र रोड
कोलकाता-७००००७
मोबाइल: ९८३००९३७६०

शुभकामना

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने कर्मयोगी श्री जुगलकिशोर जैथलिया के अमृत महोत्सव को समारोहपूर्वक मनाने का संकल्प किया है। इस शुभ अवसर पर अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन भी सराहनीय कदम है। यह अत्यंत खुशी की बात है। धनाढ्य व्यक्तियों का सम्मान तो सभी अंतरंगता से करते हैं, किंतु उसी तत्परता से वैदुष्य का सम्मान तो बिरले लोग ही करते हैं। जुगल भाईजी का अभिनंदन मानवीय मूल्यों का सम्मान है। अभिनंदित होने वाले से भी अधिक गौरवान्वित वह संस्था होती है, जो ऐसी विभूतियों का सम्मान करती है। आदरणीय जैथलियाजी के व्यक्तित्व को शब्दों में रेखांकित कर पाना सहज नहीं है। हजारों की भीड़ में भी अपनी उपस्थिति एवं अहम् स्थिति का अहसास कराने में सक्षम जैथलियाजी का अभिनंदन, किसी भी अभिनंदित व्यक्ति का चमोंत्कर्ष नहीं है, बल्कि मील का पत्थर है, जहाँ से उसे नई ऊर्जा के साथ पुन: प्रारंभ करना होता है, अग्रसर होना होता है।

जैथलियाजी से मेरा संपर्क लगभग ४५ साल पुराना है और मैंने उन्हें बड़े भाई के रूप में ही देखा है। मैं शुरू से ही राजनीति में सक्रिय था, जबकि जैथलियाजी ने विष्णुकांतजी शास्त्री के साथ आपातकाल के बाद राजनीति के क्षेत्र में कदम रखा। वे अत्यंत सुलझे हुए व्यक्ति हैं तथा रचनात्मक सेवाकार्यों के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जैथलियाजी शिक्षाप्रेमी और कुशल संगठनकर्ता हैं। आपके भाषण भावयुक्त, वास्तविक और उत्साहवर्द्धक होते हैं। उनका समाज के प्रति महत्वपूर्ण योगदान है और उनकी विशिष्ट जनकल्याण सेवाएँ प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। वृद्ध होते हुए भी वे एक नवयुवक से ज्यादा सक्रिय हैं। उनकी सेवाओं एवं लगन की वजह से समाज उन्हें एक लौहपुरुष की संज्ञा दे सकता है। उनके प्रति मेरे मन में अपार श्रद्धा आज भी विद्यमान है। मुझे उपनिषद् का वह मंत्र याद आ रहा है, जहाँ यह प्रार्थना की गई है... ऊँ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु, सहवीर्यं करवावहे..., इस प्रार्थना में 'सह'

की जो भावना व्यक्त की गई है, उसका साकार रूप हमें जैथलियाजी में परिदृश्य होता है। वे खुद कुशल कार्यकर्ता तो हैं ही, पर उनमें यह भावना भी बखूबी है कि समाज में और भी कार्यकर्त्ता बनें, सामने आएं। ऐसा स्वयं तेजस्वी नहीं होने से नहीं हो सकता। उपरोक्त प्रार्थना में जो 'मा विद्विषावहै' हम परस्पर द्वेष न करें, की जो भावना देखी जाती है, वही भावना जैथलियाजी का जीवनदर्शन है।

उन्हीं का जीवन धन्य है, जो अपने जीवन से अन्य के जीवन का सिंचन करे। अपने प्रकाश से दूसरों के अंधकार का हरण करे। यही जीवन की उपादेयता और सार्थकता है। श्री जैथलियाजी का जीवन इस दृष्टि से पूर्ण सार्थक है। आप दीर्घायु होकर समाज की अधिक से अधिक सेवा करें, यही कामना है।

– शांतिलाल जैन

कर्मयोगी श्री जुगलकिशोर जैथलिया

अमृत महोत्सव अभिनन्दन समारोह के उपलक्ष पर

हार्दिक अभिनन्दन

जुग जुग जीवो जुगल जी जैथलिया जग मांय
गम खावण गहरा घणा ज्यूं गंगा पाप समाय
लगा दियो जीवन जुगां परमारत के काज
जीण धरती पर पग धरो उण धरती पर नाज

– डॉ. वि.डी. चारण
श्री करणी क्लिनिक, छोटीखाटू
मो.: ९७९९३६८४२३

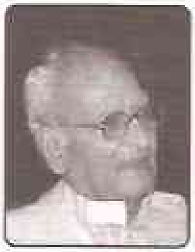

न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त
अध्यक्ष: इटावा हिन्दी सेवा निधि
'शान्ति निलय', २५/१-ए, टैगोर टाउन
इलाहाबाद-२११००२ (उ.प्र.)
दूरभाष : (०५३२) २४६५०३३

मंगल-कामना

भारत में प्राचीन काल से मान्यता आ रही है कि जो व्यक्तित्व उत्कृष्ट गुणों से विशिष्ट होने के कारण सराहनीय है उसके सम्बन्ध में यदि मौनता ग्रहण कर ली जावे, उपयुक्त अवसर पर उनकी प्रशंसा न की जाय, उनके आदर्श एवं अनुकरणीय गुणों को उजागर कर उनका अभिनन्दन न किया जाय तो वाङ्मय का जन्म विफल हो जाता है।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कोलकाता साधुवाद की पात्र है कि एक कर्मनिष्ठ, परोपकारी, समाजसेवी जो अर्द्धशताब्दी से मौन साधक की भाँति निष्ठापूर्वक विभिन्न रूप में समाज सेवा में अपना विशिष्ट योगदान कर रहा है, के जीवन के पचहत्तर वर्ष पूर्ण कर लेने के अवसर पर उनका अमृत महोत्सव संजोकर अभिनन्दन-वंदन कर रही है, कर्मस्वी श्री जुगल किशोर जैथलियाजी निःसंदेह उसके सात्विक सुपात्र हैं।

आधुनिक भारत के इतिहास में ईस्वी वर्ष २ अक्टूबर की तिथि ने पावन स्थान ग्रहण कर लिया है। वर्तमान काल में १५ अगस्त एवं २६ जनवरी के साथ-साथ २ अक्टूबर सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय पर्व के रूप में सम्पन्न होता है। राष्ट्रपिता बापू एवं लाल बहादुर शास्त्रीजी के जन्म दिन की ही तिथि २ अक्टूबर को वर्ष १९३७ में समाजसेवी जैथलियाजी का जन्म हुआ है।

विगत कई वर्षों से मुझे उन्हें निकट से जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनकी सामाजिक सक्रियता एवं निःस्पृह सेवा भावना निश्चय ही श्लाघनीय है, वानप्रस्थ से संन्यास की ओर उन्मुख जुगल किशोर जैथलियाजी मन-वचन-कर्म से देश और समाज कार्य में जुटे हैं।

प्रभु से मंगल कामना करता हूँ कि वे दीर्घायु हों एवं तन-मन से स्वस्थ रहकर निरन्तर समाज सेवा का पथ आलोकित करते रहें।

– प्रेमशंकर गुप्त

डॉ. एन.सी. दिवाकर
पी-८, कलाकार स्ट्रीट,
कोलकाता - ७,
मोबाइल: ९८३१४-०४३४७

शुभकामना

कर्मयोगी जुगल जी मेरे परम मित्र ही नहीं, मेरे परिवार के सदस्य, मेरे पथ प्रदर्शक रहे हैं। उनका जीवन मेरे लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। उनकी उपलब्धियों से आप सभी अवगत हैं, फिर भी उनके व्यक्तित्व को जिस रूप मे मैंने देखा है वह मैं व्यक्त करना चाहूँगा।

व्यक्तिगत रूप से मैं एक चिकित्सक के रूप में उनके जीवन से जुड़ा हूँ और हर व्यक्तिगत जटिल परिस्थितियों में उन्हें बिना कोई शिकन, दृढ़तापूर्वक साम्यभाव से, सहनशीलता से वस्तु स्वरूप को विचार कर कठिनाइयों को बड़ी सहजता से पार करते देखा है। इस युग में यह गुण पाना दुर्लभ है।

सर्वमान्य है कि राजनैतिक जीवन चर्या अहम् एवं विषम का वातावरण उत्पन्न करती है परन्तु मैंने सदैव श्री जैथलिया को अपने शांत स्वरूप में नीतिपुंज बनकर लोगों को लोकमंगल के लिए पथ प्रदर्शन करते देखा है।

हर कार्य में निपुण इस परममित्र युगवीर को मेरा हार्दिक अभिनन्दन। उनके गुणों का व्याख्यान करना सूरज को दीपक दिखाने सा प्रतीत होता है। ऐसे नि:स्वार्थ भाव से सामाजिक सेवा करते मैंने कम लोगों को देखा है।

उनका जीवन एक ज्ञान ज्योति का प्रतीक है जो हमें विषमता में समता, अधैर्य में धैर्य व अशांत में शांत स्वरूप धारने का हौसला प्रदान करती है। उनका सामीप्य मेरे लिए एक दैविक उपहार है। उनके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ और नए कीर्तिमानों की ज्योति की अभिलाषा करता हूँ।

– एन.सी. दिवाकर

रणेन्द्रलाल बंद्योपाध्याय

संघचालक, पूर्व क्षेत्र : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

केशव भवन, ९ए, अभेदानन्द सरणी,

कोलकाता- ७००००६

दूरभाष : (०३३)२३५०-८०७५

१३ सितम्बर, २०१२

शुभकामना

बन्धुवर श्री जुगलकिशोर जैथलिया के ७५ वर्ष पूर्ति के आयोजन पर हम सभी हर्षित हैं। वे बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं एवं मेरे दीर्घकाल के सक्रिय सहकर्मी रहे हैं। उनका जीवन लोकहित के कार्यों में समर्पित रहा है। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, राजस्थान परिषद एवं सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय जैसे विभिन्न संस्थाओं के वे पथ-प्रदर्शक हैं। विवेकानन्द सेवा सम्मान एवं डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान के प्रवर्तन में उनकी महती भूमिका सर्वविदित है।

समाज जागरण के कार्यों के वे दृढ़व्रती हैं। आपातकाल में उनके द्वारा हल्दीघाटी चतुःशती पर आयोजित वीर-रस कवि सम्मेलन सबको स्मरण है। कोलकाता में महाराणा प्रताप की स्मृति में एवं सरदार पटेल की स्मृति में लगाई गई भव्य कांस्य प्रतिमाएँ उनके कर्तृत्व को उजागर करती हैं।

समाजसेवा के साथ-साथ साहित्यिक क्षेत्र में भी उनका विशेष अवदान है। उन्होंने कई ग्रन्थों एवं संग्रहणीय स्मारिकाओं का भी सम्पादन किया है।

सुवक्ता एवं कुशल संगठक जुगलजी बंगला साप्ताहिक 'स्वस्तिका' के प्रकाशक 'स्वस्तिक प्रकाशन ट्रस्ट' के एक प्रमुख ट्रस्टी हैं।

ऐसे व्यक्तित्व पर हमें गर्व है। उनके प्रति आन्तरिक शुभेच्छा एवं प्रीति के साथ हम श्री भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें स्वस्थ रखें एवं शतायु हों।

– रणेन्द्रलाल बंद्योपाध्याय

खण्ड-२

वंशावली, आत्म कथ्य
एवं परिजनों के उद्गार

जुगलकिशोर जैथलिया वंशावली

- मथुरादासजी (*कुडौली ग्राम*)
  - मलूकचन्दजी
    - लूणकरणजी
      - लिखमीचन्दजी
        - राजनाथजी
          - भागचन्दजी
            - पन्नालालजी
              - रामधनजी (दादाजी) (हीरा देवी) (*छोटीखाटू आये*)
                - बालकिशनजी (धन्नी देवी)
                - प्रेमराजजी (हीरादेवी)
                - रामजीवनजी (अविवाहित)
                - तुलसीरामजी (अविवाहित)
                - लक्ष्मीनारायणजी (ज्यानी देवी)
                - जीतमलजी (अविवाहित)
                - सिनगारी बाई (पूसारामजी सारड़ा)
                - कन्हैयालालजी (पिताजी) (१९१२-८७ ई.) (पुष्पा देवी) (१९१६-९८ ई.)
                  - जसोदाबाई (रामाकिशनजी मंत्री)
                  - जुगलकिशोर (मैना देवी) (१९३९-८७ ई.)
                    - सीता दामोदरजी राठी
                    - गोपाल (तरुणाई में देहावसान) (१९६६-१९८२ ई.)
                    - सुमित्रा (शिवनारायणजी हेडा)
                    - गोविन्द (निशा)
                      - प्रज्ञा (२८.११.९४)
                      - महेश (२८.४.९६)
                      - कीर्ति (११.१०.९८)
                    - कौशल्या (मुरलीमनोहरजी चांडक)
                  - कमलाबाई (चांदमलजी राठी)

जुगलकिशोर जैथलिया : संक्षिप्त जीवनक्रम

- **जन्म** : २ अक्टूबर १९३७ ई. (आश्विन शुक्ल १३, १९९४ वि.)
- **पैतृक निवास** : छोटीखाटू, जिला- नागौर (राजस्थान)
- **निवास** : ४२, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट, कोलकाता-७००००७
- **शिक्षा** : एम.काम., एलएल.बी., एडवोकेट
- **रुचि** : साहित्य, समाजसेवा एवं राजनीति
- **सम्पादक** : १) विष्णुकान्त शास्त्री: चुनी हुई रचनाएँ (दो खण्ड)

  २) कन्हैयालाल सेठिया समग्र (चार खण्ड)

  ३) राजस्थान परिषद, श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय एवं कुमारसभा पुस्तकालय की लगभग ५० स्मारिकाएँ।
- **सह-सम्पादक** : कालजयी सोहनलाल दूगड़ स्मृति ग्रन्थ; तुलसीदास: चिन्तन अनुचिन्तन; बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता: स्मरण एवं अभिनन्दन; पत्रों के प्रकाश में कन्हैयालाल सेठिया; फिर से बनी अयोध्या योध्या प्रभृति।
- **साहित्यिक/सामाजिक गतिविधियाँ** : बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक - विभिन्न दायित्वों का निर्वाह; सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय के पूर्व मंत्री; श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के पूर्व मंत्री एवं अध्यक्ष; श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के संस्थापक एवं पूर्व अध्यक्ष; राजस्थान परिषद एवं सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी के उपाध्यक्ष; प.बंगाल भाजपा के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं सम्प्रति उपाध्यक्ष; नेशनल इन्स्योरेन्स कं. लि. के पूर्व निदेशक; नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली के पूर्व ट्रस्टी एवं निदेशक; विश्व हिन्दू परिषद कोलकाता के पूर्व मंत्री; मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, बड़ाबाजार लाइब्रेरी एवं कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी की कार्यसमिति के सदस्य।

- सम्मान : ❖ शारदा ज्ञानपीठ संस्थान, डीडवाना द्वारा *'शारदा ज्ञानपीठ सम्मान'* (२००१ ई.)
  - ❖ रोटरी क्लब, उन्नाव द्वारा *'भगवतीचरण वर्मा स्मृति सम्मान'* (२००३ ई.)
  - ❖ भामाशाह स्मारक समिति, कलकत्ता द्वारा *'भामाशाह सेवा सम्मान'* (२००४ ई.)
  - ❖ राजश्री स्मृति न्यास, कोलकाता द्वारा *'राजश्री गौरव सम्मान'* (२००५ ई.)
  - ❖ राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद, जमशेदपुर द्वारा *'कुरजां सम्मान'* (२००७ ई.)
  - ❖ इटावा हिन्दी सेवानिधि, इटावा द्वारा *'विष्णुकान्त शास्त्री विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान'* (२००८ ई.)
  - ❖ अखिल भारतीय मारवाड़ी युवामंच, कोलकाता द्वारा *'रजत जयंती सम्मान'* (२०१० ई.)
  - ❖ विचार मंच, कोलकाता द्वारा *'कर्मयोगी सम्मान'* (२०११ ई.)
- कार्यालय : १६१/१, महात्मा गांधी रोड, कमरा नं. ३०, कोलकाता-७
- दूरभाष : (०३३) २२५९०९३० (नि.) २२६८५५२१ (का.)
  मोबाइल : ९८३०३४१७४७

●●

आत्म कथ्य

✍ जुगलकिशोर जैथलिया

मेरे परममित्र श्री विमल लाठ के स्नेह भरे हठ की ही यह परिणति है कि मेरा अमृत महोत्सव श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संयोजन में समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है एवं एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। वरिष्ठ राजनेता डॉ. मुरली मनोहर जोशी का भी दबाव इस हेतु कम नहीं था। ५ वर्ष पूर्व भी उन्होंने श्री विमल जी एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी को मेरे जीवन के सात दशक पूरे होने पर कुछ विशेष कार्यक्रम की योजना बनाने को कहा था पर उस समय मैं इन सभी हितैषियों को समझा कर इसे आगे टाल देने के लिए राजी करने में सफल हो गया था। किन्तु इस बार मुझे उनके स्नेह के आगे झुकना ही पड़ा और अपनी जीवन यात्रा पर भी यह लेख लिखने की आज्ञा भी शिरोधार्य करनी ही पड़ी। यह सुखद संयोग ही है कि यह वर्ष मेरे पूज्य पिताजी की जन्मशती भी है। वे १९१२ ई. में कृष्ण जन्माष्टमी के दिन ही जन्मे थे अत: उनका नाम 'कन्हैया' रखा गया। उनकी पावन स्मृति को इस अवसर पर विनम्र प्रणाम।

अपने बारे में लिखना एक दृष्टि से तो बहुत सरल ही है क्योंकि इसके लिए न किसी से कुछ पूछना है, न ही कहीं अन्यत्र जाना है पर दूसरी दृष्टि से बहुत कठिन भी है क्योंकि जहाँ आप अपनी सही उपलब्धियों का वर्णन करेंगे, कुछ लोगों को उसमें 'आत्म प्रशंसा' की चुटकी लेने का बहाना भी मिल ही जाएगा। इससे भी गंभीर बात यह है कि हर एक के जीवन में अपनी व्यथा-कथा, न्यूनतायें एवं भूलें होती ही हैं, जिसे उससे अधिक कोई नहीं जान सकता। जीवन में अनेक प्रसंग ऐसे भी होंगे जिसे कोई भी व्यक्ति उजागर करने की अपेक्षा मन में ही गोपन रखना चाहेगा, कभी-कभी तो उन प्रसंगों को वह स्वंय भी अपने मन-मस्तिष्क से मिटा देना या भुला देना भी चाहेगा। कवि रहीमदास जी ने ठीक ही कहा है-

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि इठलहिहैं लोग सब, बांटि न लहिहैं कोय।।

अत: इन सारे पक्षों को ध्यान में रखते हुए ही मैं आगे बढ़ रहा हूँ।

पैतृक कुल

मेरे पिताजी कहते थे कि हमारे पूर्व पुरुष पास के ही गाँव कुड़ोली में रहा करते थे एवं मेरे दादाजी रामधन जी छोटीखाटू में आकर बसे। उनके सात पुत्र एवं एक पुत्री हुई। मेरे पिताजी सबसे छोटे थे। दो पुत्र छोटी उम्र में ही चले गए। एक तुलसीरामजी आजीवन अविवाहित रहे। बाकी चार ने गृहस्थी बसाई। व्यवसाय के लिए दादाजी ही पहले मुम्बई गए एवं बाद में दुर्गापुर (पं.बंगाल) में पाट एवं किराने का व्यवसाय किया। छोटीखाटू में स्वयं का घर भी बनाया। दादाजी के देहावसान के बाद व्यवसाय अधिक दिन नहीं चला। सबने अपनी-अपनी अलग राह पकड़ी। मेरे पिताजी ने कलकत्ता में बांगड़ परिवार में नौकरी करली, वे ६० वर्ष की उम्र में सेवा निवृत्ति तक वहीं काम करते रहे। सेवानिवृत्ति के बाद भी घर में रहकर वे शेयरों के व्यवसाय एवं भजन-पूजन में लगे रहे।

मेरा बचपन

मेरा जन्म आश्विन शुक्ल १३, १९९४ वि. तदनुसार २ अक्टूबर १९३७ ई. को मेरे ननिहाल निम्बीजोधां में हुआ। मेरे से चार वर्ष बड़ी एक बहन एवं मुझसे ३ वर्ष छोटी भी एक बहन हुई। उस समय बच्चे साधारणतः ननिहाल में ही जन्म लेते थे एवं बचपन का बहुतांश ननिहाल में ही बीतता था। मेरे नानाजी जेठमलजी बिहानी का देहान्त हो चुका था। मेरी नानी धनीबाई बहुत ही सात्विक प्रकृति की महिला थीं। उन्होंने मुझे बहुत प्यार से बड़ा किया, मेरी आरंभ की पढ़ाई भी वहीं पाठशाला में हुई। मेरी माँ सबसे बड़ी थी, दोनों मामाजी मालचन्द जी एवं सूरजमलजी असम/बंगाल में कभी नौकरी, कभी व्यवसाय करते थे। दोनों के विवाह हो चुके थे, छोटे मामाजी के कोई सन्तान नहीं हुई।

मैं थोड़ा बढ़ा होने पर अपने गाँव में गुरुजी की पाठशाला में पढ़ने लगा एवं बाद में सरकारी स्कूल में भर्ती हुआ। भर्ती के समय मेरी जन्म तिथि २ अक्टूबर के बजाय अन्दाज से ४ जून १९३७ लिखा दी गई। अतः मेरे प्रायः कागजातों में यही तारीख लिखी हुई है।

एक वर्ष वहाँ पढ़कर तीसरी कक्षा पास की। मैं पढ़ने में तेज था अतः प्राइवेट पढ़कर छठी कक्षा पासकर सातवीं में पुनः सरकारी स्कूल में प्रवेश लेकर १९४९ ई. में मिडिल परीक्षा पास की। गाँव की स्कूल मिडिल तक ही थी अतः आगे के अध्ययन हेतु तहसील शहर डीडवाना में छात्रावास में रहकर दसवीं तक की पढ़ाई की।

डीडवाना के तीन वर्ष

पहलीबार घर से दूर छात्रावास में रहकर पराये शहर में पढ़ने का अवसर आया। सब

कुछ नया, अनजाना। छात्रावास में ईंधन, जल एवं किराया बांगड़ परिवार के ट्रस्ट से दिया जाता था, बाकी खर्च विद्यार्थी आपस में बांटकर वहन करते थे। हाईस्कूल भी बांगड़ परिवार द्वारा ही निर्मित थी। मेरे गाँव से हम दो विद्यार्थी आये थे। मैं और सत्यनारायण सारड़ा। वह जमाना अन्न के संकट का था। राशन के अनाज में गेहूँ और मकई मिलती थी। अत: खाने में पहले मकई की एक रोटी आवश्यक थी। मेरा साथी इससे घबरा कर गाँव लौट आया पर मैं टिका रहा। मैं पढ़ने में तेज था अत: छात्रावास में सबके साथ शीघ्र ही मित्रता हो गई। गाँव में १९४६ ई. में ही मेरा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ सम्पर्क आ गया था। वहाँ मेरा भाषण देने का भी अभ्यास हो गया था अत: विद्यालय के भी कार्यक्रमों में बोलने का मुझे मौका मिलने लगा, इससे डीडवाना के अन्य विद्यार्थियों एवं कुछ अभिभावकों से भी मेरी पहचान क्रमश: हो गई। मैं वहाँ के सार्वजनिक पुस्तकालय में भी जाने लगा एवं विशेष अवसरों पर संघ की शाखा में भी जाने लगा। छात्रावास में विद्यालय के ही एक वरिष्ठ अध्यापक श्री रामसिंह जैन सुपरिन्टेन्डेन्ट के रूप में रहते थे। विद्यालय में वे गणित पढ़ाते थे, मेरी गणित अच्छी थी अत: मुझे पूरा स्नेह देते थे।

प्रत्येक शनिवार को ही मैं गांव लौट जाता एवं रविवार तथा अन्य छुट्टियाँ अपने घर पर बिताता। इस तरह मेरा पहला वर्ष आनन्द से बीत गया।

दूसरे वर्ष मेरे गाँव के आठ और विद्यार्थी आगे की पढ़ाई हेतु छात्रावास में आ गए तो छात्रावास में हमारा दबदबा भी बढ़ गया। मुझे छोड़कर बाकी सब लोग अच्छे खिलाड़ी भी थे अत: विद्यालय में भी हमारा प्रभाव बढ़ा। ये सभी लोग संघ के भी स्वयंसेवक थे अत: हम लोग संघ में विशेष उत्सवों में एक साथ जाने लगे। छात्रावास में सुपरिन्टेन्डन्ट के अलावा उस वर्ष अपने पूरे परिवार के साथ हेडमास्टर श्री विद्यानन्दजी भी रहने लगे। वे कट्टर कांग्रेसी विचारों के थे अत: उन्हें हमारा संघ में जाना अखर गया। उन्होंने छात्रावास में रहते हुए संघ में जाने पर रोक लगा दी। हमलोगों ने इस रोक को स्वीकार करने के बजाय आवश्यक हुआ तो छात्रावास से बाहर कोई कमरा लेकर रहने का मन बना लिया। हमारी यह हठता काम आई और हमें पहले से बताकर जाने की स्वीकृति मिल गई। इसमें हॉस्टल सुपरिन्टेन्डेन्ट का भी हमें परोक्ष समर्थन मिला, यद्यपि वे भी कांग्रेसी थे एवं स्वतन्त्रता संग्राम में भाग ले चुके थे। हेडमास्टर साहब फिर भी, हम लोग संघ शाखा से विरत हो जाएँ, इस प्रयत्न में लगे रहे। समझाकर भी, डर दिखाकर भी कि हमारा भविष्य वहाँ जाने से चौपट हो जाएगा। डीडवाना के प्रसिद्ध वकील श्री मिलापचन्दजी माथुर जिला के संघचालक थे, उनका समाज में बहुत सम्मान था एवं वे एक तरह से हमारे अभिभावक भी थे। अत: हम सबके परिवार वाले एवं हम सब आश्वस्त थे।

विवाह

दसवीं कक्षा में पढ़ते समय ही मेरा विवाह बोरावड़ के श्री तुलसीरामजी गट्टानी की सुकन्या मैंनादेवी से दिसम्बर १९५२ ई. में हो गया। इस समय मेरी उम्र १५ वर्ष की ही थी पर वह जमाना ही ऐसा था और मैं अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था अतः वे भी उतावले थे। मेरी पत्नी नितान्त अपढ़ थी, पर एक सदगृहिणी के बाकी सारे गुणों से सरोबार थी। मेरी माँ ने उसे घर पर थोड़ा-बहुत लिखना-पढ़ना सिखाया।

आगे की पढ़ाई एवं रोजगार हेतु कलकत्ता में

मार्च १९५३ ई. में दसवीं की परीक्षा देकर मैं आगे की पढ़ाई एवं रोजगार हेतु कलकत्ता अपने पिताजी के पास चला आया जो बांगड़ परिवार की ६५, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट अवस्थित मुख्य गद्दी में रोकड़िया थे। मैं भी उनके साथ ही वहां रहने लगा एवं सिटी कॉलेज के प्रातःकालीन विभाग में भर्ती हो गया। उन दिनों भर्ती की आजकल जैसी समस्या नहीं थी। डीडवाना के ही गोबिन्दनारायण काकड़ा, दामोदर दलाल, सत्यनारायण होलानी एवं अन्य कुछ छात्र मेरी तरह ही भर्ती होकर मेरे कॉलेज सहपाठी बने। डीडवाना में भी ये लोग मेरे सहपाठी रहे थे। मैं पढ़ने के साथ-साथ बांगड़जी के ही एक सम्बन्धी प्रेमरतन मोहता एण्ड कं. के यहां शेयर बाजार में नौकरी भी करने लगा। समय था दोपहर के ११.३० बजे से रात्रि ७.३० बजे तक। पढ़ाई के लिए एकदम समय नहीं मिलता था, पढ़ने के लिए न तो स्थान ही था, न वातावरण। परन्तु मैं प्रातः जल्दी उठने का अभ्यासी था और तैयार होकर कॉलेज जाने से पहले वह सब सरसरी तौर से देख लेता था जो पढ़ाया जाने वाला है, कक्षा में भी ध्यान देकर सुनता एवं प्रश्न भी पूछ लेता अतः अच्छे अंकों से ही पास होता रहा और १९५७ ई. में बी.कॉम पास कर लिया। छुट्टियों में ही गाँव जाना होता था। मेरी माँ और पत्नी गाँव में ही रहते थे। मेरी बड़ी एवं छोटी दोनों बहिनों का विवाह तो राजस्थान में ही मेरे विवाह से पूर्व ही हो गया था। बड़ी बहन अपने परिवार को लेकर फरीदाबाद बस गई एवं छोटी बहन पाली। बड़ी बहन एवं बहनोईजी का कुछ वर्ष पूर्व स्वर्गवास भी हो गया। मेरे भाणजों का परिवार अभी भी वहीं है, कुछ संघ के कार्यकर्त्ता भी हैं।

बी.कॉम. करने के बाद मैंने लॉ पढ़ने का मन बनाया और कलकत्ता विश्वविद्यालय के लॉ कॉलेज में प्रवेश ले लिया। इस अवधि में मेरा सम्पर्क संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री भंवरलालजी मल्लावत से आया। इनकी प्रेरणा से मैं पुनः संघ कार्य में सक्रिय हो गया और कॉलेज के छुट्टी के दिन प्रभात शाखा पर नियमित जाने लगा। कार्यक्रमों के कारण कभी-कभी रात में भी देरी हो जाती। मेरी इस सक्रियता से मेरे पिताजी नाराज रहने लगे। मैं इकलौता

बेटा था अत: वे चाहते थे कि मैं किसी झंझट में न पड़ूँ। संघ में जाना सरकार का विरोध है यह उनके मन में उनके सहयोगियों ने बैठा दिया। मेरी पढ़ाई एवं नौकरी किसी में भी उन्हें शिकायत का मौका नहीं था अत: वे मुझे प्यार से ही समझाते कि मैं इन झंझटों में न पड़ूं तो और भी अच्छा कर सकता हूँ। किन्तु भंवरलालजी का व्यक्तित्व मुझे खींच रहा था - वे नौकरी में एक बड़े पद पर प्रतिष्ठित थे फिर भी संघकार्य के लिए प्रचुर समय देते थे एवं उनका जीवन तपस्वी की तरह था। व्यवहार में कुशल एवं सामाजिक कार्यों में पटु। उन्होंने मुझे कहा कि मैं नौकरी के बजाय वकालत करने की योजना बनाऊँ ताकि समाज एवं देश का कार्य प्रतिष्ठा से कर सकूँ।

मैंने कानून की पढ़ाई का द्वितीय वर्ष पास करते ही अपनी शेयर बाजार की नौकरी छोड़ दी। बांगड़जी के यहाँ भी मुझे नौकरी का अच्छा प्रस्ताव मिला पर मैंने पिताजी को मना कर दिया। इससे 'मेरी कमाने में ज्यादा रुचि नहीं है, संघ के प्रभाव से सामाजिक कामों में ही मेरी रुचि ज्यादा है', यह पिताजी के मन बैठ गया और उनके लिए चिन्ता का विषय बन गया।

इस चिन्ता की चर्चा उन्होंने बांगड़जी के प्रमुख वैद्य श्री गोवर्धनजी शास्त्री से की। वे संघ के कुछ कार्यक्रमों में आये हुए थे एवं मेरे स्वभाव को भी जानते थे, मेरे व्यवहार से प्रसन्न थे अत: उन्होंने पिताजी को आश्वस्त करते हुए मुझे एक अच्छे वकील के पास प्रशिक्षण हेतु रखवा देने का भी आश्वासन दिया। संयोग देखिए कि वे वकील थे श्री सुखलालजी गनेड़ीवाल जिनका चेम्बर वैद्यजी के रहने के कमरे से सटा हुआ था। गनेड़ीवालजी पुराने स्वयंसेवक भी थे एवं अच्छे स्वभाव के अच्छे वकील थे। उन्होंने मुझे बहुत स्नेह से प्रशिक्षित किया। यद्यपि स्वयंसेवक के नाते हमारा आपसी परिचय बहुत बाद में हुआ। उनके पूरे परिवार का भी मुझे भरपूर स्नेह मिला, आज भी वैसा ही कायम है।

इस बीच मैंने एम.कॉम. भी कर लिया एवं उनके साथ कुछ वर्ष रहने के बाद मैंने अपना अलग चेम्बर करने की इच्छा जताई, वे प्रसन्न हुए एवं उन्होंने अपने तीन टेलीफोनों में से एक टेलीफोन भी मेरे चेम्बर के लिए ट्रांसफर करा दिया। उस समय टेलीफोन मिलना बहुत कठिन काम था। मुझे आवश्यक परामर्श भी जब-जब जरूरत पड़ी, वे देते रहे। वकालत के काम में प्रारंभ में उपार्जन तो ज्यादा नहीं होता है, अत: पिताजी प्रसन्न नहीं थे।

छोटीखाटू में पुस्तकालय

पिताजी की नाराज़गी का एक और कारण मेरे द्वारा मेरे जन्म स्थान छोटीखाटू में एक पुस्तकालय का प्रारंभ करना भी था जिसे मेरे गाँव के ही एक-दो कलकत्ता निवासियों ने मेरे

परिवार की प्रतिष्ठा के साथ जोड़कर पिताजी को भ्रमित कर दिया था। घटना १९५८ ई. की है। मैं गर्मियों की छुट्टियों के समय अपने गाँव गया हुआ था। दिल्ली में नई म्युनिसिपल कार्पोरेशन बनी थी। जनसंघ के भी ८ पार्षद जीतकर आये थे। तत्कालीन गृहमंत्री पंतजी का अभिनन्दन होना था। उस मानपत्र में महात्मा गांधी के लिए 'राष्ट्रपिता' शब्द का प्रयोग किया गया था जिस पर जनसंघ के लोगों ने आपत्ति उठाई, यह कहते हुए कि इस देश को हमने माता माना है अत: कोई भी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ व्यक्ति इसकी श्रेष्ठ सन्तान ही हो सकता है, इसका पिता नहीं। इस वक्तव्य को लेकर 'दैनिक हिन्दुस्तान' ने भी बहुत बवाल मचाया। कई दिन तक उल्टा सीधा लिखता रहा। मेरे गाँव में केवल एक-दो घरों में यही एक अखबार आता था। मैं बड़ा असमंजस में था कि हमारे लोगों ने यह आपत्ति क्यों उठाई। बाद में हमारे जिले के संघचालक श्री मिलापचन्दजी माथुर एक दिन मेरे गाँव आये। मैंने उनसे यह प्रश्न किया कि हमारे लोगों ने ऐसा क्यों किया? उन्होंने दिल्ली से प्रकाशित होने वाले दो साप्ताहिक 'पाञ्चजन्य' एवं 'आर्गनाइजर' की प्रतियाँ मेरे हाथ में दे दी जिसमें श्री केदारनाथ साहनीजी का स्पष्टीकरण छपा हुआ था। स्पष्टीकरण पढ़ने से मेरे मन-मस्तिष्क में शान्ति आई। उसी में से मेरे मन में यह भाव पैदा हुआ कि मेरे गाँव में भी एक सार्वजनिक पुस्तकालय बने जहाँ कई तरह के समाचारपत्र आये एवं सब लोग पढ़ सकें। मैंने मेरे अग्रज श्री बालाप्रसादजी जोशी से सलाह की। उन्होंने सैद्धान्तिक तौर पर तो इसे पूरा समर्थन दिया पर व्यवस्थागत एवं आर्थिक कठिनाई बताई और यह भी कहा कि गाँव में इस तरह के प्रयोग पहले भी ३-४ बार असफल हो चुके हैं। मैंने अर्थ की व्यवस्था का प्रबन्ध कलकत्ता से करने का भरोसा उन्हें दिलाया एवं स्थानीय व्यवस्थायें यथा- जगह एवं एक कर्मचारी की व्यवस्था उन्हें करने का निवेदन किया। वे मेरे संकल्प का मोल पहचानते थे अत: उन्होंने स्थान की व्यवस्था तीन रुपये मासिक में कर दी, हमारे संघ के ही एक कार्यकर्त्ता ने प्रबन्धक के रूप में यह कहते हुए दायित्व लिया कि वे एक वर्ष तक निष्ठा से कार्य कर देंगे, रुपये हमारे पास हो जाए तो ले लेंगे अन्यथा नहीं लेगें। प्रभु कृपा से अर्थ की व्यवस्था हो गई एवं काम चल निकला। १५-२० पत्र-पत्रिकायें भी आने लगी एवं पाठक भी नित्य बढ़ने लगे। कुछ अच्छी पुस्तकों का भी जुगाड़ हो गया। लेकिन कुछ कांग्रेस भक्तों की इससे चिन्ता बढ़ गई। उन्होंने कलकत्ता रहनेवाले १-२ प्रभावी लोगों के माध्यम से मेरे पिताजी के मन में यह बात बैठा दी कि पुस्तकालय चलाना हँसी-खेल नहीं है अत: यह बन्द होने पर, मैं आगे होने के कारण, मेरे पूरे परिवार की बदनामी होगी। पिताजी ने मुझ पर दबाव बनाया कि मैं इस काम से हट जावूं, मैंने साफ कह दिया कि मैं इससे हट नहीं सकता। स्वाभाविक ही था कि मेरे पिताजी की नाराजगी और भी बढ़ गई।

प्रारंभ के वर्षों में पुस्तकालय के पदाधिकारियों में मतभेद भी हुए, वातावरण थोड़ा

बिगड़ा भी, पर दैवयोग से सरकारी अस्पताल में एक मुन्नीलाल शर्मा नामक अच्छे डाक्टर आये। वे सार्वजनिक कार्यों में रुचि रखते थे। अच्छे डाक्टर होने के कारण उनका गांव के लोगों पर भी दबदबा था। मेरे अनुरोध पर वे पुस्तकालय के अध्यक्ष बन गए एवं गाड़ी फिर से पटरी पर आ गई। कलकत्ता के उस काल के ख्यातिनाम चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट श्री एम.सी. भंडारी, जो मेरे गाँव के ही थे एवं पुस्तकालय के प्रति सद्भावी थे, उन्होंने अपने परिवार की एक जमीन पुस्तकालय के भवन हेतु अल्प मोल में दिलवा दी एवं रुपये इकट्ठे होने पर देने को कह दिया। इससे हमें बड़ा सहारा मिला। उन्होंने अर्थ-संग्रह में भी सहयोग कराया। कालान्तर में कई प्रकार की असुविधाओं के बावजूद उस जमीन पर एक भव्य भवन बनकर तैयार हो गया जिसका उद्घाटन १५ मई १९६७ ई. को प्रसिद्ध उपन्यासकार वैद्य गुरुदत्त ने किया। स्मारिका के माध्यम से हमारे पास थोड़ा अर्थ भी बच गया। यह भवन उस समय हमारे गाँव में अपनी तरह का एक ही था, लोग दूर-दूर से देखने को आते थे। इससे हमारी टीम की कीर्ति बढ़ी। मेरे पिताजी भी इस भवन निर्माण के बाद जब गाँव में गए तो उन्हें गांव के सरकारी अधिकारियों से लेकर सामान्यजन से मेरी प्रशंसा सुनने को मिली। इससे पिताजी का सारा क्रोध स्नेह में बदल गया और मृत्यु पर्यन्त वे मेरे प्रति एवं संघकार्य के प्रति उदार बने रहे। फिर कभी उन्होंने मेरे सार्वजनिक जीवन के प्रति भी टोका-टाकी नहीं की। वैसे प्रभु कृपा से आयकर सलाहकार के रूप में भी मेरी प्रतिष्ठा एवं आय बढ़ गयी थी।

१९६५ ई. से १९७५ ई. तक देश में आपातकाल लगने तक का काल खंड मेरे व्यक्तिगत जीवन एवं सार्वजनिक जीवन दोनों तरफ ही एक तरफा उत्थान का रहा। १९६६ ई. में मेरे बड़े पुत्र गोपाल का जन्म हुआ, जो १९६० ई. में मेरी प्रथम पुत्री के ६ वर्ष बाद हुआ अतः परिवार में उत्सव का माहौल था। १९६७ ई. में जैसा ऊपर बताया है, पुस्तकालय के भवन का उद्घाटन हुआ, १९७१ ई. में मैं कलकत्ता के हिन्दी के सबसे बड़े पुस्तकालय (सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय) का मंत्री बना एवं १९६९ ई. में मेरे द्वितीय पुत्र गोविन्द का जन्म हुआ तथा १९७३ ई. में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय का मंत्री बना और इसी वर्ष मेरे गाँव के पुस्तकालय के १५वें वार्षिक उत्सव में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पधारे। यह उस क्षेत्र के लिए बड़ी महत्वपूर्ण घटना थी। उनके आने से पुस्तकालय एवं गांव की कीर्ति तेजी से फैली। उनका उद्बोधन अपूर्व था। उन्होंने पुस्तकों को ही सच्चा सन्त एवं पुस्तकालयों को सन्त मिलन का केन्द्र बताते हुए कहा- *'पुस्तकालय सन्त मिलन के उत्तम केन्द्र हैं। पुस्तक खोल लीजिए एवं तुलसी, कबीर, नानक, सूर, दादूदयाल, मीरा प्रभृति किसी की भी वाणी पढ़ लीजिए, इसमें आपको कहीं भी कलुष नहीं मिलेगा। अतः पुस्तकालय हमारे राष्ट्रजीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण चीज है क्योंकि इनके भीतर हमारे महापुरुषों का चिन्मय रूप सुरक्षित*

है।.... यह जो पुस्तकालय आपने खोला है, यह आप ऋषि ऋण चुकाने का प्रयत्न कर रहे हैं। किसी दिन ऐसा हो सकता है कि इसी गाँव का कोई बालक तुलसीदास के समान, रवीन्द्रनाथ और विवेकानन्द के समान नई ज्योति देकर देश को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने में बड़ी भारी सहायता कर सके। असम्भव कुछ भी नहीं है, होगा, अवश्य होगा, क्यों नहीं होगा ?'

उसके बाद प्रभु कृपा से मेरे गाँव के पुस्तकालय में विभिन्न समारोहों में पूज्य महादेवी वर्मा, भवानी भाई, जैनेन्द्रजी, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, कन्हैयालाल सेठिया, डॉ. नरेन्द्र कोहली, त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, डॉ. कमलकिशोर गोयनका, श्री मोहनजी भागवत, कु.सी. सुदर्शन, सुन्दर सिंह भंडारी, केदारनाथ साहनी, स्वामी संवित् सोमगिरीजी, डॉ. गुलाब कोठारी, ललित किशोर चतुर्वेदी, डॉ. पुरुषोत्तमलाल चतुर्वेदी, भंवरलाल शर्मा, तपन सिकदर, रघुवीर सिंह कौशल, सुभाष महरिया, तरुण विजय, शिवओम अम्बर, किशोर कल्पनाकान्त, सीताराम महर्षि, डॉ. दयाकृष्ण विजय, बशीर अहमद मयूख, अब्दुल गफ्फार, पं. नरेन्द्र मिश्र, डॉ. रमानाथ त्रिपाठी, डॉ. किशोर काबरा, डॉ. अम्बाशंकर नागर, डॉ. देव कोठारी, तारादत्त निर्विरोध, डॉ. मृदुला सिन्हा जैसे वरिष्ठ नेता एवं साहित्यकार पधारे। इसके द्वारा इस समय पं. दीनदयाल उपाध्याय सहित्य सम्मान एवं कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान प्रतिवर्ष दिये जा रहे हैं। इसकी कीर्ति निरन्तर वर्द्धमान है।

मैंने भी इस कार्य को अपने जीवन का एक अभिन्न कार्य मान रखा है, अतः मैं इसके विकास का निरन्तर संयोजन करता रहता हूँ। प्रतिवर्ष समारोहों में भाग लेता हूँ, इस हेतु विशिष्ट लोगों से समय साधकर आमंत्रित करता हूँ ताकि मेरे गांव में देश की बड़ी से बड़ी हस्तियों का पदार्पण हो। मुझे इसमें गाँव के सभी प्रमुख लोगों का बराबर सहयोग भी मिलता है। श्री बालाप्रसाद जी जोशी के देहावसान के पश्चात् मेरे परम सहयोगी श्री कपूरचन्दजी बेताला एवं उनके पूरे परिवार की मेरे प्रति जो आत्मीयता है, वह आज के जमाने में अनोखी है, बेमिसाल है। इस अवसर पर मैं मेरे अन्य परम सहयोगी स्व. भौमराज जी बेताला का भी स्मरण करना चाहता हूँ जो पुस्तकालय के पूरे अभियान में मेरे सब प्रकार के सहयोगी बने रहे। आज भी उनके परिवार का पूरा सहयोग बना हुआ है। ये २-३ नाम तो मैंने केवल संकेत के लिए दिये हैं, यह सूची वैसे काफी बड़ी है। विस्तार के भय से एवं किसी का नाम छूट न जाए इस कारण भी मैं बाकी नाम नहीं ले रहा हूँ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्पर्क

वैसे तो मैं १९४६ ई. में अपने गाँव में ही ९ वर्ष की उम्र में ही संघ-स्थान पर होने

वाले कार्यक्रमों से आकर्षित होकर स्वयंसेवक बन गया था। शाखाओं पर बहुत संख्या रहती थी, ७-८ दिन बाहर बैठने एवं अनुनय-विनय करने पर ही मुझे शाखा में प्रवेश मिला। मेरे गांव की जनसंख्या लगभग ५ हजार होगी। शाखा में नित्य ही १००-१२५ लोग शामिल होते थे, कई प्रकार के खेल-कूद, ओजस्वी एवं देशभक्तिपूर्ण गीत तथा कभी-कभी देश की अवस्था के बारे में बौद्धिक और कभी-कभी चर्चा होती थी। पता ही नहीं चलता था कि एक घंटे का समय कब निकल गया। विभाजन के बाद तो गांव में २-३ जगह शाखायें लगने लगी पर गांधीजी की मृत्यु के बाद दुष्प्रचार चलाया गया एवं संघ को प्रतिबन्धित कर दिया गया। उसके बाद प्रतिबन्ध हटने पर भी सामान्य लोगों में भय व्याप्त हो गया और पहले जैसी रौनक नहीं रही। मैं भी अनियमित हो गया। १९४९ ई. में मैं सातवीं कक्षा पास कर आगे की पढ़ाई हेतु डीडवाना चला गया। वहाँ छात्रावास में रहने के कारण विशेष उत्सवों में ही संघ में जाना होता। फिर कलकत्ता आना हुआ। पढ़ाई एवं नौकरी के चक्कर में संघ से सम्पर्क उत्सवों तक ही सीमित रहा पर १९५९ ई. में कानून की पढ़ाई पूरी कर लेने पर मैंने नियमित प्रभात शाखा पर जाना प्रारंभ कर दिया और धीरे-धीरे विभिन्न दायित्वों को भी सम्हाला। पढ़े-लिखे लोगों को योजना बनाकर शाखा पर लाता। मेरी शाखा पर करीब ८-१० वकील लगभग नियमित आने लगे। देश के इतिहास एवं भूगोल पर तथा संस्कृति पर विशेष चर्चा होती। बाद में मुझे ३-४ शाखाओं का दायित्व दिया गया। पूरे क्षेत्र में कार्यकर्त्ताओं की एक अच्छी टोली निर्मित हो गई। इसमें स्व. भंवरलालजी मल्लावत का विशेष मार्गदर्शन रहता था। शिवभगवानजी बगड़िया, बलदेवजी गनेरीवाल, हनुमानमलजी बोरड़ जैसे कर्मठ लोग प्रभात शाखाओं में आदर्श कार्यकर्ताओं के रूप में कार्यरत थे। परन्तु देख-रेख करने वाले उम्रदार कार्यकर्ताओं के अभाव में सायं शाखाओं की स्थिति शीथिल हो रही थी।

संघ के वरिष्ठ अधिकारियों की नजर मेरे ऊपर गई। उन्होंने मुझे यह कार्य सम्हालने को कहा पर मैंने इसमें अपनी असमर्थता जाहिर की। आयकर वकील के नाते मुझे सायंकाल अपने क्लाइन्टों के साथ बैठना जरूरी होता था। अधिकारियों को मेरी परिस्थिति समझ कर सन्तोष कर लेना पड़ता था। इधर सायं शाखाओं की स्थिति में और गिरावट आती गई तो भंवरलालजी एक दिन मेरे चेम्बर में आये। क्लाइन्टों के जाने के बाद उन्होंने गंभीर होकर मुझसे सायंकालीन शाखाओं का दायित्व लेने को कहा। मेरा भी वही पुराना जबाव था। इसपर उन्होंने मुझे कहा कि क्या संघ का कार्य सुविधा से ही करने का तय कर रखा है? मैंने कहा-ऐसा तो नहीं है। अभी भी जितना कर रहा हूँ, असुविधा के बीच ही कर रहा हूँ। उन्होंने कहा - 'तो मेरी बात सुन लीजिए। कल से आपको सायं शाखाओं पर जाना है। जैसे भी हो इसका तालमेल बैठाना है। यह आपके सिवाय कोई नहीं कर सकता। आपको

ही करना है।' भंवरजी की त्याग और तपस्या से हम सब प्रभावित थे। मैं उस समय उनसे कुछ नहीं कह सका और दूसरे दिन से ही मैंने सायं शाखाओं पर जाना प्रारंभ कर दिया और अपने चेम्बर का समय सायं ६ से ८ की बजाय रात्रि ८ से १० बजे तक कर दिया। प्रारंभ में उलहाने भी मिले, असुविधायें भी आई पर धीरे-धीरे सब सामान्य हो गया। इस कार्य को मैं १९७५ ई. में आपातकाल लगने तक विधिवत् सम्हालते रहा। भगवान की कृपा से कार्यकर्ताओं की एक अच्छी टोली भी खड़ी हुई और वकालत का कार्य भी निरन्तर बढ़ता रहा। इस बीच संघ के अन्य दायित्व भी मुझे दिए गए-महानगर के बौद्धिक प्रमुख एवं प्रान्त के सह-बौद्धिक प्रमुख का दायित्व भी मैंने निर्वाह किया।

१९७५ ई. में आपातकाल लगने पर लोक जागरण हेतु पत्रक तैयार करने और वितरण करने के कार्य में मैं सहयोगी बना। कुमारसभा पुस्तकालय के मंच से वीर रस कवि सम्मेलन की घटनाओं का जिक्र मैं आगे यथास्थान करूंगा। परन्तु इस कालखंड से मेरी पारिवारिक व्यवस्थायें भी कुछ-कुछ बिगड़ने लगी। मेरे पिताजी, माताजी, पत्नी एवं सभी बच्चे एक-एक कर अस्वस्थ रहने लगे। कालचक्र सदा एकसा नहीं रहता। इस अवस्था में मैंने संघ की अपनी जिम्मेदारियों को कुछ कम कर लिया एवं अपने को बड़े उत्सवों में जाने तक सीमित कर दिया। आज भी विभिन्न सामाजिक दायित्वों के बीच उतना ही हो पा रहा है।

सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय

जालानजी के ट्रस्ट द्वारा संचालित हिन्दी के इस समृद्ध पुस्तकालय का भी मुझे १९७२ ई. में मंत्री बनने का अवसर मिला। मेरे पूर्व श्री रामकृष्ण सरावगी इसके मंत्री थे। १९७२ ई. के विधानसभा निर्वाचनों में वे कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में जीतकर विधायक बने एवं मंत्री भी बने। इस स्थिति में पुस्तकालय के लिए उनके पास समय नहीं रहा। वयोवृद्ध समाजसेवी श्री राधाकिशनजी नेवटिया भी इस पुस्तकालय की समिति के महत्वपूर्ण सदस्य थे एवं अध्यक्ष सेठ मोहनलालजी जालान के प्रिय मित्र थे। नेवटियाजी कई सामाजिक कार्यों में मेरे कार्य के ढंग से प्रसन्न थे अतः उन्होंने सरावगीजी की जगह मेरे नाम का प्रस्ताव किया, मेरे पर भी यह दायित्व लेने के लिए दबाव बनाया। मुझे अपने गांव के पुस्तकालय की स्थापना एवं संचालन के कारण पुस्तकालय चलाने का अनुभव तो था ही, मैंने यह दायित्व स्वीकार कर लिया एवं पूरी निष्ठा से पुस्तकालय और वाचनालय को नया रूप देकर पाठकों, विशेषकर बाल-पाठकों के लिए आकर्षक बनाया, वहां अच्छी-अच्छी पुस्तकें बदल-बदलकर रखने की व्यवस्था चालू कराई, जिसकी खूब प्रशंसा हुई। परन्तु वहां की व्यवस्था में ज्यादा कुछ करने की गुंजाइश नहीं थी। कार्यक्रम भी केवल तुलसी जयन्ती तक सीमित था।

वस्तुत: मैं एक ऐसा संस्थान ढूंढ रहा था जहां स्वतन्त्र रूप से कुछ विशेष करने की गुंजाइश हो। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय इस दृष्टि से मेरी नजर में आया। यह एक सार्वजनिक स्वतन्त्र संस्थान था जो श्री राधाकिशनजी नेवटिया द्वारा ही स्थापित था पर उस समय उसकी आर्थिक अवस्था बहुत खराब थी। मैंने नेवटियाजी से जालान पुस्तकालय छोड़कर कुमारसभा का दायित्व लेने की चर्चा की, नेवटिया तो इस पर बहुत प्रसन्न हुए पर जालान जी की नाराजगी की बात ध्यान में रखकर मुझे कुछ दिन दोनों संस्थाओं का दायित्व सम्हालते हुए बाद में इसको छोड़ने की सलाह दी, मैंने ऐसा ही किया और १९७३ ई. में कुमारसभा पुस्तकालय का दायित्व लेने के बावजूद करीब तीन वर्ष यहां मंत्री रहा। बाद में इसका दायित्व मेरे मित्र श्री सागरमल गुप्ता को सौंपकर यहां कमेटी का सदस्य बना रहा, जो मैं अभी भी हूं।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

जैसा मैं ऊपर लिख चुका हूं मैंने इस पुस्तकालय के संस्थापक, स्वतन्त्रता सेनानी श्री राधाकिशनजी नेवटिया से चाह कर १९७३ ई. में इस संस्थान के मंत्री पद का दायित्व लिया। इस समय इस पर कोई चौदह हजार रुपये का कर्ज था, कर्मचारियों की करीब एक साल की तनख्वाह भी देय थी पर इसका पुराना इतिहास बड़ा गौरवपूर्ण था। मैंने इसको पटरी पर लाने की मन में ठान ली थी। मेरे सुपरिचित ख्यातिनाम जवाहर प्रेस के मालिक श्री नन्दलालजी जैन एवं मित्र श्री शिवरतन जासू को मैंने इसमें अपना सहयोगी बनाया। थोड़े दिन में ही नन्दलालजी अध्यक्ष बने, मैं मंत्री एवं जासूजी उपमंत्री बने। हमने लोक-सम्पर्क कर दान-दाताओं से एवं १९७५ ई. में शिवाजी राज्यारोहण की त्रिशताब्दी पर प्रकाशित स्मारिका के माध्यम से संग्रहित अर्थ से कर्ज भी चुका दिया एवं नौकरी आदि का देय चुकाकर पुस्तकालय को गतिमान बना दिया। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लोकसम्पर्क बढ़ाया, कार्यकारिणी में भी थके हुए लोगों को विदाकर नये सदस्य जोड़े। गाड़ी चल निकली, हमलोग भी प्रसन्न थे। जासूजी ने अर्थ-संग्रह में एवं नन्दलालजी ने जर्जर हुई पुस्तकों की नई जिल्द सस्ते मूल्य में बनाकर देने में बहुत सहयोग किया। तब पुस्तकालय १५६ महात्मा गांधी रोड के १ तल्ले पर चल रहा था एवं करीब ६०० वर्गफीट स्थान इसके पास किराये पर था।

१९७५ ई. में देश में आपातकाल की घोषणा हो गई, सब तरफ सन्नाटा छा गया। कुमारसभा ने अंग्रेजी हुकुमत के विरुद्ध अनेक कार्य किये थे, अत: स्वाधीनता पर हुये इस कुठाराघात के विरुद्ध भी कुछ करना चाहिए यह विचार मन में आया। हल्दीघाटी की चुतु:शती के अवसर ने इसमें सुयोग जुटाया तो आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री से परामर्श कर दो दिवसीय कार्यक्रम के माध्यम से वीरशिरोमणि प्रताप के संघर्ष का स्मरण दिलाकर लोगों का मौन व्रत तोड़ना चाहिए यह योजना बनी। प्रथम दिन अहिंसा प्रचार समिति के हॉल में प्रताप के तेजस्वी

जीवन से निर्भय रहने की प्रेरणा लेने का आह्वान किया गया। कार्यक्रम में न्यायमूर्ति श्री सलिल कुमार रायचौधरी एवं श्यामनारायण पाण्डेय प्रभृति थे। संचालन आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री कर रहे थे। दूसरे दिन वीर रसकवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें श्री श्यामनारायण पाण्डेय, श्री मणि मधुकर एवं अन्य कवियों ने आपातकाल लगाने पर सरकार पर तीखे प्रहार किए। हिन्दी हाइस्कूल का सभागार खचाखच भरा था एवं बार-बार तालियां गूंज रही थी। वयोवृद्ध समाजसेवी श्री सीतारामजी सेक्सरिया भी मौजूद थे। संचालन आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ही कर रहे थे। उन्होंने शास्त्रीजी से कहा कि आप चलाकर आफत क्यों मोल ले रहे हैं? शास्त्रीजी ने कहा कि आज तो हम कफन बांध कर बैठे हैं, जो होगा देखेंगे।

दूसरे दिन हिन्दी के सभी समाचार पत्रों में बड़े रूप में कवि सम्मेलन की खबरें छपीं। सरकार में हलचल हुई एवं मंत्री के नाते मेरे ऊपर एवं अध्यक्ष श्री नन्दलालजी पर गिरफतारी के वारंट निकले। मैं अपने कार्यालय में नहीं था अत: मैं नहीं पकड़ा जा सका पर मेरे सहयोगी राजाराम बिहानी को पकड़ लिया गया, अध्यक्ष श्री नन्दलालजी भी पकड़े गए। उनके मेनेजर को भी पकड़ लिया गया एवं हमारी कार्यसमिति के सदस्य श्री पतंजलि शर्मा के वृद्ध पिताजी श्रीनिवासजी शास्त्री को भी पकड़ा गया। सभी लोग कुछ दिन बाद जमानत पर छूटे पर अध्यक्षजी की प्रिंटिंग प्रेस, जिसे सील कर दिया गया था, केन्द्र में चुनाव होने पर सरकार की पराजय के बाद ही खोली गई। नई सरकार आने पर ही सारे मामले समाप्त हुए। श्री नेवटिया जी से मैंने पूछा कि आप संस्था के संस्थापक हैं, यदि इस घटना से आप नाराज हुए हों तो हम लोग पुस्तकालय से हट जाते हैं। वे बोले-'मुझे आप लोगों पर गर्व है।'

इसके बाद तो कुमारसभा पुस्तकालय जन-जन की जबान पर चढ़ गया। एक के बाद एक स्मारिकायें एवं ग्रन्थ प्रकाशित हुए एवं लोकप्रिय हुए। आर्थिक समृद्धि भी हुई तो १९८७ ई. में १२५० वर्गफुट का नया स्थान १-सी, मदनमोहन बर्मन स्ट्रीट (मछुआ बाजार) में एक तल्ले पर किराये पर ले लिया एवं इसी वर्ष स्वामी विवेकानन्दजी की जन्मशती होने के कारण अभावग्रस्त एवं उपेक्षितवर्ग में सेवा करने वालों को सम्मानित करने हेतु 'विवेकानन्द सेवा पुरस्कार' आरंभ किया गया जो आगे चलकर 'विवेकानन्द सेवा सम्मान' हुआ। तब से यह प्रतिवर्ष दिया जा रहा है। भारत के प्राय: सभी प्रान्तों के सेवाभावी लोगों को दिया गया है। ऐसा ही एक पुरस्कार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रतिष्ठाता डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की जन्मशती के अवसर पर १९९० ई. में प्रारंभ किया गया। यह भी निरन्तर चल रहा है। दोनों ही सम्मानों में इस समय ५१ हजार रुपये की राशि एवं मानपत्र दिया जाता है। इन्हें अखिल भारतीय प्रतिष्ठा मिली है एवं हमारे कार्यकर्ताओं को एक विशिष्ट पहचान।

१९९४ ई. में पुस्तकालय की कौस्तुभ जयन्ती के अवसर पर जब मैं इसका अध्यक्ष था, श्री अटल बिहारी वाजपेयी (पूर्व प्रधानमंत्री) के 'एकल काव्यपाठ' का अभूतपूर्व कार्यक्रम हुआ जिसका संयोजन एवं संचालन आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ने किया। श्री वाजपेयीजी की कविताओं की पुस्तक को इस अवसर पर पहली बार छापने का श्रेय कुमारसभा पुस्तकालय को ही है। समारोह के दूसरे दिन 'स्वदेशी' विषय पर कार्यक्रम था जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर एवं वरिष्ठ चिन्तक श्री गोविन्दाचार्य पधारे। दोनों ही दिन स्मरणीय बने।

वर्ष २०११ ई. से पुस्तकालय के आगामी शताब्दी वर्ष (२०१८ ई.) को ध्यान में रखकर 'राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान' आरंभ किया गया है। प्रथम सम्मान बिरला दम्पत्ति श्री बसन्तकुमारजी एवं डॉ. सरलाजी बिरला को प्रदान किया गया एवं इस वर्ष नवम्बर माह में महामंडलेश्वर स्वामी सत्यमित्रान्दजी (निवृत्त शंकराचार्य) को देना प्रायोजित है।

कुमारसभा की साहित्यिक गतिविधियां काफी विस्तारित हैं एवं अपनी गतिविधियों के कारण इसकी देश भर में ख्याति भी है। १९९४ ई. से लेकर २००५ ई. तक इसके मंच से आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ने ईशावास्योपनिषद एवं गीता पर क्रमशः १८ एवं ५५ मासिक व्याख्यान दिए जो पुस्ताकाकार छपे हैं एवं बहुत लोकप्रिय हुए हैं। इसी पुस्तकालय से आचार्य शास्त्री की चुनी हुई रचनायें भी दो-खंडों में प्रकाशित हुई हैं, जिसका सम्पादन मैंने किया है। यह पुस्तकालय मेरी प्राथमिकता में है एवं मेरी साहित्यिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र है। आचार्य शास्त्री के पट्ट शिष्य डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी इसके वर्तमान अध्यक्ष एवं मेरे स्नेहभाजन श्री महावीर प्रसाद बजाज, जो इस अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादक हैं, इसके मंत्री हैं। इसके पूर्व अध्यक्ष श्री कृष्ण स्वरूप दीक्षित आजकल गुड़गांव में निवास करने पर भी इसकी गतिविधियों में निरन्तर सहयोगी हैं। कार्यसमिति के अन्य सदस्य भी बिना किसी खींचतान के एक टीमबद्ध काम करते हैं, यह आज के समय में बड़ी बात है। प्रत्येक को अपने दायित्व की चिन्ता है, पद की नहीं। आदरणीय नेवटिया जी एवं शास्त्रीजी ने यह मार्ग दिखाया था, वे कार्यकारिणी के सदस्य रहकर ही सबकुछ करते थे, मैं भी प्रभु कृपा से उन्हीं के मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

आदरणीय सेठियाजी एवं राजस्थान परिषद

हिन्दी एवं राजस्थानी के वरिष्ठ कवि आदरणीय कन्हैयालालजी सेठिया अपने गीत 'धरती धोरां री' के कारण पूरे राजस्थानी समाज में प्रसिद्ध एवं आदरणीय हैं। यद्यपि वे कलकत्ता में ही रहते थे पर मेरा प्रारंभ में उनसे कोई विशेष सम्पर्क नहीं था। महाराणा प्रताप के शौर्य का बखान करने वाला उनका दूसरा गीत 'पाथल और पीथल' भी बहुत प्रसिद्ध है। कुमारसभा

पुस्तकालय ने जब १९७६ ई. में हल्दीघाटी की चतु:शती पर स्मारिका निकालने का निश्चय किया तो इस बहाने से मैं उनसे मिलने गया एवं इस स्मारिका हेतु कोई नई रचना देने का निवेदन किया। उन्होंने कहा कि आपलोग मेरी पुरानी रचनाओं में से ही कोई ले लें, नई रचना कोई उपजेगी तो मैं फोन कर दूंगा। हमारी बातचीत और कुमारसभा के कामकाज से वे प्रसन्न दिखे। संयोग से एक सप्ताह के बाद ही उनका फोन आया कि नई रचना बन गई है, आप मिल लें। रचना हल्दीघाटी पर ही थी। उसके बोल थे –

कोनी कोरो नाम, रेत रो हल्दीघाटी,
अठै उग्यो इतिहास, पुजीजे ई री माटी।

रचना बहुत ही प्रभावशाली थी। स्मारिका में छपी। हल्दीघाटी चतु:शती समारोह के बाद की सारी घटनाओं का जिक्र मैं ऊपर कर ही चुका हूँ। यद्यपि सेठियाजी कांग्रेसी विचारों से जुड़े हुए थे फिर भी वे मुझे स्नेह करने लगे। मैंने १९७९ ई. के आरंभ में उन्हें कलकत्ता के सभी राजस्थानियों को एक सूत्र में बाँधने, राजस्थानी संस्कृति के पुनरुत्थान एवं राजस्थान के विकास हेतु राजस्थान सरकार से सम्पर्क रखने के लिए एक नये संगठन के निर्माण की आवश्यकता बताई एवं उन्हें उसकी अध्यक्षता हेतु निवेदन किया। उन्होंने अध्यक्ष पद लेने से मना कर दिया पर संस्था के निर्माण को हरी झंडी दिखा दी एवं स्वयं उसके मार्गदर्शक बनने की स्वीकृति दे दी। १ सितम्बर १९७९ ई. को स्थानीय राजस्थान सूचना केन्द्र में हुई बैठक में 'राजस्थान परिषद' के गठन की विधिवत् घोषणा की गई जिसमें श्री राधेश्याम सराफ (अध्यक्ष), सर्वश्री दीपचन्द नाहटा, बद्रीनारायण सोढ़ानी, कन्हैयालाल सिखवाल (उपाध्यक्ष), श्री धनराज दफ्तरी (महामंत्री), श्री महावीर प्रसाद नारसरिया (संयुक्त मंत्री), श्री जुगलकिशोर जैथलिया (अर्थ मंत्री), श्री सोहनकुमार बांठिया (संगठन मंत्री) एवं श्री रतन शाह (विशिष्ट सदस्य) बने।

शीघ्र ही संस्था का विधान बनाकर पंजीकरण कराया गया। परिषद् ने शीघ्र ही अपने मंच से मेवाड़ के महाराणा भगवत सिंहजी का विराट अभिनंदन किया। राजनेताओं में शिवचरण माथुर, मोहनलाल सुखाड़िया एवं भैरोंसिंह शेखावत के भी शानदार कार्यक्रम हुए। १९८४ ई. में परिषद ने राजस्थानियों की सभी अन्य स्थानीय परिषदों को साथ लेकर संयुक्त रूप से राजस्थान दिवस एवं प्रताप जयन्ती मनाने का तथा राजस्थान दिवस पर प्रतिवर्ष स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया। तब से ये कार्य बराबर चालू हैं। स्मारिकाओं के सम्पादन का मुख्य कार्य मेरे ही जिम्मे रहा है, २०१२ में ३०वीं स्मारिका प्रकाशित हुई है।

महाराणा प्रताप की स्मृति में कलकत्ता में कुछ विशेष करना चाहिए यह शुरु से ही

हमारा ध्यान था। १९८५ से ही परिषद् इस हेतु प्रयत्नशील रही पर प्रथम सफलता ३० मई २००४ को मिली जब स्थानीय एक बड़े पार्क का नाम 'मेक्फर्सन पार्क' से बदलकर 'महाराणा प्रताप उद्यान' किया गया एवं उसमें प्रताप की आवक्ष मूर्ति का उद्घाटन उ.प्र. के तत्कालीन राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ने किया। बाद में २ जनवरी २००५ ई. को एक प्रमुख सड़क 'इंडिया एक्सचेंज प्लेस' का नाम बदलकर 'महाराणा प्रताप सरणी' किया गया जिसका उद्घाटन तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत ने किया एवं १५ अगस्त २००९ ई. को २० फुट ऊँची चेतक पर सवार महाराणा प्रताप की भव्य कॉस्य मूर्ति की स्थापना कलकत्ता के हृदयस्थल सेन्ट्रल एवेन्यू के त्रिकोणिया पार्क में पूर्व थलसेनाध्यक्ष जनरल शंकर रायचौधरी के हाथों हुई। इन सब कामों में मैंने एवं परिषद के अन्य पदाधिकारियों ने दिन-रात परिश्रम किया। वस्तुत: ये सारे काम श्री भैरोंसिंह जी शेखावत, जो उस समय महामहिम उपराष्ट्रपति थे, के दबाव एवं तृणमूल सुप्रीमो सुश्री ममता बनर्जी तथा श्री सुब्रत मुखर्जी (तत्कालीन मेयर) के सहयोग के कारण ही सम्पन्न हो पाए। इसमें तत्कालीन विधायक सत्यनारायण जी बजाज एवं बाद में श्री दिनेश बजाज का भी हमें पूरा सहयोग रहा। पार्षदा रेहाना खातून का भी पूरा सहयोग रहा। श्री अरुण मल्लावत ने भी दिन-रात एक कर काम किया। इस कार्य में करीब ५० लाख रुपये व्यय हुए। परिषद के पदाधिकारियों के अलावा वरिष्ठ आयकर सलाहकार श्री सज्जन कुमार तुलस्यान का भी योगदान सराहनीय रहा।

परिषद का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य श्री कन्हैयालाल सेठिया के पूरे साहित्य को समग्र के रूप में चार खंडों में प्रकाशन का हुआ। मैं चाहता था कि सेठियाजी का बिखरा हुआ साहित्य एकत्र होकर लोगों को प्राप्त हो सके, जिसकी लोगों को बहुत चाहत थी। मैंने श्री सेठियाजी को निवेदन कर इस हेतु राजी किया एवं इसके सम्पादन का कठिन दायित्व सम्हाला। राजस्थान परिषद के सहृदय अध्यक्ष श्री शार्दूलसिंह जी जैन ने परिषद् से इसके प्रकाशन की स्वीकृति दी। मैंने इस हेतु दिन-रात कठोर परिश्रम किया जिसमें भाई महावीर बजाज मेरा सहयोगी बना एवं हम दोनों के संयुक्त प्रयास से सेठियाजी के ८७ वें जन्म दिवस पर कन्हैयालाल सेठिया समग्र का राजस्थानी खंड (लगभग ७०० पृष्ठ), जिसमें उनकी राजस्थानी की सभी १४ पुस्तकें समाहित थीं, कुछ अप्रकाशित रचनायें एवं उनके काव्य की समीक्षा के कतिपय विद्वानों के लेखों के साथ उसका लोकार्पण ११ सितम्बर २००५ को हुआ। राजस्थानी में प्रकाशित संभवत: यह पहला समग्र था। इसका सर्वत्र भरपूर स्वागत हुआ।

उसके पश्चात् समग्र का दूसरा खंड (हिन्दी-१) भी उतने ही पृष्ठों का ३० मार्च २००६ को राजस्थान दिवस पर लोकार्पित हुआ जिसमें उनकी हिन्दी की १० पुस्तकें समाविष्ट की गई। तीसरा खंड (हिन्दी-२) ३० मई २००६ को अक्षय तृतीया के दिन लोकार्पित हुआ जिसमें

हिन्दी की ८ एवं उर्दू की दो पुस्तकें समाविष्ट की गई एवं चौथा खंड (अनुवाद खंड) जिसमें सेठियाजी की विभिन्न पुस्तकों एवं फुटकर कविताओं के अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में हुए अनुवाद को लिया गया, सेठियाजी के ८९ वें जन्म दिन ११ सितम्बर २००६ को लोकार्पित हुआ। यह लगभग ८०० पृष्ठों का बन गया। यह मेरे ४-५ वर्षों के अथक परिश्रम का परिणाम था। इससे मुझे पूरे राजस्थान एवं राजस्थानी समाज में विशेष पहचान मिली। मेरे मन में भी अपार आत्मतुष्टि हुई। यह संतोष का विषय है कि इन पुस्तकों पर जितना खर्च लगा, उससे ज्यादा पुस्तकों की बिक्री से प्राप्त हो चुका है।

सेठियाजी के साहित्य के विशेष प्रचार हेतु मैंने एक छोटी पुस्तिका 'कन्हैयालाल सेठिया: चुनी हुई कविताएँ' करीब १२० पृष्ठ की भी संपादित कर राजस्थान परिषद से प्रकाशित की, जिसे प्रचार के रूप में ही ज्यादा उपयोग किया गया। सेठिया जी के सुपुत्र श्री जयप्रकाश जी ने भी इसकी प्रतियां अपने ट्रस्ट से अलग से छपाई।

कुल मिलाकर राजस्थान परिषद के ये दो काम यानी प्रताप की स्मृति एवं सेठियाजी का साहित्य प्रकाशन परिषद के गौरव में मील के पत्थर हैं। मुझे सन्तोष है कि भगवान ने मुझे इसका विशेष निमित्त बनाया।

भारतीय जनता पार्टी : चुनावी भागीदारी

वैसे तो मैं वैचारिक तौर पर जनसंघ, बाद में जनता पार्टी और फिर भाजपा का सदैव समर्थक रहा पर चुनावों में सीधी भागीदारी १९८२ ई. के पं. बंगाल विधानसभा के जोड़ाबगान केन्द्र से हुई। इस केन्द्र से १९७७ ई. में जनता पार्टी की लहर में जनसंघ गुट के प्रो. हरिपद भारती जीते थे। इसके पूर्व अधिकांश बार कांग्रेस तो कभी-कभी वामदल ही विजयी हुए थे परन्तु इसके कुछ इलाकों में जनसंघ का भी प्रभाव था। इसकी टिकट के लिए मुख्य रूप से दो प्रत्याशी थे, एक श्री हरिकृष्ण टंडन (जिलाध्यक्ष) एवं दूसरे श्री राधेश्याम सोनी, वरिष्ठ नेता एवं समाजसेवी। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री प्रान्त के अध्यक्ष थे एवं श्री सुन्दर सिंह भंडारी केन्द्रीय प्रभारी। दोनों ही मेरे पूर्व परिचित एवं घनिष्ठ थे। निर्वाचन समिति की बैठक शास्त्री जी के घर पर हो रही थी। कुछ दिन पूर्व भंडारीजी की माताजी का देहान्त हो गया था। मुझे संवेदना प्रकट करने हेतु उनसे मिलना था, मैं मिलने चला गया। मीटिंग लम्बी चली अत: मैं एकबार मुंह दिखाने हेतु मीटिंग के कमरे में झांकने चला गया। शास्त्रीजी के घर में मेरे लिए कोई रोक-टोक नहीं थी। संयोग से उस समय जोड़ाबगान केन्द्र की ही चर्चा चल रही थी। मैंने भंडारीजी से कहा कि मैं नीचे बैठा हूँ। मुझे देखा तो भंडारीजी ने अचानक ही कमेटी से पूछा कि यदि इस क्षेत्र से जुगलजी को लड़ाया जाए तो कैसा रहेगा ? सबने

कहा कि यह बहुत अच्छा रहेगा, पर दो प्रश्न हैं कि एक तो वे राजी होंगे या नहीं, दूसरा वे संघ का काम देखते हैं अत: संघ उन्हें छोड़ने को राजी होगा या नहीं ? भंडारीजी ने कहा कि आप यदि सर्वसम्मति से तय करते हैं तो दोनों बातों की जिम्मेवारी मुझ पर छोड़ दें। इसके बाद अप्रत्याशित रूप से मेरा नाम वरीयता से स्वीकृत हो गया। भंडारीजी ने संघ के पदाधिकारियों से भी बातचीत करके राजी किया एवं मेरे पर भी यह दबाव बनाया कि मैं आगे से भाजपा का काम करूं एवं प्रत्याशी बनकर चुनाव लड़ूं।

यद्यपि उस समय मेरी मन:स्थिति ऐसे महासमर में उतरने की कतई नहीं थी क्योंकि कुछ माह पूर्व ही मेरे बड़े पुत्र गोपाल का १६ वर्ष की अल्पायु में ही देहांत हो गया था इस कारण मैं और मेरा पूरा परिवार अस्त-व्यस्त था पर भंडारीजी के दबाव के आगे मुझे झुकना पड़ा।

निर्वाचन में अत्यन्त परिश्रम करने के बाद भी गणित हमारे पक्ष में नहीं था अत: हार तय थी। मेरे सामने कांग्रेस के श्री सुब्रत मुखर्जी एवं वामदल की सरला माहेश्वरी थीं। दोनों ही संगठन और साधनों की दृष्टि से मेरे से बहुत आगे थे। इस पर भी मुझे चुनावी दौड़ में बहुत नये अनुभव आये एवं लोकसमर्थन का लाभ मिला। मेरे गांव से भी आदरणीय बालाप्रसादजी जोशी एवं श्री कपूरजी बेताला यात्रा का बहुत कष्ट झेलकर भी दो सप्ताह के लिए प्रचार हेतु आये। काम की सारी कमान संघ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के हाथ में थी, मेरा काम तो केवल लोक-सम्पर्क का था। मेरे सीनियर श्री सुखलालजी गनेड़ीवाल ने अपनी गाड़ी और ड्राइवर पूरे समय के लिए मेरे उपयोग हेतु दी, उन्होंने मेरे लिए लोकसम्पर्क भी साधा। स्वयं अटलबिहारी वाजपेयी एवं लालकृष्ण आडवानी जी ने मेरे क्षेत्र में जनसभाएं भी सम्बोधित की। एकबार तो लगा कि वातावरण काफी मेरे पक्ष में हुआ है पर अन्तिम दौर में धनबल और बाहुबल का हमारे पास कोई तोड़ नहीं था अत: जो होना था सो हुआ।

चुनाव के बाद मैं पार्टी के काम में जुट गया। पार्टी में आर्थिक दृष्टि से काफी असुविधा थी। शास्त्रीजी ने मेरे व्यापक लोकसम्पर्क को देखते हुए प्रान्त का आर्थिक दायित्व मुझे दिया जिसे मैंने निष्ठापूर्वक निभाया। बाद में श्री पी.डी. चितलांगियाजी के पार्टी में आ जाने से मुझे राहत मिली। केन्द्र के सभी नेताओं से मेरा स्नेहपूर्ण सम्पर्क बना। एक कालखंड में डॉ. मुरली मनोहरजी जोशी केन्द्रीय प्रभारी बनकर आये, उनसे अपार स्नेह मिला, आज भी वैसा ही विद्यमान है। बाद में श्री कैलाशपति मिश्रजी आये, उनका भी स्नेह मिला। इन लोगों ने बंगाल में काम को बढ़ाने हेतु काफी परिश्रम किया। मैं आज भी प. बंगाल का उपाध्यक्ष हूँ एवं सक्रिय हूँ।

मेरे राजनैतिक सम्पर्कों का लाभ मेरे गांव को भी मिला। श्री वाजपेयी जी के कहने से दिल्ली-जोधपुर मेल का ठहराव मेरे गांव में पुनः बहाल हुआ। श्री तपन सिकदर के केन्द्रीय राज्यमंत्री रहते हुए १९९९ ई. में मेरे गांव में एस.टी.डी. सुविधा प्रारंभ हुई, श्री कैलाशपतिजी के कारण डेगाना पर हावड़ा-जोधपुर मेल का ठहराव हुआ। राज्य सरकार में मंत्री होने पर श्री ललित किशोरजी चतुर्वेदी ने मेरे गांव में ३० शैय्या का अस्पताल सरकारी खर्च से बनाया एवं श्री भंवरलाल शर्मा ने पानी के नल के लिए १९९५ ई. में ३५ लाख रुपये का सहयोग सरकार से दिलाया जिससे गांव को बहुत सुविधा हुई।

वाजपेयी सरकार के समय मैं नेशनल बुक ट्रस्ट का ट्रस्टी एवं निदेशक बना, मेरे प्रस्ताव पर ट्रस्ट ने राजस्थानी भाषा में भी साहित्य प्रकाशन का कार्य प्रारंभ किया। इसके पूर्व मैं नेशनल इन्स्योरेन्स का भी निदेशक बना। दोनों के ही कार्यकाल तीन वर्ष थे।

विविध सार्वजनिक संगठनों से सम्पर्क

जिन संगठनों से मेरा नित्य का सक्रिय सम्पर्क है, उसका वर्णन मैंने ऊपर किया है। इसके अलावा भी मैं कई संगठनों की कार्यसमितियों में काफी वर्षों से हूँ। जिनमें प्रमुख हैं - मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय एवं बड़ाबाजार लाइब्रेरी। सम्पर्कित संस्थायें तो काफी संख्या में है, जिनमें भी मैं यथासंभव सहयोग करता रहता हूँ। मेरे सार्वजनिक जीवन में इन सभी संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

मेरा पारिवारिक जीवन

मेरी पत्नी जनवरी १९८७ ई. में ही कैंसर ग्रस्त होकर असमय ही चली गई। वह तो बड़े पुत्र के देहावसान के बाद ही टूट चुकी थी, मेरा समझाना उसके कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। मेरे पिताजी का देहावसान भी ६ माह बाद ही हो गया। परिवार अस्त-व्यस्त हो गया। घर में दूसरी कोई महिला नहीं थी अतः सारा बोझ मेरी बूढ़ी माँ पर आ गया। मेरी तीनों बेटियां अपने-अपने ससुराल में सानन्द हैं। परिवार के सभी सदस्यों की बीमारियों के समय डॉ. सुजीत धर एवं डॉ. एन.सी. दिवाकर ने बहुत ही आत्मीय भाव से मेरी मदद की। डॉ. धर तो संघ के भी वरिष्ठ पदाधिकारी थे। कुमारसभा पुस्तकालय के सम्मानों की चयन समिति में उनका महत्वपूर्ण अवदान था। मैं इन दोनों के प्रति आभारी हूँ। मेरे मित्र श्री गोविन्द नारायण काकड़ा एवं प्रिय महावीर प्रसाद बजाज ने भी दिनरात एक कर मेरे सभी व्यक्तिगत कामों में मेरा सहयोग किया जो अविस्मरणीय है। बाद में ३० अप्रेल १९९३ ई. को मेरे द्वितीय पुत्र गोविन्द का विवाह हुआ तब परिवार की गाड़ी थोड़ी पटरी पर आयी। १२ जनवरी १९९८

ई. को मेरी माँ का भी देहावसान हो गया। अब गृहस्थी की पूरी जिम्मेवारी मेरी पुत्रवधू निशा पर आ गई। वह वनस्थली में पढ़ी हुई हैं एवं उसे कम्प्यूटर में स्वर्ण पदक मिला हुआ है। वह अपूर्व गुणशील एवं सेवाभावी भी है जो आज के समय में दुर्लभ है। उसी के कारण मै अपना पूरा समय समाज कार्यों में दे पा रहा हूँ। मेरा पुत्र गोविन्द भी मेरी सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखता है।

सम्बन्धियों में मै श्री भागीरथजी चांडक का नाम उल्लेख किये बिना नहीं रह सकता जो सदैव मेरे मित्र एवं सहयोगी की भूमिका निभाते रहे हैं। वैसे यह प्रभु की कृपा है कि मुझे सारे ही सम्बन्धी अच्छे मिले हैं। सामाजिक दायित्व के बीच सम्बन्धों की औपचारिकता में मेरी ओर से त्रुटि रहने पर भी किसीको कोई शिकायत नहीं रहती।

आज से १० वर्ष पूर्व यानि २००२ ई. में जब मैं ६५ वर्ष का हुआ मैंने अपना पूरा समय समाज एवं देश के कार्मो के लिए देने का निश्चय कर अपना आयकर सलाहकार का काम अपने पुत्र गोविंद एवं ममेरे भाई राजाराम बिहानी के सुपुर्द कर दिया, आज वे इसे भली प्रकार चला रहे हैं।

अपने जीवन के हर क्षेत्र में मुझे अच्छे सहयोगी मिले, यह मेरी पूंजी है और इसी के बल पर मैंने संस्थायें खड़ी की, संस्थाओं को गतिशील बनाया, सार्थक ग्रन्थों एवं स्मारिकाओ के प्रकाशन किए। मुझे सेवा और आदर्श पर टिके रहने हेतु जिनसे मार्गदर्शन मिला उनमें श्री राधाकिशनजी नेवटिया, आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री एवं श्री भंवरलालजी मल्लावत विशिष्ट हैं। सहयोगियों की सूची लम्बी है, कोई छूट न जाय अत: यहाँ व्यक्तिश: नामों का उल्लेख नहीं कर रहा हूँ। आज जो स्नेह, सम्मान बना है, वह इन सबके कारण ही है।

अपना क्या है इस जीवन में, सब कुछ लिया उधार,
सारा लोहा उन लोगों का, अपनी केवल धार।

इस ग्रन्थ के लिए भेजे गये पत्र एवं लेखों में बहुत लोगों ने मेरे प्रति जो स्नेह, आदर एवं विश्वास प्रकट किया है, उससे मुझे काम करने की नई ऊर्जा मिली है। मैं उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरुं, जीवन भर वैसा बना रह सकूं, यही प्रभु से प्रार्थना है। उसकी कृपा सदैव बनी रहेगी, ऐसा विश्वास है। ●

स्नेह एवं अनुशासन का अद्भुत संगम है मेरे दादाजी

✍ प्रज्ञा जैथलिया

भगवान की इस सृष्टि में यदि मुझे सबसे उत्तम चीज के बारे में पूछा जाए तो मैं निःसंदेह अपने दादाजी का नाम लूँगी। मैं उनके बहुविध गुणों की कायल हूँ। वे स्नेह एवं अनुशासन के अद्भुत संगम हैं। उनके काम करने का ढंग, सोचने-विचारने का तौर-तरीका, बाहर के लोगों से व्यवहार, परिवार के छोटे-बड़ों से व्यवहार एवं बातचीत, सीधा सपाट बिना लाग-लपेट का वार्तालाप हम सभी को जीवन का व्यवहार सीखने की उत्तम पाठशाला है।

मैंने देखा है कि वे किसी भी असुविधा के कारण हताश या विचलित नहीं होते बल्कि दृढ़ता और शान्तचित्त से उसका उपाय ढूंढते हैं। आवश्यक हो तो मुकाबला करते हैं। उन्होंने अपने जीवन में काफी पारिवारिक कष्ट सहे हैं, अपनों को असमय जाते भी देखा है पर उसे वे भीतर ही भीतर पचाते रहे हैं, कभी बाहर उसकी छाया को अधिक नहीं आने दिया है।

उन्होंने अपने जीवन में लोकहित के महत्वपूर्ण एवं बड़े काम भी किए हैं, इस कारण मैं जहाँ भी जाती हूँ, उनके बारे में आदर एवं प्रशंसा करते ही लोग मिलते हैं। उससे मैं कितनी प्रसन्न होती हूँ यह सहज ही अन्दाज लगाया जा सकता है। मैं तो चाहती हूँ कि मुझे हर जीवन में ऐसे ही दादाजी मिलें।

मेरे दादाजी पर मुझे एवं मेरे पूरे परिवार को गर्व की अनुभूति होती है। वे दीर्घायु हों, शतायु हों एवं हम सबको उनका स्नेह निरन्तर मिलता रहे। ●

वर्तमान संपर्क : बिरला बालिका विद्यापीठ, (कक्षा-१२), पोस्ट-पिलानी (राजस्थान)

आदरणीय बाऊजी

✍ गोविन्द जैथलिया, एडवोकेट

आदरणीय बाऊजी के ७५ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। उनके जीवन पर जब अनेक बड़े-बड़े लोग लिख रहे हैं, तो मेरे जैसे साधारण व्यक्तित्व का कुछ भी लिखना कोलाहल में मच्छर की भिनभिनाहट जैसा ही है परन्तु पुत्र होने के कारण लेखन भी आवश्यक है।

बाऊजी आज जिस ऊँचाई पर पहुंचे हैं, उसके लिए बाई ने अपने आपको तिल-तिलकर जलाया था। वह आज होती तो यह दिन बहुत ही खुशी का होता। कहा है - *'कबीरा यह तन जात है सके तो राख बटोर, खाली हाथों वो गये, जिनके लाख करोर।'*

कितनी भी भरी सम्पदा हो, उन्हें खाली हाथ ही जाना पड़ता है। अपनी ऊँची करनी के द्वारा ही मनुष्य 'अमर' होता है, राख को विभूति में बदल सकता है। मेरे बाऊजी ने पैसा बटोरने की बजाय लोक कल्याण का यश बटोरा है। लोकसेवा और लोककल्याण उनका सहज स्वभाव था ही, उसे आचार्य शास्त्रीजी जैसे लोगों ने और भी दृढ़ किया।

विगत ४३ वर्षों की घटनाओं में से 'क्या भुलूं क्या याद करूं' की समस्या है। १९९४ की एक घटना याद आ रही है। महेश के जन्म के पश्चात् मुझे छोटीखाटू से लौटकर दिल्ली होते हुए कलकत्ता आना था। दिल्ली से कलकत्ता का रिजर्वेशन नहीं था। मैं भाजपा केन्द्रीय कार्यालय पहुँचा तो वहाँ आदरणीय विष्णुकान्तजी मिल गए जो उस समय पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थे। मेरे पहुँचते ही शास्त्रीजी ने मेरा दाहिना हाथ एवं कार्यालय प्रभारी बंशीलालजी सोनी ने मेरा बांया हाथ पकड़ कर बैठाया एवं तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलजी के कोटे से मेरा रिजर्वेशन करा दिया। मेरी समस्या का समाधान हो गया। बात छोटी होते हुए भी जुगलजी के पुत्र के नाते उन्होंने मुझे जो स्नेह दिया वह मेरी स्मृतियों की थाती है।

बचपन में मैंने एक कविता याद की थी - *'अहो ग्राम्य जीवन भी क्या है, थोड़े में निर्वाह यहाँ है'।* मन में ललक थी कि गांव में हमारा भी कोई अच्छा घर हो जहां मेरे प्रकृति प्रेमी हृदय वहां की स्वच्छ हवायें दुलराये, प्यार भरी थपकी दे। मेरी यह अभिलाषा बिना विशेष कुछ किए ही पूरी हो सकती है, यह तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था। बाऊजी की

पुन्याई यहाँ भी काम आई। श्री बालाप्रसादजी जोशी ने नई जगह खरीदी एवं श्री कपूरचन्दजी बेताला एवं उनके पुत्र प्रवीण ने आलीशान घर हमारे लिए खड़ा कर दिया। हमारे परिवार में से किसी को भी कुछ विशेष नहीं करना पड़ा। कलकत्ता में बैठे-बैठे ही गांव में मेरे सपनों का घर खड़ा हो गया। वैसे हमारे पुरखों का पुराना मकान तो था ही पर उसमें आधुनिक सुविधायें नहीं थी। यह बाऊजी के प्रति उनलोगों के स्नेह एवं आदर का ही सुफल था वरना लोग रुपये लेकर घर बनाने गांव जाते हैं, बिना काम हुए ही लौट आते हैं। बहुत कठिन है गांव में काम कराना। विजयादशमी २००७ ई. को हमारे मकान का प्रवेश मुहूर्त था। उसकी दिव्य-भव्य झलक मुझे सदा अविस्मरणीय रहेगी।

बाऊजी में सामाजिकता के गुण भरपूर है, पर वे यह भी जानते हैं कि मनुष्य सदैव अपूर्ण ही होता है, पूर्ण तो भगवान ही होते हैं। अत: जहां उन्हें किसी की काम में अपनी भूल का अहसास होता है, वे भूल मानने में भी संकोच नहीं करते। मेरे साले बंटी (श्याम) ने एक बंगाली परिवार की सुशिक्षित लड़की सुलता से प्रेमविवाह किया। बाऊजी एवं मेरे श्वसुरजी दोनों ही इसके पक्ष में नहीं थे। मैं उसके पक्ष में था। विवाह हुआ। बाद में दोनों ने ही मेरे काम की सराहना की एवं मुझे आशीर्वाद दिया।

बाऊजी के स्नेह हेतु आभार व्यक्त कर अपनत्व की मधुरिमा में परायेपन का पुट देने की भूल मैं नहीं करूंगा। उनमें किसी भी विपरित से विपरीत परिस्थिति से भी टकर लेने की सूझबूझ एवं क्षमता मैंने देखी है। १९८२ मई में मेरे बड़े भाई गोपाल का १६ वर्ष की उम्र में देहान्त हो गया। वह बहुत ही प्रतिभा सम्पन्न था। घर में सभी पर ब्रजाघात हुआ। ऐसे में बाऊजी को भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं पूर्व क्षेत्र के प्रभारी श्री सुन्दरसिंह जी भंडारी ने अगस्त में होने वाले विधानसभा चुनाव का जोर देकर प्रत्याशी बना दिया। बाऊजी ने अपनी सारी परिस्थितियां उनके सामने रखी पर जब वे अड़े रहे तो बाऊजी ने उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर अपने को चुनाव में झोंक दिया। चुनावी माहौल में सैकड़ों लोग रोज घर पर आते तो बाई झल्ला उठती थी। उसे यह माहौल काटने को दौड़ता था। ऑफिस में भी कार्यकर्त्ताओं की ऐसी ही भीड़ लगी रहती। सारे लोगों को महावीर भैया एक दूसरे कमरे में बैठाकर सम्हालते थे। वकालत का काम राजारामजी सम्हालते थे। बाऊजी की वकालत टिकाने में राजारामजी का बहुत बड़ा योगदान है। बाऊजी इन सारी परिस्थितियों में भी बहुत ज्यादा असहज नहीं हुए, इसे झेलते रहे। उनके ७५ वर्ष पूर्ति के आयोजन पर – *शब्द-वाणी-स्वर सभी अवरुद्ध हैं, किन्तु उनकी जिन्दगी की सब नजीरें शुद्ध हैं।*

बाऊजी शतायु हों। मुझे उनका आशीर्वाद मिलता रहे। ●

सम्पर्क : १६१/१, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-७००००७, मो.: ९८३६०२६९६५

स्वाभिमान, निष्ठा और साहस के प्रतीक हमारे बाबूजी

✍ दामोदर प्रसाद राठी

नि:स्वार्थ समाज सेवा के लिए निष्ठा से समर्पित हमारे बाबूजी जिन्हें आदर और स्नेह से सभी लोग जुगलजी या जुगलदा कहकर पुकारते हैं, आज अनेक कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय उनका समारोह पूर्वक अमृत महोत्सव आयोजित कर रहा है एवं डॉ. मुरलीमनोहर जोशी जैसे प्रखर राष्ट्रवादी नेता एवं संसद की लोकलेखा समिति के अध्यक्ष इस अमृत महोत्सव समिति के प्रधान संरक्षक हैं, यह हमारे सभी के लिए अत्यन्त आनन्द एवं गौरव की बात है।

आपको विद्यार्थीकाल से ही सामाजिक-साहित्यिक कार्यों की धुन सवार थी। इसका जीता-जागता उदाहरण ला-कॉलेज में पढ़ते समय ही अपने गांव में पुस्तकालय की स्थापना करना है, जो आज एक बड़े संस्थान में परिवर्तित हो चुका है। वकालत जैसा व्यवसाय करते हुए भी जो साहित्य एवं समाज की सेवा आपने की है वह आज के स्वार्थपूर्ण परिवेश में आपको अन्य लोगों से अलग खड़ा करती है। आपने प्रारंभ में नौकरी भी की पर नौकरी या व्यवसाय या सामाजिक कार्य करते हुए कभी भी आपने सिद्धान्त एवं स्वाभिमान से समझौता नहीं किया। पारिवारिक जीवन में अनेक कष्टों के बीच भी आप सामाजिक कार्यों में निष्ठापूर्वक जुड़े रहे एवं कभी विचलित नहीं हुए। इसी कारण आपको आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री जैसे व्यक्तियों का अपार स्नेह मिला।

बड़े राजनेताओं एवं बड़े धनपतियों से व्यापक सम्पर्क होते हुए भी आपने कभी भी उन सम्बन्धों का व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं किया। रिश्तेदारों द्वारा उलाहना मिलने पर भी उन्हें प्रेम से समझा देते कि रामजी की कृपा से जो कुछ हमें मिला है वह बहुत लोगों से ज्यादा है फिर हम अपने सम्पर्कों का निजी स्वार्थ के लिए उपयोग करने की क्यों सोचें?

इसी चारित्रिक दृढ़ता के कारण आप जिस संस्था से भी जुड़े, उसमें कभी न तो व्यवस्थायें बिगड़ी, न कभी अर्थ की ही कमी रही। जिस बात का आपने निश्चय कर लिया उसे पूरी

निष्ठा से सफल बनाते रहे हैं एवं अपने सहयोगियों को भी पूरा आदर देते रहे हैं इसी कारण उन संस्थाओं में समर्पित कार्यकर्त्ताओं की एक टीम है।

आपका ध्येयपूर्ति के लिए साहस भी प्रशंसनीय है। सभी को स्मरण है कि आपातकाल के डरावने वातावरण में भी आपने हल्दीघाटी चतु:शती समारोह में वीर रस कवि सम्मेलन बुलाकर सरकार के इस कदम को सीधी-सीधी चुनौती दी थी। हिन्दी हाई-स्कूल में विशाल हॉल में आयोजित इस सम्मेलन में तिल धरने को भी जगह नहीं थी। आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री इसका संचालन कर रहे थे। इस आयोजन के बाद सरकारी कोप का भी आपने साहसपूर्वक मुकाबला किया। न झुके, न रुके।

देखते-देखते कितना समय बीत गया है, पता ही नहीं चला। अनेकों प्रसंग हैं, समझ नहीं पा रहा हूँ कि क्या भूलूँ क्या याद करूँ ? आज जब हम उनका 'अमृत महोत्सव' मना रहे हैं तो उनका एक ध्येय-वाक्य मानस पटल पर बार-बार उभर कर आता है- 'कीर्तिर्यस्य स जीवति:'। उन्होंने अपने जीवन को इसके अनुरूप ही ढाल कर रखा एवं विपरीत परिस्थितियों में भी कभी विचलित नहीं हुए। साठ वर्ष की उम्र होने पर उन्होंने समाजसेवा के लिए 'सर्वेषां च हिते रत:' अपने को वकालत के फलते-फूलते व्यवसाय से भी अलग कर लिया, यह सामान्य बात नहीं है।

प्रभु आपको दीर्घजीवी एवं स्वस्थ बनाये रखें। यह प्रार्थना करते हुए आज हमारे बाबूजी एवं नानाजी को उनके अमृत महोत्सव पर हम सभी प्रणाम करते हैं। ●

सीता-दामोदर प्रसाद-नवनीत राठी
मीनाक्षी-दीपक-मृदुल हेडा
अलका-सुमित-लक्षिता डागा
अनुराधा-विशाल-प्रियांशु मुन्दड़ा

सम्पर्क : भारत मार्बल कम्पनी, सी-१/६, राजौरी गार्डेन, रिंग रोड, नई दिल्ली-११००२७
मो.: ०९३१३७७३५४९

मेरे नानाजी - मेरे आदर्श

✍ केशव हेडा
सी.ए.,सी.एस.

मेरे लिए यह बहुत ही हर्ष एवं गौरव का विषय है कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा मेरे लोकसेवी नानाजी जुगलकिशोरजी जैथलिया का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। जैसा मैं जानता हूँ, वे पिछले चालीस वर्षों से इस संस्था के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए हैं।

मुझे जबसे थोड़ी समझ आई है तभी से मैंने नानाजी को अपना आदर्श माना और सदा यह चेष्टा भी है कि मैं भी उन जैसा ही कर्मठ और ओजस्वी बनूं। मेरे आगे बढ़ने में जब भी मैंने उनसे सहयोग मांगा, उन्होंने सदा मुझे प्रोत्साहन एवं प्रेरणा दी है। मैंने अपनी नानीजी को तो नहीं देखा पर आपसे ही मुझे पूरा प्यार मिला है। आपका दौहित्र होने का मुझे गर्व है।

प्रभु आपको दीर्घायु करें एवं आपका स्नेहिल हाथ मेरे सिर पर बना रहे।

मैं अपने पापा, मम्मी, बहन-बहनोई एवं पूरे परिवार की ओर से आपके सुखमय जीवन की कामना करता हूँ। ●

सुमित्रा-शिवनारायण हेडा (पुत्री-जंवाइ)- **केशव हेडा** (दौहित्र)

सोनाली-आशीषजी-अनुश्री-अवनी माहेश्वरी (दौहित्री-दामाद परिवार)

खुशबू-सौरभजी-केशर मूंदड़ा (दौहित्री-दामाद परिवार)

सम्पर्क : श्री भवन, ४ तल्ला, २६, प्रसन्न कुमार टैगोर स्ट्रीट, कोलकाता-७००००६
मो.: ९८७४१४८८४१, ९०५१०१३७२८

मुरलीमनोहर चाण्डक
१३७, श्यामा प्रसाद मुखर्जी रोड,
४ तल्ला, कोलकाता-७०००२६
मोबाइल: ९८३१३४२६८३

शुभकामना

यह अत्यन्त ही हर्ष का अवसर है कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय श्री जैथलियाजी के गौरवपूर्ण एवं उपलब्धियों से परिपूर्ण अमृत महोत्सव को एक बड़े समारोह के रूप में आयोजित कर रहा है। मेरे/हमारे लिए यह और भी गर्व, उल्लास एवं सन्तोष की बात है क्योंकि श्री जैथलियाजी के साथ मेरे/हमारे बहुत ही निकट, घनिष्ट एवं पारिवारिक सम्बन्ध हैं तथा जीवन में कदम-कदम पर इन्होंने मुझे/हमें प्रभावित एवं मार्ग प्रदर्शित किया है।

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक व्यस्तता के मध्य जब कभी भी एवं जितना भी समय इनकी सान्निध्यता का मिलता है, वह बहुत ही शिक्षाप्रद, मूल्यवान एवं अतुलनीय होता है एवं जीवन के हर क्षेत्र में लाभान्वित करता है। सहज दृष्टि से जिन्दगी को समझना, देखना एवं परखना तथा हर परिस्थिति में व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने का रुख, इनके परिचितों पर अपनी अटूट छाप छोड़ता है। सरल, मृदुल एवं आत्मीयता से परिपूर्ण व्यक्तित्व इनका एक अपना एवं अनोखा है जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करता है।

सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में इनका योगदान नि:सन्देह बहुत ही महत्वपूर्ण, अद्वितीय एवं अगली पीढ़ी के लिए अपने आप में एक उदाहरण है। राजनीति के आज के पेचीदे दौर में भी राजनीति से जुड़कर भी अपने आप को कमल के सदृश्य निर्मल एवं पवित्र रखना इनकी अपनी उपलब्धि है।

मैं/हम अन्तर्मन से यह प्रार्थना करते हैं कि ऐसे साहित्य-मनीषि एवं उज्ज्वल व्यक्तित्व को ईश्वर सक्रिय, स्वस्थ, चपल, जिंदादिल एवं सुखी शतायु दें ताकि सभी को अधिकाधिक इनके सान्निध्य का लगातार शुभ अवसर मिलता रहे एवं पूरा समाज इनके उत्कृष्ट व्यक्तित्व से लाभान्वित हो ! इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ह

- कौशल्या - मुरलीमनोहर चांडक
रौनक (दौहित्रि), यश एवं निखिल (दौहित्र)

ऐ चलने वाले पथिक

✍ जमुना हेडा
अध्यक्षः बृहत्तर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन
२३, विजय कुमार मुखार्जी लेन, सलकिया
हावड़ा-७११००६, मो. ९१४३०३६८२६

हे 'चरैवति' के चिर साधक,
जन-जन के मंगल आराधक
सबके शुभ का संकल्प लिए,
तू चलते जा तू चलते जा।

ओजपूर्ण वाणी का शस्त्र तेरे हाथ में।
गुरु-गहन ज्ञान की भी दीप्ति तेरे भाल में।
कदम और तेज कर समाज तेरे साथ में।
संकल्पित हो, तू चलते जा तू चलते जा।

संस्कारों के बीज अंकुरित
मिले हैं तुम्हें विरासत में
उनको प्रसाद सम वितरित कर,
तू चलते जा, तू चलते जा।

पूज्यों के आशीर्वादों से
शोभित कर रहे अनेकों पद
पर अहम् भाव आने ने दिया
यह बड़ी बात, तू चलते जा।

मां सुरसत का भंडार भरा,
सम्पादन की सौरभ फैली
थापित प्रताप कलकत्ता में
शोभित मूरत, तू चलते जा।

सम्मानित, शोभित 'जुगल' नाम
निष्काम कर्मयोगी ललाम
शुभकामना, प्रार्थना यह प्रभु से
होवें शतायु, नित चलता जा। ●

प्रणति

✍ मृदुल हेडा

मेरे बड़े नानाजी का
अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है।
मैं अपने दिल की बातों
को शब्दों में कैसे लिखूं -
आज है दो अक्टूबर का दिन
आज का दिन बड़ा महान
आज के दिन एक फूल खिला
जिससे महका घर संसार
जिनसे पाया मैंने ढेरों प्यार।।
मेरे लिए मेरे बड़े नानाजी LIVING LEGEND हैं।
भगवान मेरे नानाजी को लंबी और स्वस्थ जिंदगी दें
और मैं उनका प्यार, स्नेह, आशीर्वाद पाता रहूँ। ●

मेरे अग्रज - मेरे अभिभावक

✍ राजाराम बिहानी

एडवोकेट

जुगल भाईजी रिश्ते में मेरे भुवाजी के पुत्र होने के नाते मेरे बड़े भाई हैं, पर इससे बढ़कर वे मेरे अभिभावक एवं मार्गदर्शक भी हैं। १९७२ ई. में मैं अपने गाँव निम्बीजोधा से आगे के अध्ययन एवं रोजगार की तलाश में कलकत्ता आया। मेरे जीजाजी गजानन्दजी तापड़िया कलकत्ता में ही रहते थे एवं मेरे ही बृहत्तर परिवार के लोगों की बांगड़ बिल्डिंग में चार तल्ले में गद्दी थी जहाँ मैं ठहर गया था। जुगलजी का दफ्तर भी इसी बिल्डिंग में एक तल्ले पर था जहाँ से वे वकालत का काम करते थे। मैं उनसे मिला एवं अपनी पढ़ने और रोजगार की इच्छा प्रकट की। उन्होंने तुरन्त कहा कि तुम चाहो तो मेरे दफ्तर में काम कर सकते हो एवं पढ़ाई भी जारी रख सकते हो। मुझे तो जैसे अनचाही मुराद मिल गई। मैं उनके सहायक के रूप में काम करने लगा एवं उन्होंने अपने एक विश्वस्त स्वयंसेवक शंकरजी पोद्दार को साथ भेजकर मुझे कॉलेज में भर्ती भी करा दिया एवं फीस के रुपये भी अपने पास से दे दिए। सम्बन्धी होने के बावजूद मैं भाइजी को जानता तो था पर विशेष सम्पर्क नहीं था। उनके आत्मीय व्यवहार से मैं अभिभूत हो गया। मैंने उनके संरक्षण में बी.कॉम भी किया, एल-एल.बी. भी पास की एवं आज उनके सारे काम का उत्तरदायित्व उन्होंने मुझे ही सौंप रखा है। आज से दस वर्ष पूर्व जब वे ६५ वर्ष के हुए तो उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि कल से मैं किसी क्लाइन्ट से बात नहीं करूंगा - सारे काम को तुम्हें ही सम्भालना है। तुम्हें कठिनाई हो तो मुझे पूछ लेना पर किसी भी क्लाइन्ट को मेरे पास राय के लिये मत भेजना। वे इसपर दृढ़ रहे एवं आज भी अपने कार्यालय में नियमित आकर बैठते हैं, लोगों से मिलते हैं, पर केवल लोकहित के कामों के लिए। ऐसे लोग दुनिया में कम ही होते हैं। मुझे भी उनके सहभागी होने का गर्व है। यद्यपि प्रारंभ में कई लोगों ने उनसे कहा कि किसी निकट के सम्बन्धी को अपने पास नहीं रखना चाहिए पर उन्होंने कभी भी किसी की बात पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

मेरे पर उनका विश्वास सदा अटूट बना रहा, मैंने भी सदा यह ध्यान रखा कि उनके विश्वास को कोई चोट नहीं लगे, प्रभु कृपा से यह निभ रहा है, आज लगभग ४० वर्ष हो चुके हैं।

काम के दौरान कठिनाइयां भी आई, परीक्षा के अवसर भी आये। जुगलजी वकालत के साथ-साथ साहित्यिक संस्थाओं में भी सक्रिय थे, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भी पदाधिकारी थे। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के वे मंत्री थे एवं अध्यक्ष थे जवाहिर प्रेस के मालिक श्री नन्दलाल जी जैन। १९७५ के जून में देश में आपातकाल लागू कर दिया गया था। लोगों की जबान पर ताला लगा दिया गया था। जुगलजी एवं उनके साथी इसका सार्वजनिक प्रतिकार करने का मन बना चुके थे। उन्होंने हल्दीघाटी चतु:शती को इसका माध्यम बनाकर दो दिवसीय समारोह आयोजित किया। २० जून १९७६ को वीर रस के कवि-सम्मेलन में श्यामनारायण पाण्डे एवं मणिमधुकर के अलावा कई वरिष्ठ कवि पधारे थे। हिन्दी हाइस्कूल के विराट हाल में तिल धरने को भी जगह नहीं बची थी। कवियों ने चुनौती की भाषा में आपातकाल को ललकारा। पहले दिन १९ जून को स्मारिका लोकार्पण समारोह में भी हल्दीघाटी एवं प्रताप के तेजस्वी जीवन से निर्भयता का पाठ सीखने की बातें कही गई। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री दोनों दिन संचालन कर रहे थे। समचार पत्रों में बड़ी-बड़ी खबरें छपीं, सरकार की दमनात्मक कार्यवाही चालू हुई। ऑफिस पर पुलिस की दस्तक हुई, भाईजी आयकर दफ़्तर गए हुए थे, मैं बैठा था, मुझे पकड़कर लालबाजार थाना ले जाया गया, नन्दलालजी भी पकड़े गए। उनकी प्रेस को ताला लगा दिया गया। हमारे आफिस के सामने भी पुलिस का पहरा बैठा दिया गया। मैं करीब दो सप्ताह लालबाजार में रहा, जुगलजी भूमिगत हो गए थे। मुझसे सब तरह से पूछताछ की गई पर मैंने कुछ भी जानकारी नहीं दी। हम दोनों को दो सप्ताह बाद जमानत पर छोड़ा गया। यह हाल पूरे आपातकाल तक चला। मुझे किसी विशिष्ट स्थान पर बुलाकर भाईजी सारा हालचाल लेते रहते थे। सभी दबावों के बावजूद मैं उस स्थिति में टूटा नहीं। आपातकाल खत्म होने पर ही सारी स्थितियाँ सुधरी।

इस विकट परिस्थिति का एक लाभ यह भी हुआ कि मुझमें स्वतन्त्र रूप से वकालत करने का हौसला आ गया। भाईजी को भी मेरी योग्यता पर भरोसा होने लगा एवं वे धीरे-धीरे सार्वजनिक कामों में अधिक समय देने लगे। १९८२ ई. में तो उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार के रूप में विधानसभा का चुनाव भी लड़ा एवं अब उनका समय राजनीति में भी लगने लगा। उन्होंने मुझे सब दृष्टि से आगे बढ़ाया, पग-पग पर मार्गदर्शन किया और आज मैं जो भी हूँ, उनकी वजह से ही हूँ। ऐसे लोग आज के समय में कम ही होते हैं।

आज जब उनका सार्वजनिक अभिनन्दन हो रहा है तो मेरी प्रसन्नता का कोई पार नहीं है। मैं असमंजस में हूँ कि क्या भूलूँ, क्या याद करूँ ? प्रभु उन्हें शतायु कर स्वस्थ रखें ताकि वे समाज का नेतृत्व करते रहें एवं हम जैसे लोगों का मार्गदर्शन भी। ●

सम्पर्क : १६१/१, महातमा गाँधी रोड, कमरा नं. ३०, कोलकाता-७, मो.: ९८३१२ ०४६५६

प्रियवर जुगलकिशोर

✍ भागीरथ चांडक

है स्वभाव में स्वाभिमान, वाणी में सहज सरसता,
सबसे सहज मित्रता रखते, लक्ष्यपूर्ति में दृढ़ता।
प्यार, प्रेरणा तुमसे पाई, वैसी मिली न और,
सदा विराजित अन्तर्मन में, प्रियवर जुगलकिशोर।

बचपन से ही राष्ट्रभक्ति की, दीक्षा मिली संघ में,
उसे बांटते रहे निरन्तर, अपने सब मित्रों में।
हमने भी चख लिया आपसे, वह प्रसाद का कौर,
सार्थक जीवन दृष्टि मिल गई, प्रियवर जुगलकिशोर।

उसी दृष्टि को लेकर अपनी सृष्टि रचाई हमने,
भारत फिर से जगद्गुरु हो, यह सपना है मनमें।
लगन आपकी और प्रेरणा, मन को करे विभोर,
मिले सदा सद्भाव आपका, प्रियवर जुगलकिशोर।

त्याग, तपस्या जीवन भर की, व्यर्थ नहीं जायेगी,
अंधकार हो चाहे जितना, भोर पुनः आयेगी।
अमृत-उत्सव के माध्यम से, यश फैले चहुं ओर
तप की मिले नवीन प्रेरणा, प्रियवर जुगलकिशोर। ●

सम्पर्क : १३५-जी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी रोड, ४ तल्ला, कोलकाता-७०००२६, मो.: ९८३१०१६७७७

मेरे प्रेरणा-स्रोत कर्मयोगी जैथलियाजी

✍ कपूरचन्द जैन

कुछ सम्बन्ध सम्बोधनों पर आश्रित नहीं होते, ऐसा ही एक आत्मीय सम्बन्ध मेरा भाईजी जुगलकिशोर जैथलिया से है। वे एक साथ मेरे जीवन में अनेक महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते रहे हैं। कभी बड़े भाई की तरह तो कभी घनिष्ठ मित्र की तरह, कभी मार्गदर्शक तो कभी संरक्षक।

सम्बन्ध केवल मुझ तक ही सीमित नहीं रहे, गत चालीस वर्षों से पूरे परिवार के साथ अति घनिष्ठ एवं आत्मीय सम्बन्ध स्थापित हुये हैं, यह हमारी खुशनसीबी है।

मेरे जीवन में अनेक साधु-संतो, राजनीतिज्ञों तथा सामाजिक कार्यकत्ताओं से सम्पर्क आया है किन्तु जो अपनत्व और आत्मीयभाव भाईजी में देखा है वह बेमिशाल है। आज जो कुछ भी मैं हूँ और मेरी जो प्रतिष्ठा है, वह भाईजी की असीम कृपा की बदौलत है।

भाईजी का जीवन स्वत: ही सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् से भरा हुआ है। जैसे एक छोटी सी बूंद में अथाह सागर लहरा रहा है। एक बीज में विशाल वट वृक्ष की क्षमता छिपी हुई है। एक किरण में सहस्त्राक्षु सूर्य का तेज छिपा हुआ है। उसी प्रकार भाईजी का व्यक्तित्व अंधेरी राहों में प्रकाश का पथ है।

व्यक्तित्व की पहचान का मुख्य मानक है, आन्तरिक गुणों से सम्पन्नता। उनका आन्तरिक व्यक्तित्व, सरलता, मृदुता, स्पष्टवादिता, विनम्रता, मधुर भाषिता, प्रेमशीलता जैसे अनेकों श्रेष्ठ गुणों से समन्वित है। यानि उनका जीवन गुणों का पुंज है। उनकी जीवन पोथी का हर पृष्ठ उजला है। उर्जस्वल आभामंडल, चरित्र की निर्मलता, भावों की पवित्रता, विचारों की शुभ्रता से आप्लावित मन और स्थिर योगी सा संयम से सधा तन।

गत पाँच दशकों से मैंने बहुत नजदीक से उन्हें देखा कि किस प्रकार शून्य से जीवन प्रारम्भ करने वाला कोई शख्स किस मार्ग पर चलकर अनन्त और असीम तक पहुँच सकता है, इसका आभास उन्हें जानकर हुआ।

मैं बहुत छोटा था तब उनसे सबसे पहला परिचय संघ की शाखा पर हुआ। वे उस

समय कोलकाता में अध्ययन रत थे एवं छोटीखाटू आते-जाते रहते थे। उनके व्यवहार, हाजिर जबाबी एवं देशभक्ति के जजबात ने मेरे पर गहरा प्रभाव डाला और तब से उनके साथ मेरा सम्बन्ध उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया।

उनका जब भी छोटीखाटू का प्रवास होता तो दिन में घंटों उनके साथ रहने और गुफ्तगू का अवसर मिलता। मैंने जब भी आगामी अध्ययन की बात चलाई तो हमेशा आश्वस्त किया कि कभी एक पोस्टकार्ड से सूचित करके आ जाना, सारी व्यवस्था हो जायेगी। मैंने जब इग्यारवीं की परीक्षा पास की तो आगे यहाँ पर पढ़ने की व्यवस्था नहीं थी और मेरी तीव्र इच्छा आगे पढ़ने की थी, किन्तु घर की ऐसी परिस्थिति नहीं थी। मैं भाईजी के आश्वासन पर १७ वर्ष की आयु में १९६५ ई. में कोलकाता चला गया। कलकत्ता जैसे महानगर में जाना, वहाँ कॉलेज में दाखिला लेना, नौकरी करना, ढेर सारी मुसीबतें मुझे दिखाई दे रही थीं, किन्तु वहाँ पहुँचने पर मेरी सारी व्यवस्थाऐं भाईजी ने तुरन्त कर दी। तीन साल तक मैं उन्हीं के सानिध्य में रहा। सायं शाखा से लौटने के बाद लम्बी चर्चायें होती और वे हमारा मार्गदर्शन करते। मैंने देखा कि ये मेरे जैसे कितने ही युवकों और स्वयंसेवकों के प्रेरणास्रोत बने हुये थे। तीन साल के पश्चात् मैं पुनः छोटीखाटू लौट आया और लाइफ इन्सोरेंस के एजेन्ट के रूप में कार्य प्रारंभ कर दिया। उनके राजस्थान प्रवास के दौरान हम अक्सर मेरी गाड़ी से आस-पास के क्षेत्र के लोगों से मुलाकात के लिये जाते। एकबार मैं गाड़ी चला रहा था, हम दो ही थे। मैंने भाईजी को पीछे की सीट पर बैठने के लिये निवेदन किया किन्तु वे आगे मेरे पास वाली सीट पर बैठ गये। मैंने कहा आपको पीछे आराम रहेगा। उन्होंने कहा जब मालिक गाड़ी चलाता है तो पीछे बैठना उचित नहीं। बात बहुत छोटी है किन्तु कितना ध्यान रखते थे।

कोलकाता में तो आपकी सामाजिक और साहित्यिक सेवाओं से पूरा देश परिचित है। किन्तु अपनी जन्म भूमि में आपने जो श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की नींव रखी, उसका भी परिचय पूरे देश में लहरा रहा है। गांव में पुस्तकालय चलाने के प्रयत्न पहले भी २-३ बार हुए पर वे अल्पजीवी रहे। आपने सारी व्यवस्थायें चाक-चौबन्द करके पुनः पुस्तकालय १९५८ ई. में आरम्भ किया जो आज ५४ वर्ष से सतत चल रहा है एवं पुस्तकालयों में एक मिसाल बना हुआ है।

आपके प्रयत्न से यहां उपन्यासकार गुरुदत्तजी, वरिष्ठ साहित्यकार महादेवी वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, जैनेन्द्रजी जैन, सुदर्शनजी, भैयाजी जोशी, विष्णुकान्तजी शास्त्री, सुन्दरसिंहजी भंडारी, मुरली मनोहरजी जोशी जैसे अनगिनत साहित्यकार एवं राजनेता पधार चुके हैं। दसों स्मारिकाओं का आपने सम्पादन एवं प्रकाशन किया है। पुस्तकालय के माध्यम से आपने गांव की विभिन्न समस्याओं का निराकरण भी कराया है। यहाँ के अस्पताल को

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में क्रमोन्नत करवाया, एस.टी.डी. सेवा भी सबसे पहले आपके प्रयत्न से शुरू हो पाई। नल की व्यवस्था हुई तथा आपने यहाँ जोधपुर मेल का ठहराव भी श्री वाजपेयीजी द्वारा करवाया। गाँव आपके इन अवदानों को भूल नहीं सकता। बचपन में भी आपने गाँव के तथाकथित बड़े लोगों की गाँव के विकास एवं सामाजिक क्षेत्र में तानाशाही का जमकर विरोध किया एवं उन्हें झुकने को मजबूर किया।

कलकत्ता से भी आपने कन्हैयालाल सेठिया समग्र का चार खंडों में एवं विष्णुकान्त शास्त्री की चुनी हुई रचनाओं का दो खंडों में सम्पादन किया एवं अन्य कई ग्रन्थ तथा स्मारिकाओं का सम्पादन किया। ऐसे समर्थ समाजसेवी एवं साहित्यकार का सार्वजनिक अभिनन्दन और उनकी विशिष्ट उपलब्धियों का सम्मान निःसंदेह बड़ा सुखद अवसर है।

भाईजी का जीवन खुली किताब की तरह सर्वविदित है फिर भी उनके व्यक्तित्व को कलम से बांधना मेरे लिये नामुमकिन है। मैंने थोड़ासा प्रयत्न किया है। यदि कोई कमी रह गई हो तो वह मेरी अभिव्यक्ति सामर्थ्य की कमजोरी है ऐसा मेरा मानना है।

मैं 'जीवेम् शरदः शतम्' की भाईजी के लिये मंगलकामना करता हूं। ●

सम्पर्क : छोटीखाटू-३४१३०२ (राजस्थान), मो.: ०९४१३१४०५१९

एक सफल यात्री : जुगल भाईजी

✍ प्रेमसिंह चौधरी

सफलता की कसौटी पर ही आदमी बड़ा आदमी बनता है। बड़े आदमी को दिल खुला रखना पड़ता है किन्तु ऐसे व्यक्ति के दिमाग में कोई बात या विचार छन कर ही प्रवेश कर सकते हैं। जुगल भाईजी ने ठोस एवं विवेकपूर्ण सम्पर्क के साथ जीवन में अपनी ऊर्जा का सदुपयोग किया है। सम्पर्क केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं होता बल्कि आचरण, सद्भावना और विश्वास के साथ प्रसार पाता है। जुगल भाईजी के पास इन तीनों प्रकार की सम्पदाओं का खजाना है। इस विधा में शब्दों का भी महत्व है क्या कहा जाए और कैसे कहा जाए, इस दक्षता के रहते इन्होंने छोटीखाटू, कोलकाता एवं देश के अन्यत्र हिस्सों में आयोजित किए गए कार्यक्रमों में राजनीति, साहित्य, समाजसेवा, व्यवसाय, मीडिया आदि क्षेत्रों के अग्रणी व्यक्तियों से सम्पर्क साधकर आमंत्रित करते हुए आयोजनों को सफल बनाया है। वर्तमान में भी यह क्रम जारी है।

यद्यपि छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय स्तरीय पुस्तकों का अच्छा भंडार है, भवन और पुस्तकों का रख-रखाव एवं उपयोगिता को देखकर आगन्तुकों को सुखद अनुभूति होती है किन्तु वे यह जानकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं कि इस भवन में डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्री जैनेन्द्र कुमार जैन, महादेवीजी, श्री भवानी प्रसाद मिश्र आदि मूर्धन्य साहित्यकारों ने आकर साहित्य पर चर्चा की है। भाइजी के मार्गदर्शन एवं सम्पादन में कई संग्रहणीय स्मारिकायें छोटीखाटू पुस्तकालय ने प्रकाशित की हैं। कबीर साहब की छठी शती के उपलक्ष्य में आकर्षक कलेवर एवं सामग्री के साथ छपी स्मारिका ने तो देश भरके विद्वानों की सराहना अर्जित की है। चूंकि भाईजी किसी कार्य की पूरी निष्ठा के साथ सम्पादित करते हैं अत: प्रकाशन उच्चकोटि के बन जाते हैं। तदुपरान्त वे कुशलता पूर्वक उनको पाठकों तक भी पहुँचाते हैं।

जोधपुर के प्रसिद्ध खूबसूरत छीतर पत्थरों से निर्मित पुस्तकालय के तीन मंजिले भवन में जब आगुन्तक प्रवेश करते हैं तो वाचनालय कक्ष में बड़ी-बड़ी टेबुलों पर पर्याप्त एवं प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं का अवलोकन करने के पश्चात् हठात् उनकी नजरें हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध

साहित्यकारों के तैल चित्रों पर ठहर जाती है। इन कलाकृतियों की सहज सराहना होती है, उनके महत्व, सौन्दर्य और उपयोगिता की ओर ध्यान आकर्षित होता है। भाइजी ने इस प्रकार की कला संजोकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाया है। इसी श्रृंखला मे तृतीय तल पर स्थित विशाल कक्ष मे हिन्दी साहित्यकारों के साथ राजस्थानी भाषा के साहित्यकारों के चित्रों को सुसज्जित करवाया है। भाईजी की इन्हीं उपलब्धियों के कारण यह पुस्तकालय विशिष्ट है।

१९८९ ई. के लोकसभा के चुनावों के पूर्व उदयपुर में गैर कांग्रेसी नेताओं का बड़ा जमावड़ा होना था। डबोक हवाई अड्डे पर बड़े-बड़े नेताओं की चहल-पहल थी। वी.आई.पी. कक्ष में आना जाना जारी था। राज्य के एक मंत्री के साथ उस कक्ष में गया तो वहाँ श्री अटल बिहारी बाजपेयी भी थे। मैंने अभिवादन के पश्चात् उनके निवेदन किया कि हमारे गांव में इस बात की चर्चा है कि पुस्तकालय के कार्यक्रम में जुगल किशोरजी जैथलिया के आग्रह पर आप छोटीखाटू पधारेंगे। तुरत फुरत उन्होंने चिर-परिचित मुस्कान के साथ कहा कि जैथलिया जी बुलाते हैं तो जरूर आएंगे। छोटीखाटू मे आगमन संभव नहीं हुआ किन्तु भाईजी के निवेदन पर श्री अटल बिहारीजी कोलकाता में एक अनूठे कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। भाईजी के कुशल निर्देशन में गतिमान संस्था कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने एकल कवि के रूप में उन्मुक्त भाव से अपनी कविताओं का पाठ किया। भाईजी ने इस यादगार कार्यक्रम के समुचित विस्तार देने हेतु आडियो कैसेट बनवाकर रसिकों तक पहुँचाई। इस प्रकार सहज ही अपनी प्रबन्धकीय दक्षता और सुदृढ़ सम्पर्क की विशिष्टता को पुष्ट किया। प्रबन्ध और नेतृत्व में अंतर है किन्तु कुशल प्रबन्ध के अभाव में कुशल नेतृत्व का उपयोग नहीं होता। भाईजी ने दोनों गुणों को सिद्ध किया है। उनके पास विश्वसनीय साथियों की अच्छी टीम भी है, उनका लोक सम्पर्क भी विशाल है।

मेरी भेंट एकबार कोलकाता में रहने वाले लाडनूं निवासी एक कांग्रेसी नेता से हुई। छोटी खाटू के प्रसंग में उन्होंने भाईजी की कर्मठता और मैत्री भाव की भूरि-भूरि प्रशंसा की। यह सच है कि अपने साथियों एवं मित्रों से काम लेने की मौलिक सृजनात्मक शक्ति उनके पास है। उन्होंने अपनी रचनात्मक कल्पना के साथ मृतप्राय संस्थाओं को भी संजीवनी देकर पुनर्जीवित किया है। आप अपनी जड़ों से पूरी जीवन्तता के साथ जुड़े हुए हैं। गाँव आकर सभी वर्गों के व्यक्तियों से सम्पर्क साधते हैं।

जुगल भाईजी ने विविधताओं से भरे व्यक्तित्व को लेकर ठोस एवं विवेकपूर्ण सम्पर्क के साथ जीवन में अपनी ऊर्जा का सदुपयोग किया है। हम ग्रामवासी उनके दीर्घ एवं मंगलमय जीवन की कामना करते हैं।

सम्पर्क : छोटीखाटू - ३०१३०२ (राजस्थान), दूरभाष : ०१५८०-२७०३५५

प्रबुद्ध चिन्तक एवं समाजसेवी श्री जैथलिया

✍ प्रकाश बेताला

राजस्थान के नागौर जिले के एक छोटे से कस्बे छोटीखाटू में स्व. कन्हैयालालजी जैथलिया के पुत्र रूप में २ अक्टूबर १९३७ में जन्म लेनेवाले जुगल किशोरजी उस छोटे से गाँव को पूरे हिन्दुस्तान में पहचान दिलवा देंगे ऐसा कोई नहीं जानता था लेकिन यह सत्य हुआ।

इस छोटे से कस्बे छोटीखाटू की भूमि पर देश के मूर्धन्य साहित्यकारों, राजनेताओं, राज्यपालों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, दानवीरों तथा कुशल संगठकों के चरण पड़े यथा श्री गुरुदत्त आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, कन्हैयालाल सेठिया, दानवीर सेठ सोहनलाल दूगड़, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, रा. स्व. संघ के पूर्व सरसंघचालक सुदर्शनजी, वर्तमान सरसंघचालक पू. मोहन भागवतजी, सरकार्यवाह भैय्याजी जोशी आदि। यह सब सम्भव हुआ श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के कारण क्योंकि बचपन से ही श्री जैथलियाजी ने एक स्वप्न संजोया था कि मेरे गाँव में संस्कारशील लोग हों, गाँव में संस्कृति की पहचान बनी रहे इसलिए कोई ऐसा स्थाई काम करना चाहिए जिससे आनेवाली पीढ़ियाँ निरन्तर कुछ ग्रहण कर सकें और उसी के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आया था 'श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय' तथा इसी को आधार बनाते हुए श्री जैथलिया जी ने साहित्य क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाने शुरु किये थे। कुशल संगठक के गुण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्राप्त थे ही, तथा अत्यन्त आत्मीय भाव होने के कारण लोगों को साथ में लेकर चलना, लोगों को अपना बनाना, सद्प्रेरणा देकर राष्ट्र एवं समाज के प्रति कर्तव्य बोध का जागरण करने के साथ प्रत्यक्ष काम में जोड़ना, यह उनका निरन्तर का स्वभाव रहा है। इसी कारण कारवाँ बढ़ता गया और लोग जुड़ते गये तथा यह छोटा सा कस्बा पूरे भारत में एक विशिष्ट पहचान बनता गया। श्री जैथलिया जी की प्रारंभ से ही स्पष्ट सोच थी कि हमारा गाँव छोटा है, हमारे साधन सीमित हैं अत: हमें अपनी पहचान बनानी है तो बड़े लोगों का आशीर्वाद हमें मिले उनके चरण हमारे गांव में पड़े तभी बड़ी पहचान संभव है। उन्होंने अपने व्यवहार तथा प्रयत्नों से सम्पर्कों का उपयोग करते हुए यह प्रत्यक्ष संभव कर दिखाया।

मैंने अपने जीवन में बाल्यकाल से ही जुगलजी को बहुत नजदीक से देखा है, उनका

आशीर्वाद, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मुझे सदैव प्राप्त रही है तथा मैं सदैव अपने परिचय के समय यह स्मरण भी रखता हूँ एवं अभिव्यक्त भी करता हूँ। उन्हीं की प्रेरणा से मैंने अपने परिवार में एक प्रयोग किया – मेरे पूज्य पिताजी श्री मिलाप चन्द बेताला के स्वर्गवास के पश्चात् एक विचार मेरे मन में आया कि सभी परिवार एवं परिवार जन जैसे – पुत्र, पौत्र इत्यादि अपने पिता या पूर्वजों के निधन के पश्चात् उनकी स्मृति को स्थाई रखने के लिये कुछ दान या धार्मिक कृत्य करने की इच्छा रखते हैं तथा धर्मशाला, कमरा या धार्मिक स्थलों में कुछ स्थाई निर्माण कर उसमे नामपट्ट लगाते हैं। मैंने अपने परिवार में भाइयों के साथ विचार विमर्श कर यह इच्छा जताई कि हम अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में ऐसा कार्य करें जिससे समाज एवं राष्ट्र के काम में हम लम्बे समय तक योगसूत्र बन सकें एवं उसी के परिणाम स्वरूप 'मिलापचन्द बेताला मेमोरियल ट्रस्ट' अस्तित्व में आया। श्री जैथलिया जी को मैंने अपने मन की बात बताई तथा उन्होंने मेरी भावना का आदर करते हुए श्री आनन्द मिश्र 'अभय', सम्पादक-राष्ट्र धर्म, लखनऊ से इस विषय में चर्चा करके इस ट्रस्ट के माध्यम से राष्ट्रीय विचारधारा का प्रसार, देश की ज्वलन्त समस्याओं पर व्याख्यानमालायें आदि आयोजित करने का एक महत्वपूर्ण काम शुरू किया तथा आज अखिल भारतीय स्तर पर यह ट्रस्ट पिछले ६-७ वर्षों से इस काम में लगा है। यह सब सम्भव हुआ श्री जैथलिया जी की प्रेरणा एवं सद्प्रयासों से ही।

कलकत्ता की विशिष्ट साहित्यिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के माध्यम से श्री जैथलियाजी ने जिस प्रकार से साहित्यिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है, यह एक मिशाल ही नहीं, प्रेरणास्पद भी है। इतना ही नहीं, जिस प्रकार से लोगों को जोड़कर राष्ट्रीय विचारधारा एवं राष्ट्रोत्थान के काम में लगाया एवं दिशा दी तथा साथ में कुमारसभा की दशा भी बदली ऐसा श्री जैथलिया जी जैसा कर्मठ एवं विरला व्यक्तित्व ही कर सकता है।

प्रभु श्री जैथलिया जी को शतायु करें, एवं चरैवेति चरैवेति के उद्घोष को सार्थक करते हुए तथा इसी प्रकार समाज का मार्गदर्शन करते हुए इस राष्ट्र एवं समाज के पुनीत काम में अपने आप को नियोजित करते रहें, प्रभु से इनके प्रति इसी मंगल भावना के साथ –

हर कार्य को करने के लिए उल्लास चाहिए,
हर सांस के साथ मन का विश्वास चाहिए,
लक्षित मंजिल पर सभी बढ़ना चाहते हैं मगर,
हर सिद्धि के लिए आस्था एवं अभ्यास चाहिए। ●

सम्पर्क : १०१, आशीर्वाद अपार्टमेन्ट, कटक रोड, भुवनेश्वर-७५१००६, मो. ०९३३७८७००२५

जुगल काकोजी - एक प्रेरक व्यक्तित्व

✍ बिमल चन्द भंडारी

ओजस्वी आभामंडल युक्त, भारतीय परम्पराओं एवं संस्कारों के संपोसक, सादा जीवन-उच्च विचार एवं गृहस्थ होते हुए भी साधु जैसी जीवन शैली रखने वाले, ईमानदारी एवं प्रमाणिकतापूर्ण आचरण लिए हुए, साहित्य सृजन, सम्पादकीय कला, ज्ञान पिपासा, प्रखर वक्ता जैसे नैसर्गिक गुणों वाले, अंधविश्वास एवं कुरीतियों से बहुत दूर, राजनीति में होते हुए भी दुर्नीति से परे, मातृभूमि से अत्यंत लगाव एवं आन-बान-शान में गौरव की अनुभूति महसूस करनेवाले, सबके दुःख-सुख में साथ रहने की प्रवृति लिए, प्रेरणादायक एवं पवित्र भाव और चरित्र एवं नैतिकता से प्रतिबद्ध एक बिभूति का नाम है श्री जुगलकिशोर जैथलिया। हम सब उनको आदर से जुगल काकोजी के नाम से पुकारते हैं।

जुगल काकोजी मेरे दिवंगत पिताजी स्व. कोमलचन्दजी भंडारी के मित्र थे एवं हम सभी एक ही गाँव छोटीखाटू (राजस्थान) के निवासी हैं और वर्तमान में हम सभी कई वर्षों से कोलकाता में रह रहे हैं। इस तरह, मैं काकोजी को तब से जानता हूँ जब से मैं अपने आपको जानता हूँ और यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनकी छत्रछाया मेरे जन्म से लेकर आज तक निरंतर मिल रही है। आपका अक्सर हमारे घर पर आना होता है। मैं मेरी किशोरावस्था में उनकी और मेरे पिताजी की बातचीत/वार्तालाप सुनता था। उनकी चर्चाएँ अक्सर समाज, देश, धर्म, नैतिकता, हिंदुत्व, साहित्य, ज्ञान, देशभक्ति एवं ग्रामोत्थान जैसे सम-सामयिक विषयों पर हुआ करती थीं। मेरा पूरा परिवार उनके प्रति अगाध श्रद्धा रखता है। मेरी दिवंगत माताजी भी मुझे कई बार जुगल काकोजी के आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरणा देती थीं।

जितना मुझे याद है, मैं जुगल काकोजी के बारे में श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना के समय से ही उन्हें एक विराट व्यक्तित्व या यो कहें, उन्हें एक संस्था के रूप में जानता हूँ। उस जमाने में हमारे गांव में कोई पुस्तकालय नहीं था, इसीलिए उन्होंने एक पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना की जो की उस समय छोटीखाटू के बाजार में स्थित था। मैं भी अक्सर अखबार पत्रिकाएँ पढ़ने वहाँ जाता था। काकोजी के अथक प्रयासों से

वह पुस्तकालय आज एक बहुमंजिले भवन में चल रहा है एवम् राजस्थान में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। समय की गति के साथ मैं १९७७ ई. में चार्टर्ड एकाउन्टेंट बन गया एवम् उसी समय से मुझे इस पुस्तकालय की ऑडिट का जिम्मा सौंप दिया गया। आज मैं विगत ३५ वर्षों से लगातार इस पुस्तकालय का लेखा परीक्षक हूँ। यह मेरे लिए गौरव की बात है कि मैं इतने लम्बे समय से काकोजी द्वारा स्थापित संस्था से जुड़ा हुआ हूँ।

जुगल काकोजी केवल कोलकाता की ही नहीं वरन् हिन्दुस्थान की कई नामी गिरामी सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं अन्यान्य कई संस्थाओं से जुड़े होकर उनका सक्रिय नेतृत्व संभाल रहे हैं। श्री छोटीखाटू नागरिक परिषद के कार्यों में भी उनकी सक्रिय भूमिका रहती है।

अनेक वर्षों पूर्व उन्होंने मुझे समाजसेवा में उतारने के लिए श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की कार्यकारिणी समिति का सदस्य भी बनाया एवं और भी बहुत प्रयास किये, किन्तु मुझे खेद है कि मैं कुछ विशिष्ट परिस्थितियों की वजह से सामाजिक कार्य में ज्यादा समय नहीं दे सका। उनकी हमेशा यही प्रेरणा रहती है कि मैं कुछ ऐसा करूँ जिससे मेरे व्यक्तित्व का समग्र विकास हो और समाज को भी लाभ हो।

मैने हमेशा काकोजी को एक आदर्श रूप में देखा है एवं देखता रहूँगा। उनके वय के गौरवपूर्ण ७५ वर्ष पूर्ति के अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजित अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह पर मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ।

मेरी भगवान से प्रार्थना है कि जुगल काकोजी स्वस्थ जीवन लाभ करते हुए शतायु हों एवं उनका सान्निध्य, स्नेह, आशीर्वाद हमें अक्षुण्ण मिलता रहे।

जुगल काकोजी का जीवन दर्शन समग्रता का दर्शन है। मेरी हार्दिक मंगल कामनाएँ एवं प्रणाम। ●

सम्पर्क : भण्डारी बी. सी. एण्ड कं., १/१ए, बिप्लवी अनुकुल चन्द्र स्ट्रीट, ४ तल्ला, कोलकाता–७२
मोबाइल: ९८३१०४२४१०

पुस्तकों को समर्पित एक जीवन : श्री जैथलिया

✍ अंजू सिंह, पत्रकार

'खाली धड़ री कद हुवै, चेरै बिन्यां पिछाण,
मायड़ भासा रे बिन्यां क्यां रो राजस्थान।'

अमर कवि कन्हैयालाल सेठिया की उपरोक्त रचना उन्हीं की तरह अमर है और हर उस राजस्थानी की जुबां पर है जो राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलवाना चाहता है और अभी तक प्रयासरत है।

ऐसे ही दौर में 'एकला चलो रे' की तर्ज पर चलकर एक प्रवासी राजस्थानी जुगलकिशोर जैथलिया ने ऐसा काम कर दिखाया है जो राजस्थानी को संवैधानिक मान्यता जितना बड़ा तो नहीं, पर राजस्थानी भाषा को एक बड़ी पहचान दिलाने का काम अवश्य किया है। श्री जैथलिया वर्ष २००६ में नेशनल बुक ट्रस्ट की कार्यकारी समिति के सदस्य थे तब उन्होंने एक प्रस्ताव पारित करवाया और उसके बाद से ही नेशनल बुक ट्रस्ट ने राजस्थानी भाषा के साहित्य का प्रकाशन शुरु कर दिया। नेशनल बुक ट्रस्ट एक ऐसी सरकारी एजेंसी है जो हिन्दुस्तान भर की सभी भाषाओं के साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए, उस भाषा में साहित्य का प्रकाशन करती है। इन दोनों पहलुओं से देखें तो श्री जुगलकिशोर जैथलिया की यह एक महती उपलब्धि थी। इसी के बाद से राजस्थानी भाषा का साहित्य सरकारी विभागों, पुस्तकालयों और चुनिंदा बुक स्टॉलों पर मिलना शुरु हो गया।

श्री जैथलिया बातचीत के दौरान उस समय की यादों को ताजा कर बताते हैं '... दरअसल जब यह प्रस्ताव रखा गया तो यह बात उठी कि राजस्थानी भाषा को संवैधानिक दर्जा तो नहीं है। तो मैंने यह कहा कि भले ही संवैधानिक दर्जा नहीं है मगर साहित्य अकादमी से तो एक भाषा का दर्जा उसे प्राप्त है, बस यह कहना था और बात बन गयी।..' श्री जैथलिया इसे भले ही आसान सा काम कह दें मगर यह इतना आसान नहीं था।

राजस्थान के नागौर जिले के छोटे से गाँव छोटीखाटू में दो अक्टूबर १९३७ ई. को पिता कन्हैयालाल और माता पुष्पा देवी के यहाँ जन्मे श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने एम.कॉम., एलएल.बी. तक शिक्षा प्राप्त करके कोलकाता में आयकर सलाहकार के रूप में अपना कैरियर

शुरू किया। बाद में अपने स्वयं के आयकर सलाहकार व्यवसाय को परवान चढ़ा कर पैंसठ वर्ष की आयु में इसे अपने पुत्र गोविन्द और ममेरे भाई राजाराम बिहानी को सौंपकर वे आजकल सामाजिक कार्यों में पूर्णतः सक्रिय हैं।

प्रवासी राजस्थानियों में वे जितने मशहूर आयकर सलाहकार हैं, उतने ही मशहूर समाजसेवी भी हैं। समाज सेवा में विशेष रूप से साहित्य सेवा को उनका जीवन पूरी तरह समर्पित रहा है। शायद यही कारण है कि उन्हें जितने भी सम्मान मिले उनमें साहित्य से जुड़े सम्मान अपेक्षाकृत ज्यादा हैं। आप शारदा ज्ञानपीठ सम्मान (वर्ष २००१), भगवतीचरण वर्मा स्मृति सम्मान (वर्ष २००३), भामाशाह सेवा सम्मान (वर्ष २००४), राजश्री स्मृति न्यास सम्मान (वर्ष २००४), कुरजां सम्मान (वर्ष २००६), विष्णुकांत शास्त्री विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान (वर्ष २००८) एवं कर्मयोगी सम्मान (२०११) से सम्मानित होकर हमारे गाँव का गौरव बढ़ा रहे हैं।

साहित्य की सेवा के साथ ही श्री जुगलकिशोर जैथलिया स्वयं अच्छे साहित्यकार भी हैं। इस बात की पुष्टि अब तक उनके द्वारा संपादित विष्णुकांत शास्त्री-चुनी हुई रचनाएँ - दो खंड (वर्ष २००३) और कन्हैयालाल सेठिया समग्र चार खंड (वर्ष २००५-२००६) तथा उनके द्वारा सह-संपादित कालजयी सोहनलाल दुगड़ स्मृति ग्रंथ (वर्ष १९७९), तुलसीदास-चिंतन अनुचिंतन (वर्ष १९८०), बड़ाबाजार के कार्यकर्ता-स्मरण व अभिनंदन (वर्ष १९८२) व पत्रों के प्रकाश में कन्हैयालाल सेठिया (वर्ष १९८९) प्रभृति ग्रंथों से हो जाता है।

किसी पुस्तकालय के बिना साहित्य मानों बेघर सा होता है। शायद यही कारण है कि उन्होंने अपने गाँव में श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय एवं कोलकाता स्थित देश के तीन बड़े पुस्तकालयों यथा श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय व बड़ाबाजार लाइब्रेरी को सक्रिय सेवायें प्रदान कर साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं को उचित स्थान पर पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त किया।

श्री जैथलिया ने साहित्य सेवा के साथ-साथ समाजसेवा में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। राजस्थान परिषद्, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी और अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन जैसी संस्थाओं में महत्ती योगदान देकर यह साबित किया कि आप केवल साहित्य सेवा के लिए ही समर्पित नहीं है बल्कि समाजसेवा भी आपके लिए वैसी ही महती है।

राजस्थान परिषद के तत्वावधान में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की आवक्षमूर्ति

तथा २० फुट ऊँची चेतक पर सवार कांस्य प्रतिमा को प्रतिस्थापित करने में उनकी सक्रिय भूमिका की जितनी प्रशंसा कि जाये उतनी ही कम है। वे राजनीति के प्रति भी सचेतन हैं एवं पश्चिम बंगाल भाजपा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष है एवं सक्रिय रूप से योग्य मार्गदर्शन देते रहते हैं। सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी के भी आप उपाध्यक्ष है एवं कोलकाता में उनकी मूर्ति स्थापित करवाने में आपका योगदान भी स्मरणीय है।

मगर आपकी अब तक की जीवनी यही दर्शाती है कि आदमी को जीने के लिए कोई न कोई व्यवस्था तो करनी पड़ती ही है, जुगलकिशोर जैथलिया ने भी किया, मगर अपने जीवन का अधिकांश समय पुस्तकों को समर्पित कर दिया, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मेरा आपसे व्यक्तिगत परिचय बहुत बाद में आया जब मैं पुस्तकालय में पढ़ने हेतु जाया करती थी। किन्तु यह परिचय कोलकाता के श्री महावीर बजाज के कारण और अधिक पारिवारिक जैसा होता गया क्योंकि आप जब भी कोलकाता से छोटीखाटू आते थे तो मुझे साथ ले जाकर काकाजी के साथ बातचीत में शामिल करते रहते थे। इस घनिष्ठता के कारण मैंने पाया कि श्री जैथलिया, जिन्हें हम काकाजी के नाम से सम्बोधित करते हैं, जितने पुस्तक प्रेमी एवं समाजसेवी हैं उसके कहीं अधिक वे कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन का ख्याल रखते हैं। आप हर समय कार्यकर्ताओं की खोज-खबर लेते रहते हैं एवं सुख-दुख मे अपना मार्गदर्शन भी देते रहते हैं ताकि कहीं भी, किसी भी स्थिति में कार्यकर्ता हताश न हो। आप उसे समाज के कार्य हेतु निरन्तर प्रेरित भी करते रहते हैं। आपके इस व्यवहार के कारण कई बार विचारों से असहमत होने के बावजूद मैं कभी भी आपके आग्रह को टाल नहीं पाती हूँ बल्कि आज्ञा मानकर शिरोधार्य ही करती हूँ। पुस्तकालय एवं गाँव के प्रति उनकी जागरुकता को मैं उनकी सदाशयता ही मानती हूँ। भगवान से प्रार्थना है कि उन्हें स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन प्रदान करते हुए शतायु करें। ●

सम्पर्क : छोटीखाटू-३४१३०२ (राजस्थान), मो.: ०९००११५६२५

आदरणीय जुगलदा

✍ रिछपाल मेहता

मेरे मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत, पथ प्रदर्शक, आदर्श, आदरणीय जुगलदा से मेरा सम्पर्क १९६६ में, मैं जब कलकत्ता पढ़ने के लिये आया तब हुआ। तब मेरे पिताजी बिलमचंदजी मेहता हमारे पैतृक गाँव छोटीखाटु जिला नागौर राजस्थान में अध्यापक का कार्य करते थे। संयोग से जुगलदा उनके शिष्य थे। उन्होंने मुझे कलकत्ता जाने से पहले जुगलदा के बारे में जो भी बताया, मैंने उन्हें उस ३०-३१ वर्ष की युवा आयु में उससे कुछ ज्यादा ही पाया। मैंने कुछ दिन कॉलेज में पढ़ते हुए जुगलदा के आफिस में टाइप भी सीखी। उन्होंने ही मुझे बांगड़ बिल्डिंग में हरिकृष्णजी सारडा की राजकमल मेटल इन्डस्ट्रीज में काम दिलाया। जो उस समय कलकत्ता पढ़ने आने वाले राजस्थान प्रवासियों के लिये जीवन संजीवनी थी। वहीं से मैं संघकार्य के सम्पर्क में आया। कुछ समय कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट के संघ कार्यालय में भी रहने का सौभाग्य मिला। जुगलदा की प्रेरणा से संघ परिवार से ऐसा जुड़ा कि धुर तमिलनाडु के वेलोर शहर में संघ कार्य की शैशव अवस्था में भी हिम्मत नहीं हारी और संघ परिवार के कार्यों में पूर्ण लीन हो गया। कलकत्ता के बाद एवं वेल्लोर से पहले उत्तरप्रदेश के हाथरस शहर में इमरजेन्सी के दौरान भूमिगत रहकर संघकार्य भी जुगलदा की प्रेरणा से हुआ। कथनी एवं करनी में अन्तर न हो ऐसी प्रेरणा भी जुगलदा से ही मिली।

मेरे जीवन में अगर जुगलदा का सम्पर्क नहीं आता तो मैं कुछ भी नहीं बन पाता। ऐसी प्रेरणा हमारे गाँव के बहुत लोगों को जुगलदा से ही मिली। हमारे गाँव के विकास में भी जुगलदा का बहुत बड़ा योगदान है। भगवान उन्हें दीर्घायु बनाएं एवं हम जैसे लोगों पर सदैव उनकी कृपा दृष्टि बनी रहे ऐसी कामना है। ●

सम्पर्क : अम्बर इलेक्ट्रिकल कन्डक्टर्स, रंगापुरम्, वेलोर-६३२००९, मो.: ०९४४३८८७१६६

हमारे प्रेरणास्रोत : काकाजी

✍ विद्यासागर मंत्री

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि मृदुभाषी, कर्मनिष्ठ, जनहितैषी, सर्वप्रिय श्री जुगल किशोर जी जैथलिया (जिन्हें मैं काकाजी के नाम से पुकारता हूँ) के ७५ वें वर्ष पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है।

रोजगार के लिए राजस्थान से कोलकाता महानगर में लाखों लोग आए, लेकिन जिन चन्द लोगों ने रोजगार के साथ-साथ समाजहित के कार्यों को अपने जीवन का ध्येय बनाया, उनमें श्री जैथलिया का नाम पहली पंक्ति में है। उनकी प्रेरणा से आज समाज की बहुतेरी संस्थाएँ पुष्पित-पल्लवित हो रही हैं। यही नहीं, अनेक लोग उनकी प्रेरणा से आज सन्मार्ग पर चल रहे हैं।

जैथलियाजी से मेरा पारिवारिक सम्बन्ध रहा है। हम एक ही गाँव-छोटीखाटू के हैं। मेरे पिताजी स्व. मन्नालालजी से उनकी घनिष्ठ मित्रता थी। सन १९७४ में मैं चेंगड़ाबांधा (उ.बं.) से कोलकाता आया था। लक्ष्य था उच्च शिक्षा प्राप्त करना। चूँकि जैथलियाजी यहाँ वर्षों से थे, अत: कोलकाता आने के बाद मैंने इनसे भेंट की और आगे की शिक्षा के सम्बन्ध में मशविरा किया। उन्होंने मेरी बात को अपनायत-भाव से सुना और उमेशचंद्र कॉलेज में दाखिला कराने में मेरी मदद की। यही नहीं, शिक्षा के साथ-साथ मेरे रोजगार के लिए भी उन्होंने मार्ग प्रशस्त किया। उनकी इस प्रेरणा और मार्गदर्शन को मैं कभी नहीं भूल सकता।

जैथलियाजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रारम्भ से ही जुड़े रहे हैं। उनके जीवन पर संघ का प्रभाव सहज ही देखा जा सकता है। जैथलियाजी के साथ-साथ मैं भी संघ की शाखा में रुचि लेने लगा। धीरे-धीरे संघ के संस्कारों की प्रभावना मेरे जीवन को भी सुरभित करने लगी। कालान्तर में यह अभिरुचि मुझे राजनीति की ओर ले आई। आज सामान्य राजनैतिक स्तर चाहे जितना गिर गया हो, परन्तु जैथलियाजी के संसर्ग में आने वाले राजनैतिक कार्यकर्ताओं के जीवन में राजनीति का उद्देश्य सिर्फ और सिर्फ समाज तथा देश की सेवा करना रहा है। आपातकाल के दौर को कौन भूल सकता है? मैं उस वक्त युवक था। संघ ने कांग्रेस के तत्कालीन नेतृत्व

की तानाशाही के खिलाफ मोर्चा खोल रखा था। अटलबिहारी वाजपेयी, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, जुगलकिशोर जैथलिया सरीखे व्यक्तित्वों की प्रेरणा से कोलकाता में हजारों लोग मुखर हुए। मेरी सक्रियता भी काफी बढ़ चुकी थी। मैं राष्ट्रीय विचारधारा के पक्ष में अपने मानस को दृढ़ बना चुका था। कांग्रेसी तानाशाही के खिलाफ आवाज बुलन्द करने के कारण संघ के बहुतेरे कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। मैंने भी आन्दोलन किया और मुझे भी गिरफ्तार करके प्रेसीडेंसी जेल भेज दिया गया, जहाँ मुझे लगभग ३ महीने रखा गया।

जैथलियाजी मेरे काकाजी श्री सोहनलाल मंत्री के भी सहपाठी थे। दोनों परिवारों के बीच काफी निकट का सम्बन्ध रहा है। कालान्तर में मैंने जैथलियाजी के साहित्यिक रूझान को गंभीरता से महसूस किया। राजनीति के साथ-साथ वे कोलकाता महानगर की कतिपय विशिष्ट साहित्यिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। जन्मभूमि छोटीखाटू के साथ-साथ कर्मभूमि कोलकाता के हर विशिष्ट सामाजिक कार्यों में आपका योगदान सराहनीय रहा है। छोटीखाटू जैसे छोटे से गाँव में एक बड़े पुस्तकालय की स्थापना एवं संचालन के साथ-साथ कोलकाता के श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, राजस्थान परिषद् और अन्य अनेक संस्थाएँ आपकी प्रेरणा और मार्गदर्शन में अच्छा काम कर रही हैं।

राजस्थान परिषद के माध्यम से राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल कराने की बात हो या प्रवासी राजस्थानियों के हित का कोई और विषय हो, आप हमेशा तत्पर रहते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी का 'एकल काव्य-पाठ' कोलकाता में आयोजित कराने के पीछे भी आपके व्यक्तित्व का प्रभाव रहा, इसे कौन नहीं जानता। श्री कन्हैयालाल सेठिया के समग्र साहित्य का चार खण्डों में सम्पादन कर उसे प्रकाशित करने की पीछे भी आपकी सोच रही है। यह ऐसा अनूठा कार्य है, जिससे हर राजस्थानी को लाभ मिल रहा है। राजस्थानी और हिन्दी के साहित्यिक समाज में आज आपकी प्रतिष्ठा देखकर प्रसन्नता होती है। कुमारसभा पुस्तकालय और राजस्थान परिषद् से निकलने वाली दर्जनों स्मारिकाओं तथा विशेष प्रकाशनों का सम्पादन आपकी पैनी कलम से ही हुआ है।

वामपंथी शासन के दौरान कोलकाता महानगर में राष्ट्र-गौरव महाराणा प्रताप की विशाल काँस्य प्रतिमा की स्थापना में आपके योगदान को कौन भूल सकता है ? सामाजिक क्षेत्र में इतना सुनाम अर्जित करने के बाद भी आप हमेशा सहज रहते हैं। आपकी प्रेरणा से आज सैकड़ों कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं, जिनमें मैं भी एक हूँ। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि आपको हमेशा स्वस्थ और प्रसन्न रखें, ताकि समाज और राष्ट्र के लिए आप निरन्तर सक्रिय रहकर कार्य कर सकें। जीवेम शरदः शतम्। ●

सम्पर्क : ४२, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट, कोलकाता-७००००७, मो.: ९९०३५२२१५६

निष्काम कर्मयोगी भाईजी जुगलकिशोर जी

✍ देवदत्त शर्मा

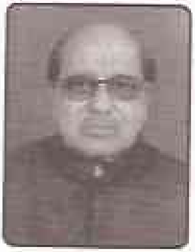

अपने जीवन चक्र में स्थापित किये कई कीर्तिमान,
इसीलिये तो लगा उनका सेवा कार्यों में भी ध्यान।
जन-जन के मन में चमकने वाले, एक नक्षत्र है उदीयमान,
अत: हम सभी आपको करते हैं नमन, हे तपोनिधान!

भारतीय परम्पराओं में अनेक प्रज्ञा विभूषित ऋषियों, महापुरुषों, विद्वानों, त्यागी, तपस्वियों का अवतरण हुआ है। जिन्होंने अपने कर्तव्य से संसार को अभिषिक्त किया जो सुख-दुख में, सम्पन्नता में एवं विकट परिस्थितियों में भी मंगलमय बन कर मंगल स्वरूप बन गये। जिन्होंने निस्वार्थ परमार्थ हेतु अपना सब कुछ त्याग दिया। उनका आदर्श जीवन युग-युगों तक प्रेरणास्रोत रहेगा। उसी श्रेणी में आदरणीय भाईजी जुगलकिशोर जी जैथलिया भी आते हैं जिन्होंने ६५ वर्षों के बाद अपना सम्पूर्ण जीवन समाज और भारत-माता की सेवा में लगा दिया और जीवन के ७५ बसन्त पूर्ण करके ७६ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। श्री जैथलिया जी के बारे मे सभी परिचित हैं। उनके बारे में लिखना, सूरज को दीपक दिखाना है।

मैं करीब १० वर्ष का था उस समय श्री गंगा गौशाला छोटीखाटू में संघ की शाखा लगती थी। मेरे पिताजी वहाँ पर मैनेजर थे, मैं भी स्कूल से छुट्टी होने के बाद शाम को वहाँ जाता था। वहाँ पर जो भी कार्यक्रम होते-खेल-खेलना, गीत गाना, राष्ट्रीय विचारों पर विचार विमर्श करना आदि। जब जैथलिया जी कलकत्ते से आते तो गाँव के प्रत्येक आदमी से उनका सम्पर्क रहता, बच्चा, जवान, बड़े-बूढ़े, माताओं-बहनों से भी। यदा कदा मैं भी शाखा में जाने लगा। एक बार गुरुदक्षिणा का उत्सव आया। उसके करीब एक महीने पहले सभी स्वयंसेवकों की बैठक ली गई, उसमें यही कहा गया कि जो कुछ भी घर से खर्चे के लिये मिलता है उसमे से कुछ बचा कर गुरुदक्षिणा करनी है। राशि का महत्व नहीं, भाव का, समर्पण व त्याग का महत्त्व है। उस समय किसने कितनी गुरुदक्षिणा की किसी को भी पता नहीं लगता। मैंने जो गुरुदक्षिणा की वह नहीं के बराबर थी। मुझे संकोच हो रहा था कि

भाईजी क्या कहेंगे ? लेकिन उन्होंने यही समझाया कि राशि बड़ी नहीं है, भाव बड़ा है। उस दिन से ही मैं संघ की शाखा में बराबर जाने लगा और जो कुछ भी आज हूँ, उनकी बदौलत हूँ।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना १९५८ ई. में उन्होंने अपने सहयोगी श्री रामनिवास सारडा, बालाप्रसाद जोशी व अन्य साथियों के साथ मिलकर एक बीज बोया जो आज एक वट वृक्ष के समान है व पुस्तकालय की जो आज कीर्ति है, वह भाईजी की बदौलत ही है।

श्री जैथलिया जी ने अपना सारा जीवन राष्ट्र, समाज, साहित्य-संस्कृति की सेवा के लिये समर्पित कर दिया और ये सब गुण उनको राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक के नाते प्राप्त हुये तथा वे जीवन पर्यन्त स्वयंसेवक बन कर ही रहने का ध्येय रखते हैं। करीब ९ वर्ष की उम्र में वे संघ के स्वयंसेवक बने। विद्वान का कहना है -

सेवा का पथ अति-अनन्त, इसका कभी होता नहीं अंत,
जो इस पथ पर चलता है, सच्चे अर्थों में वही है सन्त।
वह अपने लिये नहीं, लोक-मंगल के लिये जीता है,
वह सुधा बाँटता है युग को, पर स्वयं हलाहल पीता है।

श्री जैथलिया जी के जीवन के बारे में जितना लिखे उतना कम है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपको दीर्घायु व स्वस्थ रखे एवं आने वाली पीढ़ी के लिये आपका उत्तम जीवन प्रेरणामय बना रहे तथा शेष जीवन इसी प्रकार राष्ट्र-समाज और साहित्य सेवा में व्यतीत हो। श्री भाईजी के चरणों में शत्-शत् नमन करता हुआ आशा करता हूँ कि उनका आशीर्वाद हमेशा मुझे मिलता रहे व प्रगति पथ पर बढ़ता रहूँ। ●

सम्पर्क : १४३१, चाणक्य मार्ग, सुभाष चौक, जयपुर-३०२००२, मो.: ०९४१४२५१७३९

अमृत महोत्सव पर वन्दन ! अभिनन्दन !!

✍ कपूर चन्द सेठिया

आज से करीब ७५ वर्ष पूर्व सेवा एवं साहित्य जगत के एक भावी सितारे का उदय हुआ, जो अपने ज्ञान, नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक एवं धार्मिक दृष्टि से अपनी जन्म भूमि छोटीखाटू व कर्म भूमि कोलकाता के सर्वांगीण उन्नयन में योगदान के साथ अपने गाँव व देश का नाम रोशन कर रहे हैं। ऐसे श्रीमान् जुगल-किशोरजी जैथलिया एक कर्मयोगी समाज के सभी वर्गों की सर्वात्मना समर्पित होकर जनसेवा का कार्य करते आ रहे हैं।

आज खुशी की इस मधुर बेला एवं अमृत-महोत्सव के इस शुभ अवसर पर मैं अपने आप को सौभाग्यशाली महसूस कर रहा हूँ कि ऐसे महान व्यक्ति के बारे में मुझे भी कुछ लिखने का शुभ अवसर प्राप्त हो रहा है। हमेशा से ही आदरणीय एवं सम्माननीय व्यक्ति के रूप में इनकी छवि मेरे मन में बसी हुई है। हर मनुष्य जीवन में अच्छा कार्य करता है, सेवा करता है, गुरु की वाणी, आदर-सम्मान एवं उनका आशीर्वाद लेता है, जीवन खुशियों से भर जाता है। लेकिन जो व्यक्ति मानवता की सेवा एवं गाँव के प्रति प्रेमभाव रखे वह सदा सर्वोपरि है। ऐसे ही सेवाभावी हैं - हमारे श्रीमान् जैथलिया जी।

आज हर व्यक्ति को चिन्तन करना है कि हम परिवार, समाज एवं राष्ट्र को अपना कैसा योगदान दे रहे हैं। आज हम सब अपने लाभ के बारे में अवगत हैं। लेकिन हमारा भी कुछ दायित्व है, परिवार के प्रति, समाज के प्रति, अपने गाँव के प्रति व अपने देश के प्रति। लेकिन आज भोगवाद का नगारा इतनी जोर से बज रहा है कि मानव को दूसरी बातें दिखाई भी नहीं देता, सुनाई भी नहीं दे रही है। कहते हैं कि सत्ययुग की नेक नीति आज कलयुग में खण्डित हो गई है। लेकिन जैथलिया जी ने इन सब बातों से परे, उससे ऊपर उठ कर अपना जीवन समाज हित एवं राष्ट्रहित में लगा दिया है। जीवन के इस पड़ाव पर भी उनके मन मे सेवा की भावना, गाँव के प्रति प्रेम सदा सजग है। अपनी सकारात्मक सोच, साहित्यिक सोच, सच्चाई की सोच के साथ-साथ सच्ची लगन एवं पुरुषार्थ के साथ एक निश्चित दिशा में आगे बढ़ रहे हैं एवं गतिशील चरम से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर रहे हैं।

आप का काफी माननीय एवं वरिष्ठ व्यक्तियों का निकटतम संपर्क रहा है। अपने जीवन में हमेशा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के साथ-साथ काफी उच्च पदों पर भी आप कार्य कर चुके हैं। आपका व्यक्तित्व इतना प्रिय, वाणी में विनम्रता एवं माधुर्य झलकता है। दूसरों को मान-सम्मान एवं स्नेह देने की कला, कि कोई भी व्यक्ति हमेशा के लिए आपका हो जाए। आप में बौद्धिक एवं भावनात्मक गुणों को समावेश के साथ सच्ची बात को कहने की कला आपने अपने व्यवहार से कभी किसी का दिल भी नहीं दुखाया। ऐसे आदरणीय व्यक्ति को मेरा शत-शत् प्रणाम।

आपकी साहित्यिक रुचि बचपन से ही प्रकट थी। कविता एवं निबन्ध लेखन हेतु स्कूल एवं साहित्यिक संस्थाओं के द्वारा आप बचपन में भी कई बार पुरस्कृत एवं सम्मानित हो चुके हैं। अब तो आपने कई ग्रन्थ भी प्रकाशित एवं सम्पादित किए हैं। आपकी इसी रुचि से श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना एवं भवन निर्माण का कार्य सम्भव हो पाया जो आज पूरे प्रान्त में मशहूर है। अपनी इसी कौशलता से एक छोटे से गाँव की भूमि को साहित्यिक भूमि में परिवर्तित कर दी है। इस छोटे से गाँव छोटीखाटू में आपके सहयोग से बहुत ही बड़े, सुप्रसिद्ध साहित्यकारों एवं युगप्रधान व्यक्तियों का पदार्पण हुआ है। वह गाँव धन्य हो जाता है जिनकी पावन धरा पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में देश के आदरणीय एवं सम्माननीयगण - आदरणीया महादेवी वर्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, भवानीप्रसाद मित्र जैनेन्द्रप्रसाद जैन, कन्हैयालाल सेठिया, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, सुन्दर सिंह भण्डारी जैसे राज्यपाल, केंद्र एवं राज्य के अनेक मंत्रीगण एवं वरिष्ठ अधिकारी भी इस धरा पर पधारे हैं।

कहते हैं ज्ञानी व्यक्ति महान होते हैं लेकिन सेवा की भावना रखने वाला अति महान् कहलाता है। ज्ञान से ज्यादा सेवा भावी व्यक्ति का आदर होता है, सम्मान होता है, हर व्यक्ति के दिल में बस जाता है। वे ही महान व्यक्ति कहलाते हैं। ऐसे कर्मयोगी हैं श्रीमान् जैथलियाजी।

अत: दिल से हमेशा एक ही दुआ निकलती है कि आप जीओ हजारों साल, मानवता की सेवा के लिए, प्यार के लिए, नई पीढ़ी के मार्गदर्शन के लिए। आपकी सेवा, अपनापन और विनम्रता के आगे सब छोटे हैं, तुच्छ हैं। आपने समाज में जो लौ प्रज्वलित की है, वह हमेशा जगमगाती रहे क्योंकि उजालों की परिभाषा किताबों से नहीं मिलती, उसे पाने के लिए खुद दीपक बनकर जलना पड़ता है। आपका जीवन हमारे लिए ऐसा ही दीप स्तम्भ है। ●

सम्पर्क : इण्डिया मेटल्स इण्डस्ट्रीज, १६, सनकुराम्मा स्ट्रीट, चेन्नई-१, मो.: ०९८४११०७५४५४

मेरे सखा और सहयोगी जुगलजी : कुछ अंतरंग प्रसंग

✍ गोविन्द नारायण काकड़ा
एडवोकेट

जुगलजी से मेरा परिचय नौवीं कक्षा में अध्ययन के समय हुआ। इनके गाँव छोटीखाटू में उस समय हाई स्कूल नहीं होने के कारण वे डीडवाना में आगे की पढ़ाई हेतु बांगड़ हाई स्कूल में भर्ती हुए, मैं भी उस समय उसी विद्यालय में नौवीं कक्षा का ही छात्र था, यद्यपि हम दोनों के सेक्शन अलग-अलग थे। वे शुरू से ही पढ़ने में तेज थे, पूरी कक्षा में सदा प्रथम या द्वितीय आते थे, साथ ही भाषण कला में भी निपुण थे अत: विद्यालय के सभी कार्यक्रमों में अपनी वक्तृता से सभी को प्रभावित कर लेते थे। साहित्य में भी इनकी रुचि थी अत: स्थानीय पुस्तकालय की प्रतियोगिताओं में भी ये पुरस्कृत होते रहते थे। इस कारण विद्यालय के छात्रों में भी लोकप्रिय थे। मेरा भी परिचय एवं थोड़ा-बहुत सम्पर्क इसी नाते इनसे बना हुआ था।

हम दोनों ही दसवीं की परीक्षा देने सुजानगढ़ साथ-साथ गये जहाँ हमारा सेन्टर पड़ा था। दसवीं पासकर हम दोनों ही कलकत्ता चले आये क्योंकि इनके पिताजी एवं मेरे पिताजी दोनों ही कलकत्ता में कार्यरत थे। १९५३ ई. में हम दोनों ने संयोग से सिटी कॉलेज के प्रात:कालीन विभाग में प्रवेश लिया एवं एक ही सेक्शन में पढ़ते हुए १९५७ ई. में बी. काम. किया एवं फिर एक साथ एल-एल.बी. के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया एवं कलकत्ता उच्च न्यायालय में एक साथ ही एडवोकेट बने। इस पूरे कालखंड में हम क्रमश: एक दूसरे के निकट से निकटतर आते गए। हम दोनों ही पढ़ने के साथ-साथ आजीविका हेतु नौकरी भी करते थे। यह सब करते-करते मैंने प्राइवेट रूप से एम.काम. किया एवं अध्यापन कार्य में लग गया। जुगलजी ने भी मेरे कहने से एम.काम. की एवं वकालत की पढ़ाई के अन्तिम दिनों से ही वकालत करने की ठान ली थी अत: प्रारंभ में उन्होंने श्री सुखलाल गनेड़ीवाल एडवोकेट के सहायक रहकर काम सीखा एवं फिर स्वतन्त्र आयकर सलाहकार के रूप में बांगड़ बिल्डिंग में अपना आफिस खोलकर कार्य प्रारंभ कर दिया।

मैंने भी थोड़े दिनों के लिए वकालत प्रारंभ की पर उसमें मेरा मन नहीं रमा अतः मैंने अपनी अधिकांश फाइलें इन्हें सौंप दीं और इनकी राय से ही मैनेजर के रूप में एक मकान का कार्यभार सम्हाल लिया और इनसे सलाह लेने आता रहता था। जुगलजी अपनी प्रतिभा से वकील के रूप में यश प्राप्त करने लगे एवं साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं के अधिकारी के रूप में भी कई शाखाओं का नियमित कार्य देखने लगे। सामाजिक-साहित्यिक कार्यों में इनकी सदैव ही रुचि रहती थी एवं केवल धन कमाना कभी इनका लक्ष्य नहीं रहा। सच बात तो यह है कि कार्य एवं विचारों की स्वतन्त्रता के लिए ही इन्होंने वकालत का क्षेत्र चुना एवं बाँगड़ घराने की, जहाँ इनके पिताजी अच्छे ओहदे पर थे, अच्छी नौकरी का प्रलोभन इन्होंने ठुकरा दिया जिससे इनके पिताजी इनसे रुष्ट भी हुए। इस नाराजगी को समाप्त होने में लम्बा अरसा लगा, यह मैं जानता हूँ।

मैनेजर के रूप में मकान का कार्य सम्हालते समय मेरा सम्पर्क कार्पोरेशन के सभी विभागों से एवं अदालतों के कामकाज से भी आया। मैं वकील का चोंगा पहन कर भी यदा-कदा कोर्ट में जाने लगा एवं लोगों को सलाह भी देने लगा। १९६५ में कलकत्ता कार्पोरेशन के चुनाव की घोषणा हुई तो जुगलजी ने मुझे कार्पोरेशन का चुनाव लड़ने के लिए उत्साहित किया और जनसंघ के अधिकारियों से मेरे नाम की सिफारिश कर टिकट भी दिलवा दिया। चुनाव तो हारना ही था पर मेरा अनुभव एवं प्रतिष्ठा बढ़ी। आगे मैंने सांगठनिक दायित्व भी सम्हाले पर पारिवारिक झंझटों के कारण मैं लम्बे समय तक सक्रिय नहीं रह पाया। इस स्थिति में भी जुगलजी ने मेरा सम्पर्क बहुत सी सामाजिक संस्थाओं से बना दिया जहाँ मैं विभिन्न दायित्वों में रहकर आज भी निष्ठापूर्वक कार्य करता हूँ। उन संस्थाओं में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, राजस्थान परिषद, सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी आदि प्रमुख हैं। इसका सारा श्रेय मेरे मित्र को ही है। मुझे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम से भी इन्होंने ही जोड़ा और एक संस्कारित जीवन जीने की ललक पैदा की जिसने मुझे अनेक दुर्गुणों से बचाया।

१९७५ ई. में देश में आपातकाल की घोषणा हो गई। संघ पर प्रतिबन्ध लग गया। सभा संस्थायें भी मौन धारण को विवश हो गई। जुगलजी उस समय भी संघ के अधिकारी थे। वे सत्याग्रह कर जेल तो नहीं गए पर बाहर की गतिविधियों में सक्रिय थे। जून १९७६ में हल्दीघाटी की चतुःशती को केन्द्र बनाकर उन्होंने कुमारसभा के मंच से वीर रस का राष्ट्रीय स्तर का कवि सम्मेलन बुलाया जिसमें श्यामनारायण पाण्डेय, मणि मधुकर जैसे कई ओजस्वी कवियों ने भाग लिया। संचालन आचार्य विष्णुकांतजी शास्त्री कर रहे थे। कवि सम्मेलन में आपातकाल की धज्जियाँ उड़ाई गई, लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। दूसरे दिन विस्तार से खबरें समाचार पत्रों में छपी एवं पुस्तकालय के मंत्री के नाते जुगलजी, अध्यक्ष के नाते नन्दलालजी जैन, एवं अन्य सहयोगी के रूप में पतंजलि शर्मा पर वारंट निकले, मुकदमे चले,

कुछ गिरफ्तारियाँ भी हुई एवं मामला आपात स्थिति समाप्त होने पर ही निरस्त हुआ। इस बीच सभी निर्णय करने का अधिकार विश्वासपूर्वक जुगलजी ने मुझे दिया था। वे मुझे 'गुरु' कहते थे एवं मेरा निर्णय ही अन्तिम मानने का सभी को आदेश था। इसके पश्चात् तो हम एक दूसरे के और भी निकट आगए।

मेरा परिवार प्रारंभ में बहुत आर्थिक संकट में था। जुगलजी ने ही समय-समय पर मेरा सही मार्गदर्शन करके मुझे लौकिक व्यवहार सिखाया जिससे मैं आर्थिक संकट से मुक्त होकर निकल सका। उधर जुगलजी का पारिवारिक परिवेश बीमारियों के कारण सदैव ही कष्टप्रद रहा। इनके पिताजी, बच्चे, पत्नी अनेक कठिन रोगों से ग्रसित रहे। मैं सदा इनका सहयोगी बना रहकर इनके साथ खड़ा रहा। इससे हमारी परस्पर की मैत्री एवं भरोसा सुदृढ़ बना जो आज भी वैसा ही कायम है।

मुझे ऐसा मित्र प्राप्त होने का गर्व है। जीवन की अनेक उपलब्धियाँ इन्हीं के कारण हुई है। इनके सान्निध्य से ही मैं बड़े-बड़े राजनेता, समाजसेवी एवं विद्वानों के सम्पर्क में आया। आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री से भी अन्तरंगता इनके कारण ही बनी एवं मैं भी लखनऊ के राजभवन में एक अतिथि के रूप में गया।

इन्हीं ने मेरा सम्पर्क प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री महावीरजी नारसरिया व विद्वान श्री कृष्णस्वरूप जी दीक्षित से कराया जिनसे भी मैंने बहुत कुछ सीखा है। इन्होंने कई कार्यकर्ताओं का निर्माण किया है। इन्होंने सुप्रसिद्ध कवि श्री कन्हैयालाल जी सेठिया के सम्पूर्ण साहित्य का सम्पादन व प्रकाशन भी कराया है। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जी की भी चुनी हुई रचनाओं का सम्पादन एवं अनेक अन्य ग्रन्थों का सह-सम्पादन किया है।

इन्हीं के कारण आज श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ऊँचाइयों को छू रहा है व समाज में इस संस्था का नाम बना है। इन्होंने अपने गाँव छोटीखाटू में भी 'श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय' की स्थापना की व इसको भी ऊँचाई के मार्ग पर ले गये। इस पुस्तकालय में इन्होंने हिन्दी साहित्य की कई विभूतियों को बुलाकर गाँव के लोगों में इस पुस्तकालय के माध्यम से साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाई है।

ये मेरे परम साथी, दुःख-सुख में सदा साथ देने वाले रहे हैं। दिशा-निर्देश भी करते रहे हैं। इनका मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव रहा है। इनके अमृत महोत्सव पर मैं अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ। प्रभु इन्हें और भी आगे बढ़ायें। ●

सम्पर्क : ३७, विप्लवी रासबिहारी बसु रोड, २ तल्ला, कोलकाता-१
दूरभाष : २५५४-३५२० (नि.) मो.-९८३६८ ६२२७५

साहित्य एवं समाज सेवा के पुरोधा जुगलजी

✍ गोपालकृष्ण जासू

मुझे जब से यह सूचना मिली कि मेरे आदरणीय जुगलदा (जिन्हें मैं आदर से दादा कहकर संबोधित करता हूँ) का अमृत महोत्सव श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा मनाया जा रहा है, मेरे आनन्द की कोई सीमा नहीं रही। जुगलदा से मेरा परिचय आज से चार दशक पूर्व १९७३ ई. में हुआ जब मैं कलकत्ता आया ही था। उस समय मेरे बड़े भाई साहब स्व. शिवरतनजी जासू जिन्हें मैं आदर से बाबा कहकर पुकारता था एवं जुगलदा ने मिलकर कुमारसभा को पुनः व्यस्थित करने का बीड़ा उठाया था और इस निमित्त वे रोज सांयकाल हमारे दफ्तर ४० स्ट्राण्ड रोड में मिलते थे और वहीं से अर्थसंग्रह हेतु लोकसंपर्क के लिए साथ निकलते थे। हमारे दफ्तर के ऊपर ही आयकर का कार्यालय भी था अतः जुगलजी को भी प्रायः रोज वहाँ आयकर वकील के नाते आना पड़ता था। हमारे कार्यालय में बैठकर समाज के विभिन्न मसलों पर सामाजिक चर्चा भी होती थी। मुझे भी उसका लाभ मिलता था।

कुमारसभा पुस्तकालय की, जो एक समय अपनी साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधियों के कारण अग्रणी संस्थाओं में था, स्थिति आर्थिक दृष्टि से बहुत नाजुक हो चली थी। कर्मचारियों का वेतन भी समय से नहीं दिया जा सकता था। जुगलजी उस समय सेठ सूरजमल जालान पुस्ताकाल में मंत्री थे। अपने गाँव में भी १९५८ ई. से ही आप एक अच्छे पुस्तकालय का संचालन करते थे। आदरणीय राधाकृष्णजी नेवटिया जो एक स्वतन्त्रता सेनानी एवं वरिष्ठ समाजसेवी थे। इसके संस्थापक थे। वे जालान पुस्तकालय की कमेटी में भी वरिष्ठ सदस्य थे। जुगलजी की कार्यक्षमता से वे बहुत प्रभावित थे अतः उन्होंने जुगलजी से कहा कि वे कुमारसभा की ओर भी थोड़ा ध्यान दें क्योंकि वह भी एक शुद्ध सार्वजनिक संस्था है और अभी कठिनाई में है। जुगलजी ने कहा कि वे दो संस्थाओं का दायित्व एक साथ नहीं ले सकते अतः जालान पुस्तकालय का दायित्व किसी अन्य व्यक्ति को दे दिया जाए तो वे कुमारसभा पुस्तकालय का दायित्व ले सकते हैं। कालान्तर में यही व्यवस्था की गई एवं जुगलजी ने कुमारसभा के मंत्री पद का दायित्व सम्हाला। जुगलजी ने अपने साथ सहमंत्री के रूप में बाबा यानि मेरे बड़े भाई

को एवं सहयोगी के रूप में सुप्रसिद्ध जवाहिर प्रेस के मालिक श्री नन्दलालजी जैन को साथ लिया। यह १९७३ ई. की बात है। १९७५ ई. में श्री नन्दलालजी को अध्यक्ष बनाया गया।

आर्थिक अवस्था को पटरी पर लाने के लिए १९७५ में शिवाजी राज्यारोहण त्रिशताब्दी स्मारिका, १९७६ में हल्दीघाटी चतु:शती स्मारिका, १९७७ में वन्देमातरम्, १९७८ में सूरपंचशती एवं हीरक जयन्ती स्मारिका का लगातार प्रकाशन कर विज्ञापनों के माध्यम से पर्याप्त धन तो जुटाया ही, इन विचारपूर्ण प्रकाशनों के माध्यम से पुस्तकालय की समाज में पुनः प्रतिष्ठा भी बनी। स्मारिकायें सन्दर्भ ग्रन्थ जैसी ही होती थी और इनके लोकार्पण हेतु अनेकानेक अखिल भारतीय स्तर के विद्वान बुलाये जाते थे। इनके सम्पादन में जुगलजी की कड़ी मेहनत रहती थी इस कारण धीरे-धीरे इनका नाम साहित्य जगत में विख्यात होता गया। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की भी सब कार्यक्रमों में सहभागिता रहने के कारण सारे कार्यक्रमों को गरिमा प्राप्त होती थी।

१९७६ ई. में हल्दीघाटी चतु:शती के अवसर पर आयोजित वीर रस कवि सम्मेलन ने जिसमें श्यामनारायण पाण्डेय एवं मणिमधुकर जैसे सशक्त कवि पधारे थे, आपातकाल की धज्जियाँ उखेड़ कर रख दी। इस कवि सम्मेलन को आज भी लोग याद करते हैं। इसके बाद दादा को सरकारी कोप का शिकार होना पड़ा। जवाहिर प्रेस को ताला लगा दिया गया, नन्दलालजी को जेल जाना पड़ा पर कुमारसभा लोगों के मन-मस्तिष्क में पुनः उभर कर आ गई। साहित्य जगत में दादा की काफी प्रतिष्ठा बढ़ी। दादा साहित्यिक कार्य के अलावा विश्वहिन्दू परिषद् एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य से भी धनीभूत रूप से जुड़े हुए हैं, साथ ही आयकर के वकील के रूप में भी लोकप्रिय हैं। कितने काम एक साथ कर लेने भी अद्भुत क्षमता आपमें है।

आज श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय का अच्छा बड़ा कार्यालय एवम् कोष भी है, संस्था परिचालन का एक सुदृढ़ उदाहरण है। जिसमें आज प्रतिवर्ष श्री हेडगेवार प्रज्ञा पुरस्कार एवम् विवेकानंद सेवा पुरस्कार द्वारा भिन्न-भिन्न विभूतियों का सम्मान किया जाता है।

मुझे एक महत्वपूर्ण घटना स्मरण हो रही है जिसका मैं आज भी जहाँ रहता हूँ वहाँ अपनी मित्र-मण्डली में उदाहरण देता रहता हूँ। श्री दादा के बड़े सुपुत्र गोपाल का लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। इस समाचार से ही हम सभी सन्न रह गये। मगर दादा निर्लेप बनकर इसे पी गए। इस दुःख में शामिल होने को सैलाब उमड़ा-मगर दादा सामान्य भाव से सबसे मिलते रहे। मुझे याद है एक सायंकाल जब मैं आज्ञा लेकर निकल रहा था, दादा मेरे साथ-साथ बरामदे तक आए, अचानक एक हाथ मेरे कन्धे पर रखा मैंने महसूस किया कि दादा ने जोर से मेरा कन्धा दबाया एवम् दो आँसू की बून्दें मेरे चेहरे पर पड़ी। मैंने मुड़ कर देखा, दादा

फिर सामान्य थे एवम् बारह दिन के बाद पुन: अपनी समाजसेवा में लग गये। यह मई १९८२ की घटना है। १९८२ के प्रारंभ में बंगाल में विधानसभा निर्वाचनों की भी घोषणा हुई। दादा को आदेश हुआ था कि आपको विधानसभा चुनाव लड़ना है। एक कर्तव्यनिष्ठ सैनिक की तरह ऐसी दु:ख दाई घटना के कुछ महीनों बाद ही दादा ने भारी मन से विधानसभा का चुनाव भी लड़ा। इसी के बाद उनका राजनीति में सीधा प्रवेश हुआ। उन्होंने पार्टी में कोषाध्यक्ष का महत्वपूर्ण दायित्व सम्हाला एवं आज वे प्रान्त के उपाध्यक्ष हैं।

बड़े पुत्र गोपाल की दुर्घटना का आघात भाभीश्री झेल नहीं पाई। धीरे-धीरे वे कर्करोग से जकड़ गई एवम् उन्होंने भी जनवरी १९८७ में दादा का साथ छोड़ दिया। इनी सभी मार्मिक घटनाओं का आघात झेलते-झलते दादा और अधिक समाजकार्यों में जुट गये और ६५ वर्ष की उम्र में फलते-फूलते आयकर सलाहकार के व्यवसाय को अपने परिवारजनों को सौंपकर क्रमश: समाजसेवा एवं साहित्य सेवा से अधिकाधिक जुड़ते चले गये। कालान्तर में इन्होंने महाकवि श्री कन्हैयालाल सेठिया की समस्त रचनाओं का चार खंडों में सम्पादन कर राजस्थान परिषद से प्रकाशित कराया जो बहुत बड़ा कार्य था। इन्होंने विष्णुकान्त शास्त्री की चुनी हुई रचनायें का भी सम्पादन कर दो खंडों में कुमारसभा के तत्त्वावधान में प्रकाशित कराई। बंगाल के अलावा अपने गाँव में इनके द्वारा स्थापित पुस्तकालय पूरे इलाके में अपने महत्व रखता है। विविध क्षेत्रों में यथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, राजस्थान परिषद एवं मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी जैसी संस्थाओं से भी आप सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

राजस्थान परिषद् के तत्वावधान में कोलकाता में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की २० फुट ऊंची कांस्य मूर्ति लगाने में अग्रणी श्रेय जुगलदा को ही है। इसके साथ-साथ प्रताप की स्मृति में एक बड़े पार्क एवं सड़क का नाम परिवर्तन करने जैसे कार्य भी इनकी योजकता का प्रमाण है। इन्होंने अपने व्यवहार से सर्वत्र अच्छे कार्यकर्त्ताओं को जुटाकर रखा है, इसी कारण बड़े से बड़ा कार्य भी सफलता से कर लेते हैं। कुमारसभा आपके अमृत महोत्सव को धूम-धाम से मना रहा है, यह बहुत आनन्द का विषय है। आज इस अमृत महोत्सव की पावन बेला में मेरे स्व. बाबा शिवरतनजी जासू भी उपस्थित रहते तो सोने में सुगन्ध होती। मैं तो दादा का पुत्र समान हूँ अत: प्रभु चरणों में इस शुभ अवसर पर यही प्रार्थना करूँगा कि सही अर्थों में इस साहित्य महर्षि समाजसेवी को दीर्घायु प्रदान करें - सदैव स्वस्थ्य रखें। ●

सम्पर्क : तिरुपति डॉइ केम, १८/३२९ इचलकरणजी इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, साहू पुतला रोड, साहूनगर, इचलकरणजी-४१६११५ (महाराष्ट्र), मो. ०९४२२४१९९३९

जुगलजी : एक बहुआयामी व्यक्तित्व

✍ परशुराम वर्मा
शिशु शिक्षा विशेषज्ञ
संस्थापक सदस्य, श्री डीडवाना बालमन्दिर

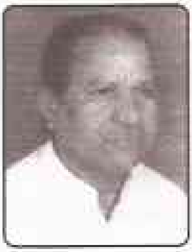

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि कर्मयोगी जुगलकिशोर जैथलिया अमृत-महोत्सव अभिनन्दन समारोह आगामी २ अक्टूबर २०१२ को श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कोलकाता द्वारा मनाया जा रहा है। इस आयोजन के शुभ अवसर पर एक अभिनंदन-ग्रन्थ का प्रकाशन भी होने जा रहा है। इस शुभ संकल्प के लिये मैं अभिनन्दन समारोह समिति एवं अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रकाशन समिति से जुड़े हुये सभी कार्यकर्ताओं के प्रति आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने एक सच्चे कर्मयोगी के सम्मान का बीड़ा उठाया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यकर्ता होने के नाते मैं गत ५५-५६ वर्षों से आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से भलीभाँति परिचित हूँ। आपका जीवन बहुआयामी रहा है। सन् १९५०-५२ में जैथलिया जी डीडवाना में अध्ययनरत थे। संघ के अच्छे स्वयंसेवक हैं। मैं संघ की एक शाखा का मुख्य शिक्षक होने के नाते प्रारम्भिक सम्पर्क हमारा बना। सन् १९५६ में छोटीखाटू में संघ-नैपुण्य वर्ग लेने हेतु मुझे भेजा गया। उस समय छोटीखाटू में संघ कार्य प्रसिद्धि पर था। सात दिन का यह वर्ग आनन्दमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्री जैथलिया जी भी इस वर्ग में भाग ले रहे थे। अतः मेरा उनसे घनिष्ठ आत्मीय सम्बन्ध बना। मैं कई वर्षों तक छोटीखाटू संघ कार्य हेतु प्रवास में जाता रहा और जैथलिया जी का सहयोग मुझे निरन्तर मिलता रहा। उस समय की कार्यकर्त्ताओं की टीम में बड़ा उत्साह, लगन एवं परिश्रम की क्षमता थी। छोटीखाटू के विकास के लिये सभी प्रयत्नशील थे। नेपुण्य वर्ग के फलस्वरूप समाज सेवा का बीज अधिक अंकुरित हुआ। उसीका परिणाम था कि उस टीम द्वारा सामाजिक कार्यों के साथ-साथ हिन्दी साहित्य में अभिरुचि बढ़ी। श्री जैथलिया जी अच्छे लेखक, वक्ता, कवि होने के कारण उन्होंने अपने जन्म स्थान छोटीखाटू में श्री बालाप्रसादजी जोशी एवं अन्य कार्यकर्त्ताओं को साथ लेकर १९५८ में श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के नाम से सार्वजनिक

पुस्तकालय की स्थापना की। कालान्तर में उसका विशाल भवन भी बनवाया। पुस्तकों एवं समाचार पत्र-पत्रिकाओं की क्रमशः संख्या बढ़ी। सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह रहा कि तबसे लेकर आज तक देश के उच्चकोटि के साहित्यकार, लेखक, कवि, विचारक, मनीषियों को छोटीखाटू जैसे छोटे से गाँव में लाकर साहित्य की गंगा बहा दी। जैथलिया जी के प्रयास से श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय, श्री डीडवाना हिन्दी पुस्तकालय एवं पं. बच्छराज व्यास शिक्षण संस्थान में साहित्यिक-समारोहों के विशाल कार्यक्रमों का आयोजन होता आ रहा है इस निमित्त मेरा आपसे घनिष्ठ आत्मीय सम्बन्ध बढ़ता ही गया।

मैंने देखा कि हँस मुख चेहरा, लोकेषणा एवं अहंकार से दूर आपका धवल राष्ट्रीय चरित्र प्रत्येक कार्यकर्ता को आकर्षित कर लेता है। आप व्यवहार कुशल एवं कुशल-संगठक होने के नाते सब कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलते हैं। इस कुशल नेतृत्व के कारण आज अनेक कार्यकर्ताओं का आपके द्वारा निर्माण हुआ। वे सभी कार्यकर्ता देश के विभिन्न क्षेत्रों में समाज सेवा से जुड़े हुए हैं। आपकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं है। आपका निष्कपट व्यवहार सबको कार्य करने की प्रेरणा देता है। आप एक कुशल राजनीतिज्ञ भी है। जनसंघ एवं भारतीय जनता पार्टी का कार्य पं. बंगाल जैसे वामपन्थियों के गढ़ में आपने फैलाया है मानो कण्टकाकीर्ण मार्ग में आपने फूल उगाये हों। आप सादा जीवन, उच्च विचार के धनी हैं। आप स्पष्ट वक्ता एवं कुशल लेखक तथा साहित्यकार हैं जिसके कारण सन् २००१ में 'शारदा ज्ञानपीठ' डीडवाना द्वारा आपको शारदा ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मेरा सौभाग्य था कि मैं भी उसमें उपस्थित था। आप शुद्ध राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक, वीर-व्रती हैं। परहित आतुरता आप में कूट-कूट कर भरी है।

मैं जैथलियाजी के अमृत-महोत्सव समारोह एवं समारोह पर प्रकाशित होने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन पर अपनी शुभकामना भेज रहा हूँ और परमपिता परमेश्वर से उनके शतायु होने की प्रार्थना करता हूँ। ●

सम्पर्क : शान्ति सदन, गौड़ भवन के पास, गणपति नगर, डीडवाना (राज.)
दूरभाष - ८१०७७३३२८३

हम सबके प्रेरणा स्रोत श्री जैथलियाजी

✍ रामावतार सराफ

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हम सबके प्रेरणा स्रोत श्री जुगलकिशोर जैथलियाजी का श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से अमृत महोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

श्री जैथलियाजी वरिष्ठ साहित्यकार, लेखक, सम्पादक, राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक, अनुशासनप्रिय, सादा जीवन उच्च विचार के धनी, कोलकाता एवं छोटीखाटू में अनेक सामाजिक संस्थाओं के संस्थापक एवं सफल संचालन करने वाले कुशल संगठक, अनुशासनप्रिय जीवन एवं समय की पाबन्दी, हँसमुख स्वभाव एवं प्रखर वक्ता, कुशल मार्गदर्शक, भारतमाता के गुणानुवाद एवं उसके गौरव को अक्षुण्ण बनाने हेतु तत्पर रहनेवाले सबके आदरणीय एवं प्रिय हैं। आप अपनी मिलनसारिता एवं व्यवहार कुशलता से शीघ्र ही हर किसी को अपना बना लेते हैं एवं अपने हाथ में ली हुई योजनाओं को शीघ्रता से पूर्ण कर लेते हैं।

डीडवाना नगर से आपका अटूट नाता रहा है। कार्य की दृष्टि से आप डीडवाना व छोटीखाटू में भेद नहीं करते। आपका मार्गदर्शन हमें सदैव प्रेरणा एवं ऊर्जा देता रहता है।

डीडवाना नगर से पं. बच्छराज व्यास आदर्श विद्या मंदिर में स्व. भंवरलाल मल्लावत स्मृति व्याख्यान माला का प्रारम्भ आपकी प्रेरणा व सहयोग तथा श्री अरुण प्रकाशजी मल्लावत की सक्रियता से सम्पन्न हो रहा है, जिससे राष्ट्रीय स्तर की विभूतियों का मार्गदर्शन व उद्बोधन नगर के संभ्रांत लोगों को सुनने को मिल रहा है जिनमें आचार्य विष्णुकान्ताजी शास्त्री, डॉ. महेशजी शर्मा, डॉ. नरेन्द्र कोहली, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, श्री तरुण विजय, श्री मोहनरावजी भागवत, श्री इन्द्रेशजी, श्री मदनदासजी देवी, डॉ. हरीन्द्रजी श्रीवास्तव, श्री सुरेशजी (भैयाजी) जोशी, पू. संवित् सोमगिरिजी प्रमुख हैं। यह क्रम निरन्तर पिछले १२ वर्षों से चल रहा है। आयोजन के छः माह पहले से ही आप इसकी चिन्ता व योजना कर लेते हैं तथा निरंतर इस सम्बन्ध में स्थानीय कार्यकर्ताओं से विचार-विमर्श करते रहते हैं। विद्यालय की उन्नति

में भी आपका निरन्तर सहयोग व मार्गदर्शन मिलता रहता है। विद्यालय की समस्या समाधान व विकास हेतु आप सदैव तत्पर रहते हैं।

कोलकाता से जब भी आप पधारतें हैं तो एक दिन अवश्य डीडवाना पधारकर डीडवाना नगर के सभी कार्यकर्ताओं से मिलजुल कर जाते हैं एवं साथ में बैठकर उनके साथ विचार मंथन एवं मार्गदर्शन करते हुए उनकी शंकाओं एवं समस्याओं का समाधान करते हैं। चर्चा में मुख्य विषय समाज व देश की वर्तमान समस्याएँ व चुनौतियाँ, संघ कार्य, संगठन की कार्यवृद्धि कैसे हो, राजनैतिक हलचल एवं साहित्यिक विषय ही प्रमुख रहते हैं। आप से मिलकर, चर्चा कर सभी मार्गदर्शन प्राप्त कर कार्य करने हेतु प्रेरित होते हैं।

आपने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कार्यों द्वारा साहित्यिक जगत तथा समाज व राष्ट्र को अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया है। आप न केवल मार्गदर्शन करते हैं अपितु स्वयं प्रत्यक्ष लगकर कार्य सम्पन्न करवाते हैं। आपका व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व सदैव समाज को प्रेरणा प्रदान करेगा जिससे अनेक कर्मशील एवं राष्ट्रभक्तों का निर्माण होगा।

श्री जैथलिया के अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन के अवसर पर मैं अपने भाव-सुमन अर्पित कर आपके दीर्घायु व सुखमय जीवन की प्रभु से प्रार्थना करता हूँ तथा साथ ही कामना करता हूँ कि आने वाली पीढ़ी आपसे प्रेरणा लेकर समाज व राष्ट्रहित में अपना जीवन संवारें जिससे देश व समाज के समक्ष उपस्थित विषम परिस्थितियों से निपटने में नई पीढ़ी सक्षम हो सके। ●

सम्पर्क : राजेन्द्र ऑफसेट प्रिंटर्स, पोस्ट-डीडवाना-३४१३०३ (राज.), मो.: ०९८२९०-५९५२६

कार्यकर्त्ताओं के प्रेरक श्री जैथलिया जी

✍ बिरदीचन्द तोसनीवाल

यह जानकर अतीव हर्ष हुआ कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय श्री जैथलियाजी के ७५ वर्ष पूर्ति पर अभिनन्दन समारोह आयोजित कर रहा है। हमारे कस्बे के पास ही छोटीखाटू जैसे गाँव में वहाँ के हिन्दी पुस्तकालय में देश के मूर्धन्य साहित्यकारों एवं विद्वानों के प्रति वर्ष खाटू आने की जब भी खबर पढ़ते तब इस ग्रामीण अंचल के पुस्तकालय के संस्थापक व प्रणेता श्री जैथलिया जी जैसे साहित्यसेवी, विचारक, चिंतक और समाजसेवी के प्रति मन में अपार श्रद्धा उमड़ती है कि काश ! ऐसा व्यक्तित्व हमारे यहाँ भी होता। हम लोगों ने श्री जैथलिया जी से सम्पर्क कर निवेदन किया कि इन महान विद्वानों का थोड़ा सानिध्य हमें भी प्राप्त हो सके तो अच्छा हो। इस प्रकार करीब दस बारह वर्ष पहले हमारा सम्पर्क श्री जैथलिया जी से हुआ। उन्होंने हमारी बात सुनी एवं आशा भी पूरी की। जैसा मैंने देखा, समझा व जाना इसके मुताबिक एक अद्‌भुत और विलक्षण व्यक्तित्व के धनी कर्मयोगी श्री जैथलियाजी में पारस जैसी क्षमता है जो सम्पर्क में आने पर लोहे को भी सोना बना सकती है। हमारी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत का परिचय देकर हमें अपना कर्त्तव्य बोध कराने तथा मानव जीवन के ऋणों से मुक्त होकर जीवन लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता करते हैं। कार्यकर्ता में राष्ट्रभक्ति, त्याग, समर्पण एवं सेवाभाव की जागृति से कर्त्तव्य शक्ति का विकास हो और संयम-सन्तुलन तथा धैर्य जीवन का आधार बने, यही इनका ध्येय है।

मुझ जैसे सामान्य से कार्यकर्ता पर हाथ रखकर जो प्यार दिया इसी के परिणाम स्वरूप हमारे कस्बे डेगाना में युग की महान विभूतियों यथा सुन्दरसिंहजी भण्डारी, विष्णुकांतजी शास्त्री का आशीर्वाद मिला। महान विद्वानों, विचारकों यथा श्री मोहनराव जी भागवत, भैयाजी जोशी, डॉ. मुरली मनोहरजी जोशी, श्री इन्द्रेश जी, श्री सुदर्शन जी के अलावा कई महान साहित्यकारों महाकवि गुलाब खण्डेलवाल, डॉ. नरेन्द्र कोहली जैसों का मार्गदर्शन हमें भी मिला और श्री तरुण विजय जी जैसे ख्यातनाम पत्रकार का उद्‌बोधन तथा डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव द्वारा स्वातंत्र्य

वीर सावरकर विषय पर दिया गया उद्‌बोधन नगर के प्रबुद्ध लोगों में राष्ट्र प्रेम का अद्‌भुत ज्वार पैदा कर गया।

राजनीति में स्वार्थ से ऊपर उठकर 'व्यक्ति निष्ठा' के बजाय 'संगठन निष्ठा' का पाठ भी हमने श्री जैथलिया जी से सीखा। इनके राजनीतिज्ञों से अच्छे सम्पर्क की वजह से कई जन कल्याणकारी व नगर विकास के कार्यों का मार्ग प्रशस्त हुआ। डेगाना में ट्रेनों के ठहराव में इनके योगदान को जनता हमेशा याद करती है।

ईश्वर इन्हें दीर्घायु करें ताकि हमें निरंतर इनका सानिध्य, आशीर्वाद और मार्गदर्शन मिलता रहे। अमृत महोत्सव पर हमारी हार्दिक शुभकामनायें। ●

सम्पर्क : तोसनीवाल क्लॉथ सेन्टर, पो.: डेगाना-३४१५०३ (राजस्थान), मो. ०९४१४५८६२२२

लोकसंग्रही और दृढ़ निश्चयी हैं जुगलजी

✍ गजानन्द राठी

वैसे तो किसी भी आत्मीय के संबंध में लिखना बहुत दुष्कर होता है फिर भी श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने अमृत-महोत्सव के बहाने एक अवसर दिया है अतः मैं लिख रहा हूँ। श्री जुगलकिशोर जैथलिया एक सशक्त, कर्मठ, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं सेवा-भावी कार्यकर्त्ता हैं। अपनी लगन, निष्ठा, और संकल्पों के बल पर उन्होंने अपनी उपलब्धियों की जिन उपत्यकाओं का सृजन किया है, व्यक्ति विकास के उज्ज्वल प्रतिमान हैं। विचारों में हिम-शिखर सी ऊँचाई एवं दृढ़ता, चिन्तन में सागर सी गहराई, व्यवहार में चन्द्रमा की सी शीतलता एवं कार्य निष्पादन में सूर्य की सी ऊर्जा के सम्मिश्रण से जिस व्यक्ति का निर्माण हुआ है, वे हैं श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

वैसे तो हमारे पारिवारिक संबंध मेरी समझ आने से पूर्व के हैं परंतु निकटता सन् १९९३ से रही है। उसी साल पुस्तकालय द्वारा श्री अन्ना हजारे को सम्मानित किया गया था और जुगलजी के सुपुत्र गोविन्द का विवाह भी उसी साल में हुआ था तब से मैं उनके काफी निकट रहा हूँ। उस समय उनके द्वारा दी गई दृष्टि एवं दिशा आज भी मुझे उपकृत कर रही है। उनकी विशेषता है लोगों को साथ लेकर चलना, अतः जो इनसे एक बार मिल लिया इनका होकर रह गया।

कहते हैं सेवा तो रत्नों की ढेरी है, जुगलजी इसे निरन्तर समेट रहे हैं। अपने निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वे सत्याभिव्यक्ति का साहस रखते हैं चाहे सामने कितना भी बड़ा आदमी क्यों न हो। वे कहते हैं कि शान ठीक से दौड़ने में है, मात्र जीतने में नहीं।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय केवल एक पुस्तकालय एवं वाचनालय ही नहीं, एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु चलने वाली क्रांति है और पुस्तकालय को इस रूप में लाने का काफी कुछ श्रेय श्री जुगलजी को ही है। आज पूरे देश-प्रदेश में पुस्तकालय का नाम अनजाना नहीं रहा। उनके अनुसार विचारों की दिशा ठीक होने से समाज, देश, घर, काल की दशा बदल जाती है।

अन्त में उतार-चढ़ाव भरे मेरे जीवन-चक्र में आपने पिता की भूमिका निभाई, गुरु की तरह मार्गदर्शन दिया और बड़े भ्राता की तरह स्नेह दिया, एक भरोसा दिया, आत्म विश्वास दिया। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे ऐसे ही देश, समाज को सही दिशा देते रहें एवं सेवा, जो रत्नों की ढेरी है, बटोरते रहें।

मैं कृतज्ञ हूँ आपको संरक्षक के रूप में पाकर। अमृत-महोत्सव पर मैं आपके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ। आप स्वस्थ रहें, मुझ पर सदा आपका आशीर्वाद बना रहे। ●

सम्पर्क : ५४१ए, रवीन्द्र सरणी, कोलकाता-७०० ००३, मोबाइल : ०९३३०९३७७७५

स्मृति के झरोखे से

✍ रमेश चन्द्र जैन

समय के पंखों पर सवार होकर स्मृति ५० वर्ष पूर्व पहुँच जाती है जब मैं कक्षा १० का विद्यार्थी था एवं जुगलदा से प्रथम परिचय हुआ था। उनका चेम्बर हमारे प्रतिष्ठान के समीप ही था, अत: घनिष्ठता बढ़ती गई। किशोरवय की अल्हड़तावश मैं उनसे तर्क-वितर्क में उलझने का प्रयास करता था, पर वे धैर्यपूर्वक समझाते थे। प्रख्यात समाजसेवी एवं श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के यशस्वी संस्थापक राधाकृष्णजी नेवटिया एवं माननीय भंवरलालजी मल्लावत के आग्रह पर जब जुगलदा ने कुमारसभा का मंत्रीपद सँभाला, तब मेरे पिताजी नन्दलालजी जैन को उन्होंने कुमारसभा का अध्यक्ष बनाया। अपनी कर्मठता एवं संगठन कौशल से जुगलदा ने अल्पकाल में कुमारसभा का कायाकल्प कर दिया और श्रद्धेय नेवटियाजी की आकांक्षाओं के अनुरूप इसे एक श्रेष्ठ पुस्तकालय के साथ-साथ महानगर की हिन्दी भाषी जनता के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों का अन्यतम केंद्र भी बना दिया।

आपातकाल के समय कुमारसभा ने साहसपूर्वक हल्दीघाटी चतु:शती का आयोजन किया जिसके कवि सम्मेलन में मणि मधुकर की इन पंक्तियों - *'एक औरत बेसुरी क्या हो गई, हर कोई क्यों बेसुरा गाने लगा।'* ने कुमारसभा के कार्यकर्त्ताओं पर सरकारी शासन का कहर बरपा दिया। पिताजी को मीसा में बंदी बना लिया गया एवं हमारे प्रेस पर ताला जड़ दिया गया। जुगलदा को दीर्घ समय तक अज्ञातवास करना पड़ा। मुझे भी डेढ़ माह तक भूमिगत रहना पड़ा। माह भर उपरान्त पिताजी को जमानत पर मुक्ति मिली पर प्रेस डेढ़ वर्ष बाद जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद ही खुल पाया।

तत्पश्चात् 'सूर पंचशती' का आयोजन कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा किया गया पर पश्चिम बंगाल में ६ माह तक प्रेस का चक्का हड़ताल से जाम रहा। इस अवसर पर ग्रंथ प्रकाशन के लिए जुगलदा के निर्देश पर मैं, प्रोफेसर जगन्नाथजी एवं मृत्युंजयजी उपाध्याय के साथ एक माह तक बनारस में ही रहे एवं ग्रन्थ को छपाकर साथ लाए। जुगलदा का कहना था कि जो काम तय कर लिया है, उसे यथाशक्ति पूरा करना ही चाहिए। कालांतर में जुगलदा के

पैतृक स्थान श्री छोटीखाटू में आयोजित समारोह में वैद्य गुरुदत्तजी के आगमन पर पिताजी एवं माताजी भी वहाँ उनके आग्रह पर गए थे।

'बाँगड़ बिल्डिंग' जहाँ मेरी प्रेस है एवं जुगलदा का भी कार्यालय है, की समस्याओं के समाधान में जुगलदा ने सदैव सक्रिय सहयोग दिया। आमसभा में उनके इस उद्‌बोधन - 'अपना हाथ ही जगन्नाथ है'- ने हम सब कार्यकर्त्ताओं के लिए संजीवनी का कार्य किया। फिर चाहे भवन को गुंडागर्दी की दहशत से मुक्त कराना हो, सुप्रीम कोर्ट तक केस लड़ कर बिजली की सप्लाई लाना हो, भूगर्भ में जलाशयों का निर्माण हो, सुरक्षा या मरम्मत अथवा साफ-सफाई सम्बंधित जरूरी मसला हो - हम सब ने मिल जुल कर सक्रिय सहयोग से हल कर लिया।

मेरी धर्मपत्नी सुधा को भी सामाजिक कार्यों में प्रवृत्त करने के लिए उन्होंने प्रेरित किया जिससे उसे एक व्यापक धरातल पर अपनी प्रतिभा का विकास करने का अवसर मिला। आज वह मारवाड़ी बालिका विद्यालय की सेक्रेटरी के रूप में बहुत वर्षों से काम देख रही है एवं मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रबन्धन में भी सक्रिय है। पूज्य पिताजी के निधन के उपरान्त जुगलदा हमारे परिवार के लिए हर संकट की घड़ी में अभिभावक सिद्ध हुए हैं। हमारी हार्दिक कामना है कि वे शतायु हों एवं हम सब पर उनका वरदहस्त बना रहे। ●

सम्पर्क : जवाहिर प्रेस, १६१/१, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-७, मो.: ९००७६९०४६४

खण्ड-३

चित्रावली

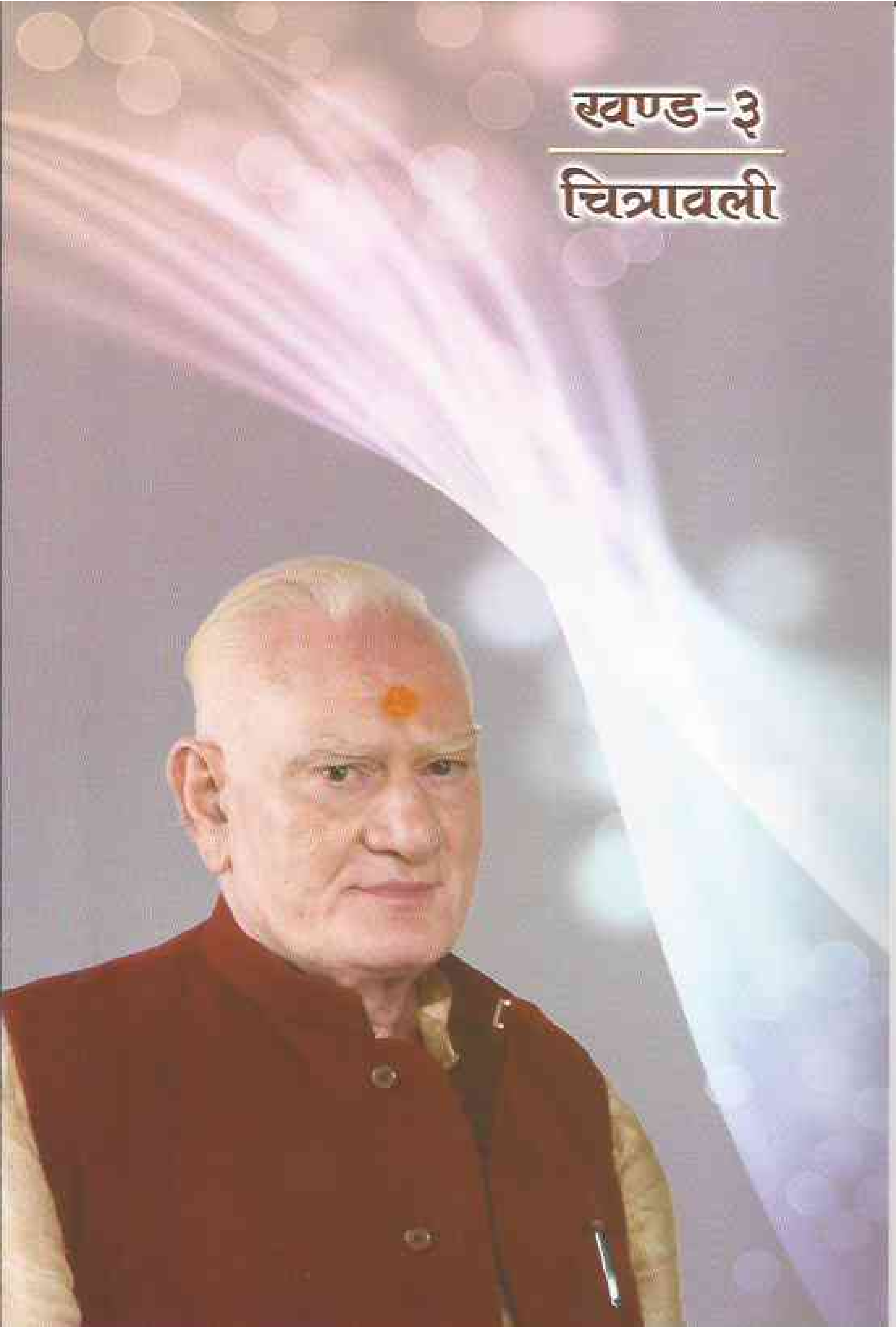

मार्गदर्शक

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री
(१९२९ – २००५ ई.)

श्री राधाकृष्ण नेवटिया
(१९०१ – १९९१ ई.)

श्री भंवरलाल मल्लावत
(१९२९ – १९७८ ई.)

परिवार

दादाजी श्री रामधनजी

पिताजी श्री कन्हैयालालजी

माताश्री पुष्पादेवी

परिवार

धर्मपत्नी मैना देवी (१९३१-१९८७ ई.) : उम्र के विभिन्न पड़ावों पर

परिवार

प्रथम पुत्र गोपाल एवं पत्नी मैना देवी के साथ

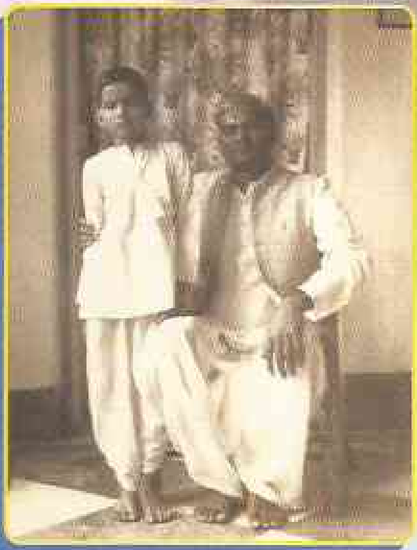

ज्येष्ठ पुत्र स्व. गोपाल के साथ

गोपाल के हाथों कुमारसभा पुस्तकालय की बालवर्ष की स्मारिका का लोकार्पण कराते हुए साहित्यकार डॉ. हरिकृष्ण देवसरे। मध्य में बैठे हैं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री।

परिवार

विद्यालय जीवन में छोटीखाटू की पहाड़ी पर

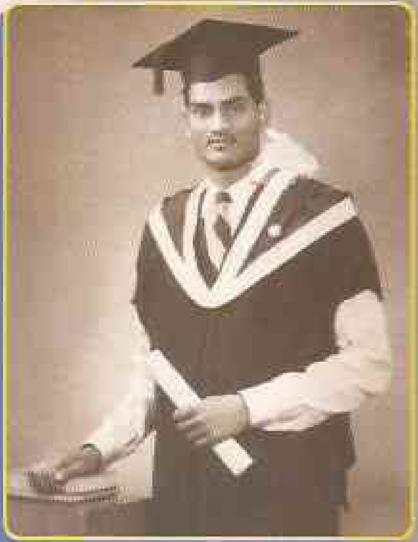

एल-एल.बी. की डिग्री प्राप्ति पर

कॉलेज जीवन में कोलकाता में

परिवार

अपने सीनियर एडवोकेट श्री सुखलालजी गरेड़ीवाल के साथ।

अपने कार्यालय में कार्यरत

सहपाठियों एवं मित्रों के साथ। (बाएं से) सर्वश्री जैथलिया, सत्यनारायण होसानी, दामोदर प्रसाद खेतानी, दामोदर दलाल एवं सत्यनारायण सिंघी।

परिवार

गोविन्द (पुत्र)
एवं
निशा (पुत्रवधू)

छोटीखाटू में नवनिर्मित गृह प्रवेश हेतु मंगलकलश लेकर जाते हुए श्रीमती निशा एवं गोविन्द। साथ में दिखाई दे रहे हैं जुगलजी एवं पुत्री सुमित्रा हेडा।

प्रज्ञा (पौत्री)

स्नेश (पौत्र)

कीर्ति (पौत्री)

परिवार

बड़ी पुत्री सीता
एवं
दामाद दामोदर प्रसादजी गढ़ी
(नई दिल्ली)

मंझली पुत्री सुमित्रा
एवं
दामाद शिवनारायणजी लढा
(कोलकाता)

छोटी पुत्री कौशल्या
एवं
दामाद मुरली मनोहरजी पांडक
(कोलकाता)

परिवार

बड़ी बहन यशोदा एवं जीजाजी रामकिशनजी मंत्री

छोटी बहन कमला एवं कंवर साहब श्री चांदमलजी राठी

परिवार

पौत्र जन्म पर सोने की चेन पहनाती हुई माताश्री पुष्पा देवी। बीच में पुत्र गोविन्द बैठा है।

बड़े भ्राता श्री बिरदी चन्दजी (सुपुत्र स्व. लक्ष्मी नारायण जी) सहधर्मिणी श्रीमती सोनी देवी के साथ।

भ्राताश्री बिरदीचन्दजी एवं भाभी सोनी देवी अपने परिवार के साथ। गोद में है पौत्री युविका। (बाएँ से खड़े हुए) दीपक (पौत्र), राजकुमार रामदेव एवं रामपाल (पुत्र), सरोज, उषा एवं मधु (पुत्रवधु)। (सामने की पंक्ति में) अभिषेक, निकिता, आशीष, सोनू एवं पूजा (पौत्र-पौत्रियाँ)।

परिवार

श्री मालचन्दजी बिहानी
(बड़े मामा)
एवं
श्रीमती [illegible] देवी
(बड़ी मामी)

बाएं से परिलक्षित हैं श्रीमती आशा देवी (छोटी मामी), श्री सूरजमल जी बिहानी (छोटे मामा), ममेरा भाई राजाराम बिहानी (एडवोकेट) एवं श्रीमती सुशीला बिहानी।

पुत्री कौशल्या के विवाह के अवसर पर अपने अंतरंग मित्र एवं सम्बन्धी श्री भागीरथजी चांडक के साथ।

छोटीखाटू में नवनिर्मित गृह प्रवेश के अवसर पर परिवारजन

(बाएँ से) साहजी सत्यनारायणजी भैया, निशा, गोविन्द, प्रज्ञा, जुगलजी एवं
उनके अनन्य मित्र बालाप्रसादजी जोशी एवं कपूरचन्द बेताला। सामने हैं कीर्ति एवं महेश।

सम्मान एवं पुरस्कार

२६ अक्टूबर २००१ ई. (विजय दशमी) को डीडवाना में शारदा ज्ञानपीठ सम्मान का मानपत्र प्रदान करते हुए
सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिन्तक, वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार श्री नेमिचन्द्र 'भावुक'। अन्य उपस्थित हैं (बाएं से)
सर्वश्री नटवर पारीक (संयोजक), रमेश पारीक, वरिष्ठ साहित्यकार गुलाब खंडेलवाल,
शिक्षाविद् आनन्द प्रकाश त्रिपाठी एवं प्रेमसिंह चौधरी।

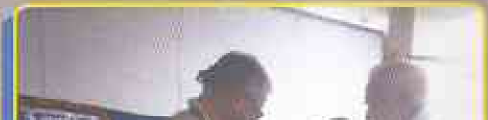

१७ अगस्त २००३ ई. को
रोटरी क्लब, उन्नाव द्वारा
भगवती चरण वर्मा स्मृति सम्मान
का प्रतीक चिन्ह एवं मानपत्र
भेंट करते हुए उत्तरप्रदेश के
तत्कालीन राज्यपाल
आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री।

सम्मान एवं पुरस्कार

२००४ ई. को भामाशाह स्मारक समिति, कोलकाता के **भामाशाह सेवा सम्मान** का स्मृति चिह्न श्री जैथलिया को प्रदान करते हुए तत्कालीन केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री सत्यव्रत मुखर्जी। बाईं ओर परिलक्षित हैं श्री पुरुषोत्तमदास हलवासिया एवं दाहिने हैं श्री अरुण प्रकाश मल्लावत।

९ जनवरी २००५ ई. को राजश्री स्मृति न्यास कोलकाता के **राजश्री गौरव सम्मान** से आचार्य कल्याणमल लोढ़ा ने श्री जैथलिया को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। मंचस्थ हैं (बाएं से) महाकवि गुलाब खंडेलवाल, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, आचार्य कल्याणमल लोढ़ा, जुगलकिशोर जैथलिया एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी।

सम्मान एवं पुरस्कार

३ अप्रैल २००७ ई. को राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद, जमशेदपुर की ओर से श्री जुगलकिशोर जैथलिया को **कुरजां सम्मान** का प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित करते हुए श्री अरुण भालोटिया।
साथ में हैं डॉ. मनोहरलाल गोयल एवं अन्य पदाधिकारी।

८ नवम्बर २००८ ई. को इटावा हिन्दी सेवा निधि के **विष्णुकान्त शास्त्री विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान** से श्री जैथलिया को सम्मानित करते हुए छत्तीसगढ़ के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री एस.एल. नरसिम्हन। साथ में हैं सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री विकास श्रीधर सिरपुरकर, इलाहाबाद उच्च-न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री गोखले एवं संस्था के सचिव श्री प्रदीप गुप्त।

सम्मान एवं पुरस्कार

३ जनवरी २०१० ई. को अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच, कोलकाता शाखा द्वारा रजत जयंती के अवसर पर श्री जैथलिया को समाज सेवा सम्मान का प्रतीक चिह्न प्रदान करते हुए संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रमोद सराफ। पार्श्व में खड़े है अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा।

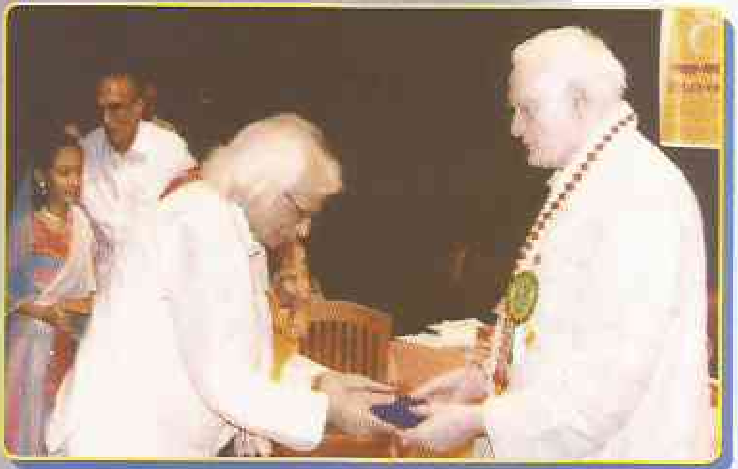

११ सितम्बर २०११ ई. को विचारमंच, कोलकाता द्वारा प्रवर्तित **कर्मयोगी सम्मान-२०११** का मानपत्र, ताम्रफलक एवं इक्कीस हजार रुपये का चेक श्री जैथलिया को प्रदान करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र। पास में खड़े हैं संस्था के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री सरदारमल जी कांकरिया।

सम्मान एवं पुरस्कार

१५ अक्टूबर २०११ ई. को सामाजिक समरसता मंच, पिलानी की ओर से श्री जैथलिया का अभिनन्दन कर भगवान शिव का चित्र एवं स्व. भूरसिंह की स्मृति पुस्तिका भेंट करते हुए मंच अध्यक्ष सुप्रसिद्ध मूर्तिकार श्री मातूराम वर्मा (दाएँ) एवं समारोह अध्यक्ष कविवर श्री नागराज शर्मा (बाएँ)।

२९ जुलाई २०१२ ई. को राम-शरद कोठारी स्मृति संघ, कोलकाता के एक आयोजन में ७५ वर्ष पूर्ति के उपलक्ष्य में श्री जैथलिया का शॉल ओढ़ाकर सम्मान करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री प्रवीण भाई तोगड़िया। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) पं. श्रीकान्त शर्मा 'बालव्यास', आचार्य योगेश शास्त्री, श्री अशोक पारीक, श्री रमेन्द्रलाल बंद्योपाध्याय एवं कोठारी बन्धुओं की वीर माता सुमित्रा देवी कोठारी।

स्वागत एवं अभिनन्दन

६५वें वर्ष पूर्ति पर श्री जैथलिया के घर आकर उनका अभिनन्दन करते हुए कुमारसभा के पूर्व अध्यक्ष शिवरतन जासू एवं शान्तिलाल जैन।

महाकवि श्री गुलाब खंडेलवाल अपनी भक्ति गीतों की पुस्तक 'दिया सबको जो तुझ से पाया' श्री जैथलिया को उनके अभिनन्दन समारोह में आशीर्वाद स्वरूप भेंट करते हुए।

'राष्ट्रधर्म' लखनऊ की ओर से आयोजित कार्यक्रम में श्री जैथलिया का स्वागत करते हुए लखनऊ के महापौर डॉ. दिनेश शर्मा। साथ में हैं (बाएं से) 'राष्ट्रधर्म' के सम्पादक श्री आनन्द मिश्र 'अभय', प्रबन्धक श्री पवन पुत्र 'बादल' एवं प्रख्यात चिन्तक व लेखक श्री देवेन्द्र स्वरूप।

सीकर नागरिक परिषद, कोलकाता के एक समारोह में श्री जैथलिया का स्वागत करते हुए श्री केशव कुमार सोमानी। श्रीमती राधा सोमानी भी परिलक्षित हैं।

स्वागत एवं अभिनन्दन

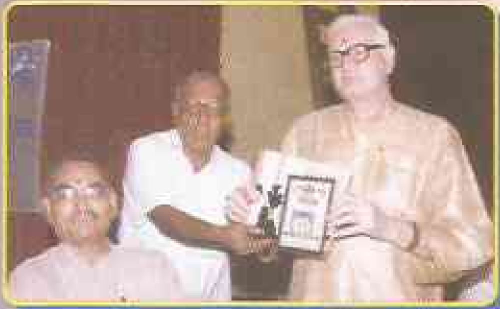

सरदार पटेल जन्म जयन्ती पर सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी के महासचिव श्री हीरजी भाई भावसर स्मृति चिन्ह भेंट कर श्री जैथलिया का स्वागत करते हुए। सी.टी.सी.लिमिटेड के चेयरमेन श्री शान्तिलाल जैन पास में बैठे हैं।

२ जनवरी २००० ई. को डेगाना के नागरिकों द्वारा तत्कालीन केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री तपन सिकदर एवं श्री जैथलिया का सार्वजनिक अभिनन्दन का एक दृश्य जिसके प्रमुख आयोजक थे भाजपा नेता श्री बिरदीचंद तोसनीवाल।

नेहरू बाल उच्चमाध्यमिक विद्यालय, छोटीखाटू के प्रांगण में विद्यालय की ओर से आयोजित सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह में श्री जैथलिया को प्रतीक चिह्न प्रदान कर अभिनन्दन करते हुए विद्यालय के प्रधान श्री शेराराम चौधरी, श्री कपूर चन्द बेताला एवं श्री सरदार चंद आरोवाल। साथ में परिलक्षित हैं श्री ओंकारमल पंडेल एवं श्री सूरजनारायण शर्मा।

श्री जुगलकिशोर जैथलिया का स्वागत करते हुए पूर्वांचल कल्याण आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री विश्वनाथ नारसरिया।

ग्रन्थ लोकार्पण

श्री जैथलिया द्वारा सम्पादित- 'विष्णुकान्त शास्त्री : चुनी हुई रचनाएँ' खंड-१ एवं खंड-२ का लोकार्पण करते हुए वरिष्ठ भाजपा नेता श्रीमती सुषमा स्वराज। मंच में परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री सत्यव्रत मुखर्जी, आचार्य शास्त्री एवं प्रो० कल्याणमल लोढ़ा। पीछे परिलक्षित हैं महावीर बजाज।

श्री जैथलिया द्वारा सम्पादित 'फिर से बनी अयोध्या संधीरा' का लोकार्पण करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के श्री अशोक सिंहल। अन्य मंचस्थ हैं जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्दजी एवं श्री तारानन्द ब्रह्मचारी प्रभृति।

श्री जैथलिया द्वारा सम्पादित श्री कन्हैयालाल सेठिया की राजस्थानी रचनाओं के 'समग्र' का लोकार्पण श्री सेठिया के ८७वें जन्म दिन (११.०९.२००५) पर सम्पन्न हुआ। मंचासीन हैं (बाएं से) सर्वश्री जैथलिया, शार्दूलसिंह जैन, सरदारमल कांकरिया, विरवम्भर नेवर, नन्दलाल शाह, गीतेश शर्मा एवं अरुण प्रकाश मल्लावत। **राजस्थानी भाषा का प्रथम समग्र होने का इसे गौरव प्राप्त है।**

ग्रन्थ लोकार्पण

श्री जैथलिया द्वारा सम्पादित कन्हैयालाल सेठिया समग्र हिन्दी-१ का ३० मार्च २००६ को लोकार्पण करते हुए राजस्थान भाजपा के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. महेशचन्द्र शर्मा। साथ में मंच पर परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री अरुण प्रकाश मल्लावत, शार्दूलसिंह जैन, राजस्थान पत्रिका के संचालक गुलाब कोठारी, मोहनलाल तुलस्यान, विश्वम्भर नेवर, फैयाज अहमद खान एवं ग्रन्थ सम्पादक श्री जैथलिया।

३० मई २००६ को कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी-२) ग्रन्थ के लोकार्पण हेतु पूर्व राज्यपाल प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद को भेंट करते हुए सम्पादक श्री जैथलिया। मंच पर (बाएँ से) उपस्थित हैं सर्वश्री अरुण प्रकाश मल्लावत, डॉ. वासुदेव पोद्दार, श्यामसुन्दर आचार्य, प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, मदन दिलावर(पूर्व मंत्री, राज.), दिनेश बजाज एवं शार्दूलसिंह जैन। पीछे परिलक्षित हैं सह-सम्पादक महावीर बजाज।

कन्हैयालाल सेठिया समग्र-४ (अनुवाद खंड) के लोकार्पण समारोह (२२.०९.२००५) के अवसर पर प्रज्ञा भारती डॉ. वासुदेव पोद्दार को लोकार्पण हेतु ग्रन्थ भेंट करते हुए सम्पादक श्री जैथलिया एवं सहसम्पादक श्री महावीर बजाज। मंच पर परिलक्षित हैं डॉ. अरुण प्रकाश अग्रवाल, डॉ. पोद्दार, शार्दूलसिंह जैन एवं अन्य।

ग्रन्थ लोकार्पण

राजस्थान परिषद के अध्यक्ष श्री शार्दूलसिंह जैन के कौस्तुभ जयन्ती समारोह पर श्री जैथलिया द्वारा सम्पादित 'अभिनन्दन ग्रन्थ' का लोकार्पण करते हुए राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री श्री गुलाब चन्द कटारिया (बाएं से पाँचवे)। अन्य परिलक्षित हैं सर्वश्री रूपलाल सुराणा (जैन), बंशीधर शर्मा, शान्तिलाल जैन, जुगलकिशोर जैथलिया एवं स्वामी मृगानन्दजी।

कन्हैयालाल सेठिया समग्र का राजस्थानी खंड श्री सेठिया को उनके ८६वें जन्मदिन (११ सितम्बर २००५ ई.) पर समर्पित करते हुए श्री जैथलिया। साथ में हैं सर्वश्री अरुण प्रकाश मल्लावत, शार्दूलसिंह जैन एवं परशुराम मूंधड़ा।

असम के तत्कालीन राज्यपाल श्री शिवचरण माथुर को कन्हैयालाल सेठिया समग्र का राजस्थानी खंड समर्पित करते हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया (नवम्बर २००९)। साथ में हैं श्री सेठिया के सुपुत्र श्री जयप्रकाश सेठिया।

कुमारसभा पुस्तकालय : डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

१९९० ई. के प्रथम डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान को संबोधित करते हुए श्री जैथलिया। मंच पर हैं (बाएँ से) आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, प्रो. राजेन्द्र सिंह, डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर (सम्मानित), राधाकृष्ण नेवटिया, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, विमल लाठ एवं महावीर बजाज प्रभृति।

वर्ष १९९२ ई. के 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' से प्रखर चिंतक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी को सम्मानित करते हुए पं. गौरीनाथ शास्त्री। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री शिवरतन जासू, आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, जुगलकिशोर जैथलिया एवं डॉ. सुजित धर।

१९९३ ई. के प्रज्ञा सम्मान से श्री कर्पूरचन्द कुलिश को सम्मानित करते हुए डॉ. मुरली मनोहर जोशी (बाएँ) एवं श्री एम.वी. कामथ (ताम्रपत्र देते हुए)। अन्य परिलक्षित हैं सर्वश्री महावीर प्रसाद बजाज, जुगलकिशोर जैथलिया, नृसिंह जोशी, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री एवं विमल लाठ।

कुमारसभा पुस्तकालय : डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

१९९५ ई. के प्रज्ञा सम्मान से हिन्दू हृदय सम्राट श्री अशोक सिंहल को समादृत करते हुए रा. स्व. संघ के तत्कालीन सरकार्यवाह श्री हो.वे. शेषाद्रि। परिलक्षित हैं (बाएं से) कालीदास बसु, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. सुजित धर एवं आचार्य विष्णुकांत शास्त्री।

कर्मयोगी मोरोपंत पिंगले को वर्ष १९९७ ई. का सम्मान राष्ट्र नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी के हाथों प्रदान करने के पूर्व उनकी आरती उतारती भाजपा महिला मोर्चे की प्रधान श्रीमती गौरी बनर्जी। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री लालकृष्ण आडवाणी, जुगलकिशोर जैथलिया, मोरोपंत पिंगले एवं डॉ. सुजीत धर।

श्री के.आर.मलकानी को वर्ष १९९९ ई. के प्रज्ञा सम्मान से विभूषित किया गया। मंच पर परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री डॉ. सुजित धर, मलकानी जी, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, सुदर्शनजी, महावीर बजाज, श्रीमती मलकानी, जुगलकिशोर जैथलिया, श्रीमती सुधा जैन, आ. विष्णुकान्त शास्त्री, सूरजभानजी एवं डॉ. मुरली मनोहर जोशी प्रभृति।

कुमारसभा पुस्तकालय : डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

प्रख्यात कथाकार श्री नरेन्द्र कोहली को २००० ई. का प्रज्ञा सम्मान प्रदान किये जाने हेतु आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। अन्य मंचस्थ हैं (बाएं से) सर्वश्री जैथलिया, मोहनरावजी भागवत, महावीर प्रसाद बजाज, प्रेमशंकर त्रिपाठी, सूरजभानजी, डॉ. नरेन्द्र कोहली, डॉ. मधुरिमा कोहली एवं विमल लाठ।

प्रख्यात पत्रकार तथा स्तम्भ लेखक श्री मुजफ्फर हुसैन को २००१ ई. के 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' से अलंकृत करते हुए श्री मोहनराव भागवत। अन्य परिलक्षित हैं (बायें से) सर्वश्री पी.डी. चितलांगिया, कृष्णस्वरूप दीक्षित, कालीदास बसु, महावीर बजाज, गोविन्द नारायण काकड़ा, जुगलकिशोर जैथलिया, कैलाशपति मिश्र, पी. एल. चतुर्वेदी तथा हस्तीमलजी।

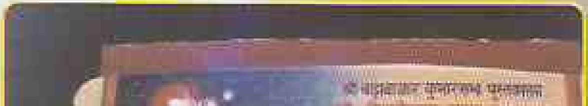

वर्ष २००३ ई. का प्रज्ञा सम्मान तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी को प्रदान करते हुए उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री पी.डी. चितलांगिया, मीना पुरोहित, तपन सिकदर, महावीर बजाज, तथागत राय, मदन दास देवी, जैथलिया, कृष्णस्वरूप दीक्षित एवं विमल लाठ प्रभृति।

कुमारसभा पुस्तकालय : डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

वर्ष २००४ ई. का प्रज्ञा सम्मान शिव चरित्र के प्रसिद्ध नाट्यकार श्री बलवन्त राव मोरेश्वर उर्फ बाबा साहेब पुरन्दरे (पुणे) को देते हुए पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. प्रतापचन्द्र चन्द्र। बाईं ओर हैं श्री जैथलिया एवं श्री मोहनराव भागवत।

श्री माणिकचन्द वाजपेयी को डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान २००५ ई. का मानपत्र सौंपते हुए गोवा के पूर्व राज्यपाल श्री केदारनाथ साहनी। अन्य बाएँ से परिलक्षित हैं-सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, राम माधव, निहार कोठारी, अजय शुक्ला, राजेन्द्र शर्मा (सम्पादक 'स्वदेश'), डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं अरुण प्रकाश मल्लावत।

वर्ष २००६ ई. के 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' से डॉ. कुसुमलता केडिया को समादृत करते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री महावीर बजाज, विमल लाठ, डॉ. रामेश्वर मिश्र, श्रीकांत जोशी, मोहनराव भागवत, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. उषा द्विवेदी एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी।

कुमारसभा पुस्तकालय : डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

कन्नड़ के प्रख्यात साहित्यकार डॉ. एस.एल. भैरप्पा को वर्ष २००७ ई. का प्रज्ञा सम्मान प्रदान करते हुए बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी। बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, महावीर प्रसाद बजाज, कमलेश मुनि 'कमलेश', जैथलिया एवं अरुण प्रकाश मल्लावत।

डॉ. एस. कल्याणरमण को डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान २००८ ई. का मानपत्र प्रदान करते हुए पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरलीमनोहर जोशी। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री विमल लाठ, तरुण विजय, एस. वेदान्तम, महावीर बजाज, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, सुरेश सोनी एवं लक्ष्मीनारायण भाला।

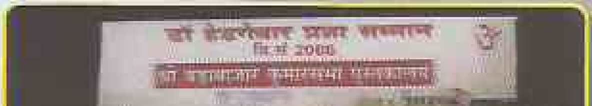

२००९ ई. का प्रज्ञा सम्मान श्रीमद् जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्री राघवेश्वर भारती महास्वामी को समर्पित करते हुए श्री सुरेशजी (भैयाजी) जोशी एवं इमामी समूह के संयुक्त चेयरमैन श्री राधेश्याम अग्रवाल। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री श्रीकृष्ण मोतलाल, रणेन्द्रलाल बंद्योपाध्याय, जैथलिया, नन्दकुमार लढा, महावीर बजाज, शंकरलाल अग्रवाल एवं विमल लाठ।

कुमारसभा पुस्तकालय : डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

२०१० ई. के प्रज्ञा सम्मान से मॉरिशस के श्री राजेन्द्र अरुण को सम्मानित करते हुए डॉ. मुरली मनोहर जोशी। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) रणेन्द्रलाल बंद्योपाध्याय, राहुल सिन्हा, प्रभात कुमार, डॉ. विनोद बाला अरुण, अरुण प्रकाश मल्लावत, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, महावीर बजाज, प्रो. देवेन्द्र स्वरूप, जुगलकिशोर जैथलिया एवं नन्दकुमार लढा।

डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र को डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान-२०११ से सम्मानित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री नन्दकुमार लढा, रणेन्द्रलाल बंद्योपाध्याय, विमल लाठ, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, जुगलकिशोर जैथलिया, लक्ष्मीनारायण भाला, महावीर बजाज एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी।

संस्कार भारती के प्रतिष्ठाताओं में अन्यतम श्री योगेन्द्रजी श्रीवास्तव (आगरा) को प्रज्ञा सम्मान २०१२ ई. से सम्मानित करते हुए रा. स्व. संघ के सह-सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपालजी। अन्य हैं (बायें से) सर्वश्री रणेन्द्रलाल बंद्योपाध्याय, यादवराव देशमुख, लक्ष्मीनारायण भाला, महावीर बजाज, प्रो. तरुण मजुमदार, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, जुगलकिशोर जैथलिया, दुर्गा व्यास, विमल लाठ एवं अरुण मल्लावत।

कुमारसभा पुस्तकालय : विवेकानन्द सेवा सम्मान

१९८७ ई. का प्रथम विवेकानन्द सेवा सम्मान नागालैंड की रानी गाइदिनल्यू को प्रदान किया गया। समारोह में मंचस्थ हैं (बाएं से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, स्वामी विजयानन्दजी महाराज, रानी गाइदिनल्यू, राधाकृष्ण नेवटिया, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री एवं महावीर प्रसाद बजाज (माईक पर)।

मध्यप्रदेश में वनवासी सेवा के पुरोधा श्री दिलीप सिंह जू देव का अभिनन्दन करते हुए श्री जैथलिया। श्री जू देव को वर्ष १९९६ ई. का सेवा सम्मान श्री सत्यानन्द महापीठ कलकत्ता के ट्रस्टी स्वामी मृगानन्दजी (भगवा वस्त्रों में) के हाथों दिया गया। साथ में खड़े हैं डॉ. सुजित धर एवं वनबन्धु परिषद के श्री मांगीलाल जैन।

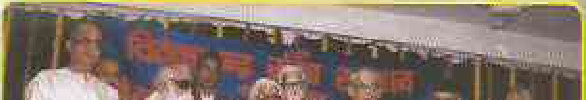

२००० ई. के सेवा सम्मान से समादृत के उपरान्त ताम्रपत्र हाथ में लिए स्वामी अमरानन्दजी। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री डॉ. सुजित धर, विमल लाठ, आचार्य गिरिराज किशोर, महावीर बजाज, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. क्षेत्रप्रसाद सेनशर्मा, कालीदास बसु एवं प्रसन्न दामोदर सप्रे।

कुमारसभा पुस्तकालय : विवेकानन्द सेवा सम्मान

अलवर (राजस्थान) के जोहड़वाला के नाम से प्रसिद्ध श्री राजेन्द्र सिंह को वर्ष २००२ ई. के विवेकानन्द सेवा सम्मान का ताम्रपत्र भेंट करते हुए आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री पुरुषोत्तम दास चितलांगिया, श्रीमती अमला रुइया (मुंबई), वृन्दावन दासजी महाराज, डॉ. सुजीत धर, महावीर प्रसाद बजाज, कृष्ण स्वरूप दीक्षित एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री से २००५ ई. के विवेकानन्द सेवा सम्मान का मानपत्र ग्रहण करते हुए श्री भिकूजी रामजी उर्फ दादा इदाते। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री बालकृष्ण लोहिया, श्रीमती इदाते, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, गौरीशंकर कार्या, लक्ष्मीकांत तिवारी, विमल लाठ एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

२००६ ई. के सेवा सम्मान से डॉ. विश्वामित्र को समादृत करते हुए सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री वी. रामाराव। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री महावीर बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, जुगलकिशोर जैथलिया, लक्ष्मीनारायण भाला एवं बनवारीलाल सोती।

कुमारसभा पुस्तकालय : विवेकानन्द सेवा सम्मान

विवेकानन्द सेवा सम्मान वर्ष २००७ ई. के समारोह में अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री जैथलिया। इस वर्ष का सम्मान कर्मठ लोकसेवी डॉ. नित्यानन्द (उत्तराखंड) को समाजसेवी श्री मामराज अग्रवाल के हाथों प्रदान किया गया। चित्र में बाएँ से परिलक्षित हैं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, श्री महावीर प्रसाद बजाज, श्री आनन्द मित्र 'अभय' (सम्पादक, राष्ट्रधर्म), डॉ. नित्यानन्द, श्री मामराज अग्रवाल, स्वामी प्रदीप्तानन्द, श्रीकान्त जोशी एवं श्री कृष्ण स्वरूप दीक्षित।

'विवेकानन्द सेवा सम्मान २००८ ई.' से सम्मानित केरल के श्री एम.ए. कृष्णन (मानपत्र हाथ में)। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री महावीर बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, बेणुगोपाल बांगड़, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, जुगलकिशोर जैथलिया, लक्ष्मीनारायण भाला एवं नन्दकुमार लढ़ा।

२००९ ई. का सेवा सम्मान स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज को समर्पित करते हुए डॉ. विजय बहादुर सिंह। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, श्री महावीर प्रसाद बजाज, डॉ. नरेन्द्र कोहली, श्री जैथलिया, श्री नन्दकुमार लढ़ा एवं श्री विमल लाठ।

कुमारसभा पुस्तकालय : विवेकानन्द सेवा सम्मान

वर्ष २०१० ई. का सेवा सम्मान हरिद्वार में कुष्ठरोगियों हेतु सेवारत श्री आशीष गौतम को संघ के पूर्व सरसंघचालक श्री के. सुदर्शन द्वारा प्रदान किया गया। मंचपर अन्य परिलक्षित हैं सर्वश्री महावीर प्रसाद बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी 'पाञ्चजन्य' के सम्पादक बल्देव भाई शर्मा, नन्दकुमार लढ़ा, जुगलकिशोर जैथलिया एवं श्रीमती दुर्गा व्यास।

दक्षिणेश्वर रामकृष्ण संघ (आद्यापीठ) के महासचिव ब्रह्मचारी मुराल भाई को २०११ ई. के विवेकानन्द सेवा सम्मान से सम्मानित करते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री तपन सिकदर। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री रणेन्द्रलाल बन्द्योपाध्याय, महावीर बजाज, डॉ. शिवरंजन चटर्जी, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, प्रह्लादराय गोयनका, जुगलकिशोर जैथलिया, नन्दकुमार लढ़ा एवं श्रीमती दुर्गा व्यास।

२०१२ ई. का सेवा सम्मान मुर्शिदाबाद के सेवाभावी श्री सुकुमार रायचौधरी को प्रदान करते हुए संघ के श्री वी. भागय्याजी। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री महावीर प्रसाद बजाज, अद्वैत दत्त, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, महावीर प्रसाद मणकसिया, जैथलिया, गुलाब खण्डेलवाल, सज्जन कुमार तुलस्यान, लक्ष्मीनारायण भाला एवं श्रीमती दुर्गा व्यास।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

छत्रपति शिवाजी राज्यारोहण त्रिशताब्दी समारोह (१९७५ ई.) में अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री जैथलिया। मंचासीन हैं (बाएं से) सर्वश्री नन्दलाल जैन, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, वैद्य गुरुदत्त, बेणीशंकर शर्मा, राधाकृष्ण नेवटिया प्रभृति।

हल्दीघाटी चतुःशती समारोह (१९ जून १९७६ ई.) में पुस्तकालय के अध्यक्ष के नाते स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए श्री जैथलिया। मंचस्थ हैं न्यायमूर्ति सलिल कुमार रायचौधुरी एवं कविवर पं. श्याम नारायण पाण्डेय।

पुस्तकालय की हीरक जयन्ती एवं सूर पंचशती समारोह के द्वितीय दिन (३०.१२.७८) महाजाति सदन के सभागार में आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए प. बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री टी.एन. सिंह। अन्य मंचस्थ हैं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, राधाकृष्ण नेवटिया, राधाकिशन कानोड़िया, नन्दलाल जैन एवं श्री जैथलिया।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

कुमारसभा पुस्तकालय के कौस्तुभ जयन्ती वर्ष में १३ अगस्त १९९४ ई. को प्रख्यात राजनेता एवं कवि माननीय अटलबिहारी वाजपेयी के 'एकल काव्य पाठ' कार्यक्रम में उनका स्वागत करते हुए पुस्तकालय के तत्कालीन अध्यक्ष श्री बैथलिया। मंचपर अटलजी के साथ विराजमान हैं कार्यक्रम के संयोजक आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री।

तुलसी पंचशती समारोह में मंचपर परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, कृष्ण स्वरूप दीक्षित, डॉ. सुकीर्ति गुप्ता, डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जन्मशती समारोह (२००१ ई.) में मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री महावीर बजाज, कालीदास बसु, तपन सिकदर, डॉ. प्रतापचन्द्र चन्द्र, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, केदार नाथ साहनी, श्रीमती साहनी, बलराज मधोक, जुगलकिशोर जैथलिया, विमल लाठ एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

कश्मीर विषय पर कुमारसभा पुस्तकालय में तत्कालीन सर–संघचालक श्री के. सुदर्शनजी का व्याख्यान हुआ। मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. सुशिल धर, राधाकृष्ण नेवटिया, सुदर्शनजी एवं शिवरतन जाजू।

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के ७५ वर्ष पूर्ति पर आयोजित अमृत महोत्सव एवं ग्रन्थ लोकार्पण समारोह (१२.१२.२००४) में मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री विमल लाठ, जुगलकिशोर जैथलिया, कल्याणमल लोढ़ा, डॉ. प्रतापचन्द्र चन्द्र, शास्त्रीजी, पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, महावीर बजाज एवं पी.डी. चितलांगिया।

वर्ष २००२ ई. का इन्दिरा विष्णुकान्त शास्त्री मातृशक्ति सम्मान स्वरसाम्राज्ञी गिरिजा देवी को प्रदान करते हुए आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। अन्य मंचस्थ हैं (बाएँ से) श्री कृष्णस्वरूप दीक्षित, श्रीमती मीना पुरोहित, प्रो. रीता वर्मा (पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री), महावीर बजाज, जुगलकिशोर जैथलिया एवं सुषिमा मित्र।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

लोकनायक जयप्रकाश नारायण जन्मशती (२००२ ई.) पर प्रकाशित एवं श्री जैथलिया द्वारा सम्पादित स्मारिका का लोकार्पण करते हुए आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री महावीर प्रसाद बजाज, डॉ. उषा प्रकाश सिन्हा (दिल्ली), जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. प्रताप चन्द्र चन्द्र एवं डॉ. शैलेन्द्र श्रीवास्तव।

सन्त कबीर षष्ठशती (२००६ ई.) पर अतिथियों का स्वागत कर विषय प्रवर्तन करते हुए श्री जैथलिया। मंचस्थ हैं (बाएं से) प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, पूर्व केन्द्रीय मंत्री शान्ता कुमार, श्रीमती सन्तोष शान्ता कुमार एवं श्री विमल लाठ।

१३ दिसम्बर २००३ ई. को एक विशेष समारोह में कुमारसभा द्वारा प्रवर्तित इन्दिरा विष्णुकान्त शास्त्री मातृशक्ति सम्मान से पूज्या साध्वी ऋतम्भराजी को सम्मानित करते हुए आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। बाएं से परिलक्षित हैं सर्वश्री नन्दकुमार लढ़ा, विमल लाठ, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, महावीर प्रसाद बजाज, जुगलकिशोर जैथलिया, मीना देवी पुरोहित एवं कृष्णस्वरूप दीक्षित।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

५ मई २००६ ई. को संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्री गुरुजी की जन्म शताब्दी के आयोजन में बाएँ से मंचासीन हैं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, श्री महावीर प्रसाद बजाज, श्री असीम कुमार मित्र, श्री रणेन्द्रलाल बन्द्योपाध्याय एवं श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

१९९७ ई. में निराला जन्मशताब्दी के अवसर पर आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के नेतृत्व में कुमारसभा पुस्तकालय की एक टीम ने निराला के जन्मक्षेत्र का दौरा किया। उक्त अवसर पर निराला के जन्मस्थान पर आयोजित एक स्मृति सभा में वक्तव्य रखते हुए साहित्यकार श्री विश्रान्त वशिष्ठ। साथ ही परिलक्षित हैं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, श्री जैथलिया, आचार्य शास्त्री प्रभृति।

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के परलोकगमन (रामनवमी २००५ ई.) पर आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री तथागत राय, कृष्णस्वरूप दीक्षित, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, डॉ. सेन्द्र कोहली, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं विमल लाठ प्रभृति।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

गीता परिक्रमा (खंड-१) के लोकार्पण समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री जैथलिया। अन्य मंचस्थ हैं सर्वश्री डॉ. उषा त्रिवेदी, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, डॉ. नरेन्द्र कोहली, पूर्व राज्यपाल टी.एन. चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद बजाज, स्वामी अद्वैतानंद, डॉ. मधुरिमा कोहली एवं विमल लाठ।

६ अगस्त २००८ ई. को गीता परिक्रमा (खण्ड-२) के लोकार्पण समारोह में परिलक्षित हैं बाएँ से सर्वश्री महावीर प्रसाद बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, स्वामी सत्यरूपानन्दजी महाराज (इन्दौर), श्रीमती गिरिजा देवी, डॉ. नरेन्द्र कोहली, नन्दलाल शाह, जुगलकिशोर जैथलिया एवं नन्दकुमार लढ़ा।

गीता परिक्रमा (खण्ड-३) के लोकार्पण समारोह में परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री महावीर बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, विमल लाठ, डॉ. नरेन्द्र कोहली, साध्वी ऋतम्भरा 'दीदी माँ', बाल व्यासजी, जुगलकिशोर जैथलिया, नन्दलाल शाह एवं श्रीमती दुर्गा व्यास।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जन्मशती समारोह (२००८ ई.) में मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री महावीर बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, डॉ. शम्भुनाथ, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, जुगलकिशोर जैथलिया, श्रीमती दुर्गा व्यास एवं नन्दकुमार लढा।

केदार-नागार्जुन-शमशेरसिंह - अज्ञेय की जन्मशताब्दी समारोह (२०१० ई.) में मंचस्थ हैं (बाएँ से) डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल, डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, डॉ. रमेश दीक्षित एवं श्री जैथलिया।

१ मई २०११ ई. को आयोजित विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला में बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री महावीर प्रसाद बजाज, विमल लाठ, डॉ. शिवओम अम्बर, बुद्धिनाथ मिश्र, संस्कार भारती के बाबा जोगिन्दर (संस्कार भारती), जुगलकिशोर जैथलिया, नन्दकुमार लढा एवं श्रीमती दुर्गा व्यास।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री बसन्तकुमारजी बिड़ला एवं डॉ. सरलाजी बिड़ला को कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान से १ जनवरी २०११ ई. को वृन्दावन के स्वामी गिरिशानन्दजी महाराज द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह में परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री जोधराज लढ़ा, अरुण प्रकाश मल्लावत, सुशील ओझा, नन्दकुमार लढ़ा, नन्दिता मालपानी, अरुण सोनी, नन्दलाल सिंहानिया, कृष्णस्वरूप दीक्षित, न्यायमूर्ति श्यामल सेन, त्रिपुरोशेखर शास्त्री, जुगलकिशोर जैथलिया एवं महावीर प्रसाद बजाज।

बाबू बसन्तकुमार जी एवं डॉ. सरला जी बिड़ला द्वारा अपने निवास स्थान पर स्वनामधन्य महादेवी वर्मा के सम्मान में आयोजित समारोह में कलकत्ता के प्रमुख साहित्यकारों एवं समाजसेवियों के साथ श्री महावीर बजाज एवं श्री जैथलिया (पीछे की पंक्ति में बाएं)।

कुमारसभा पुस्तकालय : विविध कार्यक्रम

कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा अपनी कौस्तुभ जयंती पर विशिष्ट समाज सेवियों के सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री नानाजी देशमुख। अन्य परिलक्षित हैं आचार्य शास्त्री एवं श्री जुगलकिशोर जैथलिया प्रभृति।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक बालासाहब देवरस के देवलोक गमन पर आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में बाएँ से सर्वश्री जैथलिया, असीम कुमार मित्र, आचार्य शास्त्री, केशवराव दीक्षित, विनयकृष्ण रस्तोगी, स्नेहलता बैद एवं महावीर बजाज (माइक पर)।

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की सप्तम पुण्य तिथि (१ अप्रैल २०१२ ई.) के अवसर पर श्रद्धा अर्पित करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निवर्तमान न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री गिरिधर मालवीय। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. रजनी शुक्ला, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, कविवर ध्रुवदेव मिश्र 'पाषाण', राज मिठौलिया, पं. अमिताभ भट्टाचार्य एवं शान्तिलाल जैन।

राजनीति : जनसंघ एवं भाजपा

३ जनवरी १९६० ई. को नागपुर में आयोजित जनसंघ के अष्टम वार्षिक अधिवेशन में पं. दीनदयाल उपाध्याय, पं. प्रेमनाथ डोगरा एवं प.बं. जनसंघ के कार्यकर्ताओं के साथ बैठे हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया (बाएं से तीसरे)।

१९८२ ई. में श्री जैथलिया ने भाजपा के प्रत्याशी बनकर कोलकाता के जोड़ाबागान क्षेत्र से चुनाव लड़ा जिसमें प्रचार हेतु श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं श्री लालकृष्ण आडवानी भी पधारे। एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए श्री वाजपेयी। मंचपर श्री जैथलिया एवं भाजपा के अन्य पदाधिकारीगण।

कोलकाता में एक महती जनसभा को सम्बोधित करते हुए श्री अटल बिहारी वाजपेयी। साथ में बाएं से परिलक्षित हैं सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, आ. विष्णुकान्त शास्त्री, शत्रुघ्न सिन्हा एवं तपन सिकदर।

राजनीति : भारतीय जनता पार्टी

साम्प्रदायिक सम्प्रीति की रक्षा हेतु शान्ति पदयात्रा में भाग लेते हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया अन्य सहकर्मियों के साथ।

भाजपा के राज्य सम्मेलन में श्री वैंकैया नायडु एवं उनके दाहिने श्री जैथलिया। चित्र में (बाएँ से) परिलक्षित हैं अन्य पदाधिकारी सर्वश्री दिवाकर कुण्डु, तापस चटर्जी, राहुल सिन्हा एवं सुकुमार बनर्जी (तत्कालीन अध्यक्ष)।

कोलकाता के धर्मतल्ला में आयोजित विशाल जनसभा में तत्कालीन राज्य भाजपा अध्यक्ष सुकुमार बनर्जी एवं केन्द्रीय नेता वैंकैया नायडु के साथ राज्य उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

राजनीति : भारतीय जनता पार्टी

कोलकाता के टाउनहॉल में भाजपा के कार्यकर्ता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवानी। मंच पर (बाएँ से) परिलक्षित हैं सर्वश्री राहुल सिन्हा, जुगलकिशोर जैथलिया एवं सुशील मोदी प्रभृति।

भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा स्वामी विवेकानन्द एवं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की स्मृति में धर्मतल्ला में आयोजित एक जनसभा में मंचपर (बाएँ से) श्री तपन सिकदर, श्री जैथलिया, केन्द्रीय नेता श्री कृष्णलाल शर्मा (माइक पर) एवं श्री राहुल सिन्हा।

मंहगाई एवं संत्रासवाद के विरुद्ध आयोजित भाजपा की सभा में भाषण दे रहे हैं श्री तथागत राय। मंच पर हैं श्री जुगलकिशोर जैथलिया एवं अन्य नेतृवर्ग।

राजनीति : भारतीय जनता पार्टी

केन्द्रीय भाजपा नेता श्री अश्विनी कुमार, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, डॉ. मुरली मनोहर जोशी एवं पूर्व पार्षद श्री दुर्गा प्रसाद नाथानी के साथ श्री जुगलकिशोर जैथलिया एक कार्यकर्त्ता संगोष्ठी में।

कोलकाता के वार्ड न. २२ के कार्यकर्त्ताओं की विशेष बैठक में मंच पर उपस्थित हैं (बाएँ से) श्री जैथलिया, वार्ड की पार्षदा मीना देवी पुरोहित, वार्ड २३ के पार्षद श्री विजय ओझा, श्री राजेन्द्र गुप्ता एवं अन्य नेतृवर्ग।

उत्तर पश्चिम कोलकाता जिला के कार्यकर्त्ता सम्मेलन में मंचपर (बाएँ से) सर्वश्री प्रताप बनर्जी, किशन झंवर (जिलाध्यक्ष), राहुल सिन्हा (प्रदेशाध्यक्ष) घनश्याम दास बेरीवाल, जुगलकिशोर जैथलिया एवं कमल बेरीवाल।

विगत लोकसभा की चुनावी सभा में श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ मंचपर (बाएं से) परिलक्षित हैं श्रीमती सुनीता झंवर (पार्षदा), केन्द्रीय नेता हुकुमदेव नारायण सिंह, तथागत राय, सत्यव्रत मुखर्जी, घनश्याम दास बेरीवाल, जैथलिया एवं भंवरलाल मूंधड़ा।

भाजपा कार्यकर्ताओं की सभा में मंचासीन हैं केन्द्रीय नेताओं के साथ राज्य के पदाधिकारीगण। बाएं से सर्वश्री देवव्रत सिन्हा, प्रभाकर तिवारी, जुगलकिशोर जैथलिया, सत्यव्रत मुखर्जी (केन्द्रीय मंत्री) वैंकेया नायडू, तथागत राय, देवदास आप्टे, संजय जोशी, असीम घोष एवं सुशान्त पाल।

देशव्यापी जनचेतना यात्रा के दौरान श्री लालकृष्ण आडवाणी का मंच पर स्वागत करते हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया। बाएं से परिलक्षित हैं सर्वश्री राहुल सिन्हा, प्रभाकर तिवारी, तथागत राय एवं श्रीमती गौरी चौधरी प्रभृति।

राजनीति : भारतीय जनता पार्टी

पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी के साथ चर्चा में रत श्री जैथलिया।

भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत के साथ कोलकाता राजभवन में महाराणा प्रताप की कांस्य प्रतिमा स्थापन सम्बन्धी योजना की जानकारी देते हुए श्री जैथलिया।

पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर का कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजित सभा में स्वागत करते हुए श्री जैथलिया।

वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनेता श्री के.आर. मलकानी के साथ वार्तालाप करते हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के कार्यक्रम में भाजपा नेता एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री शान्ता कुमार का स्वागत करते हुए श्री जैथलिया।

राजस्थान परिषद

१९८४ ई. में राजस्थान परिषद द्वारा आयोजित विशाल अभिनन्दन समारोह में अपने स्वागत पर आभार जताते हुए राजस्थान विधानसभा में विरोधीदल के तत्कालीन नेता एवं लोकप्रिय राजनेता श्री भैरोंसिंह शेखावत। मंच पर हैं (बाएं से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, कन्हैयालाल मिश्रवाल, कन्हैयालाल सेठिया, कल्याणसिंह कालवी एवं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री।

राजस्थान दिवस समारोह कार्यक्रम (१९९८ ई.) में मंच पर परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री मगनलाल सुराणा जैन, महावीर प्रसाद नारसरिया, प्रकाश चण्डालिया, कल्याणमल लोढ़ा (कार्यक्रम अध्यक्ष), शार्दूलसिंह जैन, दीपचन्द नाहटा एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

राजस्थान दिवस समारोह (२००० ई.) में विषय प्रवर्तन करते हुए श्री जैथलिया। मंचासीन हैं (बाएं से) सर्वश्री महावीर प्रसाद नारसरिया, डॉ. वासुदेव पोद्दार, कन्हैयालाल सेठिया, सुभाष महरिया-सांसद, नन्दकिशोर जालान, गजानन्द खेतान एवं अन्य।

राजस्थान परिषद

प्रताप जयन्ती समारोह (२००४ ई.) में मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री रुगलाल सुराणा (जैन), जुगल किशोर जैथलिया, महावीर प्रसाद नारसरिया, प्रसन्न मिश्र, अरुण प्रकाश मल्लावत, शार्दूल सिंह जैन, राजस्थान के तत्कालीन गृहमंत्री गुलाब चन्द कटारिया, हरिमोहन बांगड़, सत्यनारायण बजाज, ओमप्रकाश अश्क एवं अन्य।

२ अप्रैल २००६ ई. को रजत जयन्ती एवं भक्तिमति मीरा जन्म पंचशती समारोह में (बाएँ से) परिलक्षित हैं सर्वश्री जुगल किशोर जैथलिया, शार्दूल सिंह जैन, रामअवतार गुप्त, डॉ. महेश चन्द्र शर्मा, सत्यनारायण बजाज एवं तत्कालीन महापौर सुब्रत मुखर्जी। पीछे खड़े हैं श्री दाऊलाल कोठारी एवं श्री अरुण मल्लावत।

राजस्थान दिवस समारोह में परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री सुन्दरलाल दूगड़, महावीर प्रसाद नारसरिया, अरुण प्रकाश मल्लावत, न्यायमूर्ति अशोक कुमार माथुर (उद्घाटनकर्त्ता) आचार्य कल्याणमल लोढ़ा, प्रह्लादराय अग्रवाल, शार्दूलसिंह जैन एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

२० नवम्बर २००३ ई. को आयोजित नागरिक अभिनन्दन का आभार बताते हुए तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत। इसी सभा में उन्हें तत्कालीन मेयर श्री सुब्रत मुखर्जी एवं सुश्री ममता बनर्जी ने आश्वस्त किया कि वे कोलकाता में महाराणा प्रताप की स्मृति के लिए राजस्थान परिषद की योजनाओं को पूरा करने में सहयोग देंगे, जिसे उन्होंने पूरा भी किया। मंच पर श्री जैथलिया सहित परिषद के पदाधिकारी एवं अन्य।

३० मई २००४ ई. को महाराणा प्रताप उद्यान (पूर्व नाम मेफ्फरसन पार्क) में महाराणा प्रताप की आवक्ष मूर्ति का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन राज्यपाल, उत्तर प्रदेश आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। साथ में परिलक्षित हैं (बाएँ से) श्री जैथलिया, सत्यनारायण बजाज, सुश्री ममता बनर्जी, तत्कालीन मेयर श्री सुब्रत मुखर्जी, उपमेयर श्रीमती मीना देवी पुरोहित एवं अन्य।

महाराणा प्रताप की आवक्ष मूर्ति उद्घाटन के उपरान्त भारतीय भाषा परिषद के सभागार में आयोजित समारोह में अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री जैथलिया। मंच पर विराजमान हैं (बाएँ से) सर्वश्री सत्यनारायण बजाज, ममता बनर्जी, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, सुब्रत मुखर्जी, श्रीमती मीनादेवी पुरोहित, सुदर्शनानन्द गुप्ता एवं शार्दूलसिंह जैन।

श्री भैरोंसिंह शेखावत (तत्कालीन उपराष्ट्रपति) से कोलकाता के राजभवन में भेंट कर महाराणा प्रताप की निर्माणाधीन भव्य कांस्यमूर्ति की प्रगति की जानकारी देते हुए (बाएँ से) सर्वश्री जयप्रकाश सोठिया, रूगलाल सुराणा (जैन), जुगलकिशोर जैथलिया, शार्दूलसिंह जैन एवं अरुण प्रकाश मल्लावत।

२ जनवरी २००५ ई. को महाराणा प्रताप सरणी (पूर्व नाम इंडिया एक्सचेंज प्लेस) के नवीन नामकरण के प्रस्तरफलक का बटन दबाकर उद्घाटन करते हुए भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत। मंचपर उपस्थित हैं श्री सत्यनारायण बजाज, सुश्री ममता बनर्जी, श्री जैथलिया, श्री अरुण प्रकाश मल्लावत, महापौर श्री सुब्रत मुखर्जी, दिनेश बजाज एवं श्रीमती मीना देवी पुरोहित (उपमहापौर)।

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के जन्मदिवस पर उनके घर जाकर राजस्थान परिषद की ओर से उनका अभिनन्दन करते परिषद के पदाधिकारीगण (बाएँ से) सर्वश्री गोविन्द नारायण काकड़ा, अरुण प्रकाश मल्लावत, शार्दूल सिंह जैन, सेठियाजी, महावीर प्रसाद नारसरिया, जुगलकिशोर जैथलिया एवं रूगलाल सुराणा (जैन)।

राजस्थान परिषद

रोक्सबरी सरणी स्थित महाराणा प्रताप उद्यान में महाराणा प्रताप को श्रद्धासुमन अर्पण के उपरान्त मूर्ति के सामने परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री राजेश नागोरी, बालकृष्ण माहेश्वरी, मोहनलाल पारीक, प्रकाश कुमार पारख, जुगल किशोर जैथलिया, रूपलाल सुराणा (जैन), रणजीत सिंह भूतोड़िया, जगदीश चन्द्र एन. मूंधड़ा, परसुराम मूंधड़ा, अरुण मल्लावत, दिलीप केडिया एवं गोविन्द नारायण काकड़ा।

महाराणा प्रताप जयन्ती २००७ ई. के अवसर पर परिषद के समारोह में (बाएं से) सर्वश्री अरुण प्रकाश मल्लावत, समारोह अध्यक्ष सज्जन कुमार तुलस्यान, उद्घाटनकर्ता ओंकार सिंह लखावत (पूर्व सांसद), अजय मारू (सांसद), जैथलिया, रूपलाल सुराणा (जैन) एवं शार्दूल सिंह जैन।

राजस्थान दिवस समारोह (३० मार्च २००८) पर १८५७ ई. के स्वातन्त्र्य समर की १५०वीं वर्षपूर्ति पर केन्द्रित स्मारिका का लोकार्पण प्रखर चिंतक श्री तरुण विजय (दिल्ली) ने किया। बाएं से परिलक्षित हैं- सर्वश्री परसुराम मूंधड़ा, विमल लाठ, जुगलकिशोर जैथलिया, शार्दूल सिंह जैन, कविवर सूर्यदेव सिंह, दिनेश बजाज, कालीचरण सर्राफ, तरुण विजय, सज्जन कुमार तुलस्यान, अरुण मल्लावत, रूपलाल सुराणा (जैन) एवं महावीर बजाज।

राजस्थान परिषद

वरिष्ठ राजनेता श्री ललित किशोर चतुर्वेदी के स्वागत में आयोजित समारोह में मंचपर परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री विनोद बैद, जुगल किशोर जैथलिया, चतुर्वेदीजी, दीपचन्द नाहटा एवं महावीर प्रसाद नारसरिया।

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के महाप्रयाण (११ नवम्बर २००८) के उपरान्त उनके परिवार द्वारा आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में श्रद्धा अर्पण करते हुए श्री जैथलिया। अन्य विराजमान हैं उनके सुपुत्र द्वय श्री जयप्रकाश एवं विनयप्रकाश, पौत्र गौतम एवं अन्य सम्बन्धी।

सेठियाजी के महाप्रयाण पर राजस्थान परिषद द्वारा आयोजित सार्वजनिक श्रद्धाञ्जलि सभा में श्रद्धाञ्जलि देते हुए श्री जैथलिया। अन्य (बाएँ से) उपस्थित हैं सर्वश्री जयप्रकाश सेठिया, विश्वम्भर नेवर, दिनेश बजाज, अरुण प्रकाश मल्लावत एवं शार्दूल सिंह जैन।

राजस्थान परिषद

१० अगस्त २००९ ई. को राजस्थान परिषद के तत्वावधान में महाराणा प्रताप की २१ फुट ऊँची कांस्य प्रतिमा के भव्य उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए उद्घाटनकर्ता पूर्व थलसेनाध्यक्ष जनरल शंकर रायचौधरी। मंच पर विराजमान हैं (बाएँ से) पार्षदा रेशमा खातून, श्री शार्दूल सिंह जैन, श्री दिनेश बजाज, कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. गुलाब कोठारी, श्री जुगलकिशोर जैथलिया, विशिष्ट समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सत्यव्रत मुखर्जी। मंचस्थ पीछे बैठे दिखाई दे रहे हैं सर्वश्री अरुण प्रकाश मल्लावत, डॉ. अनुराग नोपानी, नन्दलाल शाह, हगलाल सुराणा (जैन), सम्पत मानधन्या, सम्पतराम भादानी, विश्वम्भर नेवर, जगदीश मित्रा, राजेन्द्र सिंह, पार्षदा सुनीता झंवर, पार्षदा मीना देवी पुरोहित, भंवरलाल मूंधड़ा एवं सुशील ओझा प्रभृति।

महाराणा प्रताप की प्रतिमा लोकार्पण के पश्चात् प्रतिमा के समक्ष खड़े हैं (बाएं से) सर्वश्री ओम अग्रवाल, डॉ. अनुराग नोपानी, जुगलकिशोर जैथलिया, मूर्तिकार गौतम पाल, डॉ. गुलाब कोठारी, दिनेश बजाज, जनरल शंकर रायचौधरी, अरुण प्रकाश मल्लावत, शार्दूलसिंह जैन एवं चन्दन राय।

महाराणा प्रताप जन्मजयन्ती समारोह में (बाएँ से) मंचस्थ हैं सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, अरुण प्रकाश मल्लावत, शार्दूलसिंह जैन, गुलाबचन्द कटारिया (पूर्व गृहमंत्री, राजस्थान), हरिमोहन बांगड़ एवं अन्य।

कोलकाता में 'सेन्ट्रल मेट्रो स्टेशन' का नाम महाराणा प्रताप की स्मृति में रखने हेतु वरिष्ठ तृणमूल नेता श्री सुदीप बन्द्योपाध्याय सांसद को राजस्थान परिषद की ओर से ज्ञापन सौंपते हुए श्री जैथलिया। साथ में हैं सर्वश्री रुगलाल सुराणा (जैन), शार्दूलसिंह जैन एवं दिनेश बजाज।

मार्च २००९ ई. में महाकवि कन्हैयालाल सेठिया पर केन्द्रित एवं परिषद द्वारा प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण 'माणक' (राजस्थानी मासिक) के सम्पादक श्री पदम मेहता ने किया। लोकार्पण समारोह में (बाएँ से) परिलक्षित हैं स्मारिका सम्पादक श्री जैथलिया, श्री विश्वम्भर नेवर, श्रीमती सरिता जोशी, श्री मेहता, श्री दिनेश बजाज, श्री अरुण प्रकाश मल्लावत, श्री शार्दूल सिंह जैन, श्री नन्दलाल शाह एवं श्री परशुराम मूंधड़ा।

राजस्थान दिवस २०११ ई. पर डॉ. राममनोहर लोहिया की जन्मशती के अवसर पर उनपर केन्द्रित स्मारिका का लोकार्पण करते श्री गुरुचरण सिंह गिल। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री दिनेश बजाज, डॉ. रामेश्वर मिश्र 'पंकज', शार्दूल सिंह जैन, जुगलकिशोर जैथलिया, परशुराम मूंधड़ा एवं मोहनलाल पारीक।

महाराणा प्रताप जयन्ती २०११ में परिषद् द्वारा आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार एवं चिन्तक डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री। मंचासीन हैं (बाएं से) सर्वश्री रूपलाल सुराणा (जैन), अरुण प्रकाश मल्लावत, शार्दूल सिंह जैन, सीताराम शर्मा, प्रो. प्रणव चटर्जी, राजीव हर्ष एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

राजस्थान दिवस २०१२ ई. एवं कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा महामना मदनमोहन मालवीय की सार्धशती समारोह पर स्मारिका लोकार्पण करते हुए न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय। मंच पर अन्य उपस्थित हैं (बाएं से) सर्वश्री डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, पं. श्रीकान्त शर्मा 'बाल व्यास', डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, पं. अमिताभ भट्टाचार्य एवं शार्दूल सिंह जैन।

बड़ाबाजार लाइब्रेरी

सुप्रसिद्ध लेखक श्री पी. परमेश्वरन को भाईजी हनुमान प्रसाद पोद्दार राष्ट्रसेवा सम्मान (वर्ष १९९७ ई.) प्रदान करते हुए महाराष्ट्र के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री श्री गोपीनाथ मुंडे। मंच पर अन्य परिलक्षित हैं सर्वश्री विमल लाठ, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, पी.डी. चितलांगिया, डॉ. सुजित धर, सज्जन भजनका एवं जैथलिया।

स्वामी रामचन्द्र वीर को भाईजी हनुमानप्रसाद पोद्दार राष्ट्रसेवा सम्मान (वर्ष १९९८ ई.) प्रदान करने के कार्यक्रम में मंचासीन हैं (बाएं से) स्वामी रामचन्द्र वीर, आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज, पी.डी. चितलांगिया, डॉ. सुजित धर एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

बड़ाबाजार लाइब्रेरी के शताब्दी वर्ष (२००० ई.) में श्री प्रणव पंड्या को हनुमान प्रसाद पोद्दार राष्ट्रसेवा सम्मान से विभूषित किया गया। मंच पर परिलक्षित हैं (बाएं से) श्रीमती मीना देवी पुरोहित, स्वामी आत्म बोधानन्दजी, सर्वश्री प्रणव पंड्या, राजनाथ सिंह, विमल लाठ, पी.डी. चितलांगिया एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

बड़ाबाजार लाइब्रेरी

लेखक शिवकुमार गोयल को भाईश्री हनुमानप्रसाद पोद्दार राष्ट्र सेवा सम्मान प्रदान करते हुए आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। अन्य परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, विमल लाठ, श्रीमती सत्यवती गोयल एवं सुन्दरसिंह भंडारी।

व्याख्यानमाला में स्व. भंवरलालजी मल्लावत के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्री जैथलिया। मंचपर (बाएँ से) विराजमान हैं सर्वश्री जयगोपाल गुप्ता, अशोक गुप्ता, विमल लाठ, चिन्तक राजनेता डॉ. महेश चन्द्र शर्मा प्रभृति।

कर्मयोगी भंवरलाल मल्लावत व्याख्यानमाला (२००९ ई.) में बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री कालीदास बसु, शंकरी प्रसाद बनर्जी (पूर्व कुलपति बर्दवान विश्वविद्यालय), प्रसिद्ध लेखक एवं चिन्तक प्रो० देवेन्द्र स्वरूप एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

बड़ाबाजार लाइब्रेरी

बड़ाबाजार लाइब्रेरी एवं श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संयुक्त तत्वावधान में १९ मार्च २००६ ई. को आयोजित 'आतंकवाद और आंतरिक सुरक्षा' संगोष्ठी में भाषण देते हुए श्री जैथलिया। मंचपर अन्य उपस्थित हैं सर्वश्री बिमल लाठ, कर्नल सव्यसाची बागची, प्रकाश सिंह (बी.एस.एफ.), के.सी. पन्त मित्र, जनरल शंकरराय चौधरी (पूर्व थल सेनाध्यक्ष) एवं विभूतिभूषण नन्दी।

साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा प्रतिरोध विधेयक २०११ के खतरनाक इरादों के विरोध में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं बड़ाबाजार लाइब्रेरी की संयुक्त सभा (१५-१२-२०११) में बायें से परिलक्षित हैं सर्वश्री जुगल किशोर जैथलिया, शेषाद्रि चारी, प्रधान वक्ता इन्द्रेशजी, शार्दूल सिंह जैन, बिमल लाठ एवं अशोक गुप्त।

व्याख्यानमाला (२०१२ ई.) के अन्तर्गत साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा प्रतिरोध विधेयक के विरोध में आयोजित गोष्ठी में प्रसिद्ध चिन्तक एवं राजनेता श्री हृदयनारायण दीक्षित (बाएं से दूसरे) के साथ मंचस्थ हैं सर्वश्री महावीर प्रसाद अग्रवाल, पत्रकार राजीव हर्ष (प्रभारी, राजस्थान पत्रिका), बिमल लाठ एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय

सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय द्वारा आयोजित तुलसी जयन्ती (१९७२ ई.) के कार्यक्रम में (बाएं से) परिलक्षित है डॉ. त्रिपुरारी चक्रवर्ती, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, डॉ. श्रीनाथ मिश्र, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री एवं पुस्तकालय मंत्री श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

तुलसी जयन्ती कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया (मंत्री)। दाहिनी ओर हैं श्री मोहनलाल जालान (अध्यक्ष) एवं प्रधान अतिथि डॉ. रामसूर्ति त्रिपाठी।

तुलसी जयन्ती वर्ष २०१२ के समारोह में तुलसीदास के जीवन पर प्रकाश डालते हुए पं. श्रीकान्त शर्मा 'बालव्यास'। बाएं से परिलक्षित हैं सर्वश्री डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, सागरमल गुप्ता (मंत्री) तुलाराम जालान (अध्यक्ष), बजरंग प्रसाद जालान एवं जैथलिया।

लौहपुरुष सरदार पटेल

सरदार पटेल की निर्वाण तिथि पर सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी द्वारा आयोजित सभा में वक्तव्य रखते हुए श्री जुगल किशोर जैथलिया। मंच पर बाएं से परिलक्षित हैं सर्वश्री रामकुमार खोरिया, नेमीचन्द कन्दोई एवं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री।

सरदार पटेल के जन्म जयन्ती समारोह में मंच पर हैं (बाएं से) श्रीमती दुर्गा व्यास, श्री विश्वम्भर नेवर, श्री शान्तिलाल जैन, श्री जैथलिया एवं कमेटी के अध्यक्ष श्री शार्दूल सिंह जैन।

सरदार पटेल जन्म जयन्ती में दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए श्री जैथलिया। साथ में हैं श्री रामकुमार खोरिया एवं श्री ओ.पी. शाह।

कोलकाता में सरदार पटेल की भव्य प्रतिमा लगाने की योजना के सम्बन्ध में तत्कालीन राज्यपाल श्री गोपालकृष्ण गाँधी (बाएं से तीसरे) से विमर्श एवं सहयोग हेतु भेंट करने गए प्रतिनिधि मंडल के सदस्य सर्वश्री जैथलिया, बटुकभाई मेहता, सुरेन्द्र भाई शाह, सुरेश भाई, खुशहाल चन्द आर्य एवं हीरजीभाई भावसार।

वीर सावरकर फाउण्डेशन

वीर सावरकर फाउण्डेशन द्वारा कोलकाता में आयोजित 'वीर सावरकर सम्मान' वर्ष २०१० में (बाएँ से) परिलक्षित हैं श्री चित्तरंजन बाग, श्री जुगलकिशोर जैथलिया (अध्यक्ष), डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव (पुरस्कार से सम्मानित), श्रीमती हिमानी सावरकर, श्री धर्मचन्द पोद्दार (मंत्री) एवं श्री श्यामसुन्दर पोद्दार (महामंत्री)

वीर सावरकर फाउन्डेशन का वर्ष २०११ ई. का सम्मान कैप्टेन जॉन वेकन (आजाद हिन्द फौज) को दिया गया। चित्र में बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री ललित प्रहलादका, राजेश खन्ना, कैप्टन जॉन वेकन, डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव, स्वामी चक्रपाणी (अध्यक्ष, हिन्दू महासभा), जुगलकिशोर जैथलिया एवं रतन शाह।

डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव द्वारा सम्पादित 'सावरकर दैनंदिनी : सिंहगर्जना' का कोलकाता में लोकार्पण करते हुए आचार्य स्वामी धर्मेन्द्रजी महाराज। साथ में परिलक्षित हैं (बाएँ से) सर्वश्री अजीत विश्वास, नन्द कुमार लढ़ा, जुगलकिशोर जैथलिया, लाजपत राय, महावीर बजाज, सत्यनारायण मजुमदार एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी।

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर की १२५वीं जन्मजयन्ती (२००९ ई.) पर श्री जैथलिया द्वारा सम्पादित स्मारिका का लोकार्पण श्री तरुण विजय ने किया। मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री महावीर बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव, तरुण विजय, डॉ. सुधाकर भालेराव, केशवराव दीक्षित, जुगलकिशोर जैथलिया एवं लाजपतराय बिकट।

श्री डीडवाना नागरिक सभा

दीपावली प्रीति सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री जैथलिया। मंचस्थ हैं सर्वश्री नवल व्यास, श्रीमती मनोरमा देवी बांगड़, देवेन्द्र बांगड़, युनुस खान, मगनीराम पसारी, शंकरलाल परसावत, ओमप्रकाश मोदी एवं ईश्वर प्यावाला।

दीपावली प्रीति सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री जैथलिया। मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री सम्पत मानधन्या, नवल व्यास, अरुण प्रकाश मल्लावत, प्रशान्त बांगड़, युनुस खान एवं मगनीराम पसारी।

प्रीति सम्मेलन में मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री नवल व्यास, जुगलकिशोर जैथलिया, मगनीराम पसारी, वेणुगोपाल बांगड़, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, ईश्वर प्यावाला एवं अरुण प्रकाश मल्लावत।

प्रीति सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया। (बाएँ से) सर्वश्री सम्पत मानधन्या, अरुण प्रकाश मल्लावत, विश्वम्भर नेवर, श्रीकुमार बांगड़, मगनीराम पसारी एवं दिनेश बजाज।

भंवरलाल मल्लावत स्मृति व्याख्यानमाला, डीडवाना

वर्तमान संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द विषय पर व्याख्यानमाला वर्ष २००३ ई. के अवसर पर (बाएं से) परिलक्षित हैं मुख्य वक्ता डॉ. नरेन्द्र कोहली, महाकवि गुलाब खंडेलवाल, डॉ. पुरुषोत्तमलाल चतुर्वेदी, स्वामी संवित सोमगिरिजी, श्री जुगलकिशोर जैथलिया एवं स्वामी संवित् सुबोधगिरिजी।

भारतीय इतिहास : भारतीय दृष्टि विषय पर व्याख्यानमाला वर्ष २००४ ई. के अवसर पर श्री भंवरजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्री जैथलिया। मंच पर विराजमान हैं (बाएं से) सर्वश्री कपूरचन्द जैसला, डॉ. कमलकिशोर गोयन्का, वेणुगोपाल बांगड़, मुख्य वक्ता डॉ. मुरली मनोहर जोशी, डॉ. विमल अग्रवाल एवं युनुस खान।

युगद्रष्टा श्री गुरुजी विषय पर व्याख्यानमाला वर्ष २००६ ई. के कार्यक्रम में मंचस्थ हैं (बाएं से) सर्वश्री भंवरलाल कोठारी, डॉ. महेशचन्द्र शर्मा, मुख्य वक्ता मोहनरावजी भागवत, केदारनाथ साहनी, वेणुगोपाल बांगड़ एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

सामाजिक समरसता विषय पर व्याख्यानमाला २०१० ई. के कार्यक्रम में मंचस्थ हैं (बाएं से) विशिष्ट अतिथि श्री रामगोपाल मण्डा, श्रीमती शकुन्तला दानोदिया, मुख्य वक्ता श्री सुरेशजी (उपाख्य भैयाजी) जोशी, डॉ. मृदुला सिन्हा, श्री गुलाबचन्द कटारिया एवं श्री जैथलिया।

डीडवाना एवं डेगाना तथा विविध

पं. बच्छराज व्यास आदर्श विद्या मंदिर में प्रथम व्याख्यान माला वर्ष २००२ ई. के अवसर पर परिलक्षित हैं (बाएँ से) डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, श्री जैथलिया, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, डॉ. पी.एल. चतुर्वेदी एवं श्री कपूरचन्द बेताला।

डेगाना (राजस्थान) में डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव का सावरकर पर व्याख्यान आयोजित किया गया। मंच पर बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री जैथलिया, श्याम बिरला (जिलाध्यक्ष, विद्याभारती), डॉ. हरिन्द्र श्रीवास्तव एवं बंगलौर प्रवासी गौतम कोठारी।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय बालिका आवासीय विद्यालय, पावटा (डीडवाना) के कार्यक्रम में मंचस्थ हैं सुश्री अंजू सिंह, डॉ. मृदुला सिन्हा, प्रधानाचार्य श्री भँवरलाल खोलिया, श्री जुगलकिशोर जैथलिया एवं मुरलीलाल मुरब्बा प्रभृति।

भंवरलाल मल्लावत सेवाकेन्द्र कोलकाता के चिकित्सा शिविर को सम्बोधित करते हुए श्री जुगलजी (माइक पर)। अन्य मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री डॉ. मनमोहन लखानी, गणेश नारायण मुंशानिया, दिनेश बजाज, चम्पालाल जैन, चन्द्रकान्त सराफ, राजकुमार शर्मा।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

श्री जैथलिया के विशेष प्रयत्न से निर्मित श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के निजी भवन के उद्घाटन समारोह (१५ मई १९६७ ई.) में उद्घाटनकर्ता वैद्यगुरुदत्त, तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. मुन्नीलाल शर्मा एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

भवन के बाहर एक सामूहिक चित्र में गाँव के गणमान्य नागरिक एवं कार्यकारिणी के सदस्य। कुर्सी पर सामने बैठे हैं (बाएँ से) सर्वश्री भीमराज बैताला, मथुरालाल सारड़ा, कन्हैयालाल सारड़ा, डालमचन्द भंडारी एवं मांगीलाल बजाज। पीछे खड़े हैं – रामपाल जांगीड़, भीपाल चन्द भंडारी, जीवनमल बरमेचा, नन्दकिशोर सारड़ा, जैथलिया, बालाप्रसाद जोशी एवं गुलाब चन्द सारड़ा।

वसन्त पंचमी (१० फरवरी १९७० ई.) को पुस्तकालय कक्ष को १६ वरिष्ठ साहित्यकारों के तैल चित्र से सुसज्जित किया गया। समारोह में (बाएँ से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, बिशनाराम सेन, रामदेव सारड़ा, मोहनलाल बजाज एवं कन्हैयालाल सारड़ा प्रभृति।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

पुस्तकालय के १५वें वार्षिक उत्सव (१९७३ ई.) के समारोह में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का अभिनन्दन करते हुए पुस्तकालय के तत्कालीन अध्यक्ष श्री मांगीलाल बजाज। सर्वश्री बालाप्रसाद जोशी, जुगलकिशोर जैथलिया एवं मुनिचंद भंडारी भी परिलक्षित हैं।

पुस्तकालय द्वारा आयोजित सूर्यपंचशती (१९७९ ई.) में पधारी महादेवीजी एवं भवानीभाई सन्त निर्भयरामजी की बगीची के पास रेत के टीलों पर आनन्द बिखेरते हुए। साथ में हैं डॉ. रमासिंह, जुगलकिशोर जैथलिया, बालाप्रसाद जोशी एवं डॉ. रामजी सिंह (महादेवी के निजि सचिव)।

पुस्तकालय के रजत जयंती समारोह (१९८३ ई.) में मंचस्थ हैं (बाएँ से) श्रीमती जैनेन्द्र, श्री कन्हैयालाल सेठिया, श्री जैनेन्द्र जी, श्री मुनीचन्द भंडारी एवं श्री जैथलिया।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

वर्ष २००० ई. का सम्मान 'पाञ्चजन्य' साप्ताहिक के तत्कालीन सम्पादक एवं प्रखर राष्ट्रवादी लेखक श्री तरुण विजय को आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के हाथों प्रदान किया गया। चित्र में परिलक्षित है (बाएं से) सर्वश्री कपूरचन्द बेताला, जुगलकिशोर जैथलिया, तरुण विजय, शास्त्री जी, महावीर बजाज, रघुवीर सिंह कौशल, सुभाष महरिया एवं प्रेमसिंह चौधरी।

वर्ष २००१ ई० के सम्मान का ताम्रपत्र एवं चेक गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल श्री सुन्दरसिंह भंडारी से ग्रहण करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार गुलाब खंडेलवाल। चित्र में परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री भंवरलाल टाक, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. जगन्नाथ पुरोहित, महावीर प्रसाद बजाज, हरिशंकर भाभड़ा एवं प्रेमसिंह चौधरी।

वर्ष २००२ ई० का सम्मान पूर्वराज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री से ग्रहण करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रमानाथ त्रिपाठी (दिल्ली)। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री धानमल धारीवाल, अंजू सिंह, कपूरचंद बैताला, महावीर प्रसाद बजाज, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं प्रेमसिंह चौधरी।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

वर्ष २००४ ई० के सम्मान से प्रेमचन्द साहित्य के ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. कमल किशोर गोयनका (दिल्ली) को सम्मानित करते हुए तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री कपूरचन्द बेताला, जुगलकिशोर जैथलिया, मदनलाल सैनी एवं राजस्थान के तत्कालीन यातायात मंत्री श्री युनुस खान।

२००५ ई० में कर्नाटक के तत्कालीन राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी से सम्मान ग्रहण करते हुए गुजराती एवं हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० अम्बाशंकर नागर। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री कपूरचन्द बेताला, जुगलकिशोर जैथलिया, अंजू सिंह, युनुस खान, डॉ. महेश शर्मा, तरुण विजय, श्रीमती नागर, महावीर बजाज एवं श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास।

वर्ष २००६ ई. के सम्मान से वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद् डॉ. देव कोठारी को सम्मानित करते हुए सिक्किम एवं गोवा के पूर्व राज्यपाल श्री केदारनाथ साहनी। चित्र में (बाएं से) परिलक्षित हैं सर्वश्री कपूरचन्द बेताला, प्रकाशचन्द बेताला, डॉ. महेशचन्द्र शर्मा, मोहनरावजी भागवत, श्रीमती साहनी, जुगलकिशोर जैथलिया, अंजू सिंह एवं महावीर बजाज।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

वर्ष २००७ ई० का सम्मान 'राष्ट्रधर्म' मासिक के सम्पादक श्री आनन्द मिश्र 'अभय' को दिया गया। अस्वस्थता के कारण उनके प्रतिनिधि प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री विमल लाठ ने श्रीमती सुमित्रा सिंह से सम्मान का मानपत्र ग्रहण किया। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) अंजू सिंह, कपूरचन्द बैताला, चिन्तक श्रीमती इन्दुमति काटदरे (अहमदाबाद), समाजसेवी सुशील ओझा, यूनुस खान, युगलकिशोर जैथलिया एवं महावीर बजाज।

वरिष्ठ साहित्यकार अहमदाबाद निवासी डॉ० किशोर काबरा को १९९३ ई० का सम्मान प्रदान करते हुए तत्कालीन केन्द्रीय संचार राज्यमंत्री श्री तपन सिकदर। चित्र में (बाएं से) परिलक्षित हैं सर्वश्री महावीर बजाज, प्रेमसिंह चौधरी, डॉ० किशोर काबरा, युगलकिशोर जैथलिया, तपन सिकदर एवं कोलकाता के समाजसेवी उद्योगपति पी.डी. चितलांगिया।

श्री मदनदासजी से पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान २००९ ई. का मानपत्र ग्रहण करते हुए वरिष्ठ चिन्तक एवं लेखक डॉ. गुलाब कोठारी। चित्र में बाएं से परिलक्षित हैं सर्वश्री राजेन्द्र माथुर एडवोकेट (डीडवाना), युगलकिशोर जैथलिया, डॉ. नरेन्द्र कोहली, मदनदासजी, डॉ. गुलाब कोठारी, भंवरलाल नवल एवं डॉ. श्रीलाल जोशी (प्रथम कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान से सम्मानित)।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया से वर्ष २०१० ई० का पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्मान का मानपत्र ग्रहण करती हुई सुप्रसिद्ध लेखिका डॉ. मृदुला सिन्हा। बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, सुरेशजी (भैयाजी) जोशी, डॉ. किरण चन्द नाहटा (द्वितीय मायड़ भाषा सम्मान से सम्मानित) एवं राजस्थानी भाषा एवं साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. पृथ्वीराज रत्नू।

पूर्व मंत्री श्री ललित किशोर चतुर्वेदी से वर्ष २०११ ई. का पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान ग्रहण करते हुए डॉ. तारादत्त निर्विरोध। बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री कपूरचंद बेताला, डॉ. ओम कागद, स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज, हरीश कुमावत एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज से वर्ष २०११ ई. का महाकवि कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान ग्रहण करते हुए डॉ. ओम कागद। बाएँ से परिलक्षित हैं सर्वश्री पूर्व मंत्री ललित किशोर चतुर्वेदी, अंजू सिंह, जुगलकिशोर जैथलिया, हरीश कुमावत, तारादत्त निर्विरोध।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के द्वितीय तल में नवनिर्मित पं. बच्छराज व्यास स्मृति कक्ष का २२ अक्टूबर २००२ को उद्घाटन करते हुए उत्तरप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। साथ में परिलक्षित हैं श्री जुगलकिशोर जैथलिया (बाएं) एवं डॉ. रमानाथ त्रिपाठी तथा महावीर प्रसाद बजाज (दाहिने)।

वर्ष २०११ ई. में श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के पं. बच्छराज व्यास स्मृति कक्ष में लगाये गये १४ राजस्थानी साहित्यकारों के तैल-चित्रों का अवलोकन करते हुए बाएं से सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, पूर्व मंत्री ललित किशोर चतुर्वेदी, गोविन्द जैथलिया, स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज एवं प्रेमसिंह चौधरी।

प्रताप जयंती के अवसर पर श्री छोटीखाटू नागरिक परिषद कोलकाता द्वारा प्रकाशित सदस्य डायरेक्टरी का लोकार्पण के उपरान्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ श्री जैथलिया। अन्य परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री श्यामसुन्दर मंत्री, संजय भंडारी, विमल भंडारी, दशरथ चन्द भंडारी, गुलाबचन्द मुंधड़ा, महावीर पारीवाल, नारायण प्रसाद मुंधड़ा, महावीर बजाज एवं विद्यासागर मंत्री प्रभृति।

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय

१९९५ ई० के सम्मान का ताम्रपत्र कवि एवं गजलकार श्री अब्दुल गफ्फार (जयपुर) को प्रदान करते हुए तत्कालीन काबीना मंत्री श्री भंवरलाल शर्मा। चित्र में बांई ओर खड़े हैं श्री बालाप्रसाद जोशी एवं दाहिनी ओर हैं श्री जैथलिया।

१९९६ ई० का सम्मान कोटा निवासी सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. दयाकृष्ण विजय (ताम्रपत्र हाथ में) को आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के हाथों प्रदान किया गया। चित्र में अन्य परिलक्षित हैं बाएं से सर्वश्री कपूरचंद बेताला, महावीर बजाज, सुपारस चन्द बेताला, कवि बलवीर सिंह करुण एवं श्री जैथलिया। पीछे खड़े हैं श्री रिखबचन्द धारीवाल, श्री छोटूलाल वैष्णव, श्री भंवरलाल टाक एवं श्री नारायण प्रसाद मूंधड़ा।

२७ अगस्त २०१२ ई. को श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की कार्यसमिति द्वारा श्री जुगलकिशोर जैथलिया के ७५ वर्ष पूर्ति के उपलक्ष में स्थानीय श्मशान भूमि में ७५ वृक्ष रोपण का निर्णय लिया गया। योजना की शुरुआत करते हुए पुस्तकालय के अध्यक्ष कपूरचंद बेताला, शेराराम चौधरी, छोटूलाल वैष्णव एवं प्रेमसिंह चौधरी के साथ ग्रामवासी।

साठ के दशक में विश्व हिन्दू परिषद, कलकत्ता शाखा के समारोह में परिलक्षित हैं– (बाएं से) सर्वश्री पं. चण्डीप्रसाद शास्त्री, पं. भगवान दत्त जोशी, शिवराम शंकर (उर्फ दादा आप्टे), सोहनलाल दूगड़, जुगलकिशोर जैथलिया (कलकत्ता शाखा के संयोजक) एवं अन्य।

वर्ष १९८४ ई. में मुनिश्री नगराजजी द्वारा निर्मित राष्ट्रीय एकता समिति के कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए श्री जैथलिया। मंचस्थ हैं मुनिश्री नगराजजी एवं शिष्यवृन्द, प. बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल पंडित उमाशंकर दीक्षित, डॉ. हीरालाल चोपड़ा एवं महाकवि कन्हैयालाल सेठिया प्रभृति।

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा गंगासागर मेले के अवसर पर लगाये गये शिविर का उद्घाटन करते हुए श्री जैथलिया। मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री मोहनलाल पारीक, बनवारीलाल सोती, त्रिलोकचन्द डागा, मदनलाल शर्मा एवं अन्य।

विविध

क्षत्रिय समाज द्वारा गारुलिया (पं. बंगाल) में महाराणा प्रताप की मूर्ति के उद्घाटन समारोह में पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर जी एवं क्षत्रिय समाज के अन्य पदाधिकारियों के साथ राजस्थान परिषद के प्रतिनिधि के नाते उपस्थित हैं उपाध्यक्ष श्री जैथलिया एवं अध्यक्ष श्री शार्दूल सिंह जैन।

महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट द्वारा महाकवि गुलाब खंडेलवाल के एकल काव्य पाठ के आयोजन में श्री गुलाबजी का परिचय देते हुए श्री जैथलिया। बाएं से मंचस्थ हैं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, श्री गुलाब खंडेलवाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा देवी एवं श्री रंगलाल सुराना (जैन)।

श्री कृष्ण गौशाला सोसाइटी, (रामगढ़) द्वारा कोलकाता में आयोजित स्वर्ण जयन्ती समारोह में वक्तव्य रखते हुए श्री जैथलिया। मंचस्थ हैं (बाएं से) सर्वश्री श्याम सुन्दर केजड़ीवाल, एस. के. पोद्दार, सज्जन भजनका एवं रवि पोद्दार।

विविध

इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज की वार्षिक सभा में प्रधान वक्ता के रूप में हिन्दी में अपना वक्तव्य रखते हुए श्री जैथलिया। उनके दाहिनी ओर हैं श्रीमती ममता बिनानी, अध्यक्ष श्री अशोक पारीक एवं सचिव श्री अंजन कुमार राय।

कलकत्ता ट्रेडर्स एसोशियेसन की वार्षिक सभा में वक्तव्य रखते हुए श्री जैथलिया। बाईं से परिलक्षित हैं पत्रकार श्री तारकेश्वर मिश्र एवं अध्यक्ष श्री चाँदमल अभानी।

नागौर नागरिक संघ के वार्षिक समारोह में वक्तव्य रखते हुए श्री जैथलिया। उनके दाहिनी ओर से परिलक्षित हैं श्रीमती मीनादेवी पुरोहित (पार्षद), पूर्व विधायक श्री परिमल विश्वास एवं वरिष्ठ समाजसेवी श्री रामदेव काकड़ा।

विविध

भारत विकास परिषद के समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री जैथलिया। मंचस्थ हैं (बाएं से) सर्वश्री विश्वम्भर नेवर, साधुराम बंसल एवं अन्य।

माहेश्वरी पुस्तकालय के हिन्दी दिवस समारोह में मंचस्थ हैं सर्वश्री मोतीलाल कासट (उपाध्यक्ष), छपते-छपते एवं ताजा टी.वी. के निदेशक विश्वम्भर नेवर, श्री जैथलिया एवं राजस्थान पत्रिका के स्थानीय सम्पादक राजीव हर्ष।

श्रीमती सुमित्रा सिंह (तत्कालीन अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा) के कलकत्ता आगमन पर उनके स्वागत समारोह में बाएं से परिलक्षित हैं सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, मदनलाल जोशी, सूर्यकरण सारस्वत, श्रीमती सुमित्रा सिंह, जयदीप भट्टाचार्य एवं सुशील ओझा प्रभृति।

विविध

जौनपुर नागरिक संघ के गंगासागर मेला आतिथ्य शिविर में आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी के साथ मंचस्थ हैं श्री जैथलिया, सचिव श्री लालमणि मिश्र (माइक पर) एवं अन्य।

श्री श्याम सुन्दर आचार्य, तत्कालीन सम्पादक जनसत्ता (कोलकाता) के सेवा-निवृत होने पर राजस्थान परिषद एवं अन्य प्रमुख संस्थाओं द्वारा भव्य विदाई समारोह में सम्मान स्वरूप रामदरबार का चित्र भेंट देते हुए आचार्य कल्याणमल लोढ़ा। चित्र में परिलक्षित हैं श्रीमती आचार्य, महावीर प्रसाद नारसरिया एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

श्री हरि सत्संग समिति के कथा समारोह में सन्त श्री किशोरजी व्यास का स्वागत करते हुए श्री जैथलिया। पार्श्व में हैं श्री पी.डी. चितलांगिया एवं उनके परिवार के सदस्यगण।

हलवासिया ट्रस्ट द्वारा वरिष्ठ समाजसेवी पुरुषोत्तम दास हलवासिया एवं श्यामसुन्दर हलवासिया की स्मृति में दो खण्डों में प्रकाशित स्मृतिग्रन्थ 'भारतायन' के लोकार्पण समारोह में वक्तव्य रखते हुए श्री जैथलिया। ट्रस्ट के पदाधिकारीगण, ग्रन्थ सम्पादक डॉ. वासुदेव पोद्दार, सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व प्रधान न्यायाधीश श्री रमेशचन्द्र लाहोटी, प्रो. रमारंजन मुखर्जी एवं अन्य।

हिन्दी सांध्य दैनिक राष्ट्रीय महानगर द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन के समारोह में मंचस्थ हैं (बाएँ से) श्री बनवारी लाल सोती, श्रीमती सुनीता झंवर (पार्षदा), श्रीमती मीना देवी पुरोहित (पार्षदा), सर्वश्री सज्जन कुमार बंसल, चिरंजीलाल अग्रवाल एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

श्रीमती मीना देवी पुरोहित (पूर्व उपमहापौर एवं पार्षदा) द्वारा अपने स्वर्गीय पति की स्मृति में 'राजेन्द्र पुरोहित मेमोरियल फाउन्डेशन' के रक्तदान शिविर को संबोधित करते हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया। मंच पर परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री संजय हरलालका, प्रकाश चंडालिया, बनवारीलाल सोती एवं सुनीता झंवर (पार्षदा)।

विविध

डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी (अध्यक्ष श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय) की कृति 'हिन्दी उपन्यास और अमृत लाल नागर' के लखनऊ राजभवन में राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री द्वारा लोकार्पण के अवसर पर मंचस्थ हैं (बाएँ से) श्री जुगलकिशोर जैथलिया, कथाकार श्रीलाल शुक्ल, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी।

राजस्थानी एवं हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार स्व. भगवती प्रसाद चौधरी स्मृति ग्रन्थ लोकार्पण समारोह (२०११ ई.) में उपस्थित हैं सर्वश्री विश्वम्भर नेवर, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी एवं चौधरी जी के पुत्र श्री विमल कुमार चौधरी।

२५-२६ फरवरी २०१२ ई. को कोलकाता में आयोजित 'संस्कृत भारती' के युवा कार्यकर्ता सम्मेलन एवं प्रशिक्षण शिविर में वक्तव्य रखते हुए श्री जैथलिया। पास बैठे हैं श्री च.मू. कृष्ण शास्त्री।

विविध

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती हास्पिटल एवं रिसर्च इन्स्टीट्यूट के वार्षिक समारोह में मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, बी.डी. सुरेका, नारायणप्रसाद माधोगढ़िया, बनवारीलाल सोती एवं अन्य।

राजस्थान ब्राह्मण संघ के उत्सव में वक्तव्य रखते हुए श्री जैथलिया। बाएँ से मंचस्थ हैं सर्वश्री सरदारमल कांकरिया, पुष्करलाल केडिया, पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी एवं बनवारीलाल सोती।

पं. अक्षयचन्द्र शर्मा अभिनन्दन समारोह में मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, शार्दूल सिंह जैन, पं. अक्षयचन्द्र शर्मा, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, रतीलाल शाह, माँ अर्चनापुरी एवं स्वामी मृगानन्द जी महाराज।

विविध

सालासरधाम में 'डीडवाना जन सेवालय' के उद्घाटन के अवसर पर स्वागत करती हुई स्वागताध्यक्ष श्रीमती अलका बांगड़। मंचस्थ हैं (बाएं से) पूज्यस्वामी राघवाचार्यजी महाराज (रेवासा पीठ), आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री एवं जैथलियाजी।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के ११०वें जन्मोत्सव (६ जुलाई २०११ ई.) पर मंच पर परिलक्षित हैं (बाएं से) सर्वश्री सुकुमार बनर्जी, डॉ. हरिश्चन्द्र (दिल्ली), राजनाथ सिंह, केदारनाथ साहनी, जुगलकिशोर जैथलिया एवं संगठन मंत्री श्री मिहिर साहा।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के १११वें जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम (६ जुलाई २०१२) में मंचस्थ हैं (दाहिने से) सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, राहुल सिन्हा (प्रान्तीय अध्यक्ष), सैयद शाहनवाज हुसैन सांसद एवं अन्य।

विविध

भारत विकास परिषद (प.बंगाल) के राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता में मंचस्थ हैं (बाएं से) डॉ. आर. भट्टाचार्य (अध्यक्ष प.बंगाल शाखा), सर्वश्री नन्दलाल सिंघानिया, नन्दलाल रूंगटा, ईश्वरीप्रसाद टाँटिया, जुगलकिशोर जैथलिया एवं पुरुषोत्तमदास भूत।

भारत विकास परिषद (प.बंगाल) के राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता में मंचस्थ हैं श्री दीपक बरठाकुर (अ.भा.उपाध्यक्ष), न्यायमूर्ति श्री श्यामल सेन (पूर्व मुख्यन्यायाधीश इलाहाबाद एवं कोलकाता हाइकोर्ट), श्री नन्दलाल सिंघानिया (क्षेत्रीय सचिव, संस्कार) एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

श्री मुरारीलाल डालमिया द्वारा लिखित काव्य ग्रन्थ 'प्रेम-पुलक' के लोकार्पण समारोह में (बाएं से) सर्वश्री विश्वम्भर नेवर, रामअवतार गुप्त (तत्कालीन सम्पादक 'सन्मार्ग'), आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, मुरारीलाल डालमिया एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

विविध

राष्ट्रीय सिख संगत् प. बंगाल एवं गुरुद्वारा छोटा सिख संगत के मिलन समारोह में वक्तव्य रखते हुए श्री जैथलिया, डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री (हिन्दुस्थान समाचार) एवं श्री सतीश कपूर (पूर्व अध्यक्ष, पंजाबी बिरादरी)।

२१ फरवरी २०११ ई. को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजित गोष्ठी में राजस्थानी भाषा की शीघ्र संवैधानिक मान्यता हेतु प्रस्ताव रखते हुए श्री रतन शाह। अन्य मंचस्थ हैं (बाएँ से) सर्वश्री विशम्भर नेवर (वरिष्ठ पत्रकार), उद्योगपति घनश्याम प्रसाद शोभासरिया एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

जालान पुस्तकालय द्वारा आयोजित तुलसी जयन्ती के कार्यक्रम में धर्मयुग के सम्पादक डॉ. धर्मवीर भारती एवं श्रीमती पुष्पा भारती (मध्य में) के साथ हैं (बाएँ से) सर्वश्री विमल लाठ, जुगलकिशोर जैथलिया, महावीर प्रसाद बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री।

विविध

तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निवास पर उन्हें श्री बड़ाबाज़ार कुमारसभा पुस्तकालय में सम्पन्न हुए उनके 'एकल काव्यपाठ' की कैसेट भेंट कर उनका अभिनन्दन करते हुए आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री। पास खड़े हैं श्री जैथलिया एवं श्री सन्तोष गंगवाल।

वात्सल्य ग्राम की शाखा कोलकाता में स्थापित करने हेतु आयोजित कार्यक्रम में साध्वी ऋतंभरा का अभिनन्दन करते हुए श्री जैथलिया। मंच पर परिलक्षित हैं श्री बसन्त कुमार बिड़ला एवं डॉ. सरला बिड़ला।

पं. कमलेश त्रिपाठी एवं डॉ. मुरलीमनोहर जोशी के साथ श्री जैथलिया। कमलेशजी को कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा १९९८ ई. में डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान से विभूषित किया गया।

ताजा टी.वी. के स्वाधीनता दिवस-२०१२ के कार्यक्रम में मंचस्थ हैं बाएं से श्री दिनेश वाजपेयी (प. बंगाल पुलिस के पूर्व महानिदेशक), श्री जुगलकिशोर जैथलिया, ताजा टी.वी. के निदेशक श्री विश्वम्भर नेवर एवं प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य श्री प्रभात तिवारी।

विविध

कलकत्ता के राजभवन में आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री (तत्कालीन राज्यपाल उत्तर प्रदेश) के साथ भेंट करते हुए (सोफा पर) सर्वश्री गोविन्द नारायण काकड़ा, जैथलिया एवं कृष्ण स्वरूप दीक्षित। पीछे खड़े हैं– सर्वश्री महावीर बजाज, अरुण सोनी, विधुशेखर शास्त्री, अरुण प्रकाश मल्लावत, उषा द्विवेदी एवं नन्दकुमार लढ़ा।

महाकवि श्यामनारायण पाण्डेय के साथ श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के कक्ष में (बाएं से) सर्वश्री दुर्गा प्रसाद नाथानी, श्याम नारायण पाण्डेय, राधाकृष्ण नेवटिया एवं जुगलकिशोर जैथलिया।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज का स्वागत करते हुए सोसाइटी के महामंत्री श्री गोविन्द राम ढाणेवाला एवं श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

डीडवाना के कथा समारोह में स्वामी गोविन्द देवजी से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

विविध

स्वदेशी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के आयोजन में पूर्व वित्तमंत्री श्री यशवन्त सिंहा के साथ सर्वश्री धनपतराम अग्रवाल, आर.के. व्यास, संजय बुधिया, गोविन्द जैथलिया एवं जुगलकिशोर जैथलिया प्रभृति।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. कैलाश सत्यार्थी (बाएँ) एवं डॉ. श्रीनिवास शर्मा (दाएँ) के साथ श्री जैथलिया।

दक्षिण भ्रमण के दौरान कन्याकुमारी स्थित विवेकानन्द शिला स्मारक एवं हिन्द महासागर के तट पर श्री जुगलकिशोर जैथलिया अपने मित्रों श्री मोहनलाल पारीक (बाएँ) एवं श्री गोविन्द नारायण बजकड़ा (दाएँ) के साथ।

खण्ड-४

विशिष्टजनों की नजर में श्री जैथलिया

श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया : अटूट लगन और अश्रांत सेवा-भावना के प्रतीक एक समर्पित राष्ट्र सेवी

✍ गुलाब खण्डेलवाल
ओहायो (अमेरिका)

भारतीय संस्कृति, हिन्दू धर्म तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी पर आज चारों ओर से जो प्रछन्न प्रहार हो रहे हैं उसका बोध जिन्हें बेचैन कर गया है और इसके प्रतिकार के लिए जिन्होंने अपने जीवन को पूर्णतः समर्पित कर दिया है उनकी अगली पंक्ति में जैथलियाजी एक कुशल जन-नायक के समान दिखाई देंगे, उनकी राजनीति भी उनकी सेवा का ही अंग है। उसमें व्यक्तिगत स्वार्थ की बू-बास भी नहीं है। समाज में अच्छे साहित्य का प्रचार हो, जो लोग किसी प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक सेवा-कार्य में लगे हों उनकी सुध ली जाय, पुस्तकालयों द्वारा साहित्य और समाज की सेवा की जाय, आदि ऐसे ही कार्य हैं जिनमें जैथलियाजी निःस्वार्थ भाव से संलग्न रहते हैं, वे राजस्थान में छोटीखाटू (जिला नागौर) के मूल निवासी हैं और कोलकाता में रहनेवाले लाखों मारवाड़ियों के समान उन्हें अपनी कर्मभूमि बंगाल से भी प्रेम है। दोनों प्रदेशों की संस्कृति और धर्म एक हैं और दोनों के जीवन-मूल्यों में भी समानता है, इस तथ्य का बोध कराने के लिये राजस्थान परिषद के तत्त्वावधान में एक प्रमुख स्थान पर कोलकाता में महाराणा प्रताप की मूर्ति की स्थापना एक ऐसा ही कार्य है जिसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है। मारवाड़ी समाज की यह विशेषता है की वह अपने बीच के निःस्वार्थ सेवा में लगे व्यक्तियों को आर्थिक सहयोग देने में कभी पीछे नहीं रहता। जैथलियाजी को उसने भलीभाँति पहचान रखा है इसलिए उनका कार्य पैसे के अभाव से कभी नहीं रुकता। मूर्ति-स्थापना के कार्य में जितनी धनराशि लगी वह सहज ही एकत्र हो गयी और आज कोलकता में एक प्रमुख स्थान पर स्थापित वह मूर्ति राजस्थान और बंगाल के मिलन की प्रतीक ही नहीं, जैथलियाजी की सेवा-भावना का भी प्रतीक बन गयी है। अपनी कर्मभूमि बंगाल के समान जैथलियाजी अपनी जन्मभूमि को भी नहीं भूले हैं।

साहित्य-सेवा की भावना से, उन्होंने अपने गाँव छोटीखाटू में गाँववालों के सहयोग से एक पुस्तकालय स्थापित किया है। निजी दो तल्ले भवन मे स्थापित इस पुस्तकालय में जितनी पुस्तकें हैं और उनकी जैसी सुन्दर व्यवस्था है वह बहुत बड़ी-बड़ी रकमें खर्च करने वाले शहरों के बड़े पुस्तकालयों में भी दुर्लभ है। मैं उस पुस्तकालय के वार्षिक आयोजन में भाग लेने के लिए दो बार जैथलियाजी के गाँव जा चुका हूँ। जैथलियाजी पुस्तकालय की ओर से प्रति वर्ष हिन्दी के किसी साहित्यकार को चुनकर इक्कीस हजार रुपयों की राशि पुरस्कार स्वरूप भेंट करते हैं। विगत ४ वर्षों से राजस्थानी साहित्यकारों को भी इसी भांति सम्मानित किया जा रहा है। उस अवसर पर अन्य साहित्यिक भी आमंत्रित किये जाते हैं और उस छोटे-से गाँव में जैसा सुन्दर साहित्यिक माहौल बन जाता है वह शब्दों में नहीं बताया जा सकता। मैं एक बार पुरस्कार प्राप्तकर्ता के रूप में और एक बार विशुद्ध साहित्यिक के नाते पुस्तकालय के आयोजन में सम्मिलित हो चुका हूँ। इस आयोजन के लिए जैथलियाजी कोलकाता से पुरस्कार-राशि की व्यवस्था करने के अतिरिक्त एक सप्ताह पूर्व गाँव में जाकर आयोजन की तैयारी में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

पुस्तकालय विद्यालयों के समान कोई दुधारू गाय तो है नहीं जिसके दूध से उसके चारे की भी व्यवस्था हो जाय। इसके लिए या तो बाहर से कोई स्थाई आय का स्रोत हो या निरन्तर चंदे द्वारा खर्च की व्यवस्था की जाय, तभी पुस्तकालय चालू रह सकता है। जैथलियाजी के प्रति लोगों की इतनी गहरी निष्ठा है कि उन्हें अपने सेवा के कार्यों के लिये रुपये देनेवालों की कमी नहीं रहती। फिर भी उन्हें निरन्तर गतिशील तो रहना होता ही है। उन्हें अपने गाँव के पुस्तकालय के लिए ही नहीं कोलकता के पुस्तकालय की भी सँभाल करनी होती है। परन्तु यह तो जैथलिया जी के अनेक कार्यों में से एक कार्य है। पिछले दिनों अपने कोलकाता-निवास के समय मुझे श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के विवेकानन्द सेवा सम्मान के वार्षिक आयोजन में भी जैथलियाजी ने आमंत्रित किया था। उसमें उत्तर बंगाल के सुदूर ग्रामवासियों के बीच सेवाकार्य में निमग्न एक देश-सेवक को इक्यावन हजार की राशि से पुरस्कृत करना था। वहाँ छपे हुए परिपत्र को देखकर मुझे यह ज्ञात हुआ कि इस पुरस्कार की राशि पिछले बीस-पचीस वर्षों से ऐसे ही सेवाकार्य में लगे हुए देश सेवक को दी जाती है। इसमें १०-१५ वर्ष पूर्व श्री अन्ना हजारे जी का भी सम्मान किया गया था तथा यह राशि भेंट की गयी थी। हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के सेवकों के लिए न तो योरप और अमेरिका से क्रिश्चियन मिशिनरियों के समान आर्थिक सहायता ही मिलती है न मध्यपूर्व से मदरसों के समान धन ही उपलब्ध होता है। उनकी सुध तो जैथलियाजी जैसे समाज सेवक ही लेते हैं।

स्वामी विवेकानन्द की १२५वीं जन्मशती पर प्रवर्तित यह सम्मान सर्वप्रथम नागालैण्ड

की संस्कृति रक्षक रानी गाईदिंल्यु को १९८७ ई. में प्रदान किया गया था। बाद की सूची में एक से बढ़कर एक नाम विभिन्न प्रदेशों के सेवा एवं धर्म समर्पित कार्यकर्त्ताओं के हैं जिनमें मेघालय के एच.एण्डरसन मावरी, उड़ीसा के स्वामी लक्ष्मणानन्दजी, मध्यप्रदेश के बालासाहब देशपाण्डे, कर्नाटक के डॉ. एच. सुदर्शन, गुजरात के डॉ. अनिल देसाई, बिहार के श्री अशोक भगत, मध्यप्रदेश के दामोदर गणेश बापट (कुष्ठ रोगियों के कल्याण हेतु समर्पित) राजस्थान के राजेन्द्र सिंह, गुजरात के स्वामी असीमानन्द, उत्तराखंड के डॉ. नित्यानन्द एवं आशीष गौतम तथा केरल के एम.ए. कृष्णन तथा बंगाल के दक्षिणेश्वर आद्यापीठ के लोकसेवा में समर्पित ब्रह्मचारी श्री मुरालभाई प्रभृति हैं। लोक सेवकों के अलावा प्रज्ञापुरुषों की भी ऐसी ही सम्मान श्रंखला 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' के नाम से विगत २२ वर्षों से निरन्तर चल रही है जिसमें देशभर से प्रतिवर्ष मौलिक चिन्तकों को सम्मानित किया जाता है।

इन कार्यों के बीच यदि मैं जैथलियाजी द्वारा प्रकाशित साहित्य की चर्चा न करूँ तो यह लेख अधूरा ही रह जायगा। महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के विराट साहित्य को श्री जैथलियाजी ने चार खंडों में सम्पादित कर अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की चुनी हुई रचनायें भी दो खंडों में आपके सम्पादन में प्रकाशित हो चुकी है, और खंड भी प्रकाशनाधीन हैं। दर्जनों महत्वपूर्ण स्मारिकाओं का उन्होंने सम्पादन किया है एवं कई अन्य विशिष्ट ग्रन्थों के सह-सम्पादक रहे हैं। गीता पर प. विष्णुकान्तजी द्वारा दिए गए प्रवचनों को, उनके मरणोपरान्त, तीन खण्डों में प्रकाशित करने की व्यवस्था करके उन्होंने समाज और साहित्य की जो सेवा की है वह कभी भुलाई नहीं जा सकेगी और समाज इसके लिए उनका चिर-ऋणी रहेगा।

ऐसे देश और समाज के सेवक का समाज जितना भी सम्मान करे, कम है। मैं भी इस पुनीत कार्य में अपना हार्दिक सहयोग व्यक्त करता हूँ। सुदूर अमेरिका में रहने के कारण मेरा शारीरिक रूप से उपस्थित होना तो अत्यंत इच्छा रखते हुए भी शायद ही हो सके, पर मैं हृदय से अवश्य उनके सम्मान समारोह में उपस्थित रहूँगा। ●

भारत में सम्पर्क : ५६ जय अपार्टमेंट, १०२ आई.पी. एक्सटेंशन, पटपरगंज, दिल्ली-११००९२
USA Contact : 3477 Medina, OHIO - 44256 (USA), Ph.: 330-7228886

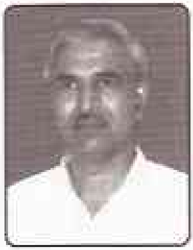

थां पर म्हे बळिहार

✍ डॉ. मदन सैनी

दो अक्टूबर रो दिवस, जग में बाजै जोर।
गांधी-शास्त्री रै जियां, जलम्या जुगलकिशोर।।

कंवर कन्हैयालाल रा, मां पुष्पा रा पूत।
कुळ में कूख उजाळता, अवतरिया अवधूत।।

नानेरा रै गाम रो, निम्बीजोधा नाम।
जैथलिया जलम्या जठै, ज्यूं खाटू रा स्याम।।

गट्टाणी परिवार में, उमड्यो घणो उमाव।
मैनादेवी सूं मंड्यो, बोरावड़ में ब्याव।।

डीडवाणै पढ परा, कर्‌यो कलकत्ता वास।
ले डिगरी कानून री, करी वकालत खास।।

हिंद गौरव जाग्रत हुयो, संघ स्यूं स्वाभिमान।
जलमभोम नैं जुगलजी, थां पर गरब-गुमान।।

संपादक-कौशल सिरै, सिरै ही सिरजणहार।
पोथ्यां रा थे पारखी, थां पर म्हे बळिहार।।

आखर अलख जगावियो, पोथ्यां सूं कर प्रेम।
स्वाध्याय रैयो सदा, जीवण रो नितनेम।।

पोथीखाना थरपिया, खाटू मांही खास।
संगठणां रा सारथी, थांरो थिर इतिहास।।

मान-सम्मान मोकळा, कीरत पर कुरबाण।
पुरस्कार ओछा पड्या, थारै जस परवाण।।

इमरत-उच्छब आपरो, चाव घणो चहुंओर।
घणैमान जुग-जुग जिओ, जग में जुगलकिशोर।। ●

सम्पर्क : अनाथालय रै लारै, विवेक नगर, बीकानेर-३३४००१ (राज.), मो.: ०७५९७०५५१५०

पटु प्रबन्धक श्री जुगलकिशोर जैथलिया

✍ नरेन्द्र कोहली

समय और अवस्था के साथ बहुत कुछ भूल गया हूँ किन्तु यह नहीं भूला हूं कि जुगल जी दिल्ली में हमारे घर पहली बार कब आए थे। ...यह वह समय था, जब 'अभ्युदय' का पहला खंड 'दीक्षा' प्रकाशित हो चुका था और दूसरा खंड 'अवसर' या तो प्रकाशित हो गया था या प्रकाशित होने वाला था। अनुमान लगाएँ तो सन् १९७६-७७ ई. का समय रहा होगा। मैं जितनी भी रामकथा लिख चुका था, उससे बहुत उत्सग्रहित था। उसकी चर्चा हो रही थी। ऐसे में जुगल जी कहीं से मेरा पता ठिकाना खोज कर ३६२, ग्रेटर कैलाश-१, में आ पहुंचे थे।

अब यह स्मरण नहीं है कि उन्होंने किन शब्दों में अपना परिचय दिया और किन शब्दों में मुझे कोलकाता आने का निमंत्रण दिया। बस इतना ही स्मरण है कि उन्होंने रामकथा पर व्याख्यान देने के लिए कोलकाता आने का निमंत्रण दिया। तब तक दो-चार जगहों पर बोल भी चुका था; किंतु मेरे लिए यह निमंत्रण पर्याप्त उत्साहवर्द्धक था। कुछ-कुछ स्मरण आता है कि जुगल जी ने जानना चाहा था कि मेरी और क्या-क्या अपेक्षाएं होंगी। मेरी अपेक्षाएं तो आज भी वैसी नहीं हैं; उस समय तो क्या होतीं। आरंभ में तो मैं समझ ही नहीं पाया कि वे क्या जानना चाह रहे हैं। बस आने-जाने का व्यय, रहने का स्थान और खान-पान। मुझे पूरा विश्वास है कि मैंने जुगल जी से ऐसा ही कुछ कहा होगा। पता नहीं यह आग्रह मेरा था अथवा उनकी योजना थी कि प्रायः सप्ताह भर कोलकाता रुकने का कार्यक्रम बन गया।

कोलकाता जाने से पहले मेरा सारा संपर्क जुगल जी से ही रहा, जो पर्याप्त सुखद था। कोलकाता पहुँचने पर न वे स्टेशन पर मिले और न ही मेरे डेरे पर। मुझे कुछ आश्चर्य भी हुआ कि जो व्यक्ति इतने उत्साह से यह सारा आयोजन कर रहा था, वह अपने नगर में सामने क्यों नहीं आ रहा। जब उत्सुकता बढ़ गई तो पूछ ही लिया। पता चला कि उनका बड़ा पुत्र गंभीर रूप से अस्वस्थ था और अस्पताल में था। विस्तार से बातें अब स्मरण नहीं हैं; किन्तु इतना स्मरण है कि जुगल जी काफी कष्ट में थे। अपने पुत्र के गंभीर रूप से अस्वस्थ होने पर भी वे अपनी मित्रमंडली के माध्यम से सभी दायित्वों का निर्वाह करते जा रहे थे।

कोलकाता और वहाँ के मित्रों से यह मेरा पहला ही परिचय था। किसी के घर पर प्रातः नाश्ते पर भी बारह पंद्रह व्यक्ति एकत्रित हो जाते थे और गोष्ठी ही नहीं, मेरा भाषण ही हो जाता था। स्मरण नहीं है कि कहाँ-कहाँ बोला, किंतु दिन में तीन भाषण तो हो ही जाते थे। बोलना तो रामकथा पर ही था फिर भी प्रयत्न करता था कि विषय कुछ बदल लिया जाए। जहाँ तक मेरा विचार है, जुगल जी प्रत्येक अवसर पर उपस्थित रहते थे। अभी परिचय घनिष्ठ नहीं था, इसलिए उनके व्यक्तित्व और परिवार संबंधी अनेक जिज्ञासाएं मन में ही रह गईं। आश्चर्य यही था कि परिवार की इन कठिन स्थितियों में भी वे सारा प्रबंध कैसे कर लेते थे, मन को स्थिर रख लेते थे, समाचारपत्रों से संपर्क कैसे कर लेते थे और सब स्थानों पर उपस्थित कैसे हो जाते थे।

मुझे आज भी स्मरण है कि उस समय तक पूरी रामकथा लिखी नहीं थी और बोलने का भी उतना अभ्यास नहीं था; इसलिए अनेक बार अपनी बौद्धिकता और तर्क की उग्रता में कुछ कठोर बातें भी कह जाता था। जुगलजी ने उस ओर संकेत किया। मेरा उत्तर था, बाल्मीकीय रामायण में यही लिखा है। यही सत्य है। उनका कहना था, 'लिखा होगा किन्तु श्रोताओं की मानसिकता और स्तर देख कर ही तथ्यों को रेखांकित करना चाहिए।' तब मेरी भी समझ में आया कि यदि मैं अपने श्रोताओं का मन सत्य की चोट से पहले ही दुखा दूँगा, तो वे मेरी उन निर्दोष बातों को भी क्यों सुनेंगे, जो मैं उनसे कहने आया हूं।

उस बार मुझे 'राजस्थान गेस्ट हाउस' में ठहराया गया था। जुगल जी मुझे विदा करने आए तो हल्के से एक वाक्य उन्होंने कह दिया, ''अगली बार आप आएँगे तो आप को किसी परिवार के साथ ठहराएँगे। पिछले दिनों एक कवि को बुला लिया था। वह संध्या होते ही बोतल खोल लेते थे।''

मैं हँसा, ''तो मेरी परीक्षा हो रही थी कि भले लोगों के घर ठहराने योग्य हूँ या नहीं।''

वे कुछ नहीं बोले।

उसके बाद आज तक इतनी बार कोलकाता गया हूँ कि गिनती भूल गया हूँ। यह भी अनुभव किया कि मेरे आतिथेय अलग-अलग रहे हैं। कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, भारतीय भाषा परिषद, संस्कृति संसद, वनबंधु परिषद, रोटरी क्लब, अनामिका इत्यादि। विषय भी बदलते रहे और स्थान भी। मुझे अलग-अलग दलों और गुटों का भी पता चलता रहा; किन्तु जुगल जी सब स्थानों पर ही थे। निमंत्रण किसी का भी हो, आतिथेय कोई भी हो किन्तु जुगल जी का ध्यान सदा ही लगा रहता था। सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय में तुलसी जयंती का अवसर था। वहाँ से उठ कर जुगल जी के साथ उनके कार्यालय आए। इधर-उधर की बातें करते हुए उन्होंने पूछा, ''उन्होंने लिफाफे में कितनी राशि दी है?'' ऐसा

तो आज तक कभी किसी ने पूछा नहीं था, जाने उन्होंने क्यों पूछा। मेरे लिए ऐसी कोई बात गोपनीय नहीं थी। मैंने उनके सामने ही लिफाफा खोला और राशि गिन दी। उन्होंने वह सब कुछ मुझ से ले लिया और महावीर बजाज से कहा, ''भीतर से इसमें एक सहस्र रुपए और डाल दो।''

अरे, मैं चकित रह गया, ''उन्होंने जो दिया, वह ठीक है। आप...।''

''नहीं। वह सम्मानजनक नहीं है।''

उसके अगले दिन ही उनका अपना आयोजन था, स्वामी विवेकानन्द के विषय में। उसमें मैं मुख्य वक्ता था और आचार्य विष्णुकांत शास्त्री उसके अध्यक्ष थे। उसमें सुविधा यह थी कि मुझे समय की खुली छूट दे दी गई थी। ऐसे में मेरा मन मुक्त हो जाता है। कोई बोझ नहीं होता। मैं अपनी इच्छा के अनुसार समय ले सकता हूँ, खुल कर बोल सकता हूं। ...मैं खुलकर बोला, प्रवाह में बोला और शायद अच्छा भी बोला।

जुगल जी ने टिप्पणी की, ''आज आप बहुत अच्छा बोले।''

मैं धन्यवाद कर उनकी प्रशंसा स्वीकार कर सकता था; किंतु कुछ शालीनता के मूड में था, ''सच कह रहे हैं या औपचारिकता निभा रहे हैं।''

''क्यों, क्या कल मैंने कहा था कि आप बहुत अच्छा बोले।'' जुगल जी पलटवार कर गए।

उन्होंने यह तो सिद्ध कर दिया कि उनके द्वारा की गई प्रशंसा वास्तविक थी, किंतु कहीं यह भी कह गए कि पिछले दिन मेरा व्याख्यान उतना अच्छा नहीं रहा था।

****

कोलकाता में जुगल जी ने मुझे बताया था कि उनका जन्मस्थान राजस्थान में 'छोटीखाटू' है। छोटा स्थान है... एक बड़ा गाँव या कस्बा कुछ भी कह लीजिए। उस समय मेल ट्रेन वहाँ तक नहीं जाती थी। मकराना के अगले स्टेशन डेगाना में रेलगाड़ी से उतर कर सड़क और पगडंडियों से होकर 'छोटीखाटू' जाना पड़ता था। वे अपनी जन्मभूमि का ऋण चुकाने के लिए वहाँ भी कुछ न कुछ करते रहते हैं। उसे साहित्य से जोड़ने का उनका संकल्प है। वहाँ एक अच्छा पुस्तकालय चला रखा है। मेरी लिखी हुई प्रायः पुस्तकें उस पुस्तकालय में हैं और पढ़ी जाती हैं। वे महादेवी वर्मा और हजारी प्रसाद द्विवेदी को भी 'छोटीखाटू' ले जा चुके हैं। छोटी-बड़ी गोष्ठियां भी करते रहते हैं। इसबार कबीर पर कुछ चर्चा करने के लिए एक आयोजन किया और वे चाहते थे कि मैं छोटीखाटू जाने की स्वीकृति दूं।

मेरे मन में सैकड़ों आपत्तियां थीं। छोटा स्थान है, जाने सुविधाजनक हो या न हो। अब तक मुझे अपने लिए शौचालययुक्त अकेले कमरे की आदत पड़ चुकी थी। कमरे में एकांत चाहिए था। किसी और के साथ कमरा बांट नहीं सकता था। ...और वे गांव की बात कर रहे थे।... मैं उनको मना भी कर नहीं सकता था। यही कहता रहा कि कविता और वह भी मध्यकालीन कविता, यह मेरा क्षेत्र नहीं था। कबीर पर मेरा कोई ऐसा अध्ययन नहीं था कि मैं उनके विषय में विद्वानों के मध्य बात कर सकूं।

किन्तु जुगल जी कहाँ मानने वाले थे। वे अड़े रहे। ''आप कुछ भी बोल दें। वहाँ बहुत बड़े विद्वान् नहीं होंगे।''

****

मैं कैसे कहता कि मेरे लिए तो वहाँ उनका या प्रेमशंकर त्रिपाठी का होना ही काफी था। अंततः समझौता हुआ कि वे मुख्यवक्ता के रूप में किसी और को आमंत्रित कर दें, मैं भी कुछ बोल दूँगा।

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री उन दिनों हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल थे। वे दिल्ली में थे और हिमाचल सदन में ठहरे हुए थे। कोलकाता से जुगलजी और बड़ाबाजार पुस्तकालय के उनके सारे सहयोगी भी दिल्ली आए हुए थे। आयोजन था तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी के जन्म दिन पर उनको बधाई फूल और उनके कोलकाता में हुए एकल काव्य पाठ की तैयार की गई कैसेट उपहार देने का। मुझे और मधुरिमा को भी उसमें सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया गया था। हम लोग वहाँ पहुँचे तो पता चला कि कंधार अपहरण की दुर्घटना के कारण सारे देश में शोक छा गया था। अटल जी अपना जन्मदिन व्यापक स्तर पर उत्साह और समारोह के रूप में नहीं मना रहे थे। इसलिए सामान्य जन का उन तक जाना रोक दिया गया था। अब निश्चित हुआ कि केवल शास्त्री जी तथा दो-एक लोग ही उनको बधाई देने जाएंगे। शेष लोग उनके साथ नहीं जाएँगे। हम कुछ निराश हुए। इसी संदर्भ में हमने अपने कोलकाता के मित्रों को बताया कि २५ दिसंबर को हमारे पुत्र कार्तिकेय का विवाह हुआ था। हम तो उनके विवाह की वर्षगांठ के आयोजन को छोड़ कर यहाँ आए थे।

...तो वह पुष्प स्तवक ? इतने सुंदर फूल जो कोलकाता से आए थे, व्यर्थ ही नहीं जा सकते थे। अटल जी को नहीं दिए जा सके न सही किंतु उनका कुछ सार्थक उपयोग होना चाहिए। अंततः वे पुष्प हमें सौंप दिए गए ताकि हम उन्हें कार्तिकेय तथा वंदना तक पहुँचा दें। ...और तब चर्चा चली कि जुगल जी मुझे अपने गांव छोटीखाटू ले जा रहे हैं।

''तुम जा रहे हो नरेन्द्र ?'' शास्त्री जी ने पूछा।

''जा तो रहा हूँ।'' मैंने कुछ संकोच से कहा, ''जुगल जी ने विश्वास दिलाया है कि छोटी जगह होने पर भी कोई असुविधा नहीं होगी।''

शास्त्री जी अपनी शैली में जोर से हँसे, ''जुगल जी तो निवेदन करते हैं। हमारे एक आदरणीय कुछ इस शैली में निमंत्रित करते थे ... 'तुम्हें चलना है।' पूछो, 'कहाँ ?' उत्तर मिलता था, 'गड्ढे में। अरे जहाँ ले चलना है, ले चल रहे हैं।'

मुझे मानना पड़ा कि जुगलजी गड्ढे में भी ले जाएंगे तो चल पड़ूँगा।

****

मैं और मेरी पत्नी कोलकाता से दिल्ली लौट रहे थे। जुगल जी और विमल जी स्टेशन पर हमें विदा करने आए थे।

''दिल्ली पहुंचते ही छोटीखाटू जाने की तैयारी कर लीजिएगा।''

''एक अटैची में दो-चार कपड़े ही तो रखने हैं।'' मैंने कहा।

''बात यह है कि द्वितीय श्रेणी वातानुकूलित का टिकट नहीं मिल रहा है। न अपने लिए, न आपके लिए।'' जुगल जी ने बताया, ''जानता हूँ कि आपको असुविधा होगी, किंतु बाध्यता है। यदि आप दिल्ली में अपने लिए द्वितीय ए.सी. के टिकट का प्रबंध कर सकें तो कर लें। नहीं तो ये टिकट संभाल लें।'' उन्होंने मेरी ओर टिकट बढ़ाया ''हम लोग इसी कंपार्टमेंट में होंगे। आपको तनिक भी कष्ट नहीं होने देंगे।''

मुझमें और जुगल जी में एक समानता है। शास्त्री जी जुगल जी को 'यात्रा भीरु' कहा करते थे। मैं भी 'यात्रा भीरु' हूँ। जुगलजी मेरी स्थिति समझ रहे थे।

''कोई बात नहीं। आप लोग साथ होंगे तो फिर क्या असुविधा होनी है।''

वातानुकूलित श्रेणी के टिकट का प्रबंध न वे कर सके थे, न मैं कर सका। साधारण श्रेणी में ही उनके साथ गया। मेरा कुछ भय तो उन लोगों को साथ देख कर ही समाप्त हो गया। दूसरा भय बिना आरक्षण के यात्रियों का कंपार्टमेंट में घुस आने का था। वह भी नहीं हुआ। पहली बार अनुभव हुआ कि उत्तरप्रदेश और बिहार की ओर जाने वाली गाड़ियों और राजस्थान की ओर जाने वाली गाड़ियों में सवारियों के व्यवहार का बहुत अंतर था। ... शौचालय भी उस प्रकार गंदा नहीं था।...

पर यह मालूम नहीं था कि डेगाना इतना छोटा स्टेशन था, जहाँ ढंग से बल्ब भी नहीं जलते थे। गाड़ी केवल दो मिनट रुकती थी। हमें भोर में ही वहाँ पहुँच जाना था। उस झुटपुटे में स्टेशन का नाम इत्यादि पढ़ना किसी के भी बस का नहीं था। ...जुगल जी काफी पहले

से ही खिड़की में टँग गए थे और आने वाले स्टेशन को पहचानने का प्रयत्न कर रहे थे। गाड़ी धीमी होती तो मैं भी उतरने की तैयारी कर लेता, किन्तु संकेत मिलता– "अभी नहीं।" मैं मन ही मन सोचता रहा कि कहीं मैं अकेला ही आया होता तो कितनी कठिनाई होती।...

अंततः डेगाना का स्टेशन आया। गाड़ी रुकी। जुगल जी सब से पहले उतर गए और सामान इत्यादि संभालने में लग गए। उनके कार्यकर्ताओं की टोली वहाँ पहले से ही उपस्थित थी। उन्होंने हमें भी संभाला और हमारे सामान को भी। गाड़ी का प्रबंध करके ही वे गाँव से चले थे। चाय का प्रबंध उन्होंने स्टेशन पर ही किया था। मैंने प्रायः देखा है कि जुगल जी के पास कार्यकर्ताओं की कमी नहीं होती। उस धुंधलके में ही हम ग्रामों और कस्बों के बीच में से होते हुए, कच्चे पक्के रास्तों से 'छोटीखाटू' पहुंचे। यहाँ तक आते-आते दिन चढ़ आया था। जिस भवन में हमें उतारा गया, वह एक दम नया बना हुआ था। लगता था, उसमें किसी का गृहप्रवेश हुआ ही नहीं है। हमसे पहले उसमें कोई एक दिन के लिए भी नहीं ठहरा था। भवन भी दिल्ली या जयपुर के किसी मध्यमवर्गीय अच्छे मकान जैसा बना हुआ था। मुझे अलग से एक शौचालयसंयुक्त कमरा दे दिया गया था। शेष अनेक लोग कहाँ और कैसे ठहरे, वह जुगल जी ही जानें। यह बात अवश्य है कि भवन से बाहर निकलो, तो वह गाँव ही था; किंतु भवन के अंदर वह किसी प्रकार भी आपको ग्राम नहीं लगता था।

भवन के स्वामी कपूरचंद बेताला ठीक सामने के अपने पुराने मकान में रहते थे। उन्होंने यह नया भवन जुगल जी को इस आयोजन के लिए दे दिया था। वस्तुतः उन आयोजनों को जुगल जी कोलकाता से नियंत्रित करते थे; और स्थानीय तौर पर बेताला जी ही उनका सारा प्रबंध देखते थे। बेताला जी तथा जुगल जी का संबंध क्या था, यह तो वे ही जानें; किन्तु उनका कहना था, हम एक ही परिवार के समान रहते हैं; और उसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं थी।

बाद में जब साथ बैठने का अवकाश मिला तो उन्होंने महादेवी वर्मा के 'छोटीखाटू' आने और यहाँ की प्रकृति पर मुग्ध हो जाने के कारण कुछ दिन और रुकने के आग्रह की कहानी सुनाई। अब तो वह कहानी ही थी; किन्तु महादेवी के आग्रह ने जुगल जी को विचित्र परिस्थिति में डाल दिया था। वे प्रसन्न थे कि महादेवी को उनका गाँव और घर पसंद आया था; वे उनके सत्कार से प्रसन्न थीं। ...किंतु इस आग्रह के कारण उनके लौटने की रेलवे टिकट निरस्त करनी पड़ी। वह भी समस्या नहीं थी। समस्या थी उनके इच्छित दिन पर रेल की नई टिकट खरीदना। ...वह भी बड़ा रोचक प्रसंग है। उनके लिए रेल की टिकट नहीं मिल सकी किंतु पुस्तकालय के एक अन्य प्रबंधक श्री बालाप्रसाद जोशी के परिचित रेलवे के एक बड़े अधिकारी ने उनके लिए एक विशेष बोगी फूलों से सज्जित कर गाड़ी के साथ जोड़ दी; और उनकी यात्रा एक समारोह में बदल गई।

वह सारा दिन हम विभिन्न कार्यक्रमों में व्यस्त रहे। प्रातः का कार्यक्रम 'छोटीखाटू' के पुस्तकालय में था और संध्या समय डीडवाना के पुस्तकालय में। डीडवाना का पुस्तकालय काफी पुराना और संपन्न बताया जाता था। वहाँ विभिन्न विद्वानों के भाषण होते थे। जुगल जी जिन लोगों को छोटीखाटू तक ले आते थे, उन्हें डीडवाना भी ले जाते थे। वहाँ के प्रबंधकों से भी जुगल जी का संबंध काफी पारिवारिक ही था। रात का भोजन हम सब ने ही पुस्तकालय के अध्यक्ष मिलापचन्दजी माथुर वकील साहब के घर किया था। मैं देख रहा था कि जुगल जी का परिवार काफी बड़ा और विस्तृत था। उनका स्वभाव ही ऐसा था। हर प्रकार के व्यक्ति को महत्व देना और हर प्रकार के लोगों से निर्वाह करना।

यदि मेरी स्मरण शक्ति मुझे धोखा नहीं दे रही तो इसी प्रवास में जुगल जी हमें अपने गाँव का अंतिम छोर दिखाने ले गए थे। एक ओर पहाड़ी थी। नीचे एक मंदिर था। कुँआ था। एक भक्त सेवा के भाव से वहाँ रहता था और मंदिर परिसर की देख भाल करता था। एक स्थानीय संत की कथा भी उन्होंने सुनाई थी, जिनके स्मृति चिह्न अब भी वहाँ पूजे जाते थे और उनकी स्मृति में छपी, एक पुस्तिका भी दी थी।

जुगल जी की चर्चा होती है, तो मुझे सदा ही आचार्य विष्णुकांत शास्त्री भी स्मरण हो आते हैं। शास्त्री जी के संदर्भ में मुझे पहली बार जुगल जी ने कलकत्ता तब बुलाया था, जब शास्त्री जी ६५ वर्ष के हुए थे। यह कहना कठिन है कि दोनों में से कौन किस का सहकर्मी था। शास्त्री जी अवस्था में बड़े थे। वे कार्यकर्त्ता नहीं थे, यह भी नहीं कहा जा सकता; किंतु आयोजनों के प्रबंधक तो जुगल जी ही थे।

अब तक स्थिति यह हो चुकी थी कि कलकत्ता जाना होता तो प्रायः मधुरिमा भी मेरे साथ ही होती थीं। अनामंत्रित नहीं, आमंत्रित होकर और हमारे ठहरने की स्थायी व्यवस्था विमल जी के घर पर होती थी। संयोग कुछ ऐसा था कि हमें उनके घर पर किसी प्रकार की कोई असुविधा नहीं थी, और न उन्हें कोई थी। ऐसे में जुगल जी या तो हवाई अड्डे पर ही आ जाते; और यदि किसी कारण से नहीं आ पाते तो उनकी ओर से अगवानी करने वाले मित्र के फोन के माध्यम से वे बात कर लेते थे। पूछ लेते थे कि यात्रा में किसी प्रकार की असुविधा तो नहीं हुई अर्थात् उनका प्रबंधन तंत्र निरंतर सक्रिय रहता।

वैसे तो जब भी कलकत्ता जाना होता था, शास्त्री जी से भेंट होती थी। किन्तु शास्त्री जी को केन्द्र में रखकर जो आयोजन हुए उनमें दो बार जाना हुआ। गया तो तीसरी बार भी था; किंतु वह दुःखद प्रसंग था। वह शास्त्री जी के देहांत के पश्चात् शोकसभा का अवसर था। शोकसभा का कार्यक्रम संपन्न हो चुका, तो जुगल जी ने मुझे पकड़ लिया।

मैं जानता था कि शास्त्री जी ने कुमारसभा पुस्तकालय के तत्वावधान में पहले

ईशावास्योपनिषद के संबंध में प्रवचन किए थे। अठारह श्लोकों की व्याख्या करते हुए अठारह प्रवचन। उस समय वे सांसद थे; और मुझे स्मरण है कि वे उन १८ प्रवचनों के १८ कैसेट लेकर मेरे घर आए थे. ऐसी कृपा तो कभी किसी सांसद ने नहीं की थी; किन्तु वे तो शास्त्री जी थे। उसके पश्चात् वे व्याख्यान पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। पुस्तक का नाम था 'ज्ञान और कर्म'। और उस पुस्तक को पढ़ते हुए मुझे लगा था कि कोई भी व्याख्यान जब पुस्तकाकार प्रकाशित हो तो उसका अच्छी तरह संपादन होना चाहिए। बोलते हुए हम बहुत कुछ दोहरा जाते हैं, कुछ अनावश्यक भी बोल जाते हैं और कुछ आधा-अधूरा भी छोड़ जाते हैं।..

उसके पश्चात् शास्त्री जी ने कुमारसभा पुस्तकालय के तत्वावधान में ही गीता के अठारहों अध्याय पर व्याख्यान दिए थे। इसी अवधि में वे हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल बना दिए गए थे; किन्तु वे शिमला से आकर भी व्याख्यान दिया करते थे। वह गीता माता का काम था, उसे कैसे छोड़ देते। शिमला में जब हम उनसे मिले तो मैंने उन अनसुने व्याख्यानों की चर्चा की और (छोटे मुंह, बड़ी बात) एक परामर्श दे डाला कि गीता संबंधी प्रवचनों को मुद्रण के लिए भेजने से पहले एक बार वे उसे संपादित अवश्य कर लें। उन्होंने उसकी आवश्यकता को स्वीकार किया और कहा कि उनके पास समय बहुत कम है।... मुझे तब तक इस अनुभूति का ज्ञान नहीं था, इसलिए उसे टाल गया।

अब यह बात सिद्ध हो चुकी थी कि शास्त्री जी के पास समय कम था। वे अपनी लीला समेट कर जा चुके थे और जुगल जी ने मुझे पकड़ लिया था। वे चाहते थे कि शास्त्रीजी के उन प्रवचनों को प्रकाशन के लिए तैयार किया जाए और उनका संपादन मैं करूँ।

मैं स्तब्ध सा खड़ा उनका चेहरा देखता रहा। क्या वे सचमुच समझते हैं कि मुझ में इस काम की क्षमता है ?

'आप जानते हैं कि मैं गीता का पंडित नहीं हूँ।' अंत में मैंने कहा।

'जानता हूँ। पंडित हों या न हों, गीता को जितना आप समझते हैं, हमारे लिए वह ही पर्याप्त है।'

'और संस्कृत तो मुझे आती ही नहीं।' मैंने कहा, 'लिखना तो दूर, मैं तो एक भी श्लोक बोल तक नहीं सकता।'

'आप उसकी चिंता न करें।' जुगल जी ने कहा, 'हम संस्कृत वालों से सहायता लेकर वह काम कर लेंगे।' मैंने देखा, वे तुले हुए थे; और जिस काम के लिए वे कमर कस लेते थे, उसे पूरा कर के ही छोड़ते थे।

'आपने निश्चय कर ही लिया है, तो मैं आपको मना नहीं कर सकता।' मैंने कहा,

'यदि आप समझते हैं कि आपके पास मुझ से अधिक योग्य कोई व्यक्ति नहीं है, तो मैं अपनी क्षमता भर वह काम कर दूँगा।'

उन्होंने पांडुलिपि मेरे पास भेज दी। उसमें छः अध्याय थे। मेरे मन में कुछ बातें बहुत स्पष्ट थीं : दो बातें तो मैं उनसे कह ही चुका था। तीसरी बात यह थी कि मैं भली प्रकार जानता था कि मैं शास्त्री जी से बड़ा विद्वान नहीं था। उनके बोले हुए अथवा लिखे हुए पर कलम चलाने का अधिकार मुझे नहीं था। मुझे इस बात का भी ध्यान रखना था कि पाठक तक जो कुछ पहुँचे, वह शास्त्री जी का ही पहुँचे। ऐसा न हो कि काट-पीट कर मैं उनकी शैली बदल दूँ और पाठक तक जो जाए, उसमें मेरा व्यक्तित्व अधिक हो और उनका कम। ऐसे परिवर्तन करना, एक प्रकार से उनकी कृति को विकृत करना था।

पहले खंड में मैंने बहुत कम कलम चलाई और भूमिका भी छोटी सी ही लिखी। पुस्तक का विमोचन हुआ तो उस अवसर पर भी मैं बहुत संभल कर बोला।

मैं अपनी ओर से एक काम के समापन की प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था और जुगल जी ने बताया कि वे दूसरा खंड भी मुझे भेज रहे हैं। दूसरे खंड की भूमिका उनको कुछ लंबी चाहिए थी। अब तक मेरा हाथ भी खुल गया और बहुत सारी बातें, जिनकी पुनरावृत्ति हुई थी, उन्हें काटने में मुझे कोई असुविधा नहीं हुई। दूसरे खंड की भूमिका में मैंने न्यायमूर्ति शंभुनाथ श्रीवास्तव के एक निर्णय का बहुत सहारा लिया था और उनकी अनेक बातें उद्धृत की थीं। जुगल जी को मेरी भूमिका तो पसंद आई किंतु वे उसे केवल मेरे साक्ष्य पर छापने को तैयार नहीं थे। उन्होंने मुझसे वह निर्णय मंगवाया, उसके सारे संदर्भों की जाँच की और तब थोड़े से संपादन के साथ उसे छापा। मैंने उनकी संपादन क्षमता भी देखी और उनसे कहा भी कि पुस्तक पर प्रधान संपादक के रूप में उनका नाम जाना चाहिए। वे उसे हँस कर टाल गए। गीता का तीसरा खंड और भी भव्य समारोह के साथ प्रकाशित हुआ। इस बार मेरी भूमिका और भी लंबी थी और बोलते हुए भी जहाँ मेरे नाम के सामने ३० मिनट लिखे थे, जुगल जी ने मुझे संकेत कर दिया कि मैं दस पंद्रह मिनट और भी ले लूँ। उस दिन मुख्य अतिथि के रूप में साध्वी ऋतंभरा आई हुई थीं। साधु संतो को सामने देख कर धार्मिक ग्रंथों पर बोलने में मुझे पर्याप्त संकोच होता है; किन्तु यहाँ हुआ यह कि वे अपना वक्तव्य देकर मंच से उतर, नीचे श्रोताओं में जा बैठीं। कहा तो उन्होंने यही कि वे मुझे सामने बैठ कर सुनना चाहती हैं; किन्तु मेरे मन का चोर कह रहा था कि वे बीच में ही उठ कर चली जाने की सुविधा पाने के लिए ऐसा कर रही हैं। पर उन्होंने मेरा पूरा वक्तव्य बैठकर सुना।

समय की छूट मिल जाने का कारण मेरे मन में कई प्रकार की सामग्री आ जुटी थी। शास्त्री जी को भी प्रणाम करना था, गीता संबंधी भी कुछ टिप्पणियाँ करनी थीं; और पिछले

दिनों गीता संबंधी कुछ विवादों से साक्षात्कार होने के कारण अपना मत रखने का भी पर्याप्त अवकाश था। वह सब कुछ भली प्रकार निपट गया।

संध्या समय जुगल जी विमल जी के घर आए। हमारी अच्छी लंबी बैठक हुई। जुगल जी अनावश्यक नहीं बोलते थे। बहुत सोच समझ कर नपी तुली भाषा में वे अपनी बात कहते थे; किंतु हास्य-विनोद और रोचकता बनी रहती थी। योजनाएं उनके साथ-साथ चलती थीं। किन्तु मैं अब तक भली प्रकार समझ चुका था कि वे योजना विलासी नहीं थे, कर्मठ व्यक्ति थे। एक प्रकार के शिक्षक थे। पिछली किसी यात्रा में वे लोग मुझे गाड़ी में बैठाने के लिए छोटीखाटू से डेगाना आए थे। स्टेशन पर जाने से पहले वे डेगाना कस्बे में अपने किसी परिचित के घर जा बैठे। थोड़ी ही देर में वहाँ भीड़ लग गई। अच्छा खासा जमावड़ा हो गया। जुगल जी ने पूछा, कि वे लोग छोटीखाटू के आयोजन में क्यों नहीं आए ? एक प्रकार से उन्हें डांट पिलाते हुए कहा कि हम कहाँ-कहाँ से एक से एक बढ़ कर वक्ता एकत्रित करते हैं। आपके द्वार पर आए उन वक्ताओं को सुनने आप नहीं आते हैं। हम अच्छी-अच्छी पुस्तकें बटोर कर अपने पुस्तकालय में लाते हैं; आप उन पुस्तकों को नहीं पढ़ते हैं। तो आपका विकास कैसे होगा? चेतना कैसे आएगी ?

आज भी वे उसी मुद्रा में थे। कैसे-कैसे करके एक असंभव कार्य संभव करवाया था उन्होंने। कलकत्ता नगर में महाराणा प्रताप की प्रतिमा की स्थापना करवाई थी। उनके साथियों का ध्यान उसके महत्व की ओर नहीं था। राजस्थान की तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे भी उससे उदासीन थीं। पर इन सब बातों से कहीं जुगल जी का उत्साह भंग होता था ? प्रयत्न में हूं कि उनके उत्साह की छूत मुझे भी लग जाए। मेरे अपने लेखन में अभ्युदय, महासमर और तोड़ो कारा तोड़ो की शृंखलाएं हैं। जुगल जी ने गीता परिक्रमा का नाम भी मेरे साथ जोड़ दिया है; जबकि मैं जानता हूं कि वह कृति शास्त्री जी की है और उसको प्रकाशनार्थ प्रस्तुत करने के लिए संपादन का सारा काम जुगल जी तथा उनके सहयोगियों ने किया है। पर यह उनका बड़प्पन है कि काम वे स्वयं करते हैं और उसका श्रेय किसी और को दे देते हैं। प्रकृति ने उन्हें यह दैवी गुण दिया है। मैं भी प्रभु से अपने लिए इस गुण की याचना करता हूं। ●

सम्पर्क : १७५ वैशाली, पीतमपुरा, दिल्ली - ११००३४, मो.: ०९८७१६८१३८२

समाज-संसक्ति का विधायक पक्ष : विद्या-आयोजन

✍ डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र

श्री जुगलकिशोर जैथलिया से मेरा परिचय 'हनुमान टेम्पल ट्रस्ट' के किसी उद्योक्ता ने कराया था। तब हम दोनों जवान थे। पेशा भिन्न होते हुए हम दोनों को जोड़ने वाली साहित्य की जमीन थी। जैथलिया जी पेशेवर वकील और मैं साहित्य का अध्यापक। मगर अपने पेशे के प्रति निष्ठावान होते हुए भी श्री जुगल किशोर जी की साहित्य में गहरी रुचि थी। प्राय: हर साहित्यिक कार्यक्रम में उनसे मुलाकात होती थी और सहज रूप में रिश्ते की ऊष्मा समृद्धतर होती रही। उन दिनों कलकत्ता (कोलकाता) में आज जैसा सन्नाटा नहीं था। विभिन्न संस्थाओं और मंचों पर स्तरीय साहित्यिक अनुष्ठान आयोजित होते रहते थे, जिनमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से साहित्य के शीर्ष विद्वान और रचनाकार आहूत किये जाते थे। और मैंने लक्ष्य किया था कि साहित्य में तब लोगों की इतनी गंभीर रुचि थी और अपने व्यावसायिक प्रयोजन से अवकाश निकाल कर लोग साहित्यिक गोष्ठियों में शरीक होते थे; अपनी नैसर्गिक साहित्य रुचि को तुष्ट और समृद्ध करते थे। जैथलियाजी शुरू से ही विद्या विलासी और समाज संसक्त थे।

कालांतर में मुझे जानकारी मिली कि जुगल किशोर जैथलिया 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' से सक्रिय रूप में युक्त हैं और उनका राजनीतिक विचार जनसंघ (परवर्ती काल में 'भारतीय जनता पार्टी) से जुड़ा है। उक्त विचारधारा से मेरा कभी कोई सरोकार नहीं रहा। मगर जैथलिया जी की निष्ठा और प्रतिबद्धता की परिचिति का मेरे आत्मीय रिश्ते पर कोई अन्यथा प्रभाव वैसे ही नहीं पड़ा जैसे अपने सम्मान्य बन्धु पं. विष्णुकान्त शास्त्री के प्रत्यय से वैमत्य रखते हुये भी उनकी विद्या-निष्ठा और शील के प्रति मेरा आकर्षण कभी म्लान नहीं हुआ, जैसे मार्क्सवादी विचार में मेरी अनास्था के बावजूद मेरे कई अन्तरंग मित्र घोर मार्क्सवादी हैं। संवेदना का नाता वैचारिक प्रतिबद्धता से नहीं प्रभावित होता। सो विद्या- प्रयोजन से जुड़ा जुगल किशोर जैथलिया का कोई भी आग्रह मेरी ओर से अनुत्तरित नहीं रहा।

जैथलिया जी की समाज-संसक्ति और शालीन आचरण मुझे उनके करीब ले जाता

है। और विलक्षण व्यवहार-कुशल व्यक्ति की तरह वे मुझसे कभी ऐसी अपेक्षा नहीं करते, जो मेरे मन में उलझन पैदा करे। मैं भी प्राय: सचेत रहता हूं कि मेरा आचरण उनकी आस्था को चोट न पहुंचाये। इस जागरूक विवेक से अनुशासित व्यवहार चर्या का ही सुपरिणाम है कि दशकों से हमारा स्नेह सम्बन्ध अम्लान है और हम एक दूसरे के प्रति सम्मानशील हैं।

उच्च शिक्षा प्राप्त श्री जुगल किशोर जी का विवेक विद्या की महत्ता को समझता है। स्वाभाविक है वे विद्या-व्यापार को अपेक्षित गुरुता देते हैं। जैथलिया जी समझते हैं कि विद्या में वर्ग भेद का कोई स्थान नहीं होता। इस बोध स्पर्श का ही परिणाम है शायद या फिर नैसर्गिक संस्कार है जैथलिया जी का कि उनके मंच पर विपरीत विचारधारा का निषेध नहीं है। अपनी अनमनीय वैचारिक प्रतिबद्धता के बावजूद वे आचरण में अतिशय भद्र और मधुर हैं। उनकी लोकप्रियता का कारण उनकी कर्म कुशलता और प्रबंध पाटव ही नहीं है, अपने मधुर आचरण से भी उन्होंने अपने समाज की प्रियता और भरोसा अर्जित किया है। यह जीवन की मूल्यवान कमाई है। और करीब के लोग जानते हैं कि दुनिया जिसे कमाई मानती है उसे वैश्य कुल में जन्मे जैथलिया जी ने अपनी जीवनचर्या में वरीयता नहीं दी। कोलकाता के प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तकालय श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संरक्षण संचालन का गुरुतर दायित्व जुगल किशोर जैथलिया ने जब स्वीकार किया तो अपनी विलक्षण प्रबंध क्षमता से उसका रूपान्तरण कर उसे शहर का विशिष्ट विचार मंच बना दिया। महानगर के प्रख्यात हिन्दी विद्वान पं. विष्णुकान्त शास्त्री के निर्देशन में जुगलकिशोर जी ने कई महत्वपूर्ण प्रकल्प रचे और कुशलतापूर्वक उन्हें रूपायित किया। ज्वलंत प्रश्नों और महत्वपूर्ण प्रसंगों पर केन्द्रित राष्ट्रीय स्तर की विचार-गोष्ठियाँ आयोजित की; जिनमें विभिन्न विचारधारा के अधिकारी विद्वानों को सादर साग्रह आमंत्रित किया। पुस्तकालय में व्याख्यानपीठ की रचना की। ईशोपनिषद् और गीता पर पं. विष्णुकान्त शास्त्री के व्याख्यान कराये और पुस्तकालय के तत्त्वावधान में उनका पुस्तकाकार प्रकाशन कराया। आर्यसमाजी विद्वान पं. उमाकान्त उपाध्याय को 'कठोपनिषद्' पर बोलने के लिये पुस्तकालय मंच पर आमंत्रित किया। कबीर, निराला, आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, महादेवी, दिनकर, अज्ञेय, नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह और केदारनाथ अग्रवाल जैसे शीर्ष कृती पुरुषों की शताब्दी जयन्ती के विशेष अवसर पर स्तरीय आयोजन किया। शास्त्री जी के परलोक गमन के बाद शास्त्री जी के आत्मीय शिष्य डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी की प्रातिभ ऊर्जा जैथलिया जी के विद्या-प्रकल्प से जुड़ गयी और कुमारसभा पुस्तकालय की यात्रा ऊर्जा-सम्पन्न बनी रही।

अपनी कर्म भूमि कोलकाता की तरह ही जैथलिया जी की संवेदना अपनी जन्मभूमि से जुड़ी है। अपने गांव के पुस्तकालय की ओर से देश के मूर्धन्य विद्वानों का सम्मान एवं भाषण

का प्रतिवर्ष आयोजन कर वे गांव के सांस्कृतिक वातावरण को समृद्ध करते रहते हैं। उनकी निष्ठा के कई आयाम हैं। उनका अर्जित अनुशासन समष्टि के प्रयोजन के प्रति सदा सुमुख रहता है। यही कारण है कि उनका परिवार बड़ा है, जिसके सदस्य विपरीत आस्था के लोग भी हैं।

मेरे लिये कोलकाता का बड़ा आकर्षण यह है कि कुछ ऐसे प्रेमी मानुष हैं मेरे शहर में, जो मुझे और कहीं कहीं दिखाई पड़ते। सुख-दुःख में पसीजने वाले लोगों की संगति जीवनप्रियता को पुनर्नवा करती रहती है। ऐसे ही प्रेमी मानुष हैं श्री जुगल किशोर जैथलिया और यह बड़ी आश्वस्ति है। जैथलिया जी की कर्म-ऊर्जा दीर्घकाल तक युवा मुद्रा में क्रियाशील रहे, यही मन: कामना है। ●

सम्पर्क : ७-बी, हरिमोहन राय लेन, कोलकाता-७०० ०१५, दूरभाष : (०३३) २२५१-०१८२

भावुक शब्द सुमन स्वीकारो

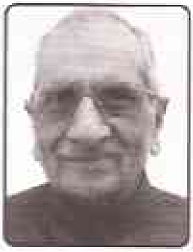

✍ कृष्ण मित्र
कवि एवं पत्रकार

हे अभिनन्दनीय युग चेता,
संस्कृतियों के हे अध्येता।
कर्मयोग के आराधक हे,
कर्त्तव्यों के प्रवर, प्रणेता।।

अमृत-उत्सव पर भावों के,
ये स्नेहिल अर्पण स्वीकारो।
जैथलिया जी विनत हृदय के,
भावुक शब्द सुमन स्वीकारो।।

तुमने सामाजिक परिवेशों,
को अभिनव सम्मान दिया है।
राष्ट्रवाद के मुखर स्वरों को,
प्रेरक निश्छल गान दिया है।।

सौंपा है साहित्य सृजन का,
सम्यक अनुसन्धान निराला।
पोषित किया समर्पण वाला,
संस्कारित अभियान निराला।।

अह्लादित मन की सुधियों का,
पावन यह वन्दन स्वीकारें।
जैथलिया जी विनत हृदय के,
भावुक शब्द सुमन स्वीकारें।।

राष्ट्रधर्म को रहा समर्पित,
सदा जुगल जी कर्मठ जीवन।
सम्मानों से हुआ अलंकृत,
सादर अर्पित है अभिवादन।।

संघ शक्ति की प्रबल भावना,
मन में रही सतत उद्वेलित।
सेवा और सहयोग समर्पण,
जीवन भर ही रहा निनादित।।

तपः पूत मन के मन्दिर के,
ये अक्षत चंदन स्वीकारो।
जैथलिया जी विनत हृदय के,
भावुक शब्द सुमन स्वीकारो।। ●

सम्पर्क : १०२, राकेश मार्ग, जी.टी. रोड, गाजियाबाद, पिन-२०१००१, मो.: ९८१८२०१९७८

सेवा, संगठन व साहित्य की त्रिवेणी : श्री जुगल किशोर जैथलिया

✍ शार्दूल सिंह जैन

अध्यक्ष: राजस्थान परिषद, कोलकाता

विगत पच्चीस वर्षों से मेरा श्री जुगल किशोर जी जैथलिया से घनिष्ठ व आत्मीय सम्बन्ध रहा है। जुगलजी ने एक कर्त्तव्यनिष्ठ समर्पित कार्यकर्त्ता के रूप में अपने विचारों व आचरण से सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक क्षेत्र को गौरान्वित किया है। यहां तक कि राजनैतिक क्षेत्र में विभिन्न दलों के लोग भी इन्हें सम्मान और श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। ये कई सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़े हैं। इन्हें अगर मैं 'चल-संस्था' का पर्याय कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। राष्ट्र प्रेम से आप्लावित इनके व्यक्तित्व में जहां सांगठनिक दक्षता है वहीं अपने मधुर व आत्मीय व्यवहार से सबको अपना बना लेने की अद्भुत क्षमता है।

मैंने देखा है जुगलजी अपनी बात निष्पक्ष व निर्लिप्त भाव से बिना किसी लाग-लपेट के कहते हैं। इनके सुचिन्तित विचार तर्क की पीठिका पर आधारित होते हैं।

जुगलजी, राजस्थान परिषद जैसी प्रवासी राजस्थानियों की प्रतिनिधि संस्था से बड़ी अन्तरंगता से जुड़े हैं तथा इसके वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं। इस संस्था ने इनके दिग्दर्शन में तथा साथियों के सहयोग से कई महत्वपूर्ण योजनाएं सम्पन्न की है जैसे मैक्फर्सन पार्क का नाम *'महाराणा प्रताप उद्यान'* कर वहां महाराणा की आवक्ष मूर्ति की स्थापना, महानगर की एक प्रमुख व्यवसायिक क्षेत्र की सड़क *'इंडिया एक्सचेंज प्लेस'* का नामकरण *'महाराणा प्रताप सरणी'* करना तथा 'सेन्ट्रल' मेट्रो स्टेशन के पास त्रिकोनीय पार्क में महाराणा प्रताप की चेतक आरूढ़ बीस फीट ऊँची कांस्य मूर्ति की स्थापना आदि। इसके अतिरिक्त जुगलजी के कुशल सम्पादन में महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के राजस्थानी समग्र तथा उनके हिन्दी के समग्र ग्रन्थों का प्रकाशन परिषद के माध्यम से हुआ। इसमें जुगलजी जैसे साहित्य उपासक की प्रमुख संपादकीय

भूमिका रही है। राजस्थान परिषद की गत तीस वर्षों से प्रकाशित होने वाली पठनीय व संग्रहणीय स्मारिकाओं में भी आपकी सम्पादन कला परिलक्षित होती है।

लौहपुरुष सरदार पटेल की मूर्ति स्थापना के उद्देश्य से बनी *'सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी'* के उपाध्यक्ष के रूप में आपने सक्रिय सेवायें दी है। उक्त कमेटी के प्रयत्नों से सरदार पटेल की १२ फुट ऊँची कांस्यमूर्ति चित्तरंजन एवेन्यू पर स्थापित हुई है।

जुगलजी वास्तव में पुस्तक प्रेमी हैं। श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना व विकास आपके संकल्प तथा समर्पण का ज्वलंत उदाहरण है। बीज से वटवृक्ष बने इस पुस्तकालय को हिन्दी जगत के मूर्धन्य लेखकों, साहित्य मनीषियों तथा जनप्रिय राजनेताओं का सान्निध्य प्राप्त हुआ है जिनमें सुप्रसिद्ध उपन्यासकार गुरुदत्त, महादेवी वर्मा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, नरेन्द्र कोहली के नाम उल्लेखनीय हैं। डॉ. मुरली मनोहर जोशी, टी.एन. चतुर्वेदी, सुन्दर सिंह भंडारी, केदार नाथ साहनी, मोहन राव भागवत जैसे शलाका पुरुषों की गरिमामय उपस्थिति से भी वह पुस्तकालय धन्य हुआ है। इसके सभी कार्यक्रमों में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इसके अतिरिक्त श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंत्री के रूप में दायित्व ग्रहण कर इसका कायाकल्प आप द्वारा हुआ। आज यह पुस्तकालय श्रेष्ठ पुस्तकालयों की श्रेणी में आता है। बड़ाबाजार लाइब्रेरी, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी तथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से आप अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी जुगलजी के व्यक्तित्व को चंद शब्दों में उद्भाषित करना सम्भव नहीं है। जुगलजी के सम्मान में आयोजित एक सम्मान समारोह में इनके गुरुप्रवर आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के ये उद्गार कि 'मुझको जुगलजी जैसे व्यक्ति का साथ मिला यह मेरे पूर्व जन्म के संचित पुण्यों का प्रतिफल है', जुगलजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व को उजागर करने के लिये काफी है। संक्षेप से कहूँ तो जुगलजी सेवा, संगठन और साहित्य की त्रिवेणी हैं। मैं उनके शतायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ। ●

सम्पर्क : १८, नेताजी सुभाष रोड, तीन तल्ला, कोलकाता-७००००१, मो.: ९८३००५३३२४

एक प्रेरक व्यक्तित्व

✍ सज्जन कुमार तुलस्यान
वरिष्ठ आयकर सलाहकार

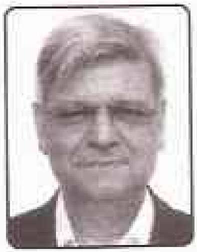

आदरणीय जुगलजी के बारे में सोचते हुए एक ऐसे कर्मठ एवं प्रेरक व्यक्तित्व का बिंब आँखों के सामने उपस्थित होता है जिसने अपने जीवन का बड़ा अंश समाज को समर्पित कर राष्ट्र-निर्माण हेतु अपनी अनन्य निष्ठा प्रमाणित की है।

मातृभूमि के प्रति श्रद्धा तथा राष्ट्र के प्रति भक्ति का भाव केवल वाणी का विलास नहीं है, उसके लिए स्वयं सक्रिय होकर कुछ करने का संकल्प तथा अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को संस्कार-संपन्न करके निष्ठा जगाने की जरूरत होती है। व्यक्ति-निर्माण ही राष्ट्र-निर्माण का मूल-मंत्र है, इस बात को अंत:करण में संजोकर भविष्य दर्शिनी दृष्टि से समाज की विभिन्न संस्थाओं में कार्यकर्त्ताओं को उनकी योग्यता के अनुसार सम्बद्ध करने का जो काम जुगलजी ने किया है वह विरल एवं विशिष्ट तो है ही, उनकी सृजनशील सक्रियता को भी उजागर करता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि उन्हें यह विवेक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संबद्धता से प्राप्त हुआ है। संघ के ही एक गीत की पंक्तियाँ है -

तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

कोलकाता की विभिन्न संस्थाओं में उनकी व्यावहारिक दृष्टि तथा क्रियाशील कर्मठता ने नए-नए प्रकल्पों एवं नवीन योजनाओं को स्वरूप तो प्रदान किया ही है - कार्यकर्त्ताओं की एक सुदृढ़ पंक्ति भी तैयार की है।

जीवन केवल अपने उन्नयन, अपनी सुख-सुविधा या ऐशो-आराम के लिए नहीं है - समाज के लिए अपने जीवन का एक अंश समर्पित कर उसके निर्माण में विनम्र भागीदारी हमारा परम कर्त्तव्य है। जयशंकर प्रसाद की पंक्तियाँ है :-

अपने में सब कुछ भर कैसे, व्यक्ति विकास करेगा।
यह एकांत स्वार्थ जीवन है, अपना नाश करेगा।।
औरों को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, जग को सुखी बनाओ।।

जुगलजी ने यह काम जिन परिस्थितियों में किया, वह सख्त जमीन को ऊर्वर बनाने के कठिन संकल्प जैसा था। दिनकर याद आ रहे हैं :-

पथरीली ऊँची जमीन है, तो उसको तोड़ेंगे।
समतल पीटे बिना, समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे।।
समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा, उनका भी अपराध।।

जीवन समर में तमाम झंझावातों को झेलते हुए जुगलजी ने प्रेरणा के जिन बिन्दुओं को सामने रखकर अनवरत कार्य किया है, उनमें संघ की अनुशासन-प्रियता एवं राष्ट्र-निर्माण की आकुलता तो है ही - कर्मयोगी भँवरलाल मल्लावत की समर्पित निष्ठा तथा पृष्ठभूमि में रहकर काम करने की वृत्ति है; राधाकृष्ण नेवटिया की साधना-प्रेरणा है तथा है आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के बहुआयामी सारस्वत व्यक्तित्व का आदर्श। आचार्य शास्त्री के श्रीमुख से सुनी हुई श्रीकांत वर्मा की ये पंक्तियाँ जैथलिया जी को यों ही नहीं प्रिय है :-

चाहता तो बच सकता था/मगर कैसे बच सकता था/जो बचेगा, कैसे रचेगा ?
कराह सकता था/मगर कैसे कराह सकता था/जो कराहेगा, कैसे निबाहेगा ?
किसी के मत्थे मढ़ सकता था/मगर कैसे मढ़ सकता था/जो मढ़ेगा, कैसे गढ़ेगा?

पंक्तियाँ स्वत: स्पष्ट हैं। जो लोग जुगलजी को निकट से जानते हैं, उन्हें उनके पारिवारिक झंझावातों की जानकारी है, उन्हें यह भी मालूम है कि आरंभिक दिनों में आयकर सलाहकार के अपने पेशे में यथोचित उपार्जन हेतु उन्हें किस प्रकार का संघर्ष करना पड़ा था। कभी-कभी यह सोचकर आश्चर्य और रोमांच होता है कि १५ वर्षीय पुत्र का वियोग, लंबी बीमारी के बाद सहधर्मिणी का निधन तथा पारिवारिक दायित्वों में एक के बाद एक बड़ी जिम्मेवारियों के निर्वहन का दबाव- इन सबके बीच भी समाज के लिए कुछ करने की ललक। यद्यपि बीज-वपन तो छोटीखाटू पुस्तकालय (राजस्थान) की स्थापना से ही हो गया था, लेकिन उसमें खाद-पानी देने का महत्वपूर्ण कार्य भँवरलाल मल्लावत जैसे कर्मयोगी से मिला। परवर्ती काल में राधाकृष्ण नेवटिया की पारखी आँखों ने समाज के लिए उपयोगी इस कार्यकर्त्ता की ऊर्जा को समझा और पहले सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय फिर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय का दायित्व प्रदान किया।

साहित्यकार-राजनेता आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री का सान्निध्य और पुस्तकालय के प्रति उनका विशेष स्नेह-दोनों ने जुगलजी को नई प्रेरणा से संपन्न किया और वे अतिरिक्त ऊर्जा के साथ सामाजिक-साहित्यिक कार्यों में जुटे। व्यवहार कुशलता, सबको साथ लेकर काम करने की प्रवृत्ति तथा अपने विश्वास पर दृढ़ रहने की निष्ठा रा. स्व. संघ तथा इन विभूतियों के नैकट्य से सुदृढ़ हुई।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवाहेतु इन्होंने १९५८ ई. में ही अपने गाँव छोटीखाटू में हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की जिसकी गिनती आज राजस्थान के प्रमुख पुस्तकालयों में होती है। उसके विभिन्न समारोहों में महादेवी वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, जैनेन्द्रजी, भवानी भाई, विष्णुकांत शास्त्री, कन्हैयालाल सेठिया एवं नरेन्द्र कोहली जैसे चोटी के साहित्यकार पधारे एवं उपन्यास शिरोमणि वैद्य गुरुदत्त ने विशाल भवन का उद्घाटन किया। वहाँ से प्रतिवर्ष हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्यकारों को पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं कन्हैयालाल सेठिया की स्मृति में सम्मान भी दिया जाता है।

जुगलजी ने अनेक पुस्तकों का सम्पादन भी किया है जिनमें प्रमुख हैं 'कन्हैयालाल सेठिया समग्र' चार खंडों में एवं 'विष्णुकान्त शास्त्री चुनी हुई रचनायें' दो खंडो में। विभिन्न विषयों पर केन्द्रित दर्जनों स्मारिकायें भी उनकी साहित्यिक ललक को प्रकट करती है।

राजस्थानी संस्कृति एवं राजस्थानी भाषा दोनों के लिए भी उनका अवदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। कोलकाता शहर में महाराणा प्रताप की स्मृति में पचास लाख की लागत से वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की भव्य काँस्यमूर्ति की स्थापना तो एक ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय कार्य हुआ है। उनके द्वारा संकल्पित इस काम में सहयोगी बनकर मैं भी कृत-कृत्य हुआ। प्रताप की स्मृति में एक पार्क का नामकरण एवं प्रमुख सड़क का नामकरण भी इनके ही प्रयत्न से राजस्थान परिषद ने करवाया। ये सारे कार्य कितना श्रम एवं योजकता मांगते हैं, यह हम सहज ही अनुमान लगा सकते हैं। और भी नाना समाजसेवी एवं राष्ट्रीय दृष्टि से काम करने वाली संस्थाओं को जुगलजी का प्रमुख सहयोग एवं परामर्श रहता है। इतना ही नहीं, आप प्रान्तीय भाजपा के भी कर्णधारों में से एक हैं।

आज जुगलजी ने समाज में जो स्थान बनाया है, वह प्रेरणादायक तो है ही, समाज के लिए कुछ करने का संकल्प भी जागृत करता है। ये स्वस्थ रहते हुए सक्रिय रहें और उनकी समाज निष्ठा उन्हीं की भाँति समर्पित कार्यकर्त्ताओं का निर्माण करे- अमृत महोत्सव पर यही मन:कामना है। ●

सम्पर्क : 'पार्क सेन्टर', दो तल्ला, २४, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता-१६, मो. ९८३००६६१६५

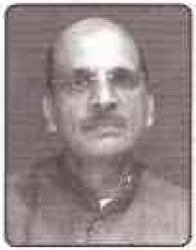

अमृत-महोत्सव की यह बेला....

✍ डॉ. प्रेमशङ्कर त्रिपाठी
हिन्दी विभागाध्यक्षः सुरेन्द्रनाथ सांध्य कॉलेज

सक्रिय, सजग, कर्मठ जीवन के प्रेरक पचहत्तर मधुमास।
विजय-पराजय, धूप-छाँह का वर्णित करते हैं इतिहास।।
संघर्षों की कठिन डगर पर, रहे 'जुगलजी' नित गतिमान।
ध्येयनिष्ठ-सार्थक जीवन जी, किया राष्ट्र का गौरव गान।।
सन्निधि विरल-विशिष्टजनों की, पाकर सहज-सुलभ परिवेश।
साहित्यिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में, किया अनवरत नव-उन्मेष।
मैं-मेरा का घेरा तोड़ा, निर्मित किया वृहत् परिवार।
विविध संस्थाओं को सींचा, देकर अनुभव-सिद्ध विचार।।
गुरुजन से पाई जो ऊर्जा, वितरित कर, पाया उल्लास।
अनुज-युवा पीढ़ी को, आगे लाने का सर्वदा प्रयास।।
सुख-दुख में, उत्थान-पतन में, गाया जीवन का संगीत।
मृदु व्यवहार, सदाशयता से, रहे लुटाते सबको प्रीत।।
अमृत महोत्सव की यह बेला, सभी दे रहे शुभ उद्‌गार।
स्वस्थ-सक्रिय भावी-जीवन हो, बढ़ती जाये कीर्ति अपार।।
सर्जक-प्रेरक रूप आपका, सबको दे अनुपम उत्साह।
नई दृष्टि, अनवरत सजगता बढ़ता जाए प्रेम प्रवाह।। •

सम्पर्क : आशीर्वाद अपार्टमेन्ट्स, CA-5/10, देशबंधु नगर, बागुईहाटी, कोलकाता-७०००५९
मो.: ९८३०६ १३३१३

हम सबके हृदय के बहुत निकट - जुगल दा

✍ विमल लाठ
रंगकर्मी

करीब पैंतालीस वर्ष हो गये हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक के रूप में जुगल दा को विभिन्न उत्तरदायित्वों से गुजरते हुए देख रहा हूँ। हमारे एक अधिकारी थे - श्री भंवरलाल मल्लावत। उनकी बात हम सबके लिए पत्थर की लकीर होती थी क्योंकि वे बुद्धि से नहीं, हृदय से जुड़े हुए थे। प्रत्येक स्वयंसेवक और उनके परिवार के साथ उनका, जिसे हम कहते हैं, चौके-चूल्हे का संबंध था। उस समय संघ की व्यवस्था के अनुसार हमारा इलाका 'प्रताप भाग' के अंतर्गत आता था और भंवरलालजी इस भाग के प्रत्येक कार्यकर्ता के परिवार के साथ दूध में चीनी के समान मिले हुए थे। जुगलदा राजस्थान से ही उनके परिचित थे। उनका डीडवाना और जुगल दा का छोटीखाटू पास-पास हैं। इसका नतीजा था कि वे जुगलदा के चारित्रिक गुणों से भली प्रकार परिचित थे। इसलिए जब जुगलदा कलकत्ता आये और यहाँ इनकम टैक्स वकील के रूप में प्रैक्टिस शुरू की और साथ-साथ संघ के कार्यकर्ता का दायित्व निर्वहन करे लगे, भंवरलाल जी ने चाहा कि वे सायं शाखा का दायित्व लें। जिस तरह का कार्य उन्होंने चुना था, सायं शाखा में उनके लिए जाना असंभव था, फिर भी उन्होंने भंवरलाल जी की बात नहीं टाली और उसमें से मार्ग निकालते हुए सफलतापूर्वक युवाओं का मार्ग निर्देशन किया ही, स्वयं संघ शिक्षा वर्गों में गये। अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को तिलांजलि देकर सामाजिक ऋण चुकाने की वे मिसाल बने। यह कलकत्ता में उनकी शुरूआत थी। कलकत्ता आने के पहले राजस्थान में भी वे संघ कार्य से जुड़े हुए थे पर उनकी गतिविधियों की मुझे पूरी जानकारी नहीं है।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय तब महात्मा गांधी रोड पर अवस्थित था। उसकी आर्थिक अवस्था और रख-रखाव अच्छा नहीं था। श्री राधाकृष्ण नेवटिया इसके प्रतिष्ठाताओं में अग्रगण्य थे। मेरे पिताजी श्री बजरंगलाल लाठ उन्हें बड़े भाई का सम्मान देते थे। ताऊजी के आदेश से हमने पुस्तकालय का दायित्व स्वीकार किया। मुझे मंत्री बनाया गया और

कार्यकारिणी में श्री विनयकृष्ण रस्तोगी और जुगलदा के साथ अन्य बंधु आये। नेवटिया जी चित्तरंजन एवेन्यू स्थित श्री जालान पुस्तकालय के साथ भी संपृक्त थे। आर्थिक रूप से वह मोहनलालजी जालान परिवार की ट्रस्ट पर निर्भर था किन्तु पुस्तकालय के संचालन में थोड़ी कठिनाई उत्पन्न हो गई थी। जुगल दा ने मंत्री के रूप में जालान पुस्तकालय संभाला। कुछ समय बाद वे कुमारसभा में मंत्री के दायित्व में भी आये। तब से आज तक कुमारसभा में अनेक पदों पर रहते हुए उनका मार्गदर्शन इतिहास का विषय है। विवेकानन्द सेवा सम्मान, डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान और अनेक उपक्रमों की रचना, अनेक प्रकाशनों, प्रवचनों तथा गोष्ठियों की श्रृंखला और उनका सफल क्रियान्वयन उनकी सूझबूझ और कार्यशक्ति का ही परिणाम है। कुमारसभा का यश आज अखिल भारतीय सीमाओं को पार कर विदेशों में भी व्याप्त है। कुमारसभा का संचालन भी हृदय से ही होता है। निकट सहयोगियों में जुगल दा की छाया देखी जा सकती है।

छोटीखाटू उनका पैतृक गाँव है। वहाँ का पुस्तकालय उनके प्रयासों का एक प्रतिबिम्ब है। इस पुस्तकालय का अपना दुमंजिला मकान है। एकात्म मानववाद के यशस्वी व्याख्याकार पं. दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में वार्षिक अखिल भारतीय पुरस्कार का सफल आयोजन अपने गर्वबोध का प्रतिमान है। जो कार्यकर्ता उस पुस्तकालय का प्रतिदिन संचालन करते हैं, उनमें मैंने जुगल दा के तत्वबोध की छवि देखी है। स्व. कन्हैयालाल सेठिया राजस्थानी और हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार थे, कुछ अर्से पहले ही उनका स्वर्गवास हुआ है। सेठिया जी के समग्र चार खण्डों का सम्पादन जुगल दा ने किया – राजस्थानी –१, हिन्दी –२ तथा अनुवाद-१, जो सेठिया जी के जीवनकाल में ही पूरा हुआ और साहित्य जगत् को एक बहुत बड़ा उपहार मिला। कोलकाता के हिन्दी समाचार पत्रों के लिए यदाकदा देश के ज्वलन्त प्रश्नों पर जुगल दा अपने सुचिन्तित लेख लिखकर एक बड़े पाठक वर्ग को इन प्रश्नों से जोड़ते रहते हैं। बड़ाबाजार लाइब्रेरी के माध्यम से साहित्यिक और शैक्षणिक उपक्रमों में उनका अवदान सर्वविदित है।

जुगलदा ने साहित्यिक-शैक्षणिक विषयों तक अपने को सीमित नहीं रखा। यह तो उनके कार्य का एक पक्ष है। कोलकाता के अन्य सामाजिक कार्यों में जहाँ उनकी बुलाहट हुई, वहाँ अपने विचारों से उन्हें समृद्ध किया। राजस्थान परिषद, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी और अनेक संस्थाओं के साथ भी उनका लगाव है। मैं समझता हूँ कि इस कारण अपने विचारों को एक बड़े वर्ग तक पहुँचाने में वे सक्षम हुए हैं। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता ही नहीं, प्रान्तीय उपाध्यक्ष के पद पर कार्य करते हुए पश्चिम बंगाल में पार्टी को स्थायित्व देने में उनकी महती भूमिका रही है। जब आदरणीय

विष्णुकान्तजी शास्त्री पार्टी के अध्यक्ष थे, उनके सबसे विश्वस्त सहयोगी की भूमिका जुगलदा ने ही निभायी थी।

मैं उनको अपना मार्गदर्शक मानता रहा हूँ। सन् १९७८ में भंवरलाल जी मल्लावत के प्रयाण के बाद उनके अभाव को जुगलदा ने भरने की सतत चेष्टा की है। हमारा संपर्क नियमित रूप में बना रहता है। बहुत से निर्णय हम इकट्ठा लेते हैं। भाई प्रेमशंकर त्रिपाठी, महावीर बजाज, मोहन पारीक, अरुण मल्लावत-जुगलदा के सबल बाजुओं का काम करते हैं। सहयोगियों की सूची लम्बी है। बहुत दिनों से हम जुगलदा का नहीं, उनके कार्यों का सम्मान करना चाहते थे। हर बार वे बच निकलते थे। इस बार उनकी ७५वीं वर्षगाँठ पर वे पकड़े गये। इसमें आदरणीय डॉ. मुरली मनोहर जोशी की पहल का ही कमाल रहा है।

मैं सब के साथ मिलकर उनके दीर्घ कर्ममय और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ। अथर्ववेद का सूक्त है -

पश्येम शरदः शतम् / जीवेम शरदः शतम्
बुध्येम शरदः शतम् /रोहेम शरदः शतम्
पूषेम शरदः शतम् /भवेम शरदः शतम्
भूयेम शरदः शतम् /भूयसीः शरदः शतम्।

कविवर छविनाथ मिश्र ने गीतान्तर किया है -

देखें सौ शारदीय सुबहें हम /सौ सौ शरद अकुंठ रहें हम
सौ शरदों तक सोचें-सिरजें / सौ सौ शरद सुनाम गढ़े हम
सौ शरदों तक विकसें-निखरें / सौ सौ शरद सुगन्ध लिखें हम
शरदोज्ज्वला चेतना सहेजें /सौ शरदों से अधिक जिएँ हम। ●

सम्पर्क : शुभम् अपार्टमेंट, ५ तल्ला, १९बी, अलीपुर रोड, कोलकाता-७०००२७
मो.: ०९४३३५०७९६२

उज्ज्वलतम है कर्म तेरे

✍ दुर्गा व्यास
प्रधान सचिव: परिवार मिलन, कोलकाता

उज्ज्वल तन है, उज्ज्वलतर मन, उज्ज्वलतम है कर्म तेरे,
वाणी है ओजमयी ऐसी जो सबमें ही ओज भरे।

हिम शिखरों-सी आभा तेरी, मन अविचल है अडिग रहा,
पिघलें हिम बहती है गंगा वैसे ही तेरा स्नेह बहा।

कोई अपना और पराया नहीं, सबको ही सम्मान दिया,
जिसने पाया साथ तेरा उसने खुद पर अभिमान किया।

सुख-दुख, ऊँच-नीच जीवन की सौंप प्रभु को मौन रहे,
छिप-छिप जीवन गरल पिया, तो नीलकण्ठ भी कौन कहे।

काम किया जो भी बस उसको, प्रभु सेवा ही मान लिया,
जो भी मिला पथ में साथी, उसको उसका श्रेय दिया।

पठन-मनन और चिन्तन करते, मंथन से रचना करते,
जो भी सुना-गुना कहते, परहित सब मंगल करते।

सत्य वचन को जीवन माना, सब कुछ उस पर वार दिया,
भारत माँ का नेक दुलारा, सबने तुमको प्यार किया।

पचहत्तरवें इस जन्म दिवस पर, 'जुगल' बधाई शत-शत बार,
आनन्दोत्सव बेला होगी सौ वर्षों पर फिर इक बार। ●

सम्पर्क : बी-३, तिरुपति टॉवर, १७, धर्मतल्ला लेन, शिवपुर, हावड़ा-७१११०२
मो.: ९३३१७५९८२४

आदर्शों के आदर्श

श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया

✍ डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी

आंग्ल साहित्य में एक प्रेरक पद्य कथा है। किसी समय आबूबिन आदम नाम का एक अत्यन्त कर्तव्य परायण व्यक्ति था। एक रात उसने स्वप्न में देखा कि एक देवदूत एक स्वर्ण पुस्तक में कुछ लिख रहा है। आदम उसके पास गया और साहस करके पूछा- हे देवदूत! क्या लिख रहे हो ? देवदूत ने उत्तर दिया- ''मैं इस पुस्तक में उन लोगों के नाम लिख रहा हूँ जो ईश्वर के प्रिय हैं।'' आदम ने पुन: पूछा कि क्या इसमें उसका भी नाम है? 'नहीं' देवदूत ने उत्तर दिया। आदम इससे निराश नहीं हुआ। तब आदम ने कहा- ''जाओ! आदम एक ऐसा व्यक्ति है जिसे अपने देश एवं मानबमात्र से प्यार है।'' देवदूत चला गया और दूसरे दिन आदम ने फिर वही स्वप्न देखा। उसने देवदूत से फिर पूछा- 'क्या लिख रहे हो ?' देवदूत ने वही उत्तर दिया। आदम ने झांककर पुस्तक में देखा कि उसका नाम सबके ऊपर लिखा हुआ है।

इस कथा का यही सार है कि अपने देश एवं मानव मात्र की सेवा ही सबसे बड़ी ईश्वर सेवा है। तभी तो राष्ट्र एवं समाज सेवा श्री जैथलिया जी का आत्ममंत्र बन गया है। ऐसे ही नि:स्वार्थ समाज सेवियों के लिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-

न तन सेवा न मन सेवा। न जीवन और धन सेवा।
मुझे है इष्ट जन सेवा। सदा सच्ची भुवन सेवा।।

कर्मयोगी : श्री जैथलिया जी कर्म योग के जीवन्त प्रतिरूप हैं। गीता का कर्मयोग ही उनका जीवन मंत्र है। कर्म ही उन्हें इस आयु में भी जीवन्तता प्रदान करता है।

योग: कर्मसु कौशलम्।। (श्रीमद्भगवद्गीता २/५०)

कर्मक्षेत्र में कुशलता को प्रदर्शित करना ही सच्चा योग है। कर्मयोग की इसी उद्‌भावना का हृदय से पालन श्री जैथलियाजी आज भी ७५ वर्ष की आयु में पूर्ण निष्ठा से कर रहे हैं।

आप आज भी प्रतिदिन १०-१२ घण्टे कार्यरत रहते हैं। आप प्रत्येक कार्य को एक अद्भुत निपुणता से इस प्रकार करते हैं कि उससे शिव एवं सुन्दरम् का सौरभ प्रस्फुटित होता है। लगता है कि आपके शब्द कोश में असम्भव शब्द है ही नहीं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि वामपंथियों द्वारा शासित प. बंगाल में दो-दो अति प्रमुख स्थलों पर महान राष्ट्रवीर महाराणा प्रताप की प्रतिमाओं की स्थापना तथा एक प्रमुख मार्ग इण्डिया एक्सचेंज का नाम महाराणा प्रताप सरणी रखवा देना। यह सत्य जितना आश्चर्य जनक है उतना ही सुखद। तभी तो आप राष्ट्रीय विचारधारा वाले नवयुवकों के दीप्तमान आदर्श बन चुके हैं।

वस्तुत: जैथलिया जी समाज एवं साहित्य सेवा के प्रेरक ज्योतिवलय हैं। आपका अपना एक मौलिक अंदाज है। विनम्र होते हुए भी आप राष्ट्रीयता एवं समाजमंगल की तुला पर जिस बात को उचित मान लेते हैं उसके विरुद्ध बोलने वाले को तर्क संगत उत्तर देकर उसे मौन हो जाने के लिए बाध्य कर देते हैं। बोलने वाला चाहे कितना ही शक्तिशाली एवं प्रभावशाली क्यों न हो।

शालीनता, वाणी का संयम, अपने सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता, प्रचण्ड राष्ट्रीयता, समाज सेवा, कर्मशीलता, जीवन में सौन्दर्यतत्व की उपासना एवं सत्साहित्य का गहन अध्ययन एवं अपूर्व वक्तृता आदि गुणों को एक स्थल पर एकत्र कर दिया जाए तो उससे जिस दुग्धोज्ज्वल व्यक्तित्व का निर्माण होगा वह श्री जैथलिया ही होगा। ऐसे मानवीय गुण किसी साधन या आशीर्वाद से नहीं प्राप्त किए जा सकते। उन्हें तो ईश्वरीय कृपा से ही कोई-कोई पाता है-

यह गुन साधन तें नहिं होई।
तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई।।

मेरा श्री जैथलियाजी से परिचय कम से कम ४० वर्षों का है। जब मै कलकत्ता आया था तो यहाँ भारतीय साहित्यकार संघ की प्रान्तीय शाखा स्थापित करना चाहता था। तभी मुझे महान चिंतक एवं संघ के अखिल भारतीय महामंत्री डॉ. मोहनलाल श्रीवास्तव (नई दिल्ली) का पत्र मिला। उन्होंने लिखा कि श्री जैथलिया जी इस कार्य में सबसे उपयुक्त सहयोगी होंगे। उनके पिताश्री बांगड़ ग्रुप में कार्यरत हैं। मैं वहीं गया और घर का पता लेकर दूसरे दिन जैथलियाजी से मिला। प्रथम भेंट में ही मैं उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ। संयोग से उन दिनों मैं स्ट्रैण्ड रोड पोस्ता में रहता था। उनका आवास भी एकदम निकट था। फिर तो उनसे सप्ताह में कम से कम एक बार भेंट होने लगी। सम्बन्ध घनिष्ठ से घनिष्ठतर होते गए। ज्यों-ज्यों उनसे निकटता बढ़ती गई त्यों-त्यों उनके गुण मेरे सामने आने लगे।

ज्यों ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नयननि।
त्यों-त्यों खरी निसरै सी निकाई।।

परिष्कृत साहित्यिक रुचि : जैसाकि मैंने पूर्व ही कहा है कि आप शिव के साथ सौन्दर्य तत्व के उपासक हैं, इसीलिए उनके हर कार्य में सुन्दरता के दर्शन होते हैं। श्री जैथलियाजी गम्भीर साहित्यिक अध्येता होने के साथ अच्छे कवि भी हैं। कविता में निहित अन्तर्भावों की जितनी सूक्ष्म समझ उनमें है, उतनी अच्छे अच्छे नामधारी साहित्यकों या कवियों में भी दुर्लभ है। यहाँ मैं निःसंकोच भाव से स्वीकार करता हूँ कि मेरी अधिकांश राष्ट्रीय कविताएँ उन्हीं के आग्रह पर लिखी गई हैं और जहाँ भी मैं भटका उन्होंने सम्यक मार्गदर्शन भी किया। इस महानगर के कवियों के साथ देश के शिखरस्थ साहित्यकारों एवं राजनेताओं से उनके व्यक्तिगत सुदृढ़ सम्बन्ध हैं। उनमें प्रख्यात कवि श्री अटल बिहारी बाजपेयी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, उपन्यासकार स्व. गुरुदत्त जी, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, नरेन्द्र कोहली, महाकवि कन्हैयालाल सेठिया, श्री लालकृष्ण आडवानी, महाकवि गुलाब खण्डेलवाल प्रभृति प्रमुख हैं। अनेक यशी संस्थाओं ने आपका अभिनन्दन कर अपने को धन्य व अनन्य बनाया है।

अपने जन्मस्थान छोटीखाटू (नागौर, राजस्थान) में आपने एक पुस्तकालय भी स्थापित किया। उस सरस्वती मन्दिर में महादेवी वर्मा, भवानी प्रसाद मिश्र, जैनेन्दजी सहित अनेक कीर्तिलब्ध विद्वानों के अतिरिक्त कई राज्यपाल एवं राजनेता पधार चुके हैं। आपने अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों यथा कन्हैयालाल सेठिया समग्र साहित्य (चार खण्ड), विष्णुकान्त शास्त्री: चुनी हुई रचनाएँ (दो खण्ड), अमर आग है (अटलजी), बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता स्मरण और अभिनन्दन, फिर से बनी अयोध्या योध्या आदि अनेक शोधपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन किया है। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के आप प्राण हैं और आपकी ही तपस्या से यह पुस्तकालय आज राष्ट्र का प्रमुख सांस्कृतिक तीर्थस्थल बन गया है।

ऐसे महान कर्मयोगी का अभिनन्दन श्री बड़ाबाजार कुमारसभा कर रही है। यह इसलिए भी आवश्यक है कि जहाँ वह कृतज्ञता ऋण से उबरेगी वहीं भावी पीढ़ियाँ आदर्शों के भी आदर्श श्री जैथलियाजी के गुणों को आत्मसात करेंगी। मैं उनकी आलोकमयी जीवन यात्रा के ७६वें वंदनवार में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में अपनी अन्तरेच्छा इन शब्दों में उन्हें सादर, सौल्लास समर्पित करता हूँ।

स्वर्णिम अतीत के पुरश्चरण प्रत्यूष पहर की आशा से।
तिरते युग अम्बर में जाओ नित नूतन सृजन पिपासा से।
वारिद वियोगिनी के उर की बन एक सजल अभिलाषा से।
जीवन पथ पर बढ़ते जाओ अविराम प्रगति परिभाषा से।। ●

सम्पर्क : आशीर्वाद अपार्टमेन्ट, सी-ए-५/१०, देशबन्धु नगर, बागुइहाटी, कोलकाता-५९
मोबाइल : ८०१३२५६५५७

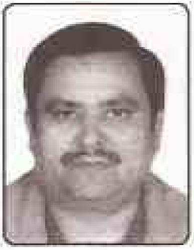

डॉ. वागीश 'दिनकर'

संस्कृत विभागाध्यक्ष

राणा शिक्षा शिविर स्नातकोत्तर महाविद्यालय

पिलखुवा-२४५३०४ (उ.प्र.)

हमको जुगलकिशोर मिले

मधुर हवा का झोका पाकर ज्यों उपवन में कली खिले
जैसे जीवन के प्रभात में शुभ समृद्धिमय पवन चले।
दूर हटाकर घनी अंधेरा अरुणोदय हो, कमल खिले।
त्यों ही पुण्यों के प्रताप से हमको जुगलकिशोर मिले।।१।।

माता-पिता ने आशाओं का नन्दा दीप सजाया था।
मधुर मंगलाचार मुदित मन गीत सभी ने गाया था।
पर इनके श्रद्धेय पिताजी ने अपने दृढ़ निश्चिय से।
ऊँची शिक्षा, ऊँची दीक्षा जोड़ दिया सत्संगत से।।२।।

अपने सत्कर्मों से इनने राष्ट्रभाव उद्घोष किया
त्याग सदा नौराश्य भाव को मधु ऊर्जा का स्रोत पिया।
अहं नहीं छू पाया इनको जितना भी सम्मान मिला।
कष्ट-कण्टकों में पलकर भी इनका जीवन सुमन खिला।।३।।

इनका अमृत महोत्सव पावन सबको हित बरदान बना
इनके गुण गौरव दर्शन का अवसर हमको मिला घना।
भामाशाह, राजश्री, कुरजाँ, वर्मा, शास्त्री सा सम्मान
शारदा ज्ञानपीठ से भूषित पुनः कर्मयोगी का मान।।४।।

श्री जैथलिया शत्-शत् मधुमासों को देखें हर्षायें,
इनका ज्योतित जीवन शत्-शत् शरच्चन्द्रिका छिटकाये।
करुणामय स्नेह प्राप्त कर दिनकर मंगल मोद मनाये
रोगदुःख सब दूर रहें सुखमय जिजीविषा मुस्काये।।५।।

सम्पर्क : सुप्रवाल सर्वोदय नगर, पिलखुवा-२४५३०४ (हापुड़) उ.प्र., मो.: ०९८३७३७०२७८

न निरग्नि: न चाक्रिय:

✍ डॉ. शिवओम अम्बर

परम आदरणीय जुगलकिशोर जैथलिया जी के बारे में कुछ कहने का भाव आते ही चित्त में श्रीमद्भगवद्गीता का एक श्लोक दीप्त हो उठता है -

अनाश्रित: कर्मफलं कार्यं कर्म करोति य:,
स संन्यासी च योगी च न निरग्नि: न चाक्रिय:।

अर्थात् कर्मफल का आश्रय न लेकर जो कर्त्तव्य कर्मों का आचरण करता है वही संन्यासी और योगी है, अग्नि का परित्याग कर देने वाला अथवा अक्रिय हो जाने वाला नहीं।

संसार में कर्मशील तो बहुत से होते हैं। उनके भीतर का रजस् तत्व कुछ पाने, कुछ कर दिखाने की महत्वाकांक्षा से प्रेरित करके उन्हें निरन्तर किसी न किसी कार्य में लगाये रखता है। अपनी इस नित्य व्यस्तता को भ्रमवश वे कर्म ही पूजा है के भ्रान्त सिद्धान्त को स्वीकारते हुए कर्मयोग मान बैठते हैं और आजीवन निरर्थकता के वृत्त में चक्कर लगाते रहते हैं, पहुँचते कहीं भी नहीं ! किन्तु कुछ विवेक सम्पन्न लोग जीवन में कर्म के इस गूढ़ रहस्य का अभिज्ञान रखते हैं कि हर कर्म नहीं, केवल विश्वात्मा की अर्चना को समर्पित कर्म ही योग है। उसका अनुष्ठान करने वाला व्यक्ति ही वास्तविक अर्चक है, याज्ञिक है, योगी है। कर्म से विरक्त व्यक्ति नहीं, स्वार्थ भावना से उसे आरंभ करने वाला व्यक्ति भी नहीं अपितु, नि:स्वार्थ भाव से लोक-कल्याण हेतु करणीय कर्मों का व्यवसायात्मिका बुद्धि के साथ सम्पादन करने वाला व्यक्ति ही योगी है, संन्यासी है। जैथलिया जी ऐसे ही कर्म योग के जीवन्त उदाहरण हैं।

इसी श्लोक के 'न निरग्नि: न चाक्रिय:' अंश की एक और व्याख्या भी की जा सकती है। जो अग्नि से रहित है और जो क्रियाओं से नाता तोड़कर बैठ गया है - वह न संन्यासी है, न योगी-ऐसी भगवान की उद्घोषणा है। यह अग्नि, यह निरन्तर ऊर्ध्वगमन की दीप्त शिखा जिस हृदय में निरन्तर जाग्रत है वही समाज के लिये कुछ सकारात्मक, कुछ सार्थक करने में समर्थ होता है। राष्ट्रकवि दिनकर ने कभी कहा था -

यज्ञाग्नि हिन्द में समिध नहीं पाती है,
पौरुष की ज्वाला रोज़ बुझी जाती है।
जो अर्घी बाहुबली का जो अपलापी है,
जिसकी ज्वाला बुझ गई वही पापी है।

पुरुषार्थ की इसी ज्वाला को, यज्ञ की इसी अग्नि को निरन्तर ऊर्जस्वित रखने का उदाहरण रहा है कर्मयोगी जैथलिया जी का जीवन-वृत्त। कर्त्तव्य के जिस आयाम का उन्होंने स्पर्श किया उसे अपने व्यक्तित्व की आभा से अनायास आलोकित कर दिया। क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर सामूहिक हित-साधना को, समष्टि के लिये व्यष्टि को न्योछावर करने की भावना को और अपनी विविध चेष्टाओं द्वारा विश्वात्मा की आराधना को यज्ञ की संज्ञा दी गई है। इसी यज्ञ की प्रतीक है अग्नि और इसी अग्नि के नैष्ठिक आराधक हैं कोलकाता की सामाजिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के सहज संरक्षक सेवाव्रती श्री जुगल किशोर जैथलिया जिनके मन-प्राण में अहर्निश अनुगुंजित होता रहता है, दिव्य समर्पण मन्त्र -

राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय, इदं न मम।

परम श्रद्धेय गुरुवर आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के अति आत्मीयों के परिमण्डल की महत्वपूर्ण इकाई रहे हैं जैथलिया जी। उन्होंने आचार्य-श्री के प्रेरक व्यक्तित्व से आदर्शों को आचरण में ढालने की प्रेरणा ही नहीं ग्रहण की अपितु विविध आध्यात्मिक सन्दर्भों में हुए उनके प्रवचनों को भी आत्मसात करने का प्रयास किया है। आचार्य जी की एक चतुष्पदी है -

बड़ा काम कैसे होता है ? पूछा मेरे मन ने,
बड़ा लक्ष्य हो, बड़ी तपस्या, बड़ा हृदय, मृदु वाणी।
किन्तु अहं छोटा हो जिससे सहज मिलें सहयोगी,
दोष हमारा, श्रेय राम का हो प्रवृत्ति कल्याणी।।

बड़े लक्ष्य के अनुकूल बड़ी तपस्या, हृदय की विराटता, वाणी की मृदुता, अहं की लघुता, समन्वयकारिणी प्रकृति, कल्याणी प्रवृत्ति और रामाश्रयी अन्त:वृत्ति की जो देशना आचार्य जी ने दी, उनके प्रति श्रद्धा रखने वाले उनके शिष्यों, उनके साहित्य के सहृदय भावकों और उनके निकटस्थ आत्मीयों ने अपनी-अपनी शक्ति भर उसके पालन की प्रचेष्टाएं की होंगी - ऐसी अवधारणा की जा सकती है किन्तु जिन लोगों में उनकी देशना दृष्टान्त बनकर उपस्थित है उनमें प्रथम पंक्ति में श्री जुगल किशोर जैथलिया विराजित हैं। उनकी कार्य-योजनाएँ, उनका युक्ति युक्त चिन्तन, योजनाओं को कार्यरूप में परिणत करने और फिर किसी नये कल्याण-उपक्रम को अपने हाथ में लेने, प्रकल्पों को संकल्पों से संयुक्त कर स्वस्तिविधानों का वितान रचने वाली उनकी प्रतिभा पुनः पुनः अभिवन्द्य अभिनन्द्य है।

जिनको राजस्थान में जुगलकिशोर जी के पैतृक ग्राम छोटीखाटू में जाने का अवसर मिला है, वे महसूस कर सकते हैं कि किस प्रकार एक सात्विक संकल्प, एक समग्र क्षेत्र को सकारात्मकताओं के केन्द्र रूप में परिणत कर सकता है। जैथलिया जी में समानधर्माओं का संगठन कर उन्हें उनकी शक्ति और अभिरुचि के अनुकूल कार्यों में यथोचित स्थान पर अधिष्ठित करने की अद्भुत क्षमता है। डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, श्री महावीर बजाज आदि अपने हर कदम के सहयोगी बन्धुओं को साथ लेकर वे साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अनुष्ठानों की सुसंरचना का इतिहास रचते रहे हैं। संस्कृत साहित्य का एक चर्चित सुभाषित है –

अमन्त्रम् अक्षरो नास्ति नास्ति मूलम् अनौषधम्,
अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तु सुदुर्लभः।

अर्थात् कोई भी अक्षर ऐसा नहीं है जिसमें मन्त्र बनने की क्षमता न हो, कोई भी वनस्पति ऐसी नहीं है जिसमें ओषधीय गुण न हों, कोई भी पुरुष ऐसा नहीं है जिसमें किसी न किसी योग्यता का निवास न हो किन्तु उनको पहचान कर उन्हें यथास्थान नियुक्त करने वाले, उन्हें सुसंयोजित करने वाले व्यक्ति को उपलब्ध कर पाना ही अत्यन्त कठिन है। जैथलिया जी ऐसे ही सुदुर्लभ व्यक्तित्व हैं जो कोलकाता के सहृदय सुजन-समाज को और छोटीखाटू के अनन्य अनुरागियों को सहज सुलभ हैं।

हमारी सांस्कृतिक परम्परा चतुर्थ आश्रम में प्रवेश के अवसर पर अमृत-महोत्सव के रूप में अभिनन्दन करती है। वैदिक साहित्य में अमृत परमात्मा का पर्यायवाची है तो पौराणिक मान्यता उसको तुष्टि-पुष्टि प्रदाता मधु पेय की मान्यता देती है। व्यावहारिक जीवन में अमृतत्व अर्थात् परम तत्व की उपासना को अर्पित मधु अर्थात् निःस्वार्थ प्रेम से परिपूर्ण जीवन को प्रणति निवेदित करने का पर्व है अमृत-महोत्सव। आदरणीय जैथलिया जी से संयुक्त होकर यह महोत्सव अवश्य ही अपनी सहज-स्वाभाविक अर्थवत्ता को उपलब्ध होगा।

आदरणीय जैथलिया जी का व्यक्तित्व और कर्तृत्व शत-शत स्वर्ण-उषाओं से अभिषिक्त किये जाने का अधिकारी है। न जाने कितने पुरस्कार उनसे जुड़कर अपनी प्रामाणिकता को प्रमाणित करवाते रहे हैं। आदर्शों और सिद्धान्तों को शाब्दिक प्रस्तार की जगह आचरण का संस्कार देकर अनुप्रावित करने वाले जैथलिया जी का वन्दन, अभिवन्दन और अभिनन्दन करके सहृदयता आत्मानुभूति को प्राप्त कर रही है, सामाजिकता कृतज्ञता ज्ञापित कर रही है, भावतरलता प्रभु से प्रार्थना कर रही है – आप स्वस्थ रहते हुए शतायु हों और 'भूयश्च शरदः शतात्' .... श्रीरामकथा के अमृतत्व को उपलब्ध हों। ●

सम्पर्क : ४/१०, नुनहाई, पो. फर्रुखाबाद-२०९६२५ (उ.प्र.), मो. ०९४१५३३३०५७

निस्वार्थ सेवा के मूर्तिमान प्रतिमान हैं श्री जुगल किशोरजी जैथलिया

✍ डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'

आज के भोगवादी एवं अर्थ प्रधान युग में श्री जुगल किशोरजी जैथलिया जैसा आत्म प्रशंसा पराङ्मुख एवं सतत परार्थ सेवा समर्पित व्यक्तित्व मिलना दुर्लभ है। श्री जैथलिया जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जितनी प्रशंसा करूँ, उनके लिए शब्द ही थोड़े पड़ेंगे, वे नहीं। उनकी इस उदार सेवा परायण वृत्ति की पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की वैचारिकता का आत्मसातीकरण ही मैं देखता हूँ। सन् १९९३ में, मुझ अपरिचित को अकस्मात उनका एक पत्र मिला, इस वर्ष का श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य पुरस्कार आपको देना निश्चित हुआ है। कृपया स्वीकृति से अवगत करायें। पहले इन-इन को दिया जा चुका है। पं. दीनदयालजी के नाम से पुरस्कार पाना मेरे लिए गौरव की बात थी। मैने स्वीकृति सूचक पत्र भेज दिया। श्री जैथलियाजी के व्यक्तित्व को समझने के लिए यहाँ यह उल्लेख कर देना समीचीन होगा कि छोटीखाटू श्री जैथलिया जी की जन्मभूमि है। अध्ययन के उपरान्त ये कोलकाता चले गये और वहाँ टेक्सेशन के एडवोकेट हो गये। इसे हम मातृभूमि के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा भक्ति की पराकाष्ठा ही कहेंगे कि वे कोलकाता वासी होकर भी अपनी जन्मभूमि को नहीं भूले। बल्कि अपना ऋण इस छोटे से स्थान पर विशाल पुस्तकालय भवन खड़ा कर तथा पं. दीनदयालजी जैसे तपस्वी के सम्मान में उनके नाम से साहित्यिक पुरस्कार प्रारम्भ कर जननी जन्मभूमि के ऋण से अपने को उऋण ही नहीं किया, अपने भीतर बसे साहित्यानुराग के साथ संघ के प्रति अपनी अनन्य निष्ठा का भी प्रकटीकरण किया है। यहां श्री जैथलियाजी ने वाल्मीकि द्वारा रामायण में लंका विजय के उपरान्त भगवान श्रीराम के भी मुख से कहलवाई यह उक्ति ही चरितार्थ की है –

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते,
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

एकबार मुझे श्री जैथलियाजी ने सेठ श्री सूरजमल जालान पुस्तकालय की ओर से तुलसी

पर व्याख्यान देने के लिए कोलकाता आमंत्रित किया था। उसके बाद मैंने अपने सद्य प्रकाशित साहित्य की कुछ प्रतियाँ श्री बड़ाबाजार कुमारसभा एवं सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय के लिए भेजी थी, तब श्री जैथलिया जी ने एक एक प्रति छोटीखाटू पुस्तकालय के लिए भी मंगवाई। यह भी श्री जैथलियाजी के छोटीखाटू पुस्तकालय के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा तथा जन्मभूमि के प्रति उनकी सेवा भावना को प्रकट करता है। इस कोलकाता यात्रा में श्री जैथलियाजी के साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं राष्ट्रभावापन्न व्यक्तित्व से पूरी तरह परिचित होने का अवसर मिला, जिसने श्री जैथलिया जी के साहित्यिक अवदान के प्रति पूर्व जागृत मेरी निष्ठा को और परिपुष्ट कर दिया। ज्ञात हुआ कि वे श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के अध्यक्ष एवं मंत्री रहे हैं। सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय के भी मंत्री रहे हैं। राजनैतिक क्षेत्र में श्री जैथलिया जी पश्चिम बंगाल भाजपा के कोषाध्यक्ष रहे हैं। सम्प्रति आप उसके उपाध्यक्ष हैं। सामाजिक क्षेत्र में आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी तथा कोलकाता पिंजरापोल सोसाइटी की कार्य समिति के भी सदस्य है। इनसे जहाँ श्री जैथलिया जी की सार्वजनिक जीवन में सक्रियता का पता मिलता है, वही श्री जैथलियाजी अपनी योग्यता से प्रवासी मारवाड़ी बंधुओं को अपने सदाशयी वाहु-पाश में भी बांधे हैं। कोलकाता में बनी राजस्थान परिषद के आप संस्थापकों में से एक तथा वर्तमान में उपाध्यक्ष हैं, यही इसका प्रत्यक्ष प्रभाव कहा जा सकता है। वैसे तो श्री जैथलियाजी टेक्सेशन के एडवोकेट हैं, पर इनकी अपनी भाषा हिन्दी एवं राजस्थानी के प्रति तथा इनमें लिखित साहित्य के प्रति कितनी गहरी रुचि है, यह इनकी सम्पादित कृतियों से प्रत्यक्ष होता है। टेक्सेशन का एक व्यस्त एडवोकेट इतने पुस्तकालयों, सामाजिक संस्थाओं तथा स्मारिकाओं एवं समग्र के सम्पादन के लिए अपना बहुमूल्य समय दे, यह श्री जैथलियाजी के निस्वार्थ सार्वजनिक जीवन की, सेवा की विस्मयकारी कहानी है। आपने स्वनामधन्य पूर्व राज्यपाल स्वर्गीय आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जी के कृतित्व का दो वृहद खण्डों में तथा चार खण्डों मे बिड़ला फाउन्डेशन के मूर्ति देवी पुरस्कार से सम्मानित साहित्य मनीषी कवि श्री कन्हैयालाल जी सेठिया के समग्र साहित्य का सम्पादन किया है। यह भी श्री जैथलिया जी का हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के प्रति गहरी आस्था का निर्विवाद प्रत्यक्षीकरण है। प्रतिवर्ष देश विदेश के विद्वानों को आमंत्रित कर विभिन्न साहित्यिक मंचों से व्याख्यान करवाना श्री जैथलियाजी का भारतीय संस्कृति के अटूट प्रेम को प्रकट करता है। कह सकते हैं, ऐसे आयोजनों की रचना श्री जैथलिया जी की भारतीयता के प्रति उनकी गहरी निष्ठा की ही अभिव्यक्ति है। आपने सन् १९८० में 'तुलसीदास: चिन्तन अनुचिन्तन' नाम से एक वृहदाकार पुस्तक का सह-सम्पादन किया है। 'कालजयी सोहनलाल दूगड़ स्मृति ग्रन्थ' का सन् १९७९ में तथा 'पत्रों के प्रकाश में कन्हैयालाल सेठिया' पुस्तक का सन् १९८० में सह-सम्पादक कर साहित्य के प्रति अपनी अनन्य निष्ठा को ही अभिव्यक्ति की है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति तो आप की

बालपन से ही जमी श्रद्धा, आज तो और अधिक प्रगाढ़ होकर सामने आई है। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंच से प्रतिवर्ष समर्पित किसी राष्ट्र भक्त व्यक्तित्व को इक्यावन हजार रुपये का 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' एवं इतनी ही राशि का 'विवेकानन्द सेवा सम्मान' दिलवाना, श्री जैथलियाजी की उदात्त संयोजना का एक अंग ही बन गया है। इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की यशस्विता को प्रकाश में लाने वाले ऐसे अनेकों स्वर्ण सोपान हैं, कहाँ तक गिनाऊँ। सूर्य को दीपक दिखाने वाली उक्ति ही सिद्ध होगी।

श्री जैथलियाजी इसी २ अक्टूबर सन् २०१२ को अपनी आयु के ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। उनकी सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अबतक जो समर्पित सक्रियता रही है, वह सर्वभावेन अतीव प्रशंसनीय एवं पूज्य रही है। समय-समय पर समाज ने भी उन्हें सम्मानित कर उनका हृदय से मूल्यांकन किया है। सम्मानों की यह सूची बड़ी लम्बी है। उल्लेखनीय कुछ सम्मानों का उल्लेख आवश्यक मान उन्हें शब्द देते हुए हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ यथा आपको सन् २००१ में 'शारदा ज्ञानपीठ सम्मान', सन् २००३ में 'भगवती चरण वर्मा स्मृति सम्मान', सन् २००४ में 'भामाशाह सेवा सम्मान' तथा 'राजश्री स्मृति सम्मान', सन् २००६ में 'कुरजां सम्मान', सन् २००८ में 'विष्णुकान्त शास्त्री हिन्दी सेवा सम्मान' तथा इसी विगत सन् २०११ में 'कर्मयोगी सम्मान' से समाज द्वारा आपको अभिषिक्त किया गया है। यह क्रम आगे भी चलता रहेगा, यह पूर्ण विश्वास है। यह सही है ७५ वर्ष की आयु के पश्चात शास्त्र संन्यास लेने की बात कहते हैं। परन्तु मेरा अनुभव है कि जो जीवन भर सक्रियता से समाज सेवा से जुड़ा रहा है, निस्वार्थ भाव से अपने को समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र के लिए समर्पित किया है, वह अंतिम श्वास तक मौन होकर कैसे बैठा रह सकता है। श्री जैथलिया जी को तो अभी सेवा के कितने ही और शिलालेख गाड़ने हैं, यह भविष्य कह रहा है। उनके जीवन का अब तक का इतिहास कह रहा है। सेवा समर्पित व्यक्तित्व कभी पलायन की भाषा को अपनी जीवन पुस्तक में अंकित या मुद्रित नहीं होने देता। विश्वास है श्री जैथलिया जी अपने जीवन के शेष वर्षों को और सक्रियता, उत्साह तथा तेजस्विता के साथ समाज सेवा में लगा अपनी यशस्विता में चार चाँद लगा, समाज का सम्मानों भरा शुभाशीर्वाद प्राप्त करते रहेंगे।

मैं हृदय से उनकी निस्वार्थ सेवा भावना का सम्मान करता हूँ तथा उस परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह श्री जैथलिया जी को प्रदीर्घ एवं स्वस्थ आयुष्य प्रदान करे तथा राष्ट्र भक्ति, समाज सेवा तथा साहित्य-प्रेम पथ पर निरन्तर अग्रसर करता रहे। ●

सम्पर्क : सिविल लाइन्स, कोटा-३२४००१(राज.) मो.: ०९४६०५७०८८३

उस आदमी को सौंप दो दुनिया का कारोबार
जिस आदमी के दिल में कोई आरज़ू न हो।

✍ पद्मश्री डॉ. मुजफ्फर हुसैन

कवि ने उपरोक्त पंक्तियाँ कर्मयोगी जुगलकिशोर जी जैथलिया के लिये ही लिखी होगी इस सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। जिस किसी ने माँ भारती के इस सपूत को देखा है और परखा है वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। कोलकाता में हिंदी भाषियों की जो हलचल और चहल-पहल है वह जैथलिया जी का बड़ा योगदान है। आजादी के पश्चात् पश्चिम बंगाल में हिंदी साहित्य की गतिविधियों से जुड़े रहे लोग इस यथार्थ को स्वीकार करते हैं। राजस्थान में जन्म लेने वाला एक व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा उस क्षेत्र से प्रारम्भ करता है जो उसकी मातृ भाषा के परे है। बालू रेत का यह प्रदेश अपने आंचल में अनेक बिसंगतियों को संजोए हुए है। अपने घर से बहुत दूर विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के परिसर में आकर यह व्यक्ति अपनी भाषा, अपनी बोली, अपने संस्कार और अपनी गतिविधियों की एक ज्योति जलाता है और देखते ही देखते माँ भारती की आरती का एक पुष्प बन जाता है। छोटीखाटू का बड़ा बेटा बड़ी छलांग लगा कर नागौर को गौरवान्वित करने के लिये कोलकाता में स्थायी हो जाता है। उसके पश्चात् न केवल अपनी शिक्षा और व्यवसाय की ऊँचाई पर पहुँच जाता है बल्कि राष्ट्रीय और सामाजिक कार्य की दीक्षा लेकर सम्पूर्ण हिंदी भाषी क्षेत्र को चकाचौंध कर देता है। मारवाड़ के युवकों को यह संदेश देने में सफल हो जाता है कि तुम भी चाहो तो नागौर के अमर सिंह राठौड़ बनकर एक नया इतिहास कोलकाता की धरती पर लिख सकते हो। हमारे पूर्वजों ने औरंगजेब के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी। अब नए भारत की रक्षा के लिए हमें अन्तर्राष्ट्रीय तत्वों से लड़ कर एक समृद्ध भारत की रचना करना है। एक जीता जागता उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचार धारा को अपना माध्यम बना लिया जिसका सुखद परिणाम यह आया कि देश के महान साहित्यकार एवं राष्ट्र भक्तों के इर्द-गिर्द जैथलिया जी हमेशा घिरे रहे। यह इसी राजस्थानी का प्रताप है कि कोलकाता में महाराणा प्रताप की स्मृति में पार्क

और सड़क का नामकरण तो हुआ ही, चेतक पर सवार राणा प्रताप की २० फुट ऊँची कांस्य प्रतिमा सेन्ट्रल एवेन्यू में स्थापित करवा कर यह संदेश दिया कि 'जठे राणा बठे स्वाभिमान'। शारदा ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त कर जैथलिया जी ने यह सिद्ध कर दिया कि उनकी थैलियों में साहित्य, राजनीति, समाजसेवा और भामाशाह की उदारता ठूँस-ठूँस कर भरी हुई है। ऐसे कर्मयोगी, बड़ाबाजार के बड़े जुगलकिशोर जी जैथलिया शतायु हों ताकि हम उनके सहस्त्र चंद्र दर्शन के उत्सव में सहभागी हो सकें। ●

सम्पर्क : सी-१/८, पार्क साइट कॉलोनी, विक्रोली (पश्चिम), मुंबई - ७९, मो.: ०९८१९१८६८६६

हिन्दी-राजस्थानी भाषाओं के बहुश्रुत विद्वान जैथलियाजी की साहित्य चेतना

✍ डॉ. तारादत्त निर्विरोध
हिन्दी साहित्यकार एवं पत्रकार
पूर्व संयुक्त निदेशक एवं प्रेस अटैची मुख्यमंत्री

विभिन्न भाषाओं के बहुश्रुत विद्वान एवं प्रज्ञा पुरुष जुगलकिशोर जी जैथलिया आगामी २ अक्टूबर २०१२ ई. को अपने जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। उनका सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में दीर्घकालीन अवदान रहा है जिससे वे राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्ध रहे हैं। कोलकाता का 'श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय' इस पावन अवसर पर जैथलियाजी का अमृत महोत्सव समारोहिक रूप में आयोजित कर रहा है। यह आयोजन जैथलिया जी की अनन्य सेवाओं का प्रतीक और उनके कर्मयोग का साक्षी भी होगा।

जैथलियाजी का जन्म राजस्थान के नागौर जिले की डीडवाना तहसील के छोटीखाटू ग्राम में मध्यवर्गीय कुल के श्री कन्हैयालाल जी एवं पुष्पा देवी के परिवार में २ अक्टूबर सन् १९३७ ई. को अपने ननिहाल निम्बीजोधां में जेठमलजी बिहानी के घर हुआ और शिक्षा के लिए वे विभिन्न स्थलों पर रहे। सन् १९५३ ई. में जैथलियाजी कोलकाता आ गए जहाँ उनके पिताश्री बाँगड़ उद्योग घराने में सेवारत थे। राष्ट्रवादी विचारों से ओत-प्रोत जैथलियाजी विभिन्न संस्थाओं से जुड़े, सम्बद्ध रहे और सभी में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। वे सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी के संस्थापकों में भी रहे और उनके प्रयासों का फल यह रहा कि कोलकाता में सरदार पटेल की १२ फुट ऊँची भव्य कांस्यमूर्ति स्थापित हो सकी। वे कोलकाता की बड़ाबाजार लाइब्रेरी, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, पिंजरापोल सोसाइटी और अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन जैसी संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे। भारत सरकार की महत्त्वपूर्ण प्रकाशन संस्था 'नेशनल बुक ट्रस्ट' और 'नेशनल इन्स्योरेंस' के निदेशक भी रहे। वे 'स्वस्तिक प्रकाशन ट्रस्ट' के भी ट्रस्टी हैं।

ऐसी अनेक जानकारियों से सम्पन्न मैं कोलकाता में जैथलियाजी के सम्पर्क में आया

किन्तु वह परिचय एक प्रवासी का दूसरे निवासी राजस्थानी तक रहा। एक दिन राजस्थान के पत्रकार श्री श्याम आचार्य जी का फोन आया कि जैथलियाजी आपसे कुछ लिखवाना चाहते हैं। जैथलियाजी मुझसे 'राजस्थानी भाषा के पचास वर्ष' शीर्षक से एक आलेख चाहते थे। मैंने एक सप्ताह में आलेख लिख भेजा जो बाद में 'राजस्थान परिषद' की स्मारिका में प्रकाशित हुआ। लेख के बाद जैथलियाजी और मेरे बीच पत्र व्यवहार बढ़ता चला गया। उनके अनेक पत्र मेरे पास 'स्थायी पूंजी' बनते चले गए। मैं भी ऐसे विरल व्यक्तित्व की राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित होता रहा। जैथलियाजी जब भी मेरी कोई रचना पढ़ते, मुझे अपने अभिमत से परिचित कराते, मेरा उत्साहवर्द्धन करते। देशभर की पत्र-पत्रिकाओं में मुझे पढ़ते हुए वे हर्षित होते और अपने हृदयोदगारों से आपूरित होकर पत्र लिखते- मैंने आपके लेख एवं कविताएँ पढ़ी हैं पर पुस्तकें नहीं पढ़ने को मिली। अब आप भेजेंगे तो रुचि जागृत होगी ही।'' (पत्र ०५/०३/२००५) ''मुझे आपकी 'समय सूर्य', 'कागज तक है देश', 'मन बंजारे जैसा', 'अभी नहीं' और 'पानी का गीत' कविताएँ अच्छी लगीं।'' (पत्र १४/०७/२००५) और 'कन्हैयालाल सेठिया समग्र' ग्रन्थों के प्रकाशनोपरांत उनका पत्र मिला- ''आप जैसे वरिष्ठ साहित्यकार जब किसी कार्य को सराहते हैं तो अपना परिश्रम सार्थक हुआ लगता है। अभी मेरे मन में सेठियाजी पर एक ग्रन्थ और निकालने की परिकल्पना है जिसमें उनकी रचनाओं के विभिन्न भाषाओं में हुए अनुवाद, साहित्यकारों के समीक्षात्मक लेख आदि होंगे। आपसे अनुरोध है कि फुरसत से सेठियाजी के सम्पूर्ण साहित्य पर एक लेख लिखकर रखें।''

एक दिन जैथलियाजी का पत्र मिला जिसमें छोटीखाटू के पुस्तकालय और पुरस्कार की चर्चा थी- ''मैं छोटीखाटू-राजस्थान का हूँ। वहाँ भी एक पुस्तकालय से जुड़ा हूँ। हम प्रतिवर्ष पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम से पुरस्कार भी देते हैं। उस समय मैं भी वहाँ होता हूँ। गत वर्ष का फोल्डर आपके अवलोकनार्थ भेज रहा हूँ। कभी मौका मिला तो आपको भी पधारने हेतु आग्रह करूँगा।'' (पत्र ९/०४/२००५) फिर वे अपनी सामाजिक राष्ट्रीय गतिविधियों में खो गये। ५ फरवरी २००७ को उनका पत्र आया- ''आपको यह जानकर आनन्द होगा कि कोलकाता महानगर में म्यूनिसिपल कारपोरेशन ने हमारी संस्था 'राजस्थान परिषद' को एक प्रमुख चौराहे पर प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप की चेतक पर सवार २० फुट ऊँची कांस्य प्रतिमा स्थापित करने की पिछली ११ जनवरी को अनुमति प्रदान कर दी है। हम लोग इसके लिए पिछले २१ वर्षों से प्रयासरत थे। प्रतिमा यहाँ के चित्तरंजन एवेन्यू के मेट्रो स्टेशन के सामने लगाई जाएगी। आगामी ३० मार्च को प्रकाशित होनेवाली स्मारिका में मूर्ति सम्बन्धी विवरण एवं आप द्वारा गतवर्ष भेजे गए प्रताप विषयक लेख को देने की इच्छा है।''

उन्होंने १६ जनवरी २००६ को मुझसे 'राजस्थान में वनवासी विकास : चुनौतियाँ और प्रयास' लेख भी चाहा था किन्तु एक स्मारिका में एक लेखक के दो लेख प्रकाशित करना

उचित नहीं समझा गया। मेरे और उनके बीच पत्र-सान्निध्य का सिलसिला चलता रहा और कोलकाता तथा नागौर की गतिविधियाँ उजागर होती रहीं।

विगत १७ जून २०११ को उनका पत्र मिला- ''इस वर्ष के पंडित दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान हेतु छोटीखाटू पुस्तकालय समिति ने सर्वसम्मति से आपके नाम का चयन किया है। आपकी स्वीकृति अपेक्षित है। छोटीखाटू में यह कार्यक्रम ९ अक्टूबर २०११ को होगा। कृपया स्वीकृति मेरे पते पर भिजवाएँ। पुरस्कार एवं पुस्तकालय सम्बन्धी कुछ सामग्री भी संलग्न है।'' सामग्री देखी तो ज्ञात हुआ, यह पुरस्कार अबतक देश के हिन्दी साहित्यकारों में बशीर अहमद मयूख (कोटा), बलवीर सिंह करुण (अलवर), किशोर कल्पनाकांत (रतनगढ़), दयाकृष्ण विजय (कोटा), मनोहर शर्मा (बीकानेर), अब्दुल गफ्फार (जयपुर), नरेन्द्र मिश्र (चित्तौड़गढ़), रतनगढ़ के सीताराम महर्षि, शिवओम अम्बर (फर्रुखाबाद), किशोर काबरा (अहमदाबाद), तरुण विजय (नयी दिल्ली), गुलाब खण्डेलवाल (गया), डॉ. रमानाथ त्रिपाठी (नयी दिल्ली), डॉ. युगेश्वर (वाराणसी), डॉ. कमल किशोर गोयनका (दिल्ली), अम्बाशंकर नागर (अहमदाबाद), डॉ. देव कोठारी (उदयपुर) और श्रीमती मृदुला सिन्हा (दिल्ली) आदि को प्राप्त हो चुका है। यह पुरस्कार २०११ में लेखक को प्रदान किया गया जो २२वाँ सम्मान था। पुस्तकालय ने 'महाकवि कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान' भी प्रारम्भ किया है। जिसके चार सम्मान क्रमश: श्रीलाल नथमल जोशी (बीकानेर), बैजनाथ पंवार (चूरू), डॉ. किरण नाहटा और ओम पुरोहित (हनुमानगढ़) को प्रदान किए गए हैं।

क्रान्तिमूलक विचारधारा के सक्षम कार्यकर्त्ता, राष्ट्रवादी समाज सुधारक, अनन्य साहित्य सेवी और कोलकाता में आयकर सलाहकार जुगलकिशोर जी जैथलिया का सम्पर्क-सम्बन्ध देश के चोटी के नेताओं से रहा है। वे स्वयं भी राष्ट्रीय धारा के उच्चस्तरीय कार्यकर्त्ता रहे हैं। अनेक संस्थाओं के सक्रिय कार्यकर्ता के साथ वे पश्चिम बंगाल में भारतीय जनसंघ के अग्रणी प्रेरक-निर्माताओं की सूची के शीर्षस्थ नाम भी रहे हैं।

जैथलियाजी प्रतिभाओं के सम्मान के प्रति जागरूक रहे हैं और स्वयं भी अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से विभूषित रहे हैं। वे कवि-लेखक-सम्पादक और प्रचारक के साथ राजस्थान की माटी की महक भी हैं जो दिग्दिगन्त में परिव्याप्त है। उन्हें भी शारदा पीठ सम्मान, भगवती चरण वर्मा स्मृति सम्मान, भामाशाह सेवा सम्मान, राजश्री स्मृति साहित्य सम्मान, कुरजां पत्रिका सम्मान, विष्णुकान्त शास्त्री विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान और कर्मयोगी सम्मान से अलंकृत किया जा चुका है। उनके अमृत महोत्सव से देश की नयी पीढ़ी को सत्कार्यों के संपादन की प्रेरणा मिलेगी और वे सदैव ऐसे प्रकाश स्तम्भ को देखते रहना पसन्द करेंगे। ●

सम्पर्क : २५४, पद्मावती कॉलोनी 'ए', अजमेर रोड, जयपुर-३०२०१९, फोन: (०१४१) २८१००८६

कर्मयोगी जुगलजी जैथलिया

✍ श्याम माथुर

प्रतिवर्ष जब राजस्थान दिवस स्मारिका की प्रति नियमित रूप से प्राप्त होती है तो भाई जुगलकिशोरजी जैथलिया की कर्मठता व सत्कार्यों की याद आ जाती है और उनकी निष्ठा के आगे सिर आदर से झुक जाता है। निरन्तर ३० वर्षों से इतनी मात्रा में इतना महत्वपूर्ण व उपयोगी सामग्री का संग्रह एवं संपादन कोई साधारण काम नहीं है। और यह तो जुगल जी के कार्यों का एक अंश मात्र है।

वह वर्ष २००९ का अगस्त माह रहा होगा जब जुगलजी अपने सहयोगियों के साथ अजमेर आए थे, शायद तब कोलकाता में महाराणा प्रताप की प्रतिमा की स्थापना की योजना का काम चल रहा था और ये लोग अजमेर में ओंकार सिंहजी लखावत द्वारा बनवाए गए स्मारकों का अवलोकन करने आए थे। तब जुगलजी से मेरी प्रथम भेंट कन्हैयालालजी सेठिया की पुस्तक 'लीलटांस' के अंग्रेजी में अनुवादक के रूप में हुई थी और उन्होंने तुरंत ही मुझे अगले माह कोलकाता आकर 'कन्हैयालाल सेठिया समग्र-४' (अनुवाद खंड) के लोकार्पण समारोह के कार्यक्रम में पत्रवाचन का निमंत्रण दे दिया। उनकी शीघ्र व सही निर्णय लेने की क्षमता सराहनीय है।

इसके बाद जब मैं सपत्नीक कोलकाता गया तो तीन दिनों तक जुगलजी व उनके सहयोगियों के स्नेहपूर्ण आतिथ्य ने हम दोनों को अभिभूत कर दिया। सेठिया जी अस्वस्थता के कारण समारोह में नहीं आ पाए थे अतः उनसे मिलवाने जुगलजी हमें अपने साथ उनके घर लेकर गए। आप स्वयं हमें भारतीय भाषा परिषद के कार्यालय भी लेकर गए और वहाँ तत्कालीन निदेशक से परिचय करवाया और हमारे लौटने की आखिरी शाम को स्वयं साथ आकर एयरपोर्ट के पास अर्थशास्त्री भाई धनपतजी अग्रवाल के निवास पर पहुँचाया जिससे कि भारी वर्षा के कारण सुबह एयरपोर्ट पहुँचने में हमें कोई कष्ट न हो और आर्थिक विषयों पर धनपत जी से संवाद भी हो। ऐसे स्नेहमय, कृपाशील हैं हमारे भाई जुगल किशोरजी।

जुगलजी के अनेक सद्गुणों में से उनके आचरण में संयम, सादगीपूर्ण जीवन तथा साहित्यिक व सामाजिक कार्यों के प्रति निष्ठा आदि विशेष अनुकरणीय हैं।

मैं और मेरी पत्नी डॉ. कुसुम आदरणीय जुगल किशोरजी जैथलिया को सादर प्रणाम करते हैं तथा उनके ७५वें जन्म दिन पर बधाई देते हुए कामना करते हैं कि वे शतायु हों और संस्था व समाज के कार्यों में सक्रिय रहकर अन्य कार्यकर्ताओं को निरंतर प्रेरणा व मार्गदर्शन देते रहें। ●

सम्पर्क : १५, कैलाशपुरी, क्रिस्चियनगंज, पो.: अजमेर-३०५००१ (राजस्थान)
मो.: ०९८२९११६९०६१

जुगलकिशोर पियारा

-अम्बू शर्मा

उगै भोर मुस्काती मिलणो स्वजन-घराँ शुभकामी
देवदारु-सा लम्ब-तड़ंगा शोभन-रूप सुनामी
जुगलकिशोर जाति जैथलिया कलकत्तै रा बासी
इतणो काम कर्‌यो कलकत्तै और कियां कर पासी
बीजेपी अध्यक्ष-सहायक सभा-कुमार सुधारी
रजनी-गन्धा मार्च-तीस नैं नियमित सभा विचारी
इन्स्टीट्यूट-हॉल में बांटयशा सहस-पचास रुपैया
परिषद्-राजस्थान्याँ री पोथी रा श्रेष्ठ छपैया
उपनिषदां री कथा प्रचारी नियमित क्रम माह
वक्ता बण प्रधानता साथी संस्थावाँ क्रमवारी
युवकाँ नैं सँग-साथ कर लिया बड़ी टीम रा नेता
स्नेह-स्वभावी मिठ-बोला मत-भेद तर्क-मन-जेता
असहायी नैं घराँ जाय कर सब सहायता दीनी
सच्चरित्र री चीन्ह योग्यता उन्नति-पन्थ-प्रवीणी
प्रौढ़ावस्था री दिनचर्या प्राणायाम सधावै
स्वाध्यायाँ-हित श्रेष्ठ पोथियाँ अलमार्‌याँ कलकत्तै अलमार्‌याँ
जलम-जात पुस्तक-प्रेमी में प्रेम भरै किलकार्‌याँ
दूजाँ-हित माता-सी ममता बाँथाँ भर लुटवाया
छोटाँ री भी चरण पकड़ कर ऊँचो शीश नुवाया
इण विनम्रता रै व्यवहाराँ कूण न बलि-बलि जावै
सिद्धान्ताँ में सदा रहै थिर जैथलिया सुख पावै
अम्बूशर्मा नैं सुखदाता जुगलकिशोर पियारा
धन्य हो गया पूत जलम कर माता-पिता तिहारा
थारा बेटा, पोता और पड़ौता भी सुख पावै
अम्बूशर्मा-ज्यूँ अनेक जन कीरत-गाथा गावै। ●

स्व-कामधन्य वन्दनीय श्री जैथलियाजी

✍ अम्बु शर्मा

जैथलियाजी की सेवा के अनेक आयाम हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, मारवाड़ी सम्मेलन, विश्व हिन्दू परिषद् और राजस्थान परिषद। १६-१७ वर्ष की अवस्था से ही उत्कृष्ट कविकर्म, लेखन एवं प्रखर वक्ता होने के साथ-साथ देशभर के महान् साहित्यकारों एवं राजनेताओं तथा समाज सेवियों को छोटीखाटू से लेकर कलकत्ता तक उत्साहपूर्वक निमन्त्रित कर उनका सम्मान करना तथा लोगों को उनसे सानिध्य का अवसर देना उनका सहज स्वभाव बन गया है। इसीलिए मैंने उन्हें स्व-कामधन्य का विशेषण दिया है। कलकत्ता में महाराणा प्रताप की स्मृति में २१ फुट ऊँची भव्य काँस्य प्रतिमा की कलकत्ता के हृदयस्थल में स्थापना एवं उत्तम रख-रखाव तथा महाकवि कन्हैयालालजी सेठिया के सम्पूर्ण साहित्य को समग्र के रूप में चार खंडो में सम्पादन एवं प्रकाशन तथा ६५ वर्ष की उम्र से ही अपनी जमी-जमाई आयकर की वकालत को अपने आत्मज गोविन्दबाबू को सम्हला कर पूरी तरह समाजसेवा में लग जाना उनको आज के अर्थयुग में वन्दनीय बनाता है।

६ फुट लम्बे, रीढ़ की हड्डी सीधी, प्रात: ५ बजे से ही उठकर प्राणायाम, योगाभ्यास करने वाले जैथलियाजी के लिए हम कविवर प्रसादजी की वाणी में कह सकते हैं -

स्फीत शिराएँ स्वस्थ रक्त का
होता है जिनमें संचार
देवदारु-सा दीर्घायित तन
वृषभ सरीखा बल सम्भार

हो भी क्यों नहीं ? आप कभी भी प्रात: ७-८ बजे उनके निवास ४२, कालीकृष्ण टेगौर स्ट्रीट में जायेंगे तो प्रविष्ट होते ही पाएँगे उन्हें अंकुरित अन्न का कलेवा, नाश्ता करते हुए। वे आपको भी खिलाएँगे घर का बना मिष्टान्न, नमकीन एवं शीतोष्ण दुग्ध। अद्‌भुत होता है उनका प्रसन्न मन से किया अतिथि सत्कार।

जैथलियाजी सतत् कर्मरत हैं। उन्होंने उत्तम कोटि के अनेको आयोजन भी किए हैं। अनेक कार्यकर्त्ताओं को भी गढ़ा है। आप आयोजन में वक्ता एवं श्रोता सभी उच्चकोटि के रहते हैं। २० मार्च को राजस्थान दिवस के कार्यक्रमों में उन्होंने चलाकर मेरी राजस्थानी रामायण के अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड (युद्ध काण्ड) तथा उत्तरकाण्ड का १९९० से १९९४ तक लगातार लोकार्पण भी सम्पन्न कराया, सम्पूर्ण राजस्थानी रामायण (पृष्ठ ८३६) का डॉ. मुरली मनोहरजी जोशी के करकमलों से लोकार्पण भी कराया, यह एक अद्भुत संयोग उन्होंने बनाया। जोशीजी कुमारसभा पुस्तकालय के तत्वावधान में जैथलियाजी द्वारा आयोजित डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान में अवश्य पधारते हैं। यह भव्य आयोजन महाजाति सदन के बड़े सभागार में सम्पन्न होता है।

आज जब जैथलियाजी के ७५ वर्ष की अवस्था की सम्पूर्ति पर अमृत महोत्सव का श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजन किया जा रहा है उसमें डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, आयोजन समिति के संरक्षक मंडल के प्रधान संरक्षक हैं। यह अपने आप आयोजन की महत्ता को प्रकट करता है। यह जैथलियाजी की तपस्या का ही फल है। कोलकाता में सहस्रोंजन जैथलियाजी से अधिक धनवान एवं विद्वान हैं, वे भी क्या ७५ वर्ष के नहीं हुए? पर जैथलियाजी की बात ही अलग है, निराली है- वे अनेक गुणों को अपनी विनम्रता से एक साथ साधे हुए हैं ह

एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
जैथल वाला जुगलजी, परिभाषा न समाय। ●

सम्पर्क : फ्लेट-५१३, जलवायु रेजीडेन्सी, ३३७ मोतीलाल गुप्ता रोड, कोलकाता-७०० ००८
मोबाइल : ७४३९१ ७७७६८

निष्काम कर्मयोगी जुगलजी

✍ नन्दलाल शाह

मेरा परिचय श्री जुगल जी जैथलिया से ४४ वर्ष पुराना है। उनके विचारों में दृढ़ता है परन्तु दूसरों के विचारों को सुनने की प्रबल इच्छा है, उनका आदर करना कर्तव्य मानते हैं। १९७० ई. में आपने मुझे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा सत्यनारायण पार्क में सुबह ७ बजे भाषण के लिए आमंत्रित किया। मैंने अनुरोध किया कि मेरे विचार भिन्न हैं, अतएव मुझे क्षमा करें। आपने कहा इसीलिए तो सुनना चाहते हैं। आज भी सिद्धान्तों के मानने में कुछ भिन्नता है परन्तु उनके हर काम में तन, मन से यथाशक्ति सहयोग करके मन को शान्ति मिलती है। यही जुगलजी के व्यक्तित्व की विशेषता है।

जयप्रकाश नारायण और डा. राममनोहर लोहिया जैसे सशक्त समाजवादी नेताओं पर स्मारिका का प्रकाशन इनके व्यापक दृष्टिकोण का ज्वलन्त उदाहरण है। लोहिया स्मारिका के प्रकाशन के समय इनके साथ काम करके अनेक समाजवादी सिद्धान्तों का नया रूप समझने का अवसर मिला। किसी भी विषय का गहन अध्ययन कितना आनन्द प्रदान करता है, यह अनुभूति आपके सम्पर्क से प्राप्त होती है।

परिवार के साथ रहना अतएव गृहस्थ। केवल समाज का काम करना अतएव वानप्रस्थ या संन्यास। जो चाहे कहें। अपने लिए केवल एक कमरा जिसके पीछे बरामदा, आगे बरामदा; एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक जाने के लिए दो फीट चौड़ा रास्ता, बाकी जगह गद्दा, चारों ओर किताबें, पत्र-पत्रिकाएँ। इन सबके बीच एक गृहस्थ-सन्त। आने जाने वालों का तांता। दोपहर से शाम तक एक छोटा-सा ऑफिस। घर और ऑफिस की एक ही प्रक्रिया।

एक बार श्री महावीर जी बजाज ने कहा कि जुगलजी का निर्देशन है कि कपड़े उतने ही रखो, जितनी नितान्त आवश्यकता हो। लोगों की माल भरी वारड्रो देखता हूँ तो मुझे जुगलजी के ये विचार याद आते हैं। गृहस्थ में यही सन्तपन है, यही साधुवाद है।

राजस्थान परिषद् के तत्वावधान में कई गतिविधियाँ होती है। महाराणा प्रताप की विशाल मूर्ति की स्थापना में हमें तृणमूल कांग्रेस के नेता पूर्व विधायक श्री दिनेश बजाज एवं

उनके पिताजी स्व. सत्यनारायणजी का पूर्ण सहयोग मिला। राजनैतिक विचारों में भिन्नता है, परन्तु श्री जुगलजी का व्यक्तित्व सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। श्री गीतेश शर्मा जानेमाने साम्यवादी विचारों वाले पत्रकार हैं। उन्हें भी जुगलजी ने अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित किया और बड़े आदर के साथ सुना।

मैं समाज के ऐसे अनेक प्रतिष्ठित, साधन सम्पन्न और प्रभावशाली व्यक्तियों को जानता हूं जो श्री जुगलजी के संरक्षण में चलने वाली किसी भी संस्था को बेहिचक सहयोग प्रदान करने को तैयार रहते हैं। इन व्यक्तियों का जुगल जी से कोई खास व्यक्तिगत संबंध नहीं रहा, परन्तु इनके सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों को देखकर स्वत: ही एक श्रद्धा भाव उनके मन में बना रहता है।

एक महान विद्वान सन्त के पास रामायण और गीता दो ही पुस्तकें अन्तिम कुछ वर्षों में पड़ी रहती थीं। श्री विद्यानिवासजी मिश्र ने विनीत भाव से पूछा कि ऐसा क्यों था? जवाब मिला, इनमें लिखने वाले का कोई स्वार्थ नहीं है, यश की कामना भी नहीं है। जुगलजी ने कितने ग्रन्थों का प्रकाशन किया या करवाया, कितनी स्मारिकाएँ निकाली, किसी में कोई स्वार्थ नहीं। जो समाज के हित में है, वही प्रकाशित हो। जब प्रकाशन बाहर आता है तो मन करता है कि बार-बार पढ़ा जाये। आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री के गीता प्रवचन की एक तिथि को घोर वर्षा हो रही थी, घुटनों तक पानी भरा था और शास्त्रीजी के साथ जुगलजी सभास्थल, पुस्तकालय कक्ष की ओर पानी में चल रहे थे, एक वक्ता और एक श्रोता वाली भारत की परम्परा को निभाने (यह और बात थी कि घनघोर वर्षा में भी श्रोताओं की कमी नहीं थी)। इस जोड़ी ने भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखने में निरन्तर योगदान किया। शास्त्रीजी के स्वर्गवास के बाद भी श्री जुगल जी ने उनकी कार्यप्रणाली, शैली और विचारों को निरन्तरता प्रदान की है, यह सफलता अत्यन्त सराहनीय है। इस कार्य में श्री प्रेमशंकरजी त्रिपाठी का अवदान भी अद्वितीय है। शास्त्री जी के साहित्य का प्रकाशन समाज एवं साहित्य के लिए कल्याणकारी है।

आपके जीवन चरित्र के बारे में, आप किन संस्थाओं से जुड़े है, आप किन पदों पर आसीन रहे हैं, आपको कौन-कौन से पुरस्कार मिले हैं, ये सब बातें इस ग्रन्थ में विस्तार से उपलब्ध होंगी ही। यह ग्रन्थ आने वाली पीढ़ी में सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का समाज में मिलना दुस्वार है। स्वर्गीय सीतारामजी सेकसरिया एवं भागीरथजी कानोड़िया के बाद तो नितान्त अभाव है। साधन सम्पन्न अपनी संस्थाएँ बनाते हैं। वह भी अच्छा है। उनसे भी कला, संस्कृति, उपचार और शिक्षा का प्रसार होता है। परन्तु सामुहिक योगदान से बनी संस्थाओं

का प्रारूप समाज का दर्पण होता है। वह सामाजिक कार्य अत्यन्त आवश्यक है। इस कार्य को गति प्रदान करने में श्री जुगलजी का योगदान एवं कार्य प्रणाली एक मिशाल है।

व्यक्ति का धर्म होता है कि वह अपने परिवार, अपने गाँव, अपने प्रांत, अपने देश और मानव जाति हेतु कुछ न कुछ करें। श्री जुगलजी के प्रति इस ग्रन्थ में सभी विषय परिलक्षित होंगे। सर्वश्री विमल लाठ, प्रेमशंकर त्रिपाठी, महावीर बजाज, मोहनलाल पारीक, अरुण मल्लावत, शांतिलाल जैन, शार्दूल सिंह जैन, रूगलाल सुराणा आदि अनेक विद्वान और प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता जुगलजी की योजनाओं को कार्यरूप में परिणित करने में निरन्तर सहयोग प्रदान करते रहते हैं। इनका योगदान अत्यन्त सराहनीय है।

७५ वर्ष पूरे हुए, हर्ष की बात है। भगवान कम से कम शतायु तो जरूर करें। इतनी व्यापक गतिविधियों को ऐसे मार्गदर्शक की निरन्तर आवश्यकता है। ●

सम्पर्क : २, मण्डेविला गार्डन्स, बालीगंज, कोलकाता-७०००१९, मो.: ९८३१०२३३१

श्री जुगलकिशोर जैथलिया : आत्मीय संस्मरण

✍ शिवकुमार गोयल

धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि मानव जीवन बड़े भाग्य व संचित पुण्यों से प्राप्त होता है। अतः जीवन का एक-एक क्षण, एक-एक पल भगवान की भक्ति व सत्कर्मों में लगाने में ही जीवन की सार्थकता है। अपने परिवार के प्रति धर्म (कर्तव्य) का, दायित्व का निर्वहन करते हुए समाज व राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन नितान्त आवश्यक है। समाज व राष्ट्र से हमें बहुत कुछ मिलता है अतः ऋण मुक्ति के लिए हमारा दायित्व है कि हम अपने साधनों के माध्यम से दोनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते रहें।

आदरणीय श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया ऐसे कर्मयोगियों में अग्रणी हैं परिवार, समाज व देश के प्रति अपने दायित्वों का दृढ़ता के साथ निर्वहन करते हुए दूसरों को भी सेवा व परोपकार के कार्यों में प्रवृत्त करने में सक्रिय रहते हैं।

श्री जैथलिया जी ने नैतिक व धार्मिक संस्कारों में साहित्य के योगदान के महत्व को समझा तथा वे जहाँ स्वयं लेखन के क्षेत्र में प्रवृत्त हुए वहीं उन्होंने ज्ञान के प्रसार के उद्देश्य से अपनी जन्मस्थली छोटीखाटू में भी एक पुस्तकालय की स्थापना की। कोलकाता के ऐतिहासिक बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय को और अधिक समृद्ध बनाने में उनका अनूठा योगदान रहा है। इस योगदान के कारण श्री जैथलिया जी को साहित्यिक जगत में अच्छी ख्याति प्राप्त हुई है।

सन् १९९५ की बात है। मैंने किसी पत्रिका में राष्ट्रनेता श्री अटलबिहारी वाजपेयी की कविताओं के संकलन 'अमर आग है' की समीक्षा पढ़ी। आदरणीय श्री अटलजी से मेरे पारिवारिक सम्बन्ध रहे हैं। मैं उनके भाषणों व कविताओं का प्रशंसक रहा हूँ। मैंने श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के पते पर एक पत्र पुस्तक वी.पी. से भेजने के लिए लिख दिया। एक सप्ताह बाद ही आदरणीय जैथलिया जी के स्नेह-आशीर्वाद से युक्त पत्र के साथ पुस्तक डाक से प्राप्त हो गयी। श्री जैथलिया जी ने पत्र में लिखा था- अपने पिताश्री भक्त रामशरणजी की तरह धर्म, संस्कृति पर खूब लिखते हो-पत्र-पत्रिकाओं में छपते हो। इसी

प्रकार निरन्तर सद्विचारों के प्रचार-प्रसार में लगे रहो। यह उनका पहला पत्र था। बाद में तो उन्होंने मुझे कई महत्वपूर्ण पुस्तकें भेजकर अनुगृहीत किया।

नवम्बर (१९९९) के अंतिम सप्ताह की बात है। रात के नौ बजे का समय था। अचानक मेरी शैया के सिरहाने पर रखे टेलीफोन की घन्टी खनखना उठती है। चोगा उठाकर कान से लगाता हूँ - आवाज सुनाई देती है - मैं बड़ाबाजार लाइब्रेरी कोलकाता से जुगलकिशोर जैथलिया बोल रहा हूँ। आपको यह सुखद सूचना देनी है कि अभी सम्पन्न हुई बैठक में आपका नाम सर्वसम्मति से लाइब्रेरी के तत्वावधान में आर.एस.चितलांगिया फाउन्डेशन के भाईजी हनुमानप्रसाद पोद्दार राष्ट्रसेवा सम्मान के लिए चयनित किया गया है। शेष सूचनाएँ आपको शीघ्र प्राप्त हो जाएँगी।

श्री जैथलिया जी के मुख से दूरभाष पर सहसा ये शब्द सुनकर मैं हक्का बक्का रह गया। न मुझसे कभी पुस्तकालय की ओर से मेरा जीवनवृत्त मँगवाया गया था, न मैंने पुरस्कार के लिए आवेदन ही किया था। यह उनकी और उनकी पूरी टीम की पारखी दृष्टि ही थी कि उन्होंने मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति का चयन किया एवं उनसे जिज्ञासा करने पर उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ यही प्रक्रिया है कि जो व्यक्ति बिना किसी फल की कामना के साहित्य-संस्कृति की सेवा में लगा रहता है, उसी का हम चयन करते हैं। आप द्वारा किए गये आध्यात्मिक विभूति भाईजी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के विचारों के प्रसार तथा सत्साहित्य सृजन में निरन्तर लगे रहने तथा धर्म, संस्कृति व राष्ट्ररक्षा के लिए लेखनी के माध्यम से सतत् क्रियाशील रहने जैसे मापदण्डों के आधार पर ही आपका नाम सर्वसम्मति से चयनित किया गया है।

मैं उनकी विनयशीलता से हतप्रभ था। कुछ दिन बाद यह सूचना मिली की समारोह कोलकाता में २७ फरवरी (सन् २०००) को होगा। आप सपरिवार आएँ - सब व्यवस्था की जाएगी। मैंने सहज ही में पूछ लिया - मेरे भाई, बहनें व एक-दो मित्र भी इस ऐतिहासिक समारोह में उपस्थित रहना चाहेंगे। वे बोले शिवकुमारजी, आप निःसंकोच सबको साथ लाएँ - उन सबका यथाशक्ति स्वागत सत्कार होगा। मैं अपनी पत्नी सत्यवती एवं परिवार के अन्य कई सदस्यों सहित २६ फरवरी को कोलकाता यथासमय पहुँच गया। आपकी व्यवस्था देख कर हमलोग दंग रह गए कि शायद किसी मुख्यमंत्री या राजनेता को भी ऐसा हार्दिक आत्मीय सम्मान मिलता हो। अगले दिन २७ फरवरी को आयोजित यह सम्मान समारोह ऐसा अनूठा व गरिमापूर्ण था कि उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। राज्यपाल द्वय माननीय आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री तथा राष्ट्र के लिए समर्पित श्री सुन्दरसिंह भण्डारी जैसी विभूतियों के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण कर मैं कृतकृत्य हो उठा था। श्री जैथलिया जी, श्री विमल

लाठ तथा पुस्तकालय के अन्य सभी पदाधिकारियों ने जो आदर-सम्मान प्रदान किया उसे मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानता हूँ।

इस समारोह में कलकत्ता के अनेक साहित्यकारों, पत्रकारों व संभ्रान्त व्यक्तियों के दर्शनों का सौभाग्य हम सबको मिला। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रंगकर्मी आदरणीय विमल लाठजी, पुराने परिचित भिवानी (हरियाणा) निवासी उद्योगपति समाजसेवी श्री कालीचरण केशान, आर्य समाज के मूक साधक श्री गजानन्द आर्य, पत्रक मित्र श्री श्यामसुन्दर आचार्य तथा आदरणीय श्री रामनिवास ढंढारिया जी के पुत्र श्री सुदर्शन ढंढारिया तथा श्री नवरतन ढंढारिया से मिलने का भी सुयोग प्राप्त हुआ।

श्री जैथलियाजी ने हम सबको श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजित आचार्य श्री विष्णुकांत शास्त्री के गीता वचनामृत का पान करने के लिए एक दूसरे समारोह में भी आमंत्रित किया। आचार्य श्री के श्रीमुख से उपदेशामृत सुनकर मानो हम सब धन्य हो गए।

दोनों पुस्तकालयों के सभी पदाधिकारियों श्री विमल लाठ, श्री पुरुषोत्तमदास चितलांगिया, श्री महावीर बजाज, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, नन्दकुमार लढ़ा, अशोक गुप्त आदि ने तीन दिन तक हम सबको जो स्नेह-आदर प्रदान किया उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसके पश्चात् तो पिछले १२ वर्षों से मैं निरन्तर श्री जैथलियाजी के सम्पर्क में हूँ एवं उनकी साहित्यिक, सामाजिक एवं राजनैतिक सभी गतिविधियों से परिचित होता रहा हूँ। सचमुच वे एक समर्पित राष्ट्रभक्त हैं। कोलकाता में महाराणा प्रताप की स्मृति में लगाई गई भव्य २० फुट ऊँची प्रतिमा आपकी योजकता, दूरदृष्टि, साहस तथा लोक सम्पर्क का अनूठा उदाहरण है। महाकवि कन्हैयालाल जी सेठिया के सम्पूर्ण साहित्य का चार खंडों में सम्पादन तथा आचार्य शास्त्री की रचनाओं का भी दो खंडों में सम्पादन साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

मैं श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के पदाधिकारियों को धन्यवाद देता हूँ कि वे श्री जैथलियाजी का अमृत महोत्सव पर अभिनन्दन तो कर ही रहे हैं, उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रहे हैं। मैं दोनों ही कामों की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ भेज रहा हूँ। श्री जैथलियाजी स्वस्थ रहें एवं दीर्घजीवी हों यही प्रभु से प्रार्थना है। ●

सम्पर्क : बीचपड़ी, पो. पिलखुवा-२४५३०४, जि. गाजियाबाद (उ.प्र.), दूरभाष: (०१२२) २३२२७३८

अनुजवत् सहृदय मित्र जैथलियाजी

✍ डॉ. रमानाथ त्रिपाठी

बन्धुवर श्री जुगलकिशोर जैथलिया का जन्म हुआ राजस्थान की वीरप्रसू धरती पर। उन्होंने कर्मक्षेत्र बनाया बंगाल की शस्य श्यामला भूमि को। दोनों ही प्रदेशों के आकाश-वातास का प्रभाव उनके स्वभाव और चरित्र पर है। उनकी पढ़ाई कॉमर्स की है, पेशा है वकालत का और प्रकृति है साहित्यकार की। बचपन से ही वे राष्ट्र के प्रति समर्पित रहे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परिवार की कई संस्थाओं के माध्यम से अपनी सेवाएँ राष्ट्र को समर्पित की। अभीतक वे दर्जन से ऊपर ग्रन्थों और तीन दर्जन से अधिक स्मारिकाओं का सम्पादन और प्रकाशन कर चुके हैं।

मेरा उनका परिचय नाटकीय रूप में हुआ। मेरे एक मित्र ने बताया कोलकाता में जुगल किशोर जैथलिया नाम के एक एडवोकेट हैं। वे संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक हैं। राम के प्रति उनके मन में गहरी श्रद्धा है। आप दोनों समान स्वभाव के हैं। पहले तो मैंने ध्यान नहीं दिया। चार-पाँच मास बीत जाने पर मैंने जैथलिया जी का अता-पता पूछा तो वे टालमटोल करने लगे। वे बोले, नाम तो नन्दकिशोर जैसा कुछ है, पता मालूम नहीं। मुझे जिद सवार हुई कि मैं पता मालूम करके ही रहूँगा। मैंने कोलकाता की तीन-चार संस्थाओं के पते पर पत्र डाल दिये। डेढ़ मास बाद जैथलिया जी का पत्र आया कि उन्हें मेरा पत्र मिल गया है और पता यह है। मुझे लगा कि ये तो बहुत ही अपने हैं। कुछ महीनों बाद उन्होंने फोन पर बताया कि यहाँ सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय नाम की विख्यात संस्था है, जोकि तुलसी जयन्ती के अवसर पर प्रत्येक वर्ष विराट समारोह में तुलसी साहित्य के किसी प्रसिद्ध विद्वान को आमंत्रित करती है। इस बार हम आपको आमंत्रित करना चाहते हैं। उन्होंने मुझे सपत्नीक बुलाया था। हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही एक अजीब से आकर्षण में बँधकर हम मिले। किसी पहचान की आवश्यकता नहीं हुई। मुझे जालान जी की विशाल कोठी में ठहराया गया। ऐसे अरबपति के परिवार का सान्निध्य एक दुर्लभ अनुभव रहा। मेरे भाषण का विषय था- तुलसी काव्य में लोकमंगल। कार्यक्रम में मेरे मित्र आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री और प्रोफेसर कल्याणमल लोढ़ा भी उपस्थित थे। जैथलिया जी ने कोलकाता की ही एक अन्य प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था

'श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय' में भी मेरे भाषण का कार्यक्रम रखा था। यहाँ भी कई साहित्यकारों एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जुटे हुए कार्यकर्त्ताओं से परिचय का लाभ मुझे प्राप्त हुआ।

कोलकाता महानगर में रहते हुए भी अपनी जन्मभूमि छोटीखाटू के प्रति उनका गहरा लगाव है। यहाँ उन्होंने भव्य सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की है। प्रत्येक वर्ष वहाँ दो विद्वानों को आमंत्रित कर उन्हें 'पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान' एवं 'कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान' से अलंकृत किया जाता है। मुझे भी पूर्व राज्यपाल (उ.प्र.) श्री विष्णुकान्त शास्त्री के करकमलों से 'पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान' प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। यहाँ मैंने अनुभव किया कि छोटीखाटू के लोगों के मन में जैथलियाजी के प्रति अपार श्रद्धा है। अपने जन्मस्थान के विकास के लिए आप कई प्रकार का सहयोग देते रहते हैं।

संघ से प्रेरणा लेकर हमने तन-मन-धन से समर्पित होकर संगठन का कार्य किया। संघ ने हमें यह दृष्टि दी थी कि देश सेवा हमारा त्याग नहीं कर्तव्य है। हम निष्ठावान स्वयंसेवक निःस्पृहभाव से सेवा ही करते रह गये। जब हमारी विचारधारा के लोग सत्ता में आये तो अवसरवादी लोग जुगाड़ भिड़ाकर सत्ता की अधिकांश सुविधाएँ हड़प गये। जब मैंने अपना क्षोभ जैथलियाजी के समक्ष व्यक्त किया तो वे बोले- हम तो गंगोत्री से जुड़े हैं, अर्थात् हम तो डा. हेडगेवार से निष्काम राष्ट्र सेवाकी प्रेरणा लेकर चलते हैं। जब आप संघ में आये तो आपने सोचा भी न था कि यदि हमारी विचारधारा के लोग सत्ता में आये तो हम भी इसका लाभ उठाएँगे। अतः हमें अब नये पहाड़े को याद करने की क्या जरूरत है ?

उनके इन वचनों ने मुझे आश्वस्त किया था। अब कभी मन विचलित होता है तो मुझे 'गंगोत्री' वाली बात याद आ जाती है। मेरे कुछ समर्पित मित्र भी जब जुगाड़ू भाइयों की हरकतें देखकर हताशा का अनुभव करते हैं तो मैं जैथलिया जी वाला गंगोत्री सिद्धान्त सुना देता हूँ।

मैंने जीवन-भर नाना प्रकार के आघात सहे हैं। मैं बार-बार बुरी तरह टूटा हूँ और बार-बार धूल झाड़कर उठ खड़ा हुआ हूँ। ऐसे ही निराशा के क्षणों में मैंने जब-जब जैथलिया जी से फोन पर सम्पर्क किया तो उनकी स्नेहादर और अपनत्व से भरी वाणी ने मुझे नयी स्फूर्ति दी है। वे मेरे गिने-चुने अनुजवत् मित्रों में एक हैं। उन्होंने मेरे लिए बहुत कुछ किया है, मैंने तो उनके लिए कुछ भी नहीं किया। उनमें गजब की ऊर्जा है। वे वकालत, देशसेवा, राजनीति, साहित्य-सेवा और संस्थाओं का संचालन एकसाथ कैसे कर लेते हैं, आश्चर्य होता है। ऐसे सत्पुरुष के स्वस्थ दीर्घ जीवन की मंगलकामना की जाए तो यह राष्ट्र के हित में ही होगा। ●

सम्पर्क : २६, वैशाली, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४, दूरभाष : ०११-२७३११२२५

ज्ञान और भक्ति से ओतप्रोत निष्काम कर्मयोगी श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया

✍ डॉ. किशोर काबरा

आस्था आरोपित नहीं की जा सकती, न ही उसके लिए विवश किया जा सकता है किसी को। जब किसी का व्यक्तित्व पूर्णतः मुकुलित होता है तो उसकी सुवास लोगों को उसके पास बरबस खींच लाती है। मेरे आत्मीय बन्धुवर श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया का व्यक्तित्व भी सोलह कलाओं से खिला है। व्यष्टि से लेकर समष्टि तक शब्द से लेकर अर्थ तक, गाँव से लेकर महानगर तक, वक्तव्य से लेकर कर्त्तव्य तक, संकलन से लेकर संयोजन तक, संचालन से लेकर सम्पादन तक, देश से लेकर देशान्तर तक और भावुकता से लेकर कर्मठता तक फैले जैथलियाजी के विभिन्न आयामों को नापना मेरे सामर्थ्य से परे है। मैं मात्र उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को प्रणाम कर सकता हूँ।

पिछले पन्द्रह-बीस वर्षों से उनके नाम एवं काम को देखकर कह रहा हूँ कि राजनीति ने उनको कभी कूटनीतिज्ञ नहीं बनाया, साहित्य ने उनको कभी आत्म प्रशंसक नहीं बनाया, समाजसेवा ने उनको कभी दंभी नहीं बनाया, मित्राचार ने उनको कभी स्वार्थी नहीं बनाया और नेतृत्व निर्माण ने उनको कभी गुरुडम से ग्रस्त नहीं किया। वे अपने आयकर सलाहकार से सम्बन्धित व्यवसाय में उतने ही सफल रहे, जितने वे समाज-चिन्तन और साहित्य-सम्बर्द्धन में। इन सभी सम-विषम रेखाओं को आप अपने वृत्त में समाहित करके एक पारदर्शी व्यक्तित्व के स्वामी बने। आपमें अद्‌भुत संगठनक्षमता एवं संयोजन पटुता है, जिसके बल पर कई संस्थाओं को जीवन मिला है। कोलकाता जैसे महानगर की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ तो आपकी ऋणी हैं ही, पर छोटीखाटू जैसे छोटे गाँव की भारत के मानचित्र पर सारस्वत उपलब्धियों के बल पर स्वतंत्र पहचान बन पाई है, उसके मूल में श्री जैथलियाजी का श्रम, अध्यवसाय, सामाजिक दायित्वबोध, जन्मभूमि के प्रति लगाव एवं कर्त्तव्यबोध है। सन्तुलन एवं समायोजन के जीवन्त आदर्श हैं श्री जुगलकिशोरजी।

कोलकाता और अहमदाबाद देश के दो ध्रुवों पर स्थित हैं, पर आदरणीय आचार्य

श्री विष्णुकान्त जी शास्त्री जब भी अहमदाबाद पधारते, कोलकाता की साहित्यिक अस्मिता के संदर्भ में जैथलियाजी की चर्चा अवश्य करते। शास्त्रीजी के प्रति श्री जैथलियाजी की आस्था एवं गुरुभाव देखकर हम सब विस्मय विमुग्ध थे, वहीं जैथलियाजी के प्रति शास्त्रीजी का आत्मीय विश्वास और निश्छल स्नेह देखकर हम सब आश्चर्य चकित थे। लगता था जैसे किसी उपनिषद के ऋषि और भामाशाह के वंशज का अनायास मिलन हुआ है।

अभिनन्दन ग्रन्थों, स्मृति ग्रन्थों, स्मारिकाओं तथा समग्र ग्रन्थों के प्रकाशन में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के योगदान को कौन भुला सकता है ? इनकी सम्पादन क्षमता का जो चमत्कार श्री जैथलियाजी ने प्रदर्शित किया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। मुझे स्मरण है कि श्री कन्हैयालाल सेठिया एवं श्री विष्णुकान्त शास्त्री से सम्बन्धित अभिनन्दन ग्रन्थों में उन्होंने मेरे आलेखों को सम्मिलित करने का आग्रह इस सीमा तक रखा है कि अभिभूत हो गया हूँ उनकी गुणग्राहक संचेतना एवं सम्बन्ध निर्वहन क्षमता को देखकर। वैराग्य और किसे कहते हैं ? ज्ञान भक्ति एवं कर्म की त्रिवेणी और किसे कहते हैं ?

श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया से हुए मेरे परिचय की भी एक रोचक कहानी है। अहमदाबाद में मेरे एक प्रशंसक मित्र हैं – श्री बिहारी लालजी रूणवाल। मूलतः राजस्थान के है और यहाँ बैंकिंग व्यवसाय से जुड़े है। इसके पूर्व कुछ समय के लिए छोटीखाटू पुस्तकालय एवं कोलकाता में जैथलियाजी के यहाँ रहे थे। इनसे मेरा साहित्यिक परिचय प्राप्त कर जैथलियाजी ने मुझे पुरस्कृत करना चाहा। मेरा सम्मान वे माहेश्वरी होने के नाते नहीं कर रहे थे। वे तो इस बात से चकित थे कि मैं वैश्य होते हुए भी सम्पूर्ण रूप से शब्द को समर्पित हो गया है और मेरा महाकाव्य खंडकाव्य पूरे देश में चर्चित हैं। वैसे १९८२ में कोलकाता की संस्था 'अर्चना' द्वारा मुझे दिए सम्मान-पुरस्कार से वे परिचित थे। १९५८ ई. में स्थापित 'श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय' की ओर से कई साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का आयोजन किया जाता रहा है। इस संस्था को महादेवी वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, भवानीप्रसाद मिश्र, जैनेन्द्र कुमार, कन्हैयालाल सेठिया, नरेन्द्र कोहली जैसे सारस्वतों के आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं।

श्री जैथलियाजी ने वर्ष १९९९ के 'पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य पुरस्कार' के लिए मेरे नाम की संस्तुति की। उन्होंने श्री रूणवाल के माध्यम से मुझे सूचित किया एवं दिनांक १ एवं २ जनवरी २००० को आयोजित समारोह मे मुझे पुरस्कृत करने का कार्यक्रम बनाया। छोटीखाटू मेरे लिए एकदम नया तथा अपरिचित स्थल था। वहाँ कैसे जाना एवं किसके साथ जाना यह मेरे लिए एक प्रश्न था। जिसे जैथलियाजी ने ही हल किया। उन्होंने रूणवालजी को भी तैयार कर लिया मेरे साथ कार्यक्रम में जाने के लिए। इस तरह सारी तकलीफें खत्म होगई। श्री बिहारीलालजी रूणवाल ने आने-जाने की सारी यात्रा सम्बन्धी औपचारिकताएँ पूरी की। उनके साथ की गई यात्रा अपने-आप में एक स्मरणीय प्रसंग है।

छोटीखाटू गाँव तो जैसे मेरे सम्मान के लिए पूरी तरह सज सँवर कर तैयार खड़ा था। जैथलियाजी अपने कुछ मित्रों के साथ हमें लेने के लिए डेगाना स्टेशन आए, वहाँ से कार द्वारा हमें छोटीखाटू ले गए। वहाँ किसी गेस्ट हाउस या होटल में हमें न ठहराकर पुस्तकालय के पूर्व मंत्री स्व. भौमराजजी बेताला के परिवार में सम्माननीय परिजन की तरह रखा। सारा परिवार जैसे स्नेह एवं सौजन्य की चाशनी में तरबतर था। बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी परिजन जैसे हमें घेरे थे। खान-पान, स्नान-ध्यान, नास्ता-पानी, शयन-विश्राम और चर्चा-परिचर्चा में आत्मीयता घुली थी। जैथलियाजी का गाँव एवं गाँव के लोगों पर कितना प्रभाव था यह देखकर हम चकित थे। इशारों से काम होता था। संकेत मिलते ही जैसे क्रिया शुरू हो जाती थी। श्री जैथलियाजी के साथियों एवं सहयोगियों की लय, चतुराई और कार्यक्षमता पूरे आयोजन को चार चाँद लगा रही थी। भव्य मंच पर गरिमामय परिवेश में स्तरीय आयोजन का अविस्मरणीय प्रसंग था। मेरा प्रवचन, मेरी कविता, मेरा सम्मान- सबको याद करता हूँ तो कृतज्ञता के अश्रुओं में डूब जाता हूँ और जब बाहर आता हूँ तो श्री जैथलियाजी का निष्पाप हँसता चेहरा मेरा स्वागत करता हुआ दिखाई देता है।

छोटीखाटू का दूसरा प्रसंग भी उतना ही रोचक, रोमांचक एवं गरिमामय रहा है। मेरे गुरुवर डॉ. अम्बाशंकर जी नागर को भी छोटीखाटू पुस्तकालय ने पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय लिया। अब बात वही आई, जो मेरे सामने आई थी। नागर साहब के लिए भी छोटीखाटू एकदम नया एवं अपरिचित स्थान था। वैसे वे अकेले बहुत ही कम यात्रा करते थे। उन्हें छोटीखाटू कौन लाए ? आदरणीय श्री जयकिशन दास सादानी ने मुझसे कहा कि मैं नागर साहब के साथ जाऊँ। उस समय मैं पत्नी को छोड़कर कहीं न जा पाने की स्थिति में था। क्या किया जाए ? आखिर जैथलियाजी ने हल ढूँढ़ा। नागर साहब एवं मैं अपनी-अपनी पत्नी को साथ लेकर छोटीखाटू आए। सबके आने-जाने की विशेष व्यवस्था के लिए उन्होंने हाँ भी भरी।

और फिर चला हमारा दल। यह यात्रा भी अविस्मरणीय रहेगी मेरे लिए, क्योंकि गाँव में हमारा जो सपत्नीक सम्मान हुआ, उसका वर्णन करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। जैसे हम किसी बारात में आए हों, या जैसे हम बहुत ही उच्चकोटि के अधिकारी मेहमान हों- इस तरह सब हमारे सामने बिछ-बिछ जाते थे। डॉ. नागरजी का भव्य सम्मान हुआ, वे पुरस्कृत हुए और साथ मे मैं भी सम्मानित किया गया। नागर साहब की पत्नी और मेरी पत्नी भी अलंकृत की गई।

यह यात्रा केवल छोटीखाटू पर ही खत्म नहीं हुई। हमें फिर बीकानेर ले जाया गया। रास्ते के सभी दर्शनीय स्थल देखते हुए एवं कई कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हुए हम जयपुर भी

गए। वहाँ भी हम सम्मानित किए गए। हमारी कविताओं का पाठ हुआ, कई गोष्ठियों में चर्चा-परिचर्चाएँ हुईं। गुजरात और राजस्थान के सांस्कृतिक सौहार्द का जैसे महाकुंभ हो रहा हो। उस अंचल के सरस्वती पुत्रों से मिलकर ऐसी तृप्ति का बोध हुआ जैसे कई आयोजनों का नवनीत एकत्र हो गया हो। जैन मुनि श्री वत्सराज जी एवं प्रसिद्ध संगीत निर्देशक श्री दानसिंहजी का सत्संग तो हुए यात्रा की जैसे परमोपलब्धि था। १५ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २००५ तक यह सब चला। हमारी इस यात्रा में रवीन्द्र संगीत के हिन्दी रूपान्तरकार श्री दाऊलालजी कोठारी भी साथ में थे। ये उसी कोठारी परिवार के हैं जिनके दो वीर बालकों ने राममन्दिर निर्माण यज्ञ में अपनी आत्माहुति दी थी। दोनों बालक रामकुमार और शरद इनके सगे भतीजे थे।

इन दो संस्मरणों को देने के पीछे मेरा उद्देश्य स्वयं को उद्घाटित करना नहीं है। इन आयोजनों के पीछे तो श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया का स्नेह और सम्मान भरा संयोजन है, संचालन है, आग्रह है। फिर तो जैथलियाजी की आत्मीयता के दर्शन पत्रों के माध्यम से होते रहे। दीपोत्सव पर आपका शुभकामना पत्र अवश्य आता है। कभी-कभी काव्य पंक्तियाँ भी वे दे देते हैं। एक खरे सोने की तरह ईमानदार एवं निष्ठावान कर्मयोगी हैं श्री जैथलियाजी। मौन रहकर भी बहुत कुछ कह जाने की सांकेतिकता एवं सौजन्य तथा सम्मान को कहीं भी शिथिल न होने देने की सतर्कता को पूँजी की तरह सहेज कर भी जैथलियाजी बालसुलभ सहजता से ओत-प्रोत हैं। ऐसे निष्काम कर्मयोगी को शतशः प्रणाम इस अमृत महोत्सव पर। ●

सम्पर्क : ५६२, जनता नगर, चांदखेड़ा- ३८२४२४, अहमदाबाद (गुजरात), मो.: ०९७२६३८७९६७

देशभक्त समाज सुधारक मनीषी जैथलियाजी

✍ प्रो. रामेश्वर मिश्र पंकज

निदेशक, धर्मपाल शोधपीठ

श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया को पहली बार मैंने सन् २००६ में देखा। नाम तो वर्षों से सुन रखा था। जब प्रो. कुसुमलता केडिया जी को डा. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान मिला तो १५ अगस्त २००६ ई. को वहाँ एक भव्य समारोह आयोजित हुआ। उसमें केडिया जी की प्रज्ञा एवं सर्जना-यात्रा का परिचय देने मुझे भोपाल से बुलाया गया। दूरभाष पर श्री जैथलिया जी एवं श्री महावीर बजाज ने आग्रह किया। दो दिन पूर्व मैं कोलकाता पहुँच गया। तब हमें जहाँ ठहराया गया था, वहाँ हमसे मिलने जैथलिया जी आए।

देवोपम व्यक्तित्व, भव्य गरिमामय शालीनता, प्रंजल वाणी, प्रेमपूर्ण व्यवहार इनका सम्मिलित प्रभाव आह्लादकारक रहा। मुझे पता था कि वे पश्चिम बंगाल के एक सफल अधिवक्ता हैं, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं में एक हैं, प्रांत के उपाध्यक्ष हैं, व्यापारी समाज में अतिशय सम्मानित एवं अति सक्रिय समाजसेवी हैं। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय जैसी विख्यात संस्था के मंत्री और अध्यक्ष रहे हैं, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जैसे श्रद्धेय व्यक्ति के आत्मीय साथी रहे हैं, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता हैं, स्वदेशी चेतना से संचालित राष्ट्रभक्त हैं और समाजसेवा के अनेक प्रकल्पों से जुड़े हैं। मैं स्वयं अपनी व्यस्तताओं के कारण समय का महत्व जानता हूँ। अत: उनके जैसा व्यस्त व्यक्ति आत्मीय संवाद में ऐसा रमेगा, मानो पर्याप्त अवकाश हो यह कल्पना भी नहीं थी। उस दिन की उनकी व्यस्तता तो बेहद थी। उन्हें अगले काम की पूरी चिंता थी। पर जितना समय इस कुशल-क्षेम-संवाद के लिये तय किया होगा, उसका ऐसा सदुपयोग कर रहे थे मानो बिल्कुल फुरसत में हों। यद्यपि निश्चित समय में बात पूरी कर उठ खड़े हुए, इससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। गहरे आत्मानुशासन एवं अहं के सम्पूर्ण विसर्जन से ही ऐसा कर्मयोगी सधता है। जो काम कर रहे हैं उसमें सम्पूर्ण मनोयोग परंतु रंचमात्र प्रमाद नहीं। कर्म-कौशल का जीवित दृष्टांत। फालतू गप्पें नहीं और व्यस्तता का कोई प्रदर्शन नहीं, सच्ची व्यस्तता। ऐसा आत्मानुशासन गहरी साधना से आता है। उनके व्यक्तित्व से ही संगठन-सामर्थ्य टपकती थी। तब भी, १५ अगस्त को जब झमाझम

बारिश हुई, कोलकाता की सड़कें पानी में डूब गईं तो मुझे निश्चित हो गया कि समारोह में उपस्थिति ५० के आसपास पहुँच जाए तो बड़ी बात है। परन्तु यह क्या? ८०० से अधिक श्रोता समारोह में विद्यमान हैं। महाजाति सदन ठसाठस भरा है। फिर भी पूर्ण शांति। सहज मर्यादित हलचलें। यह तो किसी विशाल सम्पर्क द्वारा ही सम्भव है। मेरा ऐसा सम्पर्क तो दिल्ली में नहीं हो सका, जहाँ मैंने युवावस्था में २० वर्ष कार्य किया। मुझे याद आया कि ऐसी ही प्रचंड मूसलाधार बारिश में मैंने कान्स्टीच्यूशन क्लब, दिल्ली में अपनी पाक्षिक पत्रिका का लोकार्पण कार्यक्रम रखा था, जिसमें यही आशंका हो गई थी। व्यापक सम्पर्क के कारण २०० मित्र लोग आ ही गए, परंतु वह तो एक राजनैतिक पत्रिका थी, जिसमें राजपुरुषों, उनके अनुयायियों और मेरे मित्र पत्रकारों-लेखकों की उपस्थिति थी। यहाँ तो एक विशुद्ध सांस्कृतिक-साहित्यिक आयोजन था- जिन विदुषी को सम्मान मिल रहा था, उनकी ख्याति दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार और राजस्थान में तो है परंतु कोलकाता में तो उन्हें शायद दो-चार लोग ही जानते थे। स्पष्ट है कि यह जैथलिया जी और उनकी टीम का ही चमत्कारी प्रभाव था।

जैथलिया जी ने दो दिनों का भरपूर उपयोग किया था - स्वदेशी मंच में भाषण रखा गया डॉ. केडिया जी का। कुछ अन्य महत्वपूर्ण समारोहों में भी सहभागिता रही। उनमें से एक में यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि कम्युनिस्टों के गढ़ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम का इतना विस्तार यहाँ है। अतः बीच में समय पाकर मैंने जैथलिया जी से चर्चा की कि जब संघ का ऐसा विस्तार यहाँ है तो भाजपा का पर्याप्त प्रभाव क्यों नहीं है बंगाल में? उन्होंने गम्भीरता से कारण-मीमांसा की जिससे उनकी मनोव्यथा भी ज्ञात हुई, परंतु राजनीति की उनकी समझ कैसी पैनी और गहरी है यह भी ज्ञात हुआ।

जब डॉ. केडिया जी और मैं कोलकाता से वापस चले तो स्टेशन छोड़ने स्वयं जैथलिया जी आए। हम दोनों को इससे अतिशय संकोच हुआ क्योंकि उनकी व्यस्तताएँ हमें विदित थीं। परंतु उनका बड़प्पन और शील था कि वे माने नहीं, हमें ट्रेन में बैठाकर ही वापस गए।

उसके चार वर्षों बाद मुझे डॉ. लोहिया जन्म शताब्दी समारोह में व्याख्यान के लिए बुलाया गया। तब भी उनका वैसा ही शील-भरा श्रेष्ठ व्यवहार रहा। इस बार उनके निजी जीवन एवं जीवनचर्चा पर भी थोड़ी चर्चा हुई। मैंने पाया कि उनका जीवन सात्विक अनासक्त कर्मयोगी राष्ट्रभक्त का जीवन है। सबकी चिंता, सबकी साज-सम्हाल साथ ही एक निस्संगता, सात्विकता, संयम और सादगी। जगदम्बा उन्हें सुदीर्घ जीवन दें और वे इसी तरह देश की सेवा करें। उनका जीवन धन्य है। उनसे मिलना सौभाग्य है। ●

सम्पर्क : धर्मपाल शोधपीठ, बी-१२, आकृति गार्डन, भोपाल-४६२००३, दूरभाष: ०७५५४२८३६२०

जीवन्त सहजता, निरअहंकारिता, मिलनसारिता एवं सक्रियता

✍ डॉ. महेश चन्द्र शर्मा
अध्यक्ष, एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान

ध्येय-बन्धुता के रिश्ते में मेरे अग्रज श्री जुगलकिशोर जैथलिया का अमृत-महोत्सव, उनके नित्य अमृत बरसाने वाले जीवनक्रम को रेखांकित करने का एक श्लाघनीय उपक्रम है, बधाई।

अंग्रेजों के जाने के बाद भारतीयता एवं भारतीय राष्ट्रवाद, जो कि हिन्दू राष्ट्रवाद है, के विषय में न केवल गलतफहमियाँ रहीं वरन् इन विचारों के प्रति एक शत्रुता के भाव का निर्माण किया गया। तब भारतमाता की जय 'फासिज्म' एवं वन्देमारतम्' साम्प्रदायिकाता के नियामक मान लिये गये थे। तथाकथित प्रगतिशील शासकों ने स्वपरिभाषित फासिज्म एवं साम्प्रदायिकता के खिलाफ जो दमन चक्र चलाया, वह भारत के लोकतंत्र के इतिहास का एक काला अध्याय है। इसी के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर सरकार ने आजाद भारत में तीन बार प्रतिबंध लगाया (१९४७, १९७५ तथा १९९२)। सत्तातंत्र द्वारा वामपंथी बौद्धिकता को प्रश्रय दिया गया तथा पुरस्कृत किया गया, परिणामतः राष्ट्रवाद का दमन एवं उसकी वैचारिकता का बहिष्कार हुआ। संघर्ष और उत्पीड़न के उस दौर में भी जिन्होंने आनंदित रहते हुये राष्ट्रवाद की पताका को निरन्तर थामे रखा, उसकी बौद्धिकता की लौ को निरन्तर जलाये रखा, जो स्वयं ही उत्प्रेरणा के केन्द्र बन गये, उन विरल लोगों में से एक हैं आदरणीय जुगलजी भाईसाहब।

राजस्थान में बाल्यावस्था में प्रारंभ हुआ भारतमाता की पूजा का यह अनुष्ठान कलकत्ता में आने के बाद और प्रखर हो गया। 'लाल गुलामी छोड़कर, बोलो वन्देमातरम्' के स्वर को उन्होंने बल दिया। विचार-परिवार के सभी संगठनों के वे सम्बल बने। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनसंघ एवं भाजपा के विस्तार एवं प्रसार में तो आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही ही, संघ की शाखाओं में व्यक्ति निर्माण का जो महनीय कार्य हुआ, स्वयंसेवक के नाते जुगल

जी की इसमें बड़ी भूमिका रही। कितने ही स्वयंसेवक आज भी जुगल जी से उत्प्रेरित होकर संघ कार्य में लगे हुए हैं।

वैचारिक एवं शैक्षिक जगत में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय तथा छोटीखाटू के पुस्तकालय के उपक्रम अपनी जीवन्त भूमिका निभा रहे हैं, विषय केन्द्रित विशेषांकों का प्रकाशन हो रहा है, सभी में तो जुगलजी की निर्णायक भूमिका है। जुगलजी द्वारा सम्पन्न एवं सम्पादित उपक्रमों का विषद् वर्णन तो इस स्मारिका के अन्य आलेखों में प्राप्त होगा ही। एक रेखांकनीय तथ्य है उनकी जीवन की सहजता, निरअहंकारिता, मिलनसारिता एवं नित्य सक्रियता। वे हमें स्नेहामृत से सींचते रहें हैं। वे शतायु हों और यूँ ही अमृत की वर्षा करते रहें, यही तो है इस अमृत महोत्सव का संदेश। ●

सम्पर्क : भाजपा केन्द्रीय कार्यालय, ११ अशोक रोड, नई दिल्ली-१, मोबाइल: ०९८६८२१९७८४

राष्ट्रधर्म के हितैषी : जुगल जी

✍ विजय कुमार

मुझे वर्ष २००० में संघ की योजना से राष्ट्रधर्म पत्रिका के सम्पादकीय विभाग में सहयोग करने के लिए भेजा गया। वहाँ श्रद्धेय अभय जी के सान्निध्य में मैं काम सीखने लगा। श्री वचनेश त्रिपाठी भी प्राय: वहाँ आ जाते थे। उनसे भी गपशप होती रहती थी।

एक बार वचनेश जी ने बताया कि कोलकाता की 'संस्कृति संसद' नामक संस्था ने १५ अगस्त को भाषण के लिए उन्हें बुलाया है। दबे स्वर से मैंने भी चलने की इच्छा प्रकट की। अत: उन्होंने दो टिकट बनवा लिये और इस प्रकार उनके साथ कोलकाता यात्रा का सुखद संयोग बना।

कोलकाता में अयोध्या आंदोलन के अमर बलिदानी स्व. राम एवं शरद कोठारी के घर रहने का सुअवसर मिला। वस्तुत: उसे घर की बजाय एक पावन धाम कहना अधिक उचित होगा। श्री हीरालाल कोठारी, उनकी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी एवं बिटिया पूर्णिमा का आतिथ्य भी उस कोलकाता प्रवास की यादों में शामिल है।

कोलकाता के तीन-चार दिन के प्रवास में ही जिन कई लोगों से भेंट हुई, उनमें श्री जुगल किशोर जैथलिया भी थे। लखनऊ आने के बाद उनसे पत्र व्यवहार चलता रहा। तत्कालीन सरकार्यवाह माननीय हो. वे. शेषाद्रि ने एक बार पूर्वोत्तर भारत पर राष्ट्रधर्म का एक अंक निकालने को कहा, तो हमने जनवरी २००२ का अंक इस विषय पर केन्द्रित किया।

उस अंक की तैयारी करते हुए यह बात भी ध्यान में आयी कि यदि इसका लोकार्पण गुवाहाटी और कोलकाता में हो, तो बहुत अच्छा रहेगा। गुवाहाटी में दिनांक १७ जनवरी को कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें क्षेत्र प्रचारक श्री श्रीकृष्ण मोतलग मुख्य वक्ता थे। कोलकाता में २० जनवरी को 'विवेकानंद सेवा सम्मान' के समर्पण का समारोह था। श्री राजेन्द्र सिंह (अलवर) को वह सम्मान दिया गया। समारोह के मुख्य अतिथि उ.प्र. के राज्यपाल आचार्य विष्णुकांत शास्त्री थे। वहाँ पर इस अंक का लोकार्पण भी हुआ।

लोकार्पण के बाद मुझे कुछ बोलना था। मैं मंचों पर बोलने का अभ्यासी नहीं हूं। फिर यहाँ तो विष्णुकांत जी जैसे मनीषी उपस्थित थे। अत: बड़े संकोच से पांच मिनट बोल कर मैं बैठ गया। कार्यक्रम के बाद जुगल जी ने मुझसे कहा कि आप बहुत कम बोले। मैंने अपनी कठिनाई बताई। राष्ट्रधर्म का विस्तार कोलकाता में कैसे हो सकता है, इस पर भी चर्चा हुई। इस प्रवास में मेरे साथ राष्ट्रधर्म के प्रसार प्रमुख श्री रामतीर्थ पांडे भी थे।

अगले दिन फिर उनसे भेंट हुई। उन्होंने मुझे कुछ पैसे और पते देकर बताया कि वे राष्ट्रधर्म के लिए कुछ वार्षिक ग्राहक बनाकर लाये हैं। इसके बाद उन्होंने हमें समाचार पत्रों के एक बड़े व्यापारी के पास भेजा। इस प्रकार कोलकाता में राष्ट्रधर्म की एजेंसी प्रारम्भ हो गयी।

इस प्रवास में मैंने उनसे निवेदन किया कि हम राष्ट्रधर्म की ओर से प्रतिवर्ष एक अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता का आयोजन करना चाहते हैं। क्या वे इसके लिए कोई प्रायोजक ढूंढ सकते हैं ? उन्होंने इसका खर्च पूछा, तो मैंने दस हजार रुपये बताया। इस पर उन्होंने कहा कि इतने पैसे में प्रतियोगिता नहीं हो सकती। अत: ठीक से बजट बनाकर बताओ। मैंने लखनऊ जाकर इस बारे में परामर्श करने की बात कही।

लखनऊ में इस बारे में विस्तृत चर्चा एवं हिसाब-किताब के बाद हमने २५,००० रुपये वार्षिक का बजट बनाकर भेजा। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब कुछ ही दिन बाद उनका पत्र आया कि प्रयोजक की व्यवस्था हो गयी है। इस प्रकार 'श्री राधेश्याम चितलांगिया स्मृति अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता' प्रारम्भ हो गयी, जो अब बहुत लोकप्रिय हो चुकी है।

जब प्रतियोगिता को चलते हुए कई वर्ष हो गये, तो हमने उनसे आग्रह किया कि अब पुरस्कार की राशि कुछ बढ़ानी चाहिए, जिससे कुछ और प्रतिष्ठित लेखक इसकी ओर आकर्षित हो सकें। तब तक इसके प्रायोजक श्री पुरुषोत्तम दास चितलांगिया का देहांत हो चुका था; पर जुगल जी ने उनके पुत्र जयदीप जी से बात कर यह राशि २५,००० रु. से बढ़ाकर ५०,००० रु. करवा दी।

वचनेश जी के देहांत के बाद यह चर्चा चली कि राष्ट्रधर्म पत्रिका को उनकी स्मृति में भी कुछ करना चाहिए। इस पर जुगलजी ने व्याख्यानमाला का सुझाव दिया और उसके लिए भुवनेश्वर के श्री प्रकाश बेताला के रूप में एक प्रायोजक भी ढूंढ निकाला।

इस शृंखला का पहला व्याख्यान लखनऊ में हुआ, जिसमें वे हमारा उत्साहवर्धन करने स्वयं आये। १८५७ की १५० वीं जयन्ती पर दिल्ली से पधारे श्री देवेन्द्र स्वरूप जी का सारगर्भित

व्याख्यान हुआ। यह व्याख्यानमाला लगातार चल रही है। अब तो इसके कार्यक्रम लखनऊ से बाहर भी होने लगे हैं। इसके पीछे उनका ही प्रयास और प्रेरणा है।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा दिये जाने वाले विवेकानंद सेवा सम्मान की भरपूर प्रतिष्ठा है। मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि से उसके लिए समय-समय पर कुछ नामों के सुझाव दिये, जिन्हें उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और उन कार्यक्रमों में मुझे बुलाया भी। डॉ. नित्यानंद जी को जब यह सम्मान दिया गया, तो मैं राष्ट्रधर्म के सम्पादक श्री आनंद मिश्र 'अभय' के साथ कोलकाता गया था, पर श्री आशीष गौतम के सम्मान समारोह में मैं किसी कारण नहीं जा सका।

उनके द्वारा सम्पादित जितनी स्मारिकाएँ मैंने देखी हैं, उन सबसे उनका हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुत्व के प्रति अतीव प्रेम प्रकट होता है। मैं तो बहुत सामान्य सा व्यक्ति हूँ पर वे आग्रहपूर्वक इनके लिए मुझसे भी कुछ लिखवा लेते हैं।

आज भौतिकता की होड़ और जीवन की आपाधापी में लोग वानप्रस्थ आश्रम और समाज सेवा की बात लगभग भूल चुके हैं। ऐसे में जुगलजी जैसे जो लोग अपने कारोबार को छोड़कर पूरा समय देश, धर्म और समाज की सेवा में लगा रहे हैं, उनका सम्मान होना ही चाहिए। इससे दूसरों को प्रेरणा मिलती है और वे भी समाज सेवा के लिए आगे आते हैं।

इस दृष्टि से मैं राष्ट्र और धर्म के प्रबल हितैषी श्री जुगलकिशोर जैथलिया का अभिनंदन करता हूँ। परमपिता परमेश्वर उन्हें स्वस्थ एवं सक्रिय रखें, यही कामना है। ●

सम्पर्क : संकटमोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम्-६, नई दिल्ली-११० ०२२, मो.: ०९७१८१११७४७

जुगलजी को प्रेमांजलि

✍ जगदीश सोनालिया

एक ही चंदा एक ही सूरज
जग सृष्टि में होते
रैना दिवस धूप छाँव सब
उनके नियंत्रित होते
जल थल पौधे पेड़ पहाड़ दें
काली घटा जो छाई
सब उनके हैं पथ प्रदर्शक
सब उनके अनुयायी
आज अचानक हुआ अवतरित
युगपुरुष एक प्रतिभा का
जिसकी तुलना पर्याय ही समझो
चंदा सूरज आभा का
अज्ञानता का तिमिर मिटाए
दुःख पीड़ा पर मरहम लगाए
आध्यात्म का आत्म बोध कराए
राष्ट्र प्रेम को हृदय जगाए
एकता की जंजीर बनाए
धर्म सेवा के भाव जगाए
मानवता हिन्दुत्व जगाए
प्रेम का गहरा पाठ पढ़ाए
ऐसे मयंक प्रभाकर को
शत् शत् नमन और वन्दन
सेवाकृति में तन मन धन
बंधा रहे सबका बन्धन
फैलें फिजां में एक सुगन्ध
देश का गौरव के चन्दन
रोशन करें आज और कल
महामनीषी वो जुगल
प्रकाशवान जग हो अविरल
हर पल प्रतिपल
जीवन पल पल
चलता चल चल
हर एक तल तल
ज्यों जल कल कल, संगी दल बल। ●

सम्पर्क : १९, हंसपुकुर फर्स्ट लेन, कोलकाता-७००००७, मोबाइल: ९८३१०३२८९९

कर्मयोगी - संस्मरणों में

✍ डॉ. गिरिधर राय

तारीख २ अक्टूबर जब भी आती है जेहन में एक बात कौंध जाती है कि आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म दिन है। लेकिन यह बात कम लोगों को ही मालूम होगी कि आज से ७५ वर्ष पूर्व ठीक इसी दिन एक और राष्ट्रभक्त का जन्म हुआ था, और वे हैं कर्मयोगी श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी। इसे संयोग कहा जाये या प्रभु की माया कि इस राष्ट्र भक्त का जन्म भी उसी २ अक्टूबर को हुआ जिस दिन पहले से ही दो-दो महान राष्ट्रभक्तों का जन्म हो चुका था तो राष्ट्र के प्रति उनका लगाव सहज ही है।

सादगी, व्यवहार कुशलता, स्पष्टवादिता, अध्ययनशीलता और राष्ट्रीय विचारों को अगर एक जगह केन्द्रित कर दिया जाये तो इससे जिस व्यक्तित्व का निर्माण होगा वो निश्चित रूप से श्री जुगलकिशोर जैथलिया ही होगा। एक अनूठा व्यक्तित्व जो राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध न तो कुछ सुनना चाहता है और न ही समझौता करना जानता है। जैथलिया जी का नाम पहली बार मैंने अपने परम मित्र, सहयोगी, सहकर्मी, मार्गदर्शक कवि एवं मेरे गुरु डॉ. चन्द्रदेव सिंह जी जिन्होंने मुझे एम.ए. में डॉ. प्रेमशकर त्रिपाठी के साथ पढ़ाया था, के मुख से सुना। जब उन्होंने बताया कि वे, जैथलिया जी, डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र एवं डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी आदि के साथ जन्मशती कार्यक्रम हेतु निराला जी के पैतृक-गाँव जा रहे हैं।

मुझे ठीक-ठीक याद नहीं है कि जैथलिया जी से मेरा परिचय कब और कहाँ हुआ था? पर इतना सही है कि यह बहुत पुराना नहीं था। पर जो भी परिचय था वह एक तरफ था, क्योंकि मैं उन्हें जानता था पर वे मुझे नहीं जानते थे। पर जब दो तरफा परिचय हुआ तो घनिष्ठ से घनिष्ठतम् होता चला गया। घर और आफिस दोनों जगह आने-जाने का सिल-सिला चालू हो गया। कई बार मैं फोन करता कि समय हो तो आ जाऊँ ? १० से १२ घण्टे प्रतिदिन साहित्य की सेवा या समाज की सेवा या देश की सेवा करने वाले व्यक्ति ने कभी नहीं पूछा क्या काम है ? अभी समय नहीं है या कल आइये न ! सीधा पूछते हैं कितनी

देर में आ रहे हैं? और मैं जा धमकता। कई बार वे फोन करते और इतनी शालीनता के साथ कि आदमी कितना भी व्यस्त हो, काम छोड़कर उनके पास पहुँच ही जायेगा। फोन पर कहते गिरिधर जी आप बड़ाबाजार में ही हैं क्या ? मेरे पूछने पर कि क्या बात है ? कहते इधर होते तो आ जाते - जरा साथ-साथ चाय पी लिया जाता। और पहुँचने पर कॉफी पिलाते। फिर घन्टों साहित्यिक चर्चा चलती। मेरे याद दिलाने पर कि ऑफिस के लिए कहीं आप को देर न हो जाये, एक हल्की मुस्कान के साथ कहते- अपना ऑफिस है कोई लाल दाग थोड़े ही लग जायेगा। और फिर बातें शुरू हो जातीं। उनका ऑफिस तो जैसे साहित्यकारों का अड्डा ही हो गया है। पहले मैं वहाँ डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी जी के पास जाया करता था। जब साहित्यिक प्रसाद मिलने लगा तो कभी कभार अकेले भी पहुँचने लगा। वहाँ जाने पर हर किसी को एकाध पुस्तक जरूर ही मिल जाती है। मुझपर कुछ विशेष, कृपा होने के कारण मुझे कभी-कभी दो-तीन पुस्तकें एक साथ भी मिल जाती हैं और साथ में यह हिदायत भी कि इन्हें ध्यान से पढ़ियेगा, ये आप के काम आयेंगी। पढ़कर अपने पास ही रख लीजिएगा। कई बार अपनी सम्पादित पुस्तकें कुछ लिखकर के अपने हस्ताक्षर के साथ भी दे देते।

एक बार २०-२५ दिन के अन्तराल पर उनके ऑफिस पहुँचा। बड़ी ही आत्मीयता के साथ बोले आइये-आइये गिरधर जी, कहाँ थे इतने दिन ? मुझे अपनी गैरहाजिरी का हिसाब तो देना ही था। बायलोजी की एक नई पुस्तक उनकी मेज पर रखते हुए बताया यह पुस्तक छप रही थी इसी में लगा हुआ था। पुस्तक को देखते ही हुए बोले अरे, यह पुस्तक तो घर में मेरी मेज पर रखी हुई थी। मेरा पौत्र इससे पढ़ रहा था। क्या यह आप ने लिखी है ? मेरी स्वीकृति पर बोले लेकिन यह तो जी.डी. राय की है। मेरे बताने पर कि जी.डी. राय और गिरधर राय दोनों एक ही है। वे सुखद आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोले मुझे नहीं मालूम था कि आप विज्ञान की भी पुस्तकें लिखते हैं ? मैं तो आपके इस कवि रूप को ही जानता था। मेरे कहने पर कि मैं आपके पौत्र की एक-दो बायालॉजी की परीक्षा लेना चाहता हूँ, बड़ी ही सरलता से स्वीकार करते हुए उन्होंने पूछा कब आइयेगा ? नियत समय पर पहुँचने पर उन्हें मैंने उनके मकान के नीचे धोती, बनियान और चप्पल पहने हुए खड़ा पाया। आदर-सत्कार की यह परिभाषा अब कहीं-कहीं ही देखने को मिलती है। व्यवहार कुशलता अगर किसी को सीखना है तो जैथलिया जी से सीखे। छोटा हो या बड़ा, आदर सभी को यथायोग्य देते ही हैं।

आज के इस कुर्सी-युग में जहाँ कुर्सी ही सब कुछ मानी जाती है, वहीं जैथलिया जी ने कुर्सी (पद) को कभी महत्व नहीं दिया। एक घटना याद आ रही है जिसका उल्लेख करना मैं आवश्यक समझता हूँ। बात कोई बहुत पुरानी नहीं हैं। इसी साल २५ मई २०१२ की ही है। जब विलियमसन एण्ड मेगोर हॉल (बंगाल चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज)

में महाराणा प्रताप का ४७२वाँ जन्म-जयन्ती समारोह मनाया जा रहा था। जैथलिया जी मंच पर हमेशा की तरह प्रथम पंक्ति में विराजमान थे। मैं भी डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी जी के साथ दर्शक दीर्घा में उपस्थित था। कार्यक्रम निश्चित समय से शुरू हो गया। आमंत्रित अतिथि डॉ. भास्कर पुरकायस्थ जी अभी नही पहुँचे थे। उनके आते ही जैथलिया जी ने उन्हें मंच पर बुलाकर न केवल प्रथम पंक्ति में अपनी कुर्सी पर बैठाया बल्कि स्वयं पिछली पंक्ति में लगी कुर्सी पर जाकर बैठ गए। जहाँ आज प्रथम पंक्ति की कुर्सी पर बैठने की होड़ लगी हुई है, वहाँ न कुर्सी न प्रथम पंक्ति से ही मोह ? धन्य हैं जैथलिया जी। दूसरे दिन महानगर के अखबारों में छपी तस्वीरों में भले ही जैथलिया जी दूसरी पंक्ति में दिखे या कुछ में दिखाई भी नहीं दिए। लेकिन हॉल में उपस्थित सभी दर्शकों के दिलों में उन्होंने हमेशा-हमेशा के लिए प्रथम पंक्ति में स्थान बना लिया ?

मुझे याद है मई २०१२ का वह दिन जब मैं बड़ाबाजार लाइब्रेरी की तृतीय द्विमासिक अंतरंग काव्य गोष्ठी में उन्हें कविता पाठ करने के लिए आमंत्रित करने गया था तो उन्होंने अपनी असमर्थता व्यक्त की। हाँलाकि प्रथम अंतरंग काव्य गोष्ठी जो कि महाकवि श्री गुलाब खण्डेलवाल की अध्यक्षता में हुई थी, उसमें जैथलिया जी ने मेरे अनुरोध पर अपनी राष्ट्रीय विचारधारा वाली दो कवितायें सुनाकर काव्य-गोष्ठी को यादगार बना दिया था। जैथलिया जी कविता लिखते हैं, यह बात जो बहुत ही अंतरंग हैं वे ही जानते हैं, पर मंच पर उन्हें कविता पढ़ते हुए बहुत कम लोगों ने देखा होगा। शायद यह श्रेय बड़ाबाजार लाइब्रेरी को ही मिला। हाँ, तो मैं बता रहा था कि उन्होंने इस बार मना कर दिया। कारण पूछने पर बोले-देखिये गिरधर जी! आपके डर से कविता तो मैंने लिख ली है, और साल दो साल के लिए पर्याप्त सामग्री भी है पर मैं कवि नहीं हूँ, कहने का उनका तरीका देखिये मुझ जैसे नाचीज से डर कर। यह छोटे से छोटे व्यक्ति को भी महत्व देने का उनका अपना तरीका है। वह व्यक्ति जो कहता है कि मैं कवि नहीं हूँ। वीर रस की कई कविताओं में से 'प्रतिकार बिना नगराज शान्ति नहीं पाएगा' शीर्षक कविता जो चीन आक्रमण के समय लिखी गई थी, उसकी एक बानगी देखिये -

झुक गया आज यदि देश क्रूरता के आगे,
अपराधी को यदि दण्ड नहीं दे पाएगा,
एकाध पीढ़ी की बात नहीं सोचो साथी,
आने वाला इतिहास सदा झुक जायेगा।

इन पंक्तियों को लिखने वाला कह रहा है कि मैं कवि नही हूँ, इस बार मुझे छोड़ दीजिए, मैं अपनी जगह पर आप को अपने से एक अच्छा कवि दे रहा हूँ, उनका नाम है

वंशीधर शर्मा। मेरे कहने पर कि ठीक है वे भी रहेंगे पर आपका रहना जरूरी है। बोले नहीं, इसबार नहीं आ पाऊँगा। असमर्थता का कारण जानना चाहा तो बड़ी ही सरलता से बोले- राजस्थान से कुछ लोग राजस्थान परिषद के कार्यक्रम में आ रहे हैं, और उन लोगों को भ्रम हो गया है कि मैं साहित्यकार हूँ तो मुझे वहाँ जाना ही पड़ेगा। एक साहित्यकार की यह सरलता अब कहा देखने को मिलती है ? काश ! हमारे आज के कवि और साहित्यकार इसका अनुसरण करते ! मैं निरुत्तर था। सिर्फ इतना ही कह सका भगवान उनके भ्रम को बनाये रखे।

इन संस्मरणों का यह सिलसिला अपने-आप रुकने वाला नहीं है, इसे रोकना ही होगा। तो चलिए जैथलिया जी द्वारा सनाई हुई एक कहानी से ही खत्म करते हैं। हुआ यों की मैंने हमेशा की तरह फोन किया। घन्टी बजी, तो आवाज आई, बोलिए गिरिधर जी ! मेरे कहने पर की दर्शन करने की इच्छा हो रही थी, बोले एक मीटिंग में हूँ, १५ मिनट में फोन करता हूँ। मैंने तुरंत एस मस एस भेजा कि आप मीटिंग में पूरी तरह शिरकत कीजिए, कल मिल लेंगे। कोई खास काम नहीं है। बस यूँ ही फोन कर दिया था। लेकिन ठीक १५मिनट बाद मेरा फोन बज उठा और आदेश हुआ ऑफिस में पहुँच गया हूँ, पधारिये। ऑफिस में पहुँचते ही मैंने पूछा – किस मीटिंग में थे? किसी भी व्यक्ति को अपने से बड़ों से यह बात नहीं पूछनी चाहिए कि कहाँ थे? किस मीटिंग में थे? इसे मेरी असभ्यता कहिए या धृष्टता कहिये या आत्मीयता कहिए। मैंने वह गलत किया था, मुझे नहीं करना चाहिए था, भविष्य में ख्याल रखूंगा। लेकिन उस दिन तो पूछ ही लिया था, तो उन्हें जबाव देना ही था, एक हल्की मुस्कान बिखेरते हुए बोले आजकल रायबहादुरी कर रहा हूँ। मैंने कहा अरे ! राय तो मैं हूँ बहादुरी आप कर रहे हैं? यह कैसे ? मुझे समझाते हुए बोले – 'रायबहादुरी' का मतलब राय देना। आजकल मैं सबको राय देता रहता हूँ। जिस मीटिंग में था उसमें दो कार्यकर्त्ता बड़े जोर-जोर से बोल रहे थे, मैंने उनसे कहा – जो कहना है, धीरे से कहिए, चिल्ला क्यों रहे हैं ? मैंने उनसे कहा कि इस पर मुझे एक शेर याद आ रहा है, इजाजत हो तो सुनाऊँ। किसका है याद नहीं आ रहा है शायद बजीर बनारसी का है –

तुम्हारी शान घट जाती, या रुतबा कम हो गया होता।
जो गुस्से से कहा तुमने, वही हँस कर कहा होता।

जैथलिया जी ने कहा की एकदम मैंने उनसे यही कहा। यह शेर उन दोनों के लिए है। मीटिंग में जैथलिया जी की स्पष्टवादिता देखने लायक होती है। बड़ाबाजार लाइब्रेरी की कार्यकारिणी में होने के कारण मैं उसका साक्षी हूँ। मैंने उस दिन कहा जैथलिया जी आप की रायबहादुरी से दुनिया का बड़ा भला हो रहा है, मुझे भी एक राय दीजिए न। आजकल

जब भी कोई मेरे बारे में कुछ भी बढ़ा-चढ़ाकर कहने लगता है तो मुझे अच्छा नहीं लगता। और मैं उनकी बात काट देता हूँ। क्या यह ठीक है ? उन्होंने जो कहा मैंने गाँठ बाँध लिया। बोले-'आप के बारे में लोग बढ़ा-चढ़ा कर कहने लगते हैं तो आप को अच्छा नहीं लगता है, यह ठीक है। पर उनकी बात काटना उचित नहीं है। शायद उन चाहनेवालों के बढ़ा-चढ़ा कर कहने के कारण ही इस मुकाम पर पहुँचे हैं। कभी भी उनकी बात काटियेगा मत। एक कहानी आप को सुना रहा हूँ जिससे यह बात स्पष्ट हो जायेगी।'

एक नवयुवक को बड़े परिश्रम के बाद दो-सौ पचास रुपये की नौकरी मिली। परिवार में खुशी का माहौल था पर पिता जी को यह कम लगा। वे सबसे कहने लगे मेरे बेटे को पाँच सौ मिलता है। कुछ दिन बाद उसे पाँच-सौ मिलने लगा। तो पिताजी कहने लगे मेरे बेटे को साढ़े सात-सौ मिलता है। कुछ वर्षों बाद बेटे की तनखाह सचमुच साढ़े सात-सौ हो गई। लेकिन पिताजी तो बढ़ा-चढ़ा कर बोलने में माहिर थे। अब लोगों से कहने लगे मेरे बेटे को एक हजार रुपया मिलता है। और सचमुच उसकी तनखाह वर्ष बीतते-बीतते एक हजार हो गई। लेकिन पिताजी कहाँ रुकने वाले थे। अब वे सबसे साढ़े बारह सौ बोलने लगे। तकदीर से फिर वेतन वृद्धि हुई और बेटे की तनखाह बढ़कर साढ़े बारह सौ हो गई। पिताजी कुछ कहते कि इस बार बेटे ने कहा - पिता जी क्यों झूठ-मूठ का बोलते रहते हैं यह ठीक नही है। अब तो मेरी तनखाह सचमुच साढ़े बारह-सौ हो गई है। यह कम है क्या? लोगों से या तो सही बोलिये या मत बोलिए। बाप को बेटे के व्यवहार से चोट लगी और वह चुप हो गया। फिर कभी नहीं बोला। और बेटे की नौकरी साढ़े बारह-सौ से आगे नहीं बढ़ी। साढ़े बारह-सौ पर ही अटक कर रह गयी। तब उसकी समझ में आया कि बढ़ाकर कहना तो पिता जी का भविष्य के लिए आशीर्वाद था। हम जो कुछ हैं अपने बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद से ही हैं। जैथलियाजी की रायबहादुरी से सबका भला हो रहा है और आगे भी होता रहेगा।

उनके द्वारा निर्मित मार्ग व आदर्शों का हम सब अनुसरण करें यही समय की मांग है। इस अमृत महोत्सव के अवसर पर हम उनके दीर्घ स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं। ●

सम्पर्क : गणपति विहार, ब्लॉक-४, फ्लेट-३०१, आई.जी. ६/२, अश्विनी नगर, बागुईआटी
कोलकाता-५९, मो.: ९८३००२५८५२

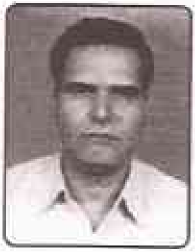

बंधुवर श्री जुगलकिशोर जैथलिया के
अमृतोत्सव पर समर्पित -

भाव सुमन

✍ बंशीधर शर्मा

तुम कर्म-धर्म के युगल पुरुष,
वीणापाणी से चेतन मन,
है राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत
हे कर्मवीर तेरा जीवन!

अनुशासित, व्यसनमुक्त जीवन,
तप, त्याग, तपस्या वर्षों की,
तुम बढ़े सदा निर्भय होकर,
निज राह पकड़ आदर्शों की।

निष्काम कर्म का मर्म समझ,
ले आये क्रान्ति विचारों में,
है झांक रहा तेरा कौशल,
बहुतेरे ग्रंथागारों में।

सत-साहित्य सुलभ हो सबको,
यह सदा रहा तेरा चिन्तन
वैचारिक आलोड़न हेतु किये
बहु ग्रन्थ स्मारिका सम्पादन।

तुमने कर प्रेरित युवजन को,
भर देशभक्ति का भाव प्रबल,
सत्कर्म ध्येय निष्ठा की लौ,
ले बढ़े संगठन किया सबल।

झंझावतों में सदा अडिग,
रहकर तुमने नेतृत्व दिया,
इससे सपने साकार हुये-
पर रामकृपा को श्रेय दिया।

शहरी जीवन, यश कीर्ति प्राप्त,
पर जन्म भूमि नहीं बिसराई,
छोटीखाटू सब विधि विकसे,
इस हेतु सजगता दिखलाई।

तुम जैसा मित्र मिला हमको,
इस पर हम गर्वित हैं सारे,
जीवन के हों शतवर्ष पूर्ण,
'कौस्तुभ' पर यही विनय प्यारे। ●

सम्पर्क : ओमसागर एण्ड ऐसोसियेट्स, ६/१, लिंडसे स्ट्रीट, २ तल्ला, कोलकाता-८७
मो.: ९८३०१४५४२६

एक कर्मठ व्यक्तित्व

✍ त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी

(पूर्व राज्यपाल, कर्नाटक)

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि जुगलकिशोर जैथलिया को उसकी ७५वीं जन्मतिथि के शुभ अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से एक अभिनंदन ग्रंथ भेंट करने का निश्चय किया गया है। यह निर्णय स्वागत योग्य है। श्री जुगलकिशोर जैथलिया अमृत महोत्सव समिति को बहुत-बहुत साधुवाद। इस पुस्तकालय का स्वयं एक गौरवपूर्ण इतिहास है। समाजसेवा, साहित्यसेवा एवं जनचेतना को समुचित मार्गदर्शन देने की चेष्टा यह अपने स्थापना काल से ही करता रहा है। जैथलियाजी कुमारसभा पुस्तकालय से एक लंबे अरसे से जुड़े हुए हैं और विविध रूप में उनकी गतिविधियों में उनकी उल्लेखनीय भूमिका रही है।

जुगलकिशोर जैथलिया प्रारंभ में १०वीं कक्षा के पश्चात कोलकाता आ गए थे, जहाँ उनके पिता सेवारत थे। जैथलियाजी ने अपनी उच्च शिक्षा नौकरी करने के साथ अध्ययन करते हुए बी.कॉम और कानून तदुपरांत एम.काम. की उपाधियाँ प्राप्त कीं और अपना आयकर परामर्शदाता का कार्य प्रारंभ किया। उनका विद्यार्थी जीवन स्वावलंबन का एक अच्छा उदाहरण है। अपने व्यापार में उन्होंने अच्छी सफलता तथा ख्याति प्राप्त की। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होने के कारण वे प्रारंभ से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए। विद्यार्थी परिषद में भी अनेक पदों पर कार्य किया और धीरे-धीरे जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेताओं के सम्पर्क में आए। संघ के तो वे समर्पित कार्यकर्ता होने के कारण उनके जीवन मे एक विशेष अनुशासन और समाजसेवा की भावना दृढ़तर होती गई। श्री विष्णुकांत शास्त्री के व्यक्तित्व ने उन्हें विशेषतया प्रभावित किया। सार्वजनिक जीवन में मुख्यत: राजनीतिक, साहित्यिक और समाजसेवा के क्षेत्र में शास्त्रीजी उनके प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक रहे।

श्री जुगलकिशोर जैथलियाजी से करीब पंद्रह-बीस वर्षों से मेरा अच्छा परिचय है। देखने को मिला कि सामाजिक कार्यों के साथ-साथ उनकी रुचि साहित्य में भी है। कुछ मित्रों के सहयोग से उन्होंने अपने जन्मस्थान छोटीखाटू में १९५० ई. में हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की। छोटीखाटू में पुस्तकालय जनहित कार्यों का एक केंद्र बन गया है। जैथलियाजी

के अनुरोध के कारण जब मैं कर्नाटक में राज्यपाल के पद पर कार्य कर रहा था, उसके वार्षिक समारोह में सम्मिलित होने के लिए छोटीखाटू गया। आयोजन अत्यंत भव्य था। उनके प्रयास से पुस्तकालय का एक विशाल भवन भी बन गया था। समय-समय पर पुस्तकालय अनेक कार्यक्रम आयोजित करता है। पुस्तकालय के कार्यक्रमों में मूर्धन्य साहित्यकारों और देश के राजनेता भाग लेते रहे हैं। जिस सम्मान समारोह में भाग लेने का मुझे अवसर मिला, उसमें हिंदी और गुजराती के प्रसिद्ध रचनाकार डॉ. अंबाशंकर नागर को सम्मानित किया गया था। उपस्थित जनता का उत्साह सराहनीय था। जन्मस्थान से दूर रहने पर भी वहाँ जैथलियाजी कितने लोकप्रिय हैं, उसका मुझे प्रत्यक्ष अनुभव हुआ।

आपात काल में जैथलियाजी ने कुमारसभा के तत्वावधान में हल्दी घाटी के चतु:शती समारोह के अवसर पर एक वीररस का कवि-सम्मेलन आयोजित किया। उसके लिए विष्णुकांतजी का मार्गदर्शन जैथलियाजी को प्राप्त था। इसमें श्याम नारायण पांडे प्रभृति अन्य प्रख्यात कवियों ने भाग लिया। उस समय यह वास्तव में काफी खतरे का मामला था, पर जैथलियाजी ने साहस से अपने दायित्व का निर्वाह किया।

जैथलियाजी कोलकाता की अनेक प्रतिष्ठित सामाजिक और साहित्यिक संस्थाओं के पदाधिकारी समय-समय पर रहे हैं अथवा कार्यकरिणी के सदस्य। सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय उनमें से उल्लेखनीय है। वे जहाँ रहे, सदैव सक्रिय रहे। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय से तो उनका अत्यंत निकट का स्नेह-संबंध है। पुस्तकालय ने उनके संपादकत्व में अनेक स्मारिकाएँ प्रकाशित की हैं, जो सराहनीय हैं। विष्णुकांतजी की रचनाओं को भी उन्होंने संपादन कर दो खंडों में प्रकाशित कराया। जो शास्त्रीजी की बहुआयामी मेधा और विद्वता के परिचायक हैं। कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित अन्य अनेक ग्रंथों के प्रणयन में भी जैथलियाजी का महती सहयोग रहा है। श्री विष्णुकांत शास्त्री को सुन्दर अभिनंदन ग्रंथ भेंट करने के उपलक्ष्य में जो भव्य आयोजन हुआ था, उसमें भी सम्मिलित होने का शुभअवसर मुझे मिला। जैथलियाजी के प्रयास से जिन दो राष्ट्रीय स्तर के सम्मान पुरस्कारों का आयोजन कुमारसभा पुस्तकालय प्रति वर्ष करता है, उसकी परिकल्पना के लिए जैथलियाजी और पुस्तकालय परिवार की भूरि-भूरि सराहना करनी पड़ेगी। विवेकानंद सेवा सम्मान एवं डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान के आयोजन के अवसर पर सन् २०११ में मैं भी आमंत्रित किया गया था। इस प्रकार की उपस्थिति सारस्वत समारोहों में कम ही देखने को मिलती है।

राजस्थान परिषद में भी जैथलियाजी उसी भाँति बड़ी निष्ठा से जुड़े हुए हैं। प्रात: स्मरणीय महाराणा प्रताप की चेतक घोड़े पर सवार २० फीट की कांस्य मूर्ति को सेंट्रल एवेन्यू में स्थापना, एक पार्क और मार्ग का महाराणा प्रताप की स्मृति में नामकरण आदि उनकी विशेष उपलब्धियाँ हैं। सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी के भी जैथलियाजी उपाध्यक्ष हैं, जिनके अथक प्रयास से

सरदार पटेल की एक १२ फीट ऊँची कांस्यमूर्ति भी कोलकाता में लगाई गई है, जो सरदार पटेल के बहुआयामी व्यक्तित्व और उनकी उपलब्धियों की याद दिलाती रहेगी। वे कोलकाता एवं राजस्थान के अतिरिक्त अन्य राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। उनमें से मैं नेशनल बुक ट्रस्ट का उल्लेख करना चाहूँगा। उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के लिए उनको अनेक पुरस्कार प्रदान किए गए हैं और उनका सम्मान देश की अनेक संस्थाओं ने किया है। राजनीति के क्षेत्र में भी उनकी अनेक उपलब्धियाँ हैं। वे आज भी भारतीय जनता पार्टी, पश्चिम बंगाल शाखा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं।

पैंसठ वर्ष की आयु में उन्होंने अपने कारोबार से निवृत्त होकर पूर्ण रूपेण अपने को जनहित के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया था। जिस किसी आयोजन में मैंने जैथलियाजी को देखा, उनकी अति संलग्नता के कारण यही भान हुआ कि जैसे उनको किसी और कामकाज से कोई सरोकार नहीं है। जैथलियाजी मितभाषी हैं और मृदुभाषी भी। उनके चेहरे पर एक सौम्यता और गंभीरता दीखती है। वे अत्यंत परिश्रमी हैं। वह बड़े सोच-विचार कर कोई दायित्व अपने ऊपर लेते हैं और धैर्य से उसका संपादन करते हैं। मैंने ऐसे अवसरों पर न उनको अधीर पाया और न चिंतित। शायद इसका कारण है कि उनमें अपने सहयोगियों को चुनने की क्षमता है और वे यह भी समझते हैं कि किस की कार्य करने की कितनी शक्ति और समझ है। यह जैथलियाजी की अपनी प्रबंधन की कुशलता है। वे साथियों और कार्यकर्ताओं को श्रेय देते हैं और इस कराण उनका विश्वास भी प्राप्त कर लेते हैं। आयोजनों में वह कम ही सामने आते हैं। आत्मप्रचार से दूर रहकर ठोस कार्य करने में उनका विश्वास है। उनके साहित्यकारों और राजनेताओं से अच्छे संबंध हैं। उनकी कार्यशैली और आचरण उनके विश्वसनीय व्यक्तित्व को उजागर करते हैं। उनकी हिंदी, हिंदू और हिंदुस्तान के प्रति जो समर्पण भावना है, वही उनके कार्यक्षेत्र को निर्धारित करती है। न केवल साहित्य में उनकी अभिरुचि है, वे साहित्यकारों को भी बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। छोटीखाटू के सम्मान समारोह में मैंने देखा कि वे एक प्रभावी वक्ता भी हैं। वे अपने हृदय और मस्तिष्क दोनों से कार्य करते हैं, उसके कारण वे सर्वसाधारण में और खासकर जिन संस्थाओं से जुड़े हैं, उनके पदाधिकारियों और सदस्यों के बीच जैथलियाजी का आदर और स्नेह का संबध है। उनकी लोकप्रियता उनको और नम्र बनाती है। कर्मठता जैथलियाजी की पहचान, उनका विशेष गुण है। उनके लिए कर्मयोगी विशेषण पूर्णतया सार्थक है।

श्री जुगलकिशोर जैथलिया को उनके अमृत महोत्सव के अवसर पर मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे निरंतर स्वस्थ और सुखी रहें तथा भविष्य मे भी इसी प्रकार समाज और साहित्य की सेवा करते रहें। कामना है वे चिरायु हों। ●

सम्पर्क : ए-४, सेक्टर-१७, नोयड़ा-२०१३०१ (उ.प्र.), दूरभाष : (०१२०)४२१४०२५

कर्मयोगी श्री जैथलिया

✍ गौरीशंकर मधुकर
पुरानी जेल रोड
बीकानेर-३३४००५ (राज.)
मोबाइल : ९४१३४८१४४०

कर्मयोगी श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया
अपनी कार्यप्रणाली से सबका मन मोह लिया
मना रहे हैं आपका अमृत अभिनंदन
आपको सादर शत्-शत् नमन वंदन
आपका जन्म स्थान है छोटीखाटू
प्रेरणा हुई जन जीवन में प्रेम, अमृत बाँटूं
पिताश्री कन्हैयालालजी माता पुष्पादेवी
धार्मिक प्रवृत्ति वाले और समाजसेवी
अर्द्धांगिनी मिली श्रीमती मैना देवी गट्टाणी!
सबका मन मोह लेती इनकी मधुर वाणी
शिक्षा, दीक्षा का कार्य-क्षेत्र रहा कोलकाता
जहाँ थी विद्वानों, पैसे वालों की सम्पन्नता
आपने पेशा अपनाया आयकर सलाहकार
इसे नहीं बनाया शुद्ध व्यापार
आपकी सेवाओं की खातिर जगह-जगह
पहनाये गये श्रद्धा के सुमन-हार
अनेकों जगह मिले पुरस्कार
आप चलते-फिरते विश्वविद्यालय हैं
आपके मन-मन्दिर में कितने ही
साहित्यकारों, देशभक्तों के देवालय हैं
विभिन्न संस्थाओं के संस्थापक
अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों के सम्पादक
राष्ट्रीय विचारधारा के संवाहक

आपको मिलना चाहिये उचित सम्मान, हक
आपकी प्रशंसा जितनी भी की जाय कम है
असंभव को संभव बनाने का आप में अभी भी दम है
आप तो चिरयुवा हैं
प्रभु से मेरी यही दुआ है
आप शतायु होवें
सुखी, स्वस्थ जीवन बितायें
सफलता के सोपान चढ़ते जायें
कभी दुःख की घड़ी ना आये
पूरी हों सब कामनायें। ●

जुगलजी एक सच्चे एवं सहृदय मानव हैं

✍ खुशहाल चन्द्र आर्य

आदरणीय श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया एक राष्ट्रवादी, भारतीय संस्कृति के उपासक तो है हीं, साथ ही ये एक सच्चे मानव भी हैं कारण इनमें मानवता के अधिकतर गुण विद्यमान हैं। ये पक्के ईमानदार, सत्यवक्ता, परोपकारी, सहृदयी, संयमी, निष्पक्ष, निराभिमानी, सरल व निष्ठावान व्यक्ति हैं। मृदुभाषिता और मिलनसारिता इनके विशेष गुण हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति इनसे प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता। इनमें राष्ट्रभक्ति व अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धा व प्यार तो कूट-कूट कर भरा है। ईश्वर ने इनमें संगठन शक्ति भी विलक्षण दी है जिससे ये अपनी उन्नति के पथ पर निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं। मैं जैथलिया जी को लगभग तीस वर्षों से जानता हूँ। जब से मैंने इनको जाना है, तब से आज तक मेरी श्रद्धा इनके प्रति बढ़ती ही जा रही है।

बहुत समय पहले जब जुगल जी जोड़ाबगान से एम.एल.ए. का चुनाव लड़ने के लिए खड़े हुए थे, तब एक वकील सुखलाल जी गनेरीवाल जो बहुत ही अच्छे विचारों के व्यक्ति हैं, वे मेरे इनकम टैक्स के वकील थे और जुगलजी के परिचित थे। एक दिन वकील जी ने मुझसे कहा कि यदि आप जोड़ाबगान रहते हों या आपका कोई रिश्तेदार जोड़ाबगान रहता हो तो वहाँ से एम.एल.ए. के लिए एक बहुत ही अच्छा व्यक्ति जिसका नाम जुगलकिशोर जी जैथलिया है, खड़े हैं। उनको आप वोट देवें और दिलावें। मैंने पूछा कि जैथलिया जी में ऐसे क्या गुण हैं जिसके लिए आप इतनी अधिक पैरवी या कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने एक ही वाक्य में जो गुण बताया वह आज तक मेरे हृदय-पटल पर बैठा हुआ है। उन्होंने कहा था कि मैं यदि जैथलिया जी के सभी गुणों का वर्णन करने लगूँ तो काफी समय लग जायेगा। मैं उनके बारे में एक ही वाक्य कहता हूँ कि वे एक अच्छे मानव हैं। मैंने उनसे अच्छा कोई इन्सान नहीं देखा है। तब मुझे इनसे मिलने की इच्छा हुई और जब मिला तो मुझे वकील जी की बात शत्-प्रतिशत् सही मालूम हुई। तब से ये मेरे श्रद्धा के पात्र बने हुए हैं।

इनसे परिचय होने के बाद मैं कुमारसभा पुस्तकालय के कार्यक्रमों में जाने लगा जिनमें

मुझे इनके काफी विचार सुनने को मिले। इनकी भाषा में जो माधुर्य और बोलने की जो भाषा शैली है, वह इनको औरों से अलग खड़ा कर देती है। इनके मन में किसी सम्प्रदाय या धर्म के प्रति घृणा, द्वेष का भाव नहीं है। ये हर धर्म की अच्छाई को पकड़ते हैं और अपने व्याख्यानों में उसकी प्रशंसा करते हैं जिससे हर वर्ग का व्यक्ति इनको अपना समझने लग जाता है। ये एक कट्टर पौराणिक होते हुए भी इनका आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति बड़े अच्छे विचार हैं। महर्षि दयानन्द को जैथलिया जी केवल एक महान सुधारक ही नहीं बल्कि एक महान देशभक्त और हिन्दू धर्म के उद्धारक के रूप में मानते हैं। आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे शुद्धि कार्य, नारी शिक्षा, अछूतोद्धार, विधवा विवाह आदि कार्यों के महान समर्थक हैं। देश को स्वतन्त्र करवाने में आर्यसमाज का बड़ा योगदान रहा है, यह बात भी जैथलिया जी मानते हैं। ईश्वर की कृपा से इनका मेरे में अगाध प्रेम है। मैं गौरक्षा सेवा समिति, सरदार पटेल मैमोरियल कमेटी, बनवासी कल्याण आश्रम, बी.जे.पी. आदि संस्थाओं से जुड़ा हुआ हूँ। जैथलिया जी अनेकों अन्य संस्थाओं के साथ भी जुड़े हुए हैं। इसलिये इन संस्थाओं के माध्यम से मुझे उनके साथ स्टेज पर बैठने का तथा कई डेपुटेशनों में साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है, उससे हमारी नजदीकी और अधिक बढ़ जाती है। मैं कभी-कभी इनको आर्यसमाज के मंच पर भी बुला ले जाता हूँ तब आर्यसमाजियों पर भी इनका बड़ा प्रभाव पड़ता है।

मैं आर्य जगत का एक साधारण सा लेखक व कवि भी हूँ। आर्य समाज की अधिकतर मुख्य पत्रिकाओं में मेरे लेख व कविताएँ प्रकाशित होती रहती हैं। कई बार मैं लेख व कविताएँ जैथलिया जी को पढ़ाता भी रहता हूँ। ये पढ़कर बड़े प्रसन्न होते हैं और मेरी बड़ी सराहना करते हैं। उन्होंने वीर सावरकर सम्बन्धी मेरी एक कविता स्वातन्त्र्यवीर सावरकर की १२५वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में छपी स्मारिका में भी छापी थी। सन् २००८ के अगस्त महीने में आर्यसमाज बड़ाबाजार ने मेरा अभिनन्दन अहिंसा प्रचार समिति भवन में किया था। मेरे थोड़े से निवेदन पर ही जैथलिया जी मेरे अभिनन्दन समारोह में पहुँच गये जिससे समारोह की बड़ी शोभा बढ़ी। मैं इनके इस प्रेम को कभी नहीं भूल सकूँगा।

ईश्वर की कृपा से जैथलिया जी पचहत्तर वर्ष की उम्र में भी काफी स्वस्थ हैं। इनमें अब भी एक नौजवान की भाँति कार्य करने की क्षमता है। ईश्वर इन्हें पूर्ण स्वस्थ रखते हुए शतायु से भी अधिक आयु देवें ताकि ये देश व समाज की सेवा अधिक समय तक सेवा कर सकें- यह मेरी शुभकामना है। ●

सम्पर्क : गोविन्द राम आर्य अण्ड सन्स, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता-७
दूरभाष : २२१८ ३८२५ (ऑ.), २६७५ ८९०३ (नि.)

कर्मयोगी वंदनीय पुरुष : श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया

✍ शिशुपाल सिंह 'नारसरा'

जीवन में परिश्रम, प्रार्थना और प्रतीक्षा का बहुत महत्व है। परिश्रम में सक्रियता, प्रार्थना में समर्पण और प्रतीक्षा में धैर्य छुपा है। इन तीनों के योग से आदमी कर्मयोगी बनता है। कर्मयोगी का कोई जाति-धर्म नहीं होता। वह तो मानवता की सेवा के लिए जन्म लेता है और जीवन भर परहित में ही रत रहता है। ऐसे ही कर्मयोगी वंदनीय पुरुष हैं श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया।

मेरा आपसे परिचय भी संयोग ही था किन्तु वही संयोग आपके व्यक्तित्व-कृतित्व के प्रभाव से आत्मीयता में बदल गया। मैंने विद्यार्थी जीवन में महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की तीन कविताएं- धरती धोरां री, पातल अर पीथल तथा कुण जमीन रो धणी पढ़ी थी। ये कविताएं मेरे मानस पटल पर स्थाई रूप से अंकित हो गई। बहुत इच्छा होती कि सेठिया जी की अन्य रचनाएं भी पढ़ूं किन्तु इनके अतिरिक्त कोई रचना कभी पढ़ने को उपलब्ध नहीं हुई। पता चला कि सेठिया जी अब कोलकाता रहने लगे हैं। बहुत प्रयास के बाद उनका पता मिला तो मैंने उन्हें पत्र लिख दिया। वे काफी अस्वस्थ थे इसलिए उनके सुपुत्र जयप्रकाश सेठिया ने जबाव में लिखा कि इस बाबत राजस्थान परिषद् के श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया से सम्पर्क करूं। मैंने जैथलिया जी को पत्र लिखा। उन्होंने बताया कि कन्हैयालाल सेठिया समग्र चार खण्डों में प्रकाशित हुआ और चारों खण्डों के मूल्य २५०० रु. में ४०% छूट का प्रावधान है। छूट के बाद १५०० रु. में पूरा सैट मिलेगा। इस बीच मैंने उदारमना साहित्यानुरागी श्री नरेन्द्र कुमार जी धानुका से भी इस बाबत निवेदन किया और उन्होंने कन्हैयालाल सेठिया समग्र के चारों भाग मुझे भिजवा दिये। मैंने जैथलिया जी को भी एक लम्बा पत्र लिखा और सम्पूर्ण राजस्थान के साहित्यानुरागियों की पीड़ा उन्हें बताई। यह बताया कि उक्त तीन कविताओं के अलावा भी सेठिया जी की रचनाएं हैं, यह प्रायः राजस्थानियों की जानकारी में नहीं है। राजस्थानी के अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी में भी प्रचुर काव्य सृजन किया

है यह जानकारी तो कतई नहीं है। दूसरी बात मैंने लिखी कि इस मूल्य का सैट पुस्तकालयों में ही खरीदना सम्भव है, व्यक्तिगत प्रायः नहीं। राजस्थान के राजकीय सैकेण्डरी/सीनियर सैकेण्डरी स्कूलों में तो मात्र १००० रु. का ही बजट है।

धानुका जी द्वारा प्रेषित चारों खण्डों का मैंने अवलोकन किया। मैंने देखा कि इसका सम्पादन श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया ने ही किया है, प्रकाशन राजस्थान परिषद् ने। ग्रंथ अध्ययन के पश्चात मैंने अपना अभिमत तो दिया ही साथ ही आम पाठक और राजकीय पुस्तकालयों की व्यथा-कथा का उल्लेख भी किया। पत्र मिलते ही श्री जैथलिया जी ने स्नेह एवं आत्मीयता से ओत-प्रोत जवाबी पत्र लिखा तथा फोन पर मेरे विचारों से सहमति प्रकट करते हुए बताया कि ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य कमाई करना नहीं है और यह आम पाठक तक जाना चाहिए। विद्यालयों में अगर बजट की समस्या है तो उनकी व्यय सीमा में ही ग्रंथ भिजवा देंगे। मैंने १०-१२ स्कूलों से सम्पर्क कर ऑर्डर भिजवाये, आपने पुस्तकों की तत्काल सप्लाई दी। भुगतान भी विद्यालयों मे बजट की उपलब्धतानुसार ही हुआ। जैथलिया जी साहित्य प्रसार हेतु फोन पर निरन्तर मुझे प्रोत्साहित करते रहते हैं।

मैं आपके व्यक्तित्व-कृतित्व से इतना प्रभावित हुआ कि मुझे लगा कि जैसे हमारा बहुत पुराना सम्पर्क है और हमारे बीच पत्राचार एवं संवाद निरन्तर चलता रहा। जब भी आपसे बात होती, आपकी आत्मीयता से अभिभूत होता। आप कोलकाता में होने वाली साहित्यिक गतिविधियों से अनवरत अवगत करवाते रहते तथा राजस्थान परिषद और श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की वार्षिक स्मारिका भी मुझे भिजवाना नहीं भूलते। इन सबको पढ़ने से लगा कि कोलकाता प्रवासी राजस्थानी साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं कला के क्षेत्र में खूब सक्रिय हैं।

मैंने आचार्य विष्णुकान्त जी शास्त्री का खूब नाम सुन रखा था। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की स्मारिका से ज्ञात हुआ कि पुस्तकालय ने 'श्री विष्णुकान्त शास्त्री चुनी हुई रचनाएँ' दो खण्डों में प्रकाशित की है और इसका सम्पादन भी स्वनामधन्य श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया ने ही किया है। मैंने आपको पत्र लिखा और आपने तत्काल ग्रंथ भिजवा दिये।

आपके माध्यम से कोलकाता के अन्य कई साहित्यकारों से भी सम्पर्क हुआ, इनमें डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी प्रमुख हैं। मुझे लगा कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय से जुड़े सभी महानुभावों में साहित्य के प्रति समर्पण है। डॉ. त्रिपाठी भी उदार हृदय वाले विराट व्यक्तित्व के धनी हैं। मेरी जिज्ञासा पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों में बढ़ती गई और आपने उपलब्धतानुसार भिजवाने में कोई संकोच नहीं किया।

मई २०११ में श्री पुष्करलाल जी केडिया ने 'मनीषिका' के कार्यकर्ता सम्मेलन में मुझे भी कोलकाता आमंत्रित किया। इस दौरान अनेक साहित्यकारों से मिलना हुआ। जैथलिया जी को भी फोन किया। आपने तत्काल आवास पर आने का न्योता दिया। मैं अपने दो मित्रों बलवीरजी और रामनिवासजी के साथ आपसे मिला। पहली बार दर्शन हुए। आपकी आवभगत और आत्मीयता से अतीव प्रसन्नता की अनुभूति हुई। कोलकाता और राजस्थान की साहित्यिक गतिविधियों पर खूब चर्चा हुई। श्री विष्णुकान्त जी शास्त्री का प्रसंग भी चर्चा में आया। आपने उनके व्यक्तित्व-कृतित्व के बारे में विस्तार से बताया और यह भी बताया कि श्री विष्णुकान्त जी का श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय से गहरा लगाव था। आपने बताया कि उन्होंने प्रबुद्धजनों की मांग पर पुस्तकालय सभागार में गीता पर ५४ मासिक प्रवचन किये। इस बीच आप राज्यपाल जैसे गरिमामय संवैधानिक पद पर प्रतिष्ठित हुए, इसके बावजूद भी अनवरत रूप से प्रवचन जारी रहे। समय निकाला। कहीं कोई व्यवधान नहीं आया। ऐसे विराट व्यक्तित्व के धनी थे शास्त्री जी। उनके गीता-प्रवचनों को ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किया गया है, जिसका सम्पादन प्रख्यात साहित्यकार नरेन्द्र कोहली ने किया है। ग्रन्थ के दो खण्ड 'गीता परिक्रमा' शीर्षक से प्रकाशित हो चुके हैं तथा तीसरा खण्ड प्रकाशनाधीन है। प्रकाशित दोनों खण्ड आपने मुझे भेंट किये तथा यह आश्वासन दिया कि तीसरा खण्ड आते ही आपको भिजवा देंगे। मैं आपका किन शब्दों में धन्यवाद करूँ, आभार प्रकट करूँ, कृतज्ञता ज्ञापित करूँ कि 'गीता परिक्रमा' का तीसरा खण्ड प्रकाशित होते ही डाक से आपने मुझे भिजवाया। तीनों खण्डों का अध्ययन कर मैंने अपना अभिमत दिया और बीच-बीच में आपसे तथा डॉ. प्रेमशंकरजी त्रिपाठी से चर्चा होती रही। प्रसंगवश अब भी आपसे संवाद होता ही रहता है।

साहित्यिक चर्चा तो आप से प्रायः होती ही रहती है, यदा-कदा सामाजिक-राजनैतिक चर्चा भी हुई है। राजस्थान परिषद द्वारा राजस्थान की आन, बान, शान के धनी वीरशिरोमणि महाराणा प्रताप की स्मृति में पार्क एवं सड़क के नामकरण के साथ विशाल एवं भव्य २० फुट ऊँची कांस्य प्रतिमा की स्थापना की जानकारी निर्माणकाल से अनावरण तक देते रहे।

'श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय' द्वारा आयोजित साहित्यकार सम्मान समारोह का निमंत्रण भी भिजवाना कभी नहीं भूलते। फोन पर आग्रह भी। हाँ, व्यस्तता एवं विवशता के चलते कभी भी छोटीखाटू जाना नहीं हुआ। फिर भी आपका हर बार आग्रह रहता है और दोनों तरफ से आशावादी हैं कि २ अक्टूबर २०१२ को होने वाले कार्यक्रम में निश्चित रूप से भाग लेंगे।

'श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय' ज्ञान के लिए निरन्तर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया का इससे चार दशक का जुड़ाव तथा समर्पण

से पुस्तकालय ने जो गौरव अर्जित किया है एतदर्थ पुस्तकालय द्वारा श्री जैथलिया जी के अमृत महोत्सव का आयोजन एवं अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन सामयिक एवं सही निर्णय है। इससे आयोजकों का स्वयं का मान बढ़ेगा तथा पुस्तकालय की महिमा को चार चाँद लगेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। जैथलिया जी स्वयं एक महान ग्रन्थ हैं, जरूरत इसे पढ़ने की है। जिज्ञासा एक ऐसा दीपक है जो आपके जीवन के अंधकार को क्षण भर में दूर कर सकता है। जैथलिया जी जिज्ञासा रूपी दीपक को जलाये हुए हैं। तमस से मुक्ति का यह आयोजन अनवरत चलता रहे यही कामना है और कामना जैथलिया जी के सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायु होने की भी। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपको इसी प्रकार ऊर्जा प्रदान करते रहें और आप सेवा के इस प्रकल्प को आगे बढ़ाते रहें। जिसकी निष्ठा अविचल है, जिसमें असीम धैर्य है उसे कर्मपथ पर अग्रसर होने से कोई नहीं रोक सकता। आपके उज्ज्वल जीवन पथ पर एक दीप हमारी शुभकामनाओं का भी।

जीवन के ७५ बसंत देख चुके जैथलियाजी के अमृत महोत्सव की इस शुभ वेला में उन्हें शायर की ये पंक्तियाँ नजर करता हूँ -

जमाना रुके पर रवाँ तुम रहो, जिन्दगी हो वहीं जहाँ तुम रहो।
है आज के दिन हम सबकी दुआ कि सौ साल तक जवाँ तुम रहो।। ●

सम्पर्क : पॉपुलर ऑफसेट प्रिंटर्स, रोडवेज बस स्टेण्ड, पो.: फतेहपुर-३३२३०१
जिला: सीकर (राजस्थान), मो.: ०९४६१५३८५९१

समन्वयशील व्यक्तित्व- जुगलकिशोर जैथलिया

✍ डॉ. किरणचन्द नाहटा

लम्बा कद ! प्रशस्त भाल ! विचारशील नेत्र ! सौम्य मुखमुद्रा! धोती और कुर्ते का देशी परिधान ! जैसा धवल वेश वैसा ही उज्जवल व्यक्तित्व। प्रथम दृष्टि में मिलने वाले को लगता है कि ये कोई कर्मशील और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हैं। यह जो एक शब्द चित्र मैंने खींचा है- उन सज्जन का नाम है- श्री जुगलकिशोर जैथलिया। छोटीखाटू वासी और कोलकाता प्रवासी श्री जैथलिया आयकर के अधिवक्ता रहे हैं। मेरा उनका प्रथम संक्षिप्त सा परिचय बांगड़ महाविद्यालय डीडवाना के एक कार्यक्रम में हुआ। यद्यपि एक साहित्य सेवी के रूप में मैं उनके नाम से पहले से ही परिचित था। मेरा यह प्रथम परिचय उनकी सदाशयता और साहित्यानुराग के कारण धीरे-धीरे बढ़ता गया और इसी बढ़ते परिचय के क्रम में मैं उनके अनेक गुणों से परिचित हुआ।

स्वभाषा, स्वसंस्कृति और स्वदेश से आपको गहरा अनुराग है। यह अनुराग ही आपके कर्म का मूल प्रेरक है। समन्वय और संतुलन आपके जीवन की दूसरी बड़ी विशेषता है प्रायः देखने में आता है कि उच्च जीवनादर्शों के प्रति रहा अनुराग आसक्ति में बदलकर एकपक्षीय और एकांगी बन व्यक्ति की दृष्टि और सोच को संकुचित कर देता है, किन्तु आपके साथ ऐसा नहीं है। उदाहरण के साथ मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहूँगा। सबसे पहले स्वभाषा प्रेम की बात को ही लेते हैं। आपको अपनी मातृ भाषा राजस्थानी से अनन्य प्रेम है और उसके उन्नयन और उत्थान के लिये आप प्राण-प्रण से सचेष्ट हैं, किन्तु मातृ-भाषा के प्रति उनका यह अनुराग उस मोहासक्ति में जाकर परिणत नहीं हुआ जहाँ मातृ-भाषा के नाम पर लोग राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति द्रोह को ही स्वभाषा प्रेम की कसौटी मानने लगे हैं। आपका जागृत विवेक मातृ-भाषा और राष्ट्र-भाषा दोनों की महत्ता और गौरव को भलिभाँति पहचानता है। यही कारण है कि आप श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के माध्यम से दोनों ही भाषाओं के गौरव और गरिमा को समान रूप से बढ़ाने में लगे हैं।

ठीक यही बात आपके जीवन में स्वप्रान्त और स्वराष्ट्र को लेकर है। आपको अपनी

जन्मभूमि राजस्थान से अनन्य प्रेम है। भौतिक चकाचौंध से परिपूर्ण महानगर कोलकाता में रहते हुए भी धोरां-धरती स्थित अपने छोटे से कस्बे छोटीखाटू को आप क्षण भर भी विस्मृत नहीं करते हैं। तभी तो श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के मंच से आप प्रतिवर्ष साहित्यकारों के सम्मान का महनीय और गरिमापूर्ण उत्सव आयोजित करते हैं। आपका अपनी जन्मभूमि के प्रति यह उत्कट प्रेम आपकी राष्ट्रभक्ति और स्वदेश निष्ठा को कहीं बाधित नहीं करता। महान भारत राष्ट्र के प्रति आपका सर्वतोभावेन समर्पण अनुकरणीय है। आप जिस निष्ठा से राष्ट्र गौरव महाराणा प्रताप का स्मरण करते हैं उसी निष्ठा के साथ महान क्रान्तिकारी और अनुपम देशभक्त वीर सावरकर के प्रति भी अपनी विनम्र श्रद्धांजलि व्यक्त करते हैं। यह आपके उदार सोच का ही परिणाम है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी हिन्दुत्व की पोषक संस्था के एक समर्पित कार्यकर्ता होते हुए भी राममनोहर लोहिया जैसे प्रखर समाजवादी चिंतक के प्रति भी आपके मन में गहरे सम्मान का भाव है।

जीवन के ७६वें बसन्त का स्वागत करता हुआ आपका कर्मठ जीवन निश्चय ही अभिनन्दनीय है। आपके युवकोचित उत्साह और वरिष्ठोचित विवेक को पुनः-पुनः नमन। परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि आप शतायु हों और अदीन भाव से स्वदेश, स्वभाषा और स्वसंस्कृति की विजय पताका फहराते रहें। ●

सम्पर्क : ७-ग-१५, पवनपुरी, दक्षिण विस्तार, बीकानेर- ३३४००३, मो. ०९४१४१४६७९२

एक महान व्यक्तित्व श्री जैथलियाजी

✍ डॉ. विनोद सोमानी 'हँस'

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आ. श्री जुगलकिशोर जैथलिया का अमृत महोत्सव समारोह पूर्वक मनाये जाने की योजना स्वयं में गौरवपूर्ण है। उनके महान कार्य, उत्कृष्ट सेवायें, सक्रियता के रंग, साहित्यिक योगदान, राजनीतिक कार्यकलाप, सामाजिक समरसता के प्रयास उनकी थाति को चिरस्थायी बनाते हैं और उनका अभिनन्दन कर हम सभी अभिनन्दनकर्ता ही गौरवान्वित हो रहे हैं। राजस्थान के एक छोटे से गांव (छोटीखाटू) से वे कोलकाता उच्च अध्ययन हेतु गये और वहीं रच-बस गये। अपनी ऊर्जा का लाभ वहीं देने लगे और जीवन को सेवा कार्य में समर्पित कर दिया। ऐसे प्रेरक एवं कर्मठ व्यक्तित्व विरल ही होते हैं। भगवान इन्हें विशेष रूप से बनाता है।

श्री जैथलियाजी से मेरा परिचय उनकी संपादन दक्षता से सम्बन्धित रहा है। बंगाल में बैठकर हिन्दी व राजस्थानी साहित्य की महती सेवा करना, स्वयं में अद्भुत कार्य है। राजस्थान दिवस पर श्रेष्ठ सामग्री के साथ स्मारिकायें सम्पादित करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य है। स्मारिकाओं के माध्यम से पूरे कोलकाता की गतिविधियों को जोड़ना, राष्ट्र के महापुरुषों की विशद जानकारियाँ देना, वहाँ कार्यरत संस्थाओं की सेवाओं का उल्लेख करना, उनके महान कार्य रहे हैं।

आदरणीय कन्हैयालाल सेठिया के राजस्थानी एवं हिन्दी साहित्य को समग्र रूप से प्रस्तुत करना एक कालजयी कार्य है। यह कार्य उनके जैसा श्रमजीवी एवं उद्भट विद्वान ही कर सकता था। आ. सेठियाजी को सबने पढ़ा है पर समग्र रूप से उन्हें पढ़ने का सुख श्री जैथलियाजी ने ही प्रदान किया। इन ग्रन्थों से श्रेष्ठ संपादक के रूप में उभर कर आये हैं।

श्री जैथलियाजी संपादक के साथ-साथ भाषाओं के ज्ञाता भी है। उनके कार्य इसके साक्षी हैं। उनके लेख, भाषण और अन्य कृतियाँ इसे प्रमाणित करती हैं। मुझ पर उनका विशेष स्नेह रहा है तथा उनके कार्यकलापों से अवगत कराते रहे हैं।

समाज-संगठन में उन्हें दक्षता भी प्राप्त रही है और उनका सद्-व्यवहार उन्हें सफल

बनाता रहा है। अनेक संस्थाओं के वे प्राण रहे हैं। तन, मन, धन से वे सबके सहयोगी रहे हैं। उनको प्राप्त भामाशाह सम्मान इसको पुष्ट करता है। एक साथ कई संस्थाओं का मार्गदर्शन करना और उनको पुष्ट करना उन्हीं के वश का है। वे महान समाजसेवक हैं।

साहित्य जगत में उनका योगदान अमूल्य रहा है। उन्हें अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया है- शारदा ज्ञानपीठ सम्मान, भगवतीचरण वर्मा सम्मान, कुरजां सम्मान, राजश्री स्मृति न्यास साहित्य सम्मान, विष्णुकांत शास्त्री विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी युवा मंच का रजत जयन्ती सम्मान एवं कर्मयोगी सम्मान प्रदान किये गये हैं। यह उनकी अनवरत सेवाओं का ही फल है।

साहित्यकारों को सम्मानित करना, उन्हें उचित मंच प्रदान करना, साहित्य का संरक्षण करना, मौन साधकों को आगे लाना उनके श्रेष्ठ कार्यों में आते हैं। वे स्वयं के प्रचार से दूर मौन साधना में व्यस्त रहे हैं।

राजनीति में नैतिक मूल्यों के वे सदा पक्षधर रहे हैं और यही कारण रहा कि वे राजनीति से सीधे जुड़े रहकर भी जोड़-तोड़ से दूर ही रहे हैं।

वे ७५ वर्ष के हो गये है। उन्हें भगवान स्वस्थ, प्रसन्न रखे, गतिशील रखे, ऊर्जा से लबालब रखे और मार्गदर्शक के रूप में सक्रिय बनाये रखें।

इस अमृत महोत्सव के अवसर पर मेरा प्रणाम। उनका हार्दिक अभिनन्दन। ●

सम्पर्क : ४२/४३, जीवन विहार कॉलोनी, अजमेर-३०५००४ (राज.), दूरभाष: (०१४५) २६२७४७९

कर्मठ व्यक्तित्व के धनी श्री जुगलकिशोर जैथलिया

✍ श्रीकान्त शर्मा 'बालव्यास'

भगवत कृपा की करुणाद्र दृष्टि जिसपर गिर जाती है उनके जीवन में सत्कर्मों की विश्व-वाटिका सौन्दर्य से विभूषित हो जाती है। आलोकर्षण के दिव्य चन्दन से सुगन्धित हो उठता है जीवन, आस्था, निष्ठा, श्रद्धा एक साथ बैठकर प्रभाती गाने लगती हैं। भगवत कृपा सरस्वती को नचा देती है उनकी जिह्वा पर।

'जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी।'

श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया को जब मैंने देखा वह स्मृति मेरे मानस पटल पर जगमगाते मणिदीप जैसी उद्‌भाषित हो जाती है। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्रीजी के साथ श्रीराम मन्दिर पुस्तकालय में सायंकाल जब आते शान्त, गाम्भीर्य एवं विद्वतापूर्ण बातचीत होती रहती। मैं भी एक किनारे बैठकर आपलोगों की बातचीत सुनता रहता।

सन् १९८० के दशक में एक बार मेरी कथा बिनानी भवन धर्मशाला में आयोजित थी। मैंने देखा की उस कथा में श्री जैथलियाजी भी सभी श्रद्धालु श्रोताओं के बीच बैठकर निमग्न भाव से कथा श्रवण कर रहे थे, कथा समाप्ति के पश्चात् श्री जैथलियाजी से कुछ चर्चा हुई तब मुझे आभास हुआ कि आपके स्वर में शौर्यभरा मृत्युञ्जयी शंखनाद गूँज रहा है। आपकी वाणी और कार्यकलापों में दम है, समाज के लिए, देश के लिए कुछ कर गुजरने की अभिलाषा मन में संजोये हुए हैं।

'सा विद्या या विमुक्तये' वास्तव में विद्या वही है जो जन्म जन्मान्तरों से बँधी चली आती अज्ञान की हथकड़ी खोल मुक्ति के स्वतन्त्र साम्राज्य में चिरबंदी को मोक्ष दे दे। श्री जैथलियाजी पर भी माँ सरस्वतीजी की असीम कृपा है। आप माँ सरस्वती के प्रियातिप्रिय पुत्र हैं। आप जब कभी भी पुस्तकालय से निकलते आपके हाथों में कोई न कोई सद्‌ग्रन्थ देखकर मुझे आन्तरिक प्रसन्नता होती थी। सर्वप्रथम आत्म सुधार, यही वह दृढ़ भूमिका है जहाँ से परिवार, समाज एवं देश के सुधार का शुभारंभ होता है। इस सुदृढ़ भूमिका के बिना

परिवार, समाज एवं देश सुधार के सारे प्रयत्न मृगमरिचिका मात्र हैं। मैत्री, धर्म, त्याग, गुणग्राहकता एवं उदात्त कर्तव्य बोध का दृश्य भारत के स्वर्णिम इतिहास का आदर्श प्रसंग है। सामाजिक जीवन में व्यक्तिवादी मनोवृत्ति के कारण ही मानव क्रूर बन जाता है। इस मनोवृत्ति से श्री जैथलियाजी बराबर दूरी बनाये रखते हैं। गो रक्षा, गो संवर्धन एवं गो संरक्षण के निमित्त जब भी मैंने श्री जैथलियाजी से चर्चा की आपने इस पुनीत कार्य के लिए सर्वदा मेरा उत्साह बढ़ाया एवं हर संभव सहयोग करने की तत्परता दिखाते रहे।

जब-जब पांडित्य बिकता है राष्ट्र भ्रान्त होता है। पांडित्य जब स्वतन्त्र अस्मिता लिए होता है तभी राष्ट्र प्रकाश पाता है। श्री जैथलियाजी के ७५वें जन्म दिन पर आपके स्वस्थ, वैभवशाली एवं सुदीर्घ जीवन की हार्दिक मंगल कामना के साथ मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप के सत्कर्मों से देश एवं समाज निरन्तर प्रकाश पाता रहे तथा आप शक्ति, सत्य के अनुसंधान तथा प्राप्ति के साधन बनें।

'आत्मावान भव:' की हार्दिक मंगल कामनाओं के साथ। ●

सम्पर्क : ११० सदर्न एवेन्यू, कोलकाता-७०००२९, दूरभाष : २४६६९०९५
मो.: ०९८३०२७५३५५

कर्मठ, निश्छल, विराट व्यक्तित्व के धनी श्री जैथलिया

✍ नरेन्द्र कुमार धानुका

मुझे यह जानकर अति हर्ष की अनुभूति हुई कि मेरे परम हितैषी श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया आगामी २ अक्टूबर २०१२ को अपने जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस शुभ अवसर पर मैं उनके साथ जुड़े हुये अपने संस्मरणों को देने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। उनसे मेरा परिचय ३५-३६ वर्ष पुराना है। इस लम्बी अवधि के कितने ही संस्मरण मेरे हृदय में अंकित है। कहाँ से शुरू करूँ कुछ समझ में नहीं आता। खैर, मैं उनसे अपनी तीन मुलाकातों से ही शुरू कर रहा हूँ। यद्यपि हो सकता है ये पुरानी मुलाकातें उन्हें भी याद न हो।

करीब ३५ वर्ष पहले की बात है। हरिराम गोयनका स्ट्रीट बड़ाबजार में रहनेवाले भागवत कथा मर्मज्ञ श्री गौतम जी महाराज ने 'गौतम गुरु सत्संग मंडल' नाम से एक संस्था बना रखी थी जिसके सचिव का भार मेरे कंधों पर डाल रखा था। अपने सत्संग मंडल के माध्यम से उन्होंने एक बार बाँधाघाट में एक वृहद् भागवत कथा का आयोजन किया। उन्होंने मुझे सुझाया कि इस अवसर पर सनातन धर्म के परम ज्ञाता श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया को प्रधान अतिथि बनाना चाहिये। वे मुझे साथ लेकर बाँगड़ बिल्डिंग में उनके कार्यालय में गये और अपने मन की बात बतलाई। जैथलिया जी सहर्ष तैयार हो गये और भागवत के उद्‌घाटन के अवसर पर पधार कर उन्होंने प्रधान अतिथि का आसन ग्रहण किया। वहाँ उन्होंने भागवत पर जो सारगर्भित भाषण दिया उसका मेरे मन पर बहुत प्रभाव पड़ा।

इसके कुछ दिन पश्चात् 'भागलपुर महिला संघ' ने मीराभगत के संचालन में मोहन बगान मैदान में श्रद्धेय रामचन्द्र डोंगरे जी महाराज की वृहद् भागवत कथा का आयोजन किया। उस शुभ अवसर पर एक स्मारिका निकाली जानी थी। किसी की सिफारिश से उसके सम्पादन मंडल में मुझे भी ले लिया गया। मेरे से ऊपर कन्हैयालालजी सेठिया, जैथलिया जी और महावीर जी बजाज के नाम थे। उस कथा के चेयरमैन श्री वासुदेवजी झुनझुनवाला थे। उनकी सलाह से मैंने जैथलिया जी से उनके कार्यालय में मिलकर आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया और स्मारिका का सफल संपादन किया।

तीसरी बार उनसे मुलाकात फिर डोंगरेजी की भागवत में ही हुई। इस बार भी मोहन बगान ग्राउन्ड में ही कलकत्ता पिंजरापोल सोसायटी के तत्वावधान में इस भागवत ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया गया था। एक दिन श्रीयुत् महावीर जी नारसरिया के साथ जैथलिया जी आयोजन में पधारे। मैं वहाँ 'राजस्थान जनकल्याण समिति' के कार्यकर्त्ता के रूप में उपस्थित था। मैंने वहाँ श्रीयुत नारसरिया जी तथा उनकी प्रेरणा से साढ़े सात हजार रुपये अनुदान करके पिंजरापोल में एक गोदान का संकल्प लिया। हम लोगों ने थोड़ी देर कथा श्रवण करते हुये पूरे पंडाल का चक्कर भी लगाया। इसी बीच हमारा परिचय थोड़ा गाढ़ा होता गया और मैं उनकी प्रेरणा से राजस्थान परिषद एवं कुमारसभा पुस्तकालय के हर कार्यक्रम में शामिल होने लगा।

मैं पिछले २० वर्षों से राजस्थान के साहित्य क्षेत्र में सक्रिय हूं। हर साल 'श्री सरस्वती सेवा पुरस्कार' का आयोजन मेरी जन्मभूमि फतेहपुर शेखावाटी में करता हूँ। इस पुरस्कार से श्री नथमल केड़िया, श्री गुलाब खण्डेलवाल, श्री सीताराम महर्षि, श्री गजानन वर्मा, श्री बैजनाथ पंवार, श्री उदयवीर शर्मा, श्री सत्यनारायण इन्दौरिया तथा श्री मदन सैनी आदि को सम्मानित किया जा चुका है। इसकी सुमधुर सुवास श्री जैथलिया तक भी पहुँची क्योंकि वे भी राजस्थान के साहित्यिक वातावरण से जुड़े हुये हैं और अपनी जन्मभूमि छोटीखाटू में बहुत वर्षों से ऐसा ही आयोजन करते आ रहे हैं। इन संदर्भों के कारण हमारी घनिष्ठता और भी बढ़ी उन्होंने इस साल अक्टूबर में छोटीखाटू में होनेवाले आयोजन में मुझसे भी चलने का आग्रह कर रहे हैं और मैं जाने का मन भी बना रहा हूँ। तीन साल से उन्होंने मुझे कुमारसभा पुस्तकालय की कार्यकारिणी समिति में भी लिया है।

श्री जैथलिया जी ने जितनी ज्ञानवर्द्धक स्मारिकाओं का सृजन किया उनकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। विशेषकर लोकनायक जयप्रकाश नारायण, महाकवि निराला, राममनोहर लोहिया, महाराणा प्रताप, मदनमोहन मालवीय तथा महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि पर जो स्मारिकायें निकाली हैं वे इतनी ज्ञानवर्द्धक हैं कि सिर्फ स्मारिका के लेख पढ़ने से ही सम्बन्धित महापुरुष के व्यक्तित्व और कृतित्व की पूरी जानकारी हो जाती है जो अन्यत्र दुर्लभ है। जैथलिया जी के सभी कार्य स्तुत्य है। मेरा अल्प सुझाव है कि स्मारिकाओं के सम्पादन के अलावा उनको पुस्तक लेखन भी करना चाहिये। हालांकि मैं यह भी मानता हूँ कि स्मारिका सृजन का कार्य पुस्तक लेखन से भी कठिन है। यह दुष्कर कार्य श्री जैथलियाजी जैसे बहुआयामी व्यक्ति ही कर सकते हैं जिसे कोई प्रतिष्ठित लेखक नहीं कर सकता। वे कन्हैयालाल सेठिया और आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की यश पताकाओं के ध्वजवाहक बने। उन्होंने कन्हैयालाल सेठिया समग्र और शास्त्री जी की रचनाओं के दो भाग निकालकर उनको अमर कर दिया।

श्री जैथलिया जी का पूरा जीवन भारतीय संस्कृति और संस्कारों से ओतप्रोत है जिसमें एकाग्र देशभक्ति की पुट है। वे सादाजीवन, उच्च विचार, पूर्णरूपेण समर्पित भावना, कार्य

के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा अटूट लगन के पर्याय हैं। अपनी विद्वता, चारित्र्य, कर्मठता, कार्यदक्षता तथा सत्यनिष्ठा के कारण वे हर जगह प्रशंसित, पूजित तथा सम्मानित हुए हैं। यही नहीं, साथ-साथ वे अपना अमिट प्रभाव अंकित करने में भी सफल हुए हैं। अपनी सत्यवादिता, स्पष्टवादिता, निर्मल निश्छल आत्मीय व्यवहार, स्वाभिमान की भावना, बाह्य कठोरता में अन्तर्निहित हृदय की कोमलता और स्नेहशीलता उनके उदात्तगुण हैं, जिनके कारण मेरे जैसे अनेक सामान्य जन उनके भक्त बन गये हैं। आप कोलकाता में सैंकड़ों समर्पित कार्यकर्त्ता तैयार करने में सफल हुये हैं।

श्री जैथलिया ने अपने व्यापक अध्ययन, मौलिक विचार, चिन्तन और नवीन प्रतिपादन के द्वारा अपने कार्यों में अत्यधिक रोचकता और सरलतापूर्वक गम्भीरता के रंग निवेश किये हैं। जिस किसी विषय पर भी वे बोल रहे हों उनकी स्पष्ट मर्मस्पर्शिनी वाणी में एक आकर्षण – एक सम्मोहन के दर्शन होते हैं। बड़ाबाजार कोलकाता में होने वाले सभी आयोजनों के आप प्राण हैं। आपने अपने औपचारिक जीवन क्रम के अतिरिक्त सहज मानवीय धरातल पर भी सहज बन्धुता की पहिचान बनाई है। वस्तुतः ऊर्जा के अनन्त स्रोत तथा अनन्त उत्साह की शुभ्रता से अपने संसर्गियों की उदासीनता, निराशा तथा उत्साहहीनता को दूर किया है। यही नहीं अपनी निर्भीक वाणी से दंभियों के दिल दहलाने में भी सफल हुये हैं। उनके ओजस्वी अद्भुत व्यक्तित्व और अनोखी चारित्रिक शक्ति के समक्ष छल-कपट वाला व्यक्ति या तो धराशायी हो जाता है अथवा वह अपने आपको उनके सम्मुख समर्पित कर देता है।

समाज के प्रति उनकी अहर्निश सेवा और विराट उपलब्धियों पर हमें गर्व होना चाहिये। कुमारसभा पुस्तकालय के माध्यम से अनेकानेक आयोजन और वृहद स्मारिकाओं द्वारा उन्होंने एक अनुपम किस्म का ज्ञानयज्ञ चला रखा है जो अत्यन्त सराहनीय और श्लाघनीय है। उनकी विशिष्ट उपलब्धियों में महाराणा प्रताप की स्मृति में एक पार्क एवं सड़क का नामकरण, महाराणा प्रताप की दो प्रतिमाओं तथा सरदार पटेल की भव्य मूर्ति की स्थापना है। ये कार्य अत्यन्त दुष्कर तथा असंभव से दिख रहे थे जिनको उन्होंने अपने अथक परिश्रम और विश्वसनीय साथियों के सहयोग से सम्भव बना दिया। उन्होंने अभी जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर चौथे आश्रम में प्रवेश किया है। जीवेम शरदः शतम् की यात्रा के लिये मैं उत्कट शुभकामना करते हुये अपनी लेखनी को इन पंक्तियों के साथ विराम देता हूँ

ऋतुओं की सौ सौ सौगातें, मौसम के अनगिन उपहार
उत्कर्ष-साधना का जीवन में, परिणय होवे बारम्बार। ●

सम्पर्क : सुहाग निकेतन, १७६-बी, चित्तरंजन एवेन्यू, कोलकाता-७, मोबाइल: ९८३०३८४२५१

वे खुद अपनी ही मिसाल हैं

✍ बलवीरसिंह 'करुण'
अध्यक्ष: आस्था साहित्य संस्थान

कर्मठता की जो मशाल है
चलता-फिरता जो कमाल है
कैसे तुलना करें किसी से
वे खुद अपनी ही मिसाल हैं।

वे साकार सरल प्रतिभा हैं
सज्जनता की चल प्रतिमा हैं
गौरव अगर कोलकाता के
छोटीखाटू की गरिमा हैं।

हतबल को ऊर्जा से भर दें
खाकों को लाखों का कर दें
ऐसे सम्मोहन के स्वामी
आँसू को अमृत कण करदें।

उनके दृढ़ निश्चय के आगे
असफलता डर-डर कर भागे
जाने कौन मंत्र पढ़ते हैं
मूर्छित पड़ी जवानी जागे।

कुछ ऐसे हैं जुगल हमारे
युवा, बाल, वृद्धों के प्यारे
उन्हें बुढ़ापा क्या छूएगा
उनसे सारे संकट हारे।

वे तो स्वयं समय पर भारी
बाधाएँ उनकी आभारी
धैर्य उन्हें छू धीरज पाता
साफल्यों के वे अधिकारी।

समय देवता उनको वर दें
कम से कम इतना तो कर दें
अगर चौगुनी अधिक लगे तो
उनकी आयु दोगुनी कर दें। ●

सम्पर्क : ६७ केशवनगर, पो. अलवर-३०१००१ (राजस्थान), दूरभाष: (०१४४) २३३२८९९

लोकसंग्रही-लोकसेवक : जुगलजी

✍ श्याम आचार्य

आखिर जुगलकिशोर जैथलिया हैं क्या ? जिनका कि आप अमृत महोत्सव मना रहे हैं ? राजनेता ? श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संचालनकर्त्ता ? सामाजिक कार्यकर्त्ता ? राजस्थानी संस्थाओं को जोड़कर राजस्थान परिषद् बनाने वाला ? कुछ स्मारिकाएं व पुस्तकें संपादित करने वाला लेखक व संपादक ? ओजस्वी वक्ता ? कुशल संगठनकर्ता, राजस्थानी भाषा का कट्टर समर्थक ? भाजपा या आर.एस.एस. का कट्टर समर्थक? अथवा लोक-संग्रही ?

आप जैसी भी उनके बारे में राय रखते हों, यह आपकी मर्जी, लेकिन मैं उन्हें उपरोक्त सभी गुणों और विशेषणों से सम्पन्न मानता हूँ। ये गुण उन्होंने अचानक नहीं अर्जित किए हैं बल्कि निरन्तर अध्यवसाय, चिन्तन, मनन और सतत कर्म व अध्ययन से प्राप्त किए हैं। यदि आपने उनको निकटता से देखा है तो आप पायेंगे उनकी सैद्धान्तिक कट्टरता असहिष्णु नहीं, बल्कि सहिष्णु है। उन्होंने अपने हर मित्र, सहयोगी, कार्यकर्ता, नेता, कर्मचारी और विभिन्न क्षेत्रों के शीर्षस्थ लोगों से सीखा और उसे आत्मसात किया है। उनके सीखने की पहली पाठशाला आर.एस.एस. है। कोलकाता में रचा-बसा राजस्थानी समाज, जनसंघ व भाजपा का उच्च नेतृत्व व कार्यकर्त्ता, उनके श्रद्धेय एवं आराध्य व्यक्तित्व प्रो. विष्णुकांत शास्त्री (पूर्व राज्यपाल) और उनके साथ चलने व काम करने वाले लोगों से जुगलजी ने सकारात्मक प्रेरणा ली है। कुछ नया और अच्छा स्वीकारा और जो ग्रहण योग्य नहीं था उसे तुरत-फुरत छोड़ दिया। छोड़ा भी पूरे आत्मचिंतन और मनन के बाद। कबीर ने तो कहा था – 'ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर' लेकिन जुगलजी ने सबसे दोस्ती रखने और किसी से वैर नहीं रखने की प्राण-प्रण चेष्टा की है।

अयोध्या आन्दोलन के समय एक ऐसा प्रसंग भी आया जब उन्हें द्वारका और ज्योतिषपीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द के एक वक्तव्य, जिसमें उन्होंने आन्दोलन के मुखिया स्वामी रामचन्द्रदास परमहंस पर हल्की टिप्पणी की थी, उससे जुगलजी के मन

में प्रचंड रोष उत्पन्न हो गया। उन्होंने स्वामी स्वरूपानन्दजी की दो-दो पीठों के शंकराचार्य पद पर नियुक्ति को ही चुनौती देते हुए विभिन्न अदालती फैसलों के आधार पर पत्र तैयार कर मुझे फोन किया कि वे चाहते हैं कि मैं इसे प्रकाशित करूं। तब मैं जनसत्ता का स्थानीय सम्पादक था।

मैंने कहा कि जरूर भेज दीजिए पर मेरी दो बातें हैं, उन्हें सुन लीजिए। एक तो यह कि आपको संदर्भित कोर्ट फैसलों के उस अंश की नकल साथ में देनी पड़ेगी तथा दूसरी यह कि मैं उसे चोपाल (पाठकों के पत्र) में छापूंगा। वे सहमत हो गए। उनका एक पत्र ज्योतिषपीठ के शंकराचार्य हेतु स्वामी बासुदेवानन्द के समर्थन में छपा। इस पत्र के उत्तर में निर्भीक जोशी पत्रकार ने स्वामी स्वरूपानन्द का अभिमत भेजा। मैंने उसे भी चोपाल में ज्यों का त्यों छाप दिया। प्रतिक्रिया स्वरूप जैथलिया जी ने दूसरा पत्र लिखा। वह भी छपा। पत्रकार निर्भीक जोशी की प्रतिक्रिया भी उस पर छापी गई। यह सिलसिला करीब एक माह चला। इन पत्रों ने महानगर में काफी हलचल मचादी। कुछ प्रभावशाली बुजुर्ग इससे उत्पन्न कड़वाहट को समाप्त करने हेतु जुगलजी से मिले। जुगलजी ने भी विषय की गंभीरता एवं शंकराचार्य के पद को ध्यान में रखते हुए उनसे कहा कि जिस दिन मेरे उत्तर का प्रत्युत्तर नहीं छपेगा, उसी दिन से मैं इस विषय पर लिखना बन्द कर दूँगा। बुजुर्गों के प्रयास से ऐसा हुआ तब जुगलजी ने फोन करके मुझे कहा कि वैचारिक असहिष्णुता का भाव न बढ़े इसलिए मैं इस विषय पर चोपाल में लिखना बन्द कर रहा हूँ।

जुगलजी सदैव आत्मचिंतन की सतत आन्तरिक प्रक्रिया से जुड़े रहने वाले व्यक्ति हैं। यही उनके निरन्तर आगे बढ़ने का पाथेय और पूंजी है। इसी ने उन्हें आत्मिक रूप से धनी बनाया है। इसीलिए वे राजस्थानियों और अन्य प्रदेशवासियों के जलसे, समारोह और महोत्सव में वक्ता के रूप में आमंत्रित किए जाते हैं। राजस्थान समाज में तो वे दूध में मिश्री की तरह घुले हैं। हर मंच पर वे अपनी बात बेबाक रखते हैं।

कोलकाता में १९६१ वर्ष में जैथलियाजी से मेरी पहली मुलाकात हुई। मैं वहाँ हिन्दुस्तान समाचार समिति की शाखा संभालने गया था। लम्बे, छरहरे, गेहुँआ रंग के जुगलजी तब पढ़ते भी थे। कहीं नौकरी भी करते थे। सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े थे। प्रथम परिचय में ही लगा कि वे लोकसंग्रही प्रवृत्ति युवक हैं। मैं उनसे जुड़ा तो निरन्तर जुड़ता ही गया। अपने पहले चरण में मैं १९६१ से ६६ तक कोलकाता में रहा। फिर १९९० में जनसत्ता का समन्वय संपादक बनकर गया तो जैथलियाजी आयकर सलाहकार के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे।

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता महानगर एक मिनी राजस्थान भी है। वैसे तो समूचे पश्चिम बंगाल में राजस्थानी रचे-बसे हैं। लेकिन कोलकाता में वे घनत्व के साथ

बसे हैं। वे वहाँ के समाज के साथ भी पूरी तरह घुल मिल गए हैं। प्रदेश के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। एक मोटा अनुमान है कि करीब दो हजार चाय बागानों में ५० प्रतिशत चाय उत्पादन के काम में राजस्थानी जुटे हैं। कोलकाता के प्रमुख करीब ५० कटरों, जिनमें एक-एक कटरा सालाना पांच सौ करोड़ का कारोबार करता है, में राजस्थानियों का योगदान है। आज भी शहर में करीब ढाई हजार छोटी-बड़ी गद्दियाँ कोलकाता शहर में नए-पुराने स्वरूप में विद्यमान हैं। लगभग ५ जूट मिलों, बीसियों अस्पतालों, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा केन्द्रों की देखभाल भी राजस्थानी कर रहे हैं। करीब दो हजार से भी अधिक एन.जी.ओ. जिनका नाम एवं स्वरूप भले ही धार्मिक हो लेकिन वे नर-नारायण के कल्याणकारी कामों में जुटे हुए हैं। शेयर मार्केट, बिल्डर्स, कपड़ा व्यवसाय, लोहा, इस्पात, ग्लास, प्लास्टिक, पेपर आदि इंडस्ट्रीज व व्यवसाय में भी राजस्थानियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

राजस्थान के अलग-अलग अंचलों से आए इन उद्यमी, व्यवसायी, कारोबारी राजस्थानियों और उनकी छोटी-छोटी सांस्कृतिक परिषदों, संघों, एसोसियेशन्स व ट्रस्टों को एक सूत्र में बांधने की परिकल्पना और योगदान को मूर्तस्वरूप देने में कोलकाता में अपनी युवावस्था से सक्रिय जुगलकिशोर जैथलिया, महावीर प्रसाद नारसरिया और उनकी टीम ने सक्रिय भूमिका निभाई है। आज राजस्थान की करीब ५० से भी अधिक आंचलिक परिषदों, संघों, एसोसियेशनों को 'राजस्थान परिषद' के बैनर तले एक सूत्र में बांधने में जैथलिया व नारसरिया की दूरदृष्टि की परिकल्पना को भुलाया नहीं जा सकता।

पिछले ढाई दशकों में जैथलिया के व्यक्तित्व में जहाँ लोकसंग्रही प्रवृत्ति का विकास हुआ है, वहीं वे सामाजिक चेतना जागृत करने, राजस्थान के इतिहास पुरुषों को बंग-वासियों के बीच प्रतिष्ठापित करने, राजनीति से दूर सामाजिक व सांस्कृतिक समरसता का भाव पैदा करने और साहित्यिक सर्जन जैसे रचनात्मक कार्यों में समर्पित भाव से जुटे हैं। महाराणा प्रताप की विशाल कांस्य प्रतिमा कोलकाता के सेन्ट्रल मेट्रो स्टेशन चितरंजन एवेन्यू के सामने त्रिकोणिया पार्क में स्थापित करने और एक बड़े पार्क का नामकरण करने के संकल्प को राजस्थान-परिषद के माध्यम से पूरा किया। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने और इसकी संस्कृति व साहित्य के उत्थान व प्रचार-प्रसार में वे कर्मठता से लगे हैं। परिषद की स्मारिकाओं को उन्होंने अत्यधिक रोचक एवं बहुपठनीय बनाया। गुरुदेव टैगोर, डॉ. राममनोहर लोहिया, महाराणा प्रताप, मदनमोहन मालवीय, कन्हैयालाल सेठिया, १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी जैसी विभूतियों और घटनाओं पर परिषद की स्मारिकाएं जुगलजी के संपादकत्व में ही निकली है। राजस्थानी एवं हिन्दी के प्रख्यात महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के संपूर्ण साहित्य

को उन्होंने ही संपादित कर चार खंडों में समग्र रूप से प्रकाशित किया। इन स्मारिकाओं का कलेवर, साज-सज्जा एवं सामग्री चयन में उनकी गहन अध्ययनशीलता भी झलकती है।

किसी पुस्तकालय की स्थापना तो कोई भी साहित्य और अध्ययनप्रेमी व साधन संपन्न व्यक्ति कर सकता है। लेकिन पुस्तकालय के माध्यम से साहित्य सृजन, साहित्यकारों और सेवाकर्मियों के सम्मान, भिन्न-भिन्न दलों के राजनेताओं के व्याख्यानों, कवि सम्मेलनों और गीता-प्रवचनों के आयोजनों, ग्रंथों के प्रकाशनों जैसे रचनात्मक आंदोलन चलाने का श्रेय यदि किसी को जाता है तो वह है जुगलकिशोर जैथलिया। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संस्थापक तो थे स्वतंत्रता सेनानी श्री राधाकृष्ण नेवटिया। लेकिन पुस्तकालय माध्यम से विभिन्न रचनात्मक प्रवृत्तियों का आंदोलन भी चलाया जा सकता है यह सोच और योजना जुगलकिशोर जैथलिया की ही है। इसके लिए उन्होंने ऐसी सोच रखने वाले युवाओं की एक टीम तैयार की और उन्हें पुस्तकालय और उसके माध्यम से सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक जागृति लाने के विचारों से अनुप्राणित किया। यह कार्य लगातार ४० सालों से चल रहा है। इसीलिए श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय आज देशभर में लोकप्रिय है। जो पुस्तकालय एक समय में बंद होने के कगार पर पहुँच गया था उसे सतत चलने वाले आंदोलन का स्वरूप दे दिया। आज इस पुस्तकालय की पुस्तकों की ही नहीं बल्कि इसके माध्यम से चलने वाली हर गतिविधि के प्रति कोलकाता वासियों को जानने की उत्सुकता रहती है। मीडिया भी इसकी गतिविधियों को महत्व देता है।

इन गतिविधियों में पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी का 'एकल काव्य पाठ' ने तो समूचे भारत में हलचल मचा दी थी। टी.वी. के कई चैनलों ने इसे प्रसारित किया। काव्य पाठ में वाजपेयी जी द्वारा पेश की गई कविताओं की प्रकाशित एक पुस्तक 'अमर आग है' की बिक्री धड़ल्ले से हुई। इसके कैसेट बहुत बिके। आपातकाल में कुमारसभा की ओर से आयोजित एक वीर रस कवि सम्मेलन ने पूरे देश में जलजला पैदा कर दिया। पुस्तकालय के विवेकानन्द सेवा सम्मान, डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान जैसे पुरस्कारों की देशभर में प्रतिष्ठा है। पुस्तकालय की पुस्तक प्रकाशन की योजना भी जैथलियाजी की ही देन है। कोलकाता की बीसियों संस्थाओं से जुड़े जैथलियाजी लगभग सभी संस्थाओं में सक्रिय हैं। वे इन संस्थाओं में सदैव प्राण-प्रतिष्ठा करने को उद्यत रहे हैं। कई सम्मानों एवं पुरस्कारों से सम्मानित जैथलियाजी विनम्रता, सहजता और समर्पण की तेजस्विता आज सभी को अनुप्राणित एवं प्रेरित करती है। वे शतायु हों। ●

सम्पर्क : ११९/३२६, अग्रवाल फॉर्म, मानसरोवर, जयपुर-३०२०२० (राजस्थान)
मो.: ०९३५१५-४००८७

राष्ट्रभक्त ममतामय मनीषी महापुरुष जैथलिया जी

✍ प्रो. कुसुमलता केडिया

कार्यकारी निदेशक, गांधी विद्या संस्थान

सन् २००६ में जब मुझे डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान के लिए कोलकाता बुलाया गया तो मुझे थोड़ी उत्सुकता थी – कार्यक्रम के विषय में। परंतु ठीक उत्सव के दिन १५ अगस्त को इन्द्रदेव कोलकाता पर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने महानगरी को नहलाया ही नहीं, डुबो दिया – सड़कों-गलियों में पानी, भवनों-प्रांगणों में पानी, मैदानों और खुली जगहों में तो झीलों सा दृश्य, हाथठेले और रिक्शावाले कहीं घुटनों तक, कहीं कमर तक पानी में डूबे ठेला-रिक्शा खींच रहे हैं। मौसम तो सुहावना हो उठा पर कार्यक्रम का फीका रहना भी सुनिश्चित लगने लगा। हम खुद भीगते-भागते महाजाति-सदन में घुसे। परंतु वहाँ का दृश्य देखकर आश्चर्यचकित रह गई मैं। समस्त सभागार प्रबुद्ध जनों से ठसाठस भरा।

जाहिर है कोलकाता में मुझे कौन जानता है। यह कमाल तो जैथलिया जी और उनकी पूरी टीम का है। संगठन, आत्मीय सम्पर्क-निजी सम्बन्ध बना पाने की सामर्थ्य-इनका ही सम्मिलित परिणाम हो सकती थी ऐसी भरपूर उपस्थिति। क्योंकि उत्सव का केन्द्र तो मैं ही थी, सरकार्यवाह भागवत जी या सम्मान जिनके हाथों मिलना था- पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरलीमनोहर जोशी कोलकाता के लिए उतने ही अपने थे जैसे वे दिल्ली या नागपुर या मुम्बई, भोपाल, बैंगलूर कहीं के लिए भी है, देश भर के लिए। पर उस दिन का कार्यक्रम तो मेरे सम्मान का था। कोलकाता वालों के लिए मैं अपरिचित थी, अत: यह बड़ी संख्या तो जैथलियाजी एवं टीम का पुरुषार्थ-फल थी, सो भी ऐसे नितांत प्रतिकूल मौसम में जहाँ कोई घर से निकलना न चाहें। कार्यक्रम की शालीनता एवं गरिमा ने मेरे चित्त में सहज उल्लास का भाव भरा।

कार्यक्रम के बाद अगले दिन जब हम काशी लौट रहे थे जैथलिया जी स्वयं विदा करने स्टेशन तक आए। मैं अपनी अस्तव्यस्तता में अभिनन्दन पत्र भूल आई थी, वह लेने उन्होंने किसी को भेजा। ऐसी चिंता ने मेरे मन में उनके प्रति गहरा सम्मान जगाया। अपनी

राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यस्तता के बीच उनका छोटी दिखने वाली परंतु महत्वपूर्ण या भावपूर्ण बातों का इतना ध्यान रखना विरल ही लगा।

सम्मान-समारोह के बाद, काशी आकर मैं संस्था की समस्याओं में बहुत उलझी रही। परिवार से जुड़ी कतिपय घटनाएं भी पीड़ा का कारण बनी। इन सबके कारण मैं उनसे पत्राचार या दूरवार्ता का सम्पर्क नहीं रख सकी। हम दोनों के समान परिचित एक सम्मानित विभूति ने बताया भी कि जैथलिया जी कह रहे थे कि वे कोई संपर्क ही नहीं रखती। परंतु मैं अपनी ही व्यस्तता में उलझी थी।

पांच वर्षों बाद केडिया महासभा के समारोह में पुन: कोलकाता जाना हुआ । तब फिर से जैथलिया जी से भेंट हुई। मैंने उनसे दुखप्रद, कष्टप्रद एवं आघातकारी प्रसंगों का संकेत मात्र किया, जिनसे मुझे गुजरना पड़ा था। सुनकर उनके चेहरे पर जैसी ममताभरी करुणा एवं भाव-संवेदना उमड़ी, उससे स्पष्ट दिखा कि मेरे कष्ट की चर्चा से ही उनका मन द्रवित होकर कोमल, भावमय हो उठा है। उन्होंने कहा - अपनों से कुछ तो बताना था। बताने पर शायद कुछ कर पाते या न कर पाते तो कुछ सुझाव ही देते, इससे लगा कि वे कितने भावमय भी हैं। राष्ट्रीय राजनीति की कठोरताओं ने उनके चित्त की कोमलता एवं मानवीयता का, करुणा और आत्मीयता का क्षय नहीं किया है। यही भावमयता उनसे हिन्दू समाज की त्रुटियों की चर्चा के प्रसंग में दिखी। वे एक श्रेष्ठ समाजसेवी हैं, त्रुटियों का सुधार चाहते हैं उनके सुधार के लिए कार्यरत हैं। पर वे अपने हिन्दूसमाज की त्रुटियों की अधिक सार्वजनिक चर्चा को उचित नहीं मानते। जो बन पड़े वह करना चाहिए। सभी दोषों-कमियों को दूर करने का अधिकतम प्रयास करना चाहिए। परंतु उन पर ज्यादा बातें करने में समय और शक्ति नष्ट नहीं करनी चाहिए। त्रुटियों का सार्वजनिक गायन तो दोष है। वह आत्मीयता की कमी का लक्षण है। सच्ची पीड़ा और व्यथा तो वह है कि उन्हें दूर करने के लिए अधिकतम कार्य किया जाए।

इससे मुझे ज्ञात हुआ कि उनके भीतर हिन्दू समाज के प्रति कैसी गहरी ममता एवं आत्मीयता है। कैसा प्रेम है, करुणा है और चिंता है। सम्पूर्ण समाज ही उनका परिवार है, सभी उनके स्वजन है - उनके अपने हैं। ऐसा शांत, धीर, गम्भीर, पुरुषार्थी व्यक्तित्व है उनका।

वे एक राष्ट्रभक्त महापुरुष हैं। उनके व्यक्तित्व में महापुरुष की विशिष्टताएँ है। उनका जीवन राष्ट्रसेवा को अर्पित है। ईश्वर उन्हें दीर्घायु दें, उनकी शक्ति सदा भरपूर रखें, उनकी ऊर्जा सदा जीवंत रहे और वे भारत माता की सेवा करते हुए सुदीर्घ जीवन को सार्थक करें, यह प्रभु से प्रार्थना है। ●

सम्पर्क : कार्यकारी निदेशक, गांधी विद्या संस्थान, राजघाट, वाराणसी, दूरभाष: ०५४२-२४४००५०

प्रेरणात्मक संस्मरण

✍ स्वामी संवित् सुबोध गिरि
भक्तानन्द शिवमन्दिर, भीनासर

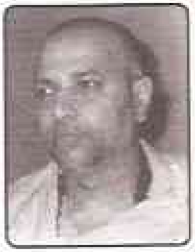

माननीय जुगलकिशोर जी जैथलिया से मेरा प्रथम परिचय 'संत जिन्होंने देश जगाया स्मारिका'-१९८२ की प्राप्ति से हुआ। उस समय मेरे छोटे भाई सुरेश कुमार लाठ का संघ प्रचारक के नाते, ४२ कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट के संघ वस्तुभण्डार में ही उसका निवास था। उसने ही मेरी रुचि-प्रवृत्ति के विषय में जुगलजी को बताया होगा और उन्होंने कृपापूर्वक यह स्मारिका मेरे लिये डाक से भिजवायी। स्मारिका को पढ़कर मेरी भावना बनी कि वहाँ से जो भी प्रकाशन हो, मुझे प्राप्त हो। इस दृष्टि से मैं श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय का आजीवन सदस्य बना। फिर जब कोलकाता जाना होता, मैं जुगलजी से अवश्य मिलने जाता और इस प्रकार २-३ बैठक में ही मेरा उनके प्रति वह आदरभाव बना जो मेरा अपने से बड़े चाचाजी पूज्य तोलाराम लाठ के प्रति है। यह भाव आज भी है, आगे भी यथावत् रहेगा। मैं संन्यासी होने के बावजूद भी उन्हें अपने अभिभावक के रूप में देखता हूँ।

फिर उनसे नित्य का विशेष सम्बन्ध उस समय आया जब मैं प्रेम मन्दिर आश्रम, रिसड़ा में नैष्ठिक ब्रह्मचारी के रूप में स्थायी रूप से आ गया फिर हम सबके बड़े सौभाग्य से श्रद्धेय आचार्य श्री विष्णुकान्त शास्त्री जी की प्रवचनमाला पहले ईशोपनिषद, फिर श्रीमद्भगवद्गीता पर चला। उसमें मैं नियमित रिसड़ा से सत्संग लाभ के लिए जाता था और बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से जो भी कार्यक्रम आयोजित होते थे उसमें मित्रों सहित जाता था क्योंकि वहाँ मुझे ऐसी बौद्धिक एवं आध्यात्मिक खुराक मिलती थी जो मेरे प्रेरणा की अक्षय स्रोत बनती थी। मैंने बाद में जुगलजी से निवेदन किया था कि आचार्य शास्त्री जी के गीता प्रवचन अवश्य प्रकाशित होने चाहिये और वह बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित साहित्य में सर्वोत्कृष्ट प्रकाशन सिद्ध होगा और इस आग्रह को उन्होंने रखा। मैं जब से आश्रम जीवन में हूँ तबसे आर्थिक आवश्यकता की किसी प्रकार के सहयोग के लिये अपने द्वार खुले रखे।

देश किस दिशा में जा रहा है इसकी आपको सदैव पीड़ा रहती है। इसकी सटीक

अभिव्यक्ति जब आपको भामाशाह सेवा सम्मान से सम्मानित किया जा रहा था उस समय हुई। आपने उस पुनीत अवसर पर कहा – देश में भामाशाहों की कमी नहीं है, कमी है तो देशभक्त महाराणा प्रताप की। आजादी के बाद हमारे देश में थोपे गये सभी युद्धों में देश की जनता ने जितना आवश्यक था उससे भी अधिक धन दिया, सेना ने वीरता दिखाने में कोई कमी नहीं छोड़ी पर हमारे नेतृत्व ने राणाप्रताप जैसी दृढ़ता का परिचय नहीं दिया। हम राणाप्रताप को याद रखेंगे तो भामाशाहों की कमी नहीं रहेगी।

कभी-कभी शास्त्रार्थ मान्यताओं को ठीक से समझ नहीं पाने के कारण सामाजिक जीवन में गलत मान्यतायें प्रचलित हो जाती हैं। उसी में से एक पंक्ति है – 'जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।' यह कथन उनके लिये है जो अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर पर स्थित है – ध्यान, धारणा, समाधि में डूबे रहते हैं और शरीर के योगक्षेम को प्रारब्ध के ऊपर, भगवान के ऊपर छोड़ रखा है जैसे शुकदेव, दत्तात्रेय आदि। यह जन सामान्य या प्रारम्भिक साधकों के लिये नहीं है। इससे बड़ा गलत संदेश समाज को जाता है – राम गुलाम रखे तो गुलाम बने रहिए, राम गरीब रखे तो गरीब बने रहिए। इसमें तो पुरुषार्थ का कोई अवसर ही नहीं बनता। जबतक हमारे अन्दर काम है, वासना है, मलीनता है, विकार है, कर्तव्यबोध है तबतक पुरुषार्थ भूमि है। इसीलिए जुगल जी ने इस पर एक सशक्त लेख भी लिखा जिसमें वे कहते हैं – *जाहि विधि 'रहे' राम, ताहि विधि रहिए।*

मैं परम श्रद्धेय डॉ. हरवंशलाल ओबेराय जी का शिष्य रहा हूँ और उनका जो व्यापक शोधकार्य है वह अवश्य ही जन प्रकाश में आना चाहिये, इसे मैंने एक राष्ट्रीय कार्य, ईश्वरीय कार्य समझकर उनको अपना जीवन समर्पित किया था। पर दुर्भाग्य से आकस्मिक दुर्घटना में १८ सितम्बर १९८३ में वे चले गये अत: कार्य अधूरा रह गया और जो भी कार्य हुआ था वह उस समय तक प्रकाशित नहीं हो सका था। श्री जुगलजी सदैव पूछते रहे थे वह कबतक प्रकाशित हो रहा है, हम हमेशा आपके साथ हैं। और जब प्रकाशन का अवसर आया तो आपने श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से सहयोग तो भिजवाया ही, राजस्थान परिषद कोलकाता से भी भिजवाया।

जुगलजी एवं उनके मार्गदर्शन में कार्यरत संस्थायें भी आलोक स्तम्भ की तरह हैं। इन्हीं सबके प्रयास से आज की दुरावस्था में भी देश की धर्म-संस्कृति बची हुई ही नहीं है पुनः गरिमामय स्थिति प्राप्त करने के लिये सचेष्ट हैं। इसके कारण भारत पुनः विश्व के लिये आशा का केन्द्र बनता जा रहा है। मेरी बारम्बार ईश्वर से प्रार्थना है राष्ट्र की निष्काम सेवा करते हुये आप शतायु हों। ●

सम्पर्क : भक्तानन्द शिवमन्दिर, चित्रा आइस फेक्ट्री के पास, पो. भीनासर-३३४४०३, बीकानेर (राज.)
मो.: ०९४१३७६९१३९

श्री जुगलजी : मधुकर सरिस संत गुनग्राही

✍ कृष्णस्वरूप दीक्षित

जुगलकिशोर जी जैथलिया से मेरा परिचय दो दशक पुराना है। मैं उन कुछ लोगों में से हूँ, जिन्हें उनकी घनिष्ठता प्राप्त हुई है।

मुझे शुक्राचार्य का श्लोक याद आ रहा है -

अमंत्रोमक्षरं नास्ति नानौषधिं वनस्पतिम् ।
अयोग्यः पुरुषं नास्ति योजकः तस्य दुर्लभः ।।

अर्थात् - कोई भी अक्षर ऐसा नहीं है जो मंत्र न हो, कोई वनस्पति ऐसी नहीं है जो औषधि न हो, कोई पुरुष अयोग्य नहीं होता। किस पुरुष में क्या योग्यता है और उसे किस कार्य में लगाया जा सकता है, इसकी पहचान करनेवाले योजक दुर्लभ होते हैं।

जुगलजी ने अपना जीवन समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित किया। उनके इस उद्देश्य को प्रखरता प्रदान की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने। जुगलजी जीवन के प्रारम्भिक दिनों से ही संघ के स्वयं सेवक बने और विभिन्न दायित्वों का पालन किया। गोस्वामी तुलसीदासजी ने मानस में लिखा है -

धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई।।
सोई जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवन दाता।।

(बाल०/६/११-१२)

अर्थात् - धुंआ कुसंग के कारण कालिख हो जाता, उसी से धर्म ग्रंथ स्याही होने से लिखे जाते हैं। उसी धुआँ को जब जल, वायु और अग्नि का साथ मिलता है तो वह बादल बन (वर्षा बनकर) संसार का जीवन दाता बन जाता है।

नीतिशतक में भर्तृहरि भी ऐसा ही कहते हैं -

सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते।
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते।।

स्वात्यां सागर शुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जायते।
प्रायेणाधममध्यमोत्तम जुषामेवंविधा वृत्तय: ।।

अर्थात् - गर्म लोहे पर जल की बूंद गिरने पर उसका नाम भी नहीं शेष रहता; वही कमल-दल पर मोती के समान शोभा पाती है। स्वाति नक्षत्र में सिंधु स्थित सीप में पड़कर वह मोती बन जाती है। सदा अधम, मध्यम और उत्तम के साथ के ऐसे ही परिणाम होते हैं।

जुगलजी का झुकाव विशेष रूप से साहित्य की ओर रहा। अपने ग्राम छोटीखाटू (जिला नागौर, राजस्थान) में एक पुस्तकालय की स्थापना की और उसे आज एक बड़े पुस्तकालय का सम्मान प्राप्त है।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय का जब जुगलकिशोर जी ने दायित्व लिया तो इसकी आर्थिक अवस्था अत्यन्त दयनीय थी। आपके प्रयास एवं अथक परिश्रम का परिणाम है कि पुस्तकालय की प्रसिद्धि आज संपूर्ण भारत में है।

सबहिं मान प्रद आपु अमानी।

जुगलजी दूसरों को सम्मान देते हैं और स्वयं अमानी हैं उसके कारण लोगों का सहयोग उन्हें सदा मिलता है।

ब्रह्मलीन गुरुवर विष्णुकांतजी शास्त्री की पंक्तियाँ हैं -

बड़ा काम कैसे होता है पूछा मेरे मनने,
बड़ा लक्ष्य हो बड़ी तपस्या बड़ा हृदय मृदुवाणी।
किन्तु अहं छोटा हो जिससे सहज मिलें सहयोगी,
दोष हमारा, श्रेय राम का, हो प्रवृत्ति कल्याणी।।

जुगलजी किसी भी सफलता में सदा सहयोगियों को श्रेय देते हैं। अपनी भूल स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं करते और रामजी की कृपा का ही परिणाम मानते हैं। गुरुवर शास्त्री जी का भी प्रभाव आपके जीवन में परिलक्षित है।

भारतीय जनता पार्टी के कार्य के लिये जब संघ ने जुगल जी को भेजा तो इस कार्य को जिस योग्यता से आपने निभाया यह पार्टी के अर्थकोष तथा कार्यालय के स्थान के विस्तार से स्पष्ट दिखता है। पार्टी का प्रत्येक अधिकारी और कार्यकर्त्ता आपके योगदान और निष्ठा की सराहना करता है।

जुगलजी अनेक सामाजिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं, जिनमें अस्पताल, गौशालाएँ, विभिन्न पुस्तकालय आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

जुगलजी स्वयं ही सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं, इससे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने समाज को अनेक कार्यकर्त्ता दिए हैं। आप उनके साथ चर्चा में किसी व्यक्ति के कई अवगुणों को बताएँ पर वे उस व्यक्ति के किसी गुण को बताकर समाज के लिये उसकी उपयोगिता साबित करेंगे और उसे कार्य में नियोजित करेंगे। यही कारण है कि जुगलकिशोर जैथलिया नाम आज व्यक्ति से संस्था में परिवर्तित हो गया है।

संसार में तीन प्रकार के लोग होते हैं, एक इस भय से कि कार्य में बाधाएँ आएँगी, कार्य प्रारम्भ ही नहीं करते। दूसरे बाधा आने पर कार्य को बीच में त्याग देते हैं तथा तीसरे वे लोग होते हैं, जो जिस कार्य को हाथ में लेते हैं, उसमें कितनी ही बाधाएँ क्यों न आएँ पूर्ण होने तक उसे नहीं छोड़ते। भर्तृहरि याद आ रहे हैं –

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्ननिहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नै पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति।।

जुगलजी इस श्लोक में वर्णित तृतीय श्रेणी के पुरुष हैं जिन्होंने रास्ते में आई अनेक बाधाओं को पार करते हुए जिस कार्य को हाथ में लिया उसे पूरा किया।

मैं उनके अमृत वर्ष में उन्हें बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि वे शतायु हों और समाज को अपनी सेवाएँ अर्पित करते रहें।

अन्त में मैं उन सभी लोगों को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने उनके अमृत वर्ष मनाने और ग्रंथ प्रकाशित करने का शुभ संकल्प लिया है। ●

सम्पर्क : सी-९/६०४, पी.डब्ल्यू.ओ. काम्प्लेक्स, सेक्टर-४३, हृदयदीप, पो. गुड़गांव-१२२००१ (हरियाणा) मो.: ०९८१८०४५७४५

बेमिसाल है श्री जैथलियाजी का समर्पण

✍ मोहनलाल चोखानी

श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया से करीब ४०-४५ वर्षों का मेरा परिचय है। सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय में पहले मंत्री और अब समिति के सदस्य के रूप मे अपने कार्य में इनकी निष्ठा एवं लगन देखी जो अनुकरणीय है। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय को सुसज्जित एवं समृद्ध करने में इनका बड़ा हाथ है, यह सभी जानते हैं। उन्होंनें कई मित्रों को, इस पुण्यकार्य मे अपने साथ जोड़ा, जो निरंतर साहित्य एवं देश सेवाके विभिन्न कार्यों में इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्यरत हैं। श्री राधाकृष्णजी नेवटिया के सन्निकट रहकर, इस पुस्तकालय की अभिवृद्धि कर, श्री जैथलियाजी ने बड़ाबाजार की जनता को हिन्दी साहित्य से जुड़े रहने का जो सुअवसर प्रदान किया है, वह अपने आपमें एक महत् कार्य है।

यह कटु सत्य है कि, कलकत्ते का बड़ाबाजार, जो कभी हिन्दी साहित्यकारों का गढ़ कहलाने का गर्व रखता था उसमें विगत पचास वर्षों में एक न्यूनता आ गई थी, जिस अभाव की पूर्ति कुछ अंशों में श्री जैथलियाजी की निष्ठा एवं साहित्यिक गतिविधियों में लगे रहने से पूरी हो सकी है। इधर आप अपने कुछ समर्पित मित्रों के साथ राजस्थान के वीर महापुरुषों के तथा देश के अन्य महापुरुषों के जीवन पर शोधपूर्ण अध्ययन कर, उनके विस्तृत प्रकाशन का कार्य संभाल रखा है, जो समाज के लिए एक धरोहर बन गया है।

वर्तमान में अपने व्यावसायिक कार्य से अवकाश ग्रहण कर, आप देश और समाज की अहर्निश सेवा में जुटे हैं, यह आज के युग में कम देखा जाता है। आज के युवा अपने समय का कुछ अंश अगर देश और समाज की सेवा में देना अपना कर्तव्य समझ लें तो देश के लिये अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

प्रभु से प्रार्थना है कि वे वर्षो श्री जैथलियाजी को स्वस्थ रखें ताकि हजारों नर-नारी आनेवाले भविष्य में उनके सान्निध्य का लाभ ले सकें। ●

सम्पर्क : दमयन्ती अपार्टमेन्ट, ४ तल्ला, रवीशंकर शुक्ला मार्ग, सिविल लाइन्स, नागपुर-४४०००१
मो. ०९८६०६ ४८३३१

योजकता के जीते-जागते प्रतिमान श्री जुगलजी

✍ लक्ष्मीनारायण भाला

भले ही पचहत्तर वर्ष के ना लगते हो परंतु जन्मतिथि का गणित कह रहा है कि आदरणीय जुगलकिशोरजी जैथलिया पचहत्तर के हो चुके हैं। विक्रम संवत २०६९ की अश्विन शुक्ल १३ को उनका ७६ वाँ जन्म दिन है। तिथि के अनुसार यह दिन इस वर्ष २७ अक्टूबर २०१२ को है। ७५ वर्ष पूर्व यह तिथि चूँकि २ अक्टूबर को थी, सबने मिलकर यही निर्णय लिया कि उनका जन्मदिन २ अक्टुबर को ही क्यों न मना लिया जाए। महात्मा गाँधी, लालबहादुर शास्त्री तथा अन्य और भी कुछ महानुभावों का जन्म दिन भी यही है - २ अक्टूबर, एक शुभ दिन।

७५ वर्ष पूर्व के २ अक्टूबर से इस वर्ष के २ अक्टूबर तक की श्री जुगल जी की यात्रा कैसी रही ? किन-किन पड़ावों से होकर वे यहाँ तक पहुँचे हैं ? आदि बातों की विस्तृत जानकारी, व्यक्तिगत जीवन पर अधिक न बोलने के उनके स्वभाव के कारण, मिलने में कठिनाई ही होती, परंतु अमृत महोत्सव समिति की यह जिम्मेवारी बन गयी कि यह जानकारी सब को उपलब्ध करा दी जाए। समिति द्वारा प्रकाशित पत्रक को पढ़कर निश्चित ही कुछ जानकारी प्राप्त होती है। सन १९५३ में राजस्थान से आकर कोलकाता निवासी बनने वाले श्री जुगलजी ने १५ वर्ष की आयु से ही अपने गृहस्थ धर्म को निभाते हुए पढ़ाई, नौकरी एवं वकालत प्रारंभ करने तक की यात्रा सफलता पूर्वक पूर्ण की। इस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक सक्रिय स्वयंसेवक की भूमिका निभाते हुए अपने जन्म स्थान छोटीखाटू से भी उन्होंने अपने संपर्क को प्राणवंत बनाये रखा है।

मैं जब प्रचारक के नाते १९६८ ई. में सर्वप्रथम कोलकाता आया तो जिन प्रमुख कार्यकर्ताओं से मेरा परिचय हुआ उनमें आदरणीय जुगलजी भी एक थे। बड़ाबाजार उनका कार्यक्षेत्र था। श्रद्धेय भंवरलालजी मल्लावत के संघनिष्ठ जीवन से प्रभावित कार्यकर्ताओं की जो टोली हमें उनदिनों बड़ाबाजार में दिखाई देती थी उनमें जुगलजी की अपनी पहचान सहज ही प्रकट होती रहती थी। विशेष कर राजस्थान से आये सभी नये पुराने स्वयंसेवक उनके

व्यक्तित्व से आकर्षित होकर उनसे मिलने को आतुर दिखाई देते थे। वर्ष में ३-४ बार मेरा भी किसी न किसी कार्यक्रम या बैठक के निमित्त कोलकाता आने पर उनसे मिलना हो ही जाता था। हर बार नये उत्साह से काम करने वाले नवयुवक कार्यकर्ताओं के बीच वे किसी न किसी दायित्व को निभाते हुए दिखाई देते थे। १९६८ से १९७५ तक मेरा कार्यक्षेत्र मालदा, सिलिगुड़ी, दार्जिलिंग एवं सिक्किम आदि होने के कारण इन ७ वर्षों का यही क्रम था।

सन १९७५-७६ के आपातकाल के दौरान मेरा निवास स्थान बड़ाबाजार की घनी बस्ती में श्रद्धेय माधवराव बनहट्टीजी के साथ श्री प्रह्लादजी माहेश्वरी की गद्दी में था। भूमिगत अवस्था में अनिमेष गुप्त यह छद्म नाम धारण कर वन्देमातरम् शतवर्ष पूर्ति उत्सव समिति, पश्चिम बंग के संगठन मंत्री के नाते पूरे बंगाल में मुझे भ्रमण करना पड़ता था। इस कार्य में बड़ाबाजार में जिन लोगों से मुझे सलाह, सुझाव एवं जानकारी प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त थी उनमें श्री जुगलजी मुझे विशेष उपयोगी दिखाई देते थे। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंच से उन दिनों वीर रस कवि सम्मेलन का आयोजन, हल्दीघाटी चतु:शती की स्मारिका का प्रकाशन, वन्दे मातरम् विशेषांक का प्रकाशन आदि मेरे लिये मेरा दायित्व निभाने में सहायता करने वाले प्रसंग बन गये। भूमिगत रहते हुए भी इन सब कार्यों को सम्पन्न कराने में प्रमुख भूमिका श्री जुगलजी की ही रही अत: उनसे निकटता एवं अपनत्व स्थापित होना स्वाभाविक ही था। इसी निकटता का ही यह परिणाम था कि जब मेरे छोटे भाई शरद ने वाणिज्य स्नातक की पदवी प्राप्त करने के बाद चिखली महाराष्ट्र से कोलकाता आकर कुछ काम सीखने की इच्छा प्रकट की तो मैंने जुगलजी से ही सलाह लेना उचित समझा। उनकी सलाह एवं सहयोग से ही प्रिय भाई शरद का कोलकाता आना हुआ। यद्यपि कोलकाता का शहरियाना वातावरण उसे रास न आने के कारण दो मास के भीतर ही वह लौट गया परंतु जुगलजी हर किसी को सहयोग देकर जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहते हैं इसका प्रमाण मुझे मेरे निजी अनुभव से प्राप्त हुआ।

सन् १९७६ से १९८१ तक विद्यार्थी परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री का दायित्व होने के नाते मेरा केन्द्र कोलकाता रहा। साहित्यिक गतिविधियों में रूचि होने के कारण बड़ाबाजार लाइब्रेरी एवं श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के कार्यकर्मों में सहभागी होते रहने के क्रम में ही आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, श्री विमल जी लाठ एवं श्री जुगलजी से निकटता बढ़ती रही। १९८१ से ८५ तक मेरा कार्यक्षेत्र बंगाल से बाहर था। रोहतक, चण्डीगढ़ एवं दिल्ली रह कर विद्यार्थी परिषद का उत्तर क्षेत्र का दायित्व संभालते हुए भी उपरोक्त निकटता के परिणाम स्वरूप जुगलजी के द्वारा प्रति वर्ष श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की स्मारिका मुझे प्राप्त होती थी। श्री जुगल जी का कभी कभार पत्र भी आता रहा जिसमें वे स्मारिका के प्रकाशन

से पूर्व उसके विषय से मुझे अवगत कराते हुए लेख या कविता लिखने का आग्रह करते थे। मेरे आलस्य एवं असमर्थता के बावजूद उनका यह आग्रह प्रति वर्ष बना रहा। इसी कालखंड में सन् १९८२ में उनके ज्येष्ठ पुत्र गोपाल का असामयिक निधन, इच्छा न होते हुए भी विधानसभा का चुनाव लड़ कर उसमें हारना आदि घटनाएं घटित हुई परंतु इससे हताश होकर चुप रहने के बजाय साहित्यिक-सामाजिक कार्यों में उनकी सक्रियता बढ़ती ही रही।

सन १९८६ से ९९ तक मेरा केन्द्र गुवाहाटी था। विद्या भारती के नये दायित्व की व्यस्तता भी बढ़ी। वर्ष में एकाध बार ही कोलकाता आना हो पाता था परंतु पुस्तकालय की स्मारिका एवं कार्यक्रमों की जानकारी देने के क्रम में जुगल जी की निरन्तरता में कोई कमी नहीं आयी। राम मन्दिर आन्दोलन की सक्रियता एवं डॉ. हेडगेवार जन्म शताब्दी की व्यस्तता का कालखंड भारत के इतिहास में भारतीय आत्मा के जागरण का कार्यकाल कहलायेगा। दुर्भाग्यवश इसी कालखंड में १९८७ ई. में जुगलजी को जीवन के सर्वाधिक दुःखदायी एवं कष्टमय प्रसंगों से गुजरना पड़ा। जीवन संगिनी पत्नी का वियोग एवं पिता की छत्र छाया का उठ जाना, इन दो घटनाओं से किसी भी मनुष्य का हताश होना स्वाभाविक ही है परन्तु जुगलजी इन आघातों को झेलते हुए भी अपने सामाजिक कर्तव्य से विमुख होते हुए दिखाई नहीं दिये। इसी बीच उनके दूसरे पुत्र गोविंद को भी लम्बी बीमारी ने घेरा। इन सबके बावजूद वे अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति सदा सतर्क रहे। इन सब घटनाओं का इस समय स्मरण करने का कारण यह है कि इसी कालखंड के एक और प्रसंग से मैं जुड़ा हूं।

डॉ. हेडगेवार जन्मशताब्दी के कार्यक्रम की रूपरेखा नागपुर की प्रतिनिधिसभा में निश्चित होने के बाद नागपुर से गुवाहाटी जाते हुए २ दिन के लिये मैं कोलकाता ठहरा। आदरणीय जुगलजी से मिलना हुआ तो उन्होंने भी पुस्तकालय द्वारा डॉ. हेडगेवार की स्मृति में स्मारिका के प्रकाशन की योजना के बारे में बताया एवं स्मारिका के लिये मैं भी कुछ लिखूं ऐसा आग्रह किया। जन्म से लेकर मृत्यु तक पूज्य डॉक्टर जी के जीवन को काव्य के रूप में सौ कड़ियों में लिखने की मेरी इच्छा है- यह कहते ही उन्होंने मुझे स्मारिका के लिए प्रतिबंधित करते हुए कहा कि बस ! आपका वह 'केशव शतक' हमारी स्मारिका के लिये आरक्षित है। गुवाहाटी पहुँच कर आप उसे शीघ्रातिशीघ्र भेज दिजिए। कैसी रचना होगी ? छपने योग्य होगी या नहीं ? जन्म से लेकर मृत्यु तक समग्रता से लिख पाऊंगा या नहीं ? आदि कई प्रश्न मेरे मन - मस्तिष्क में कुलबुला रहे थे परंतु जुगलजी के विश्वास भरे शब्दों ने मेरे मन को प्रश्नमुक्त कर दिया और उनके घर से जलपान कर निकलते हुए भविष्य के 'केशव शतक' का मुखड़ा मेरे मन-मस्तिष्क में कुलबुलाने लगा।

संगठन के मंत्र दाता, तंत्र के आधार।
धन्य हो ! युगपुरुष केशव, पूज्य हेडगेवार।।
लो नमन शत बार, शत नमन शत बार।।

यथा समय स्मारिका में 'केशव शतक' छप गया, साथ ही एक पुस्तिका के रूप में भी पुस्तकालय द्वारा इसे प्रकाशित किया गया जिसकी भूमिका आचार्य विष्णुकांत शास्त्रीजी ने लिखी। अब यही केशव शतक, केशव शतक स्वरांजलि के रूप में स्वरबद्ध होकर पुस्तिका एवं सी.डी के रूप में उपलब्ध भी है।

श्री जुगलजी के आग्रह का ही यह परिणाम था कि मेरे कुछ गीत एवं कविताओं का प्रथम संकलन 'गंगत्व भाव हर हर गंगे' श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित किया गया। काव्य गुणों की मान्यताओं में परिपूर्ण न होते हुए भी इस संकलन के प्रकाशन में दिखाया गया जुगलजी का आग्रह मुझे अपने अपूर्णता को पूर्णता की ओर ले जाने की प्रेरणा देता रहा है। यद्यपि मेरा केन्द्र विगत कुछ वर्षों से सिलीगुड़ी से स्थानान्तरित होकर नागपुर, मॉरिशस होता हुआ दिल्ली हो चुका है, दायित्व भी शिक्षा क्षेत्र से हट कर संवाद क्षेत्र हो गया है परंतु विगत पाँच वर्षों से डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान एवं स्वामी विवेकानंद सेवा सम्मान की चयन समिति के सदस्य के नाते मनोनीत होने के कारण पुस्तकालय की गतिविधियों से सम्पर्क अबाधित रहा है। यह दायित्व निभाते हुए श्री जुगलजी से वर्ष में भले ही ३-४ बार ही मिलना हो पाता हो परंतु संचार माध्यमों द्वारा होने वाले सम्पर्क के कारण निकटता बढ़ी है। उन्हें निकट से देखने एवं समझने का अवसर भी मिलता रहा है।

सामान्य लोगों के असामान्यत्व को बनाये रखने, सामान्य लोगों से असामान्य काम करवाने एवं सामान्य लोगों को असामान्य लोगों के साथ जोड़े रखने की कल्पकता एवं योजकता श्री जुगलजी में दिखाई देती है। राजनीति के ऊबड़ खाबड़ रास्ते से होकर राजमार्ग पर चलने के साथ-साथ साहित्य की हरी भरी पगडंडियों से होकर सृजन की बगिया तक चलने एवं औरों को चलाने की योजकता भी उनमें दिखाई देती है। अत: इस संदर्भ में यह कहूँ कि 'योजकस्तत्र दुर्लभ:' के इस जीते जागते प्रतिमान के लिये हम परमपिता परमात्मा से यह प्रार्थना करें कि अमृत महोत्सव के आयोजकों के साथ अगली पीढ़ी को जुगलजी के शतवर्ष पूर्ति के आयोजन का अवसर दे एवं इस लेख के प्रारंभ में लिखे वाक्य को इस रूप मे लिखने का सौभाग्य प्राप्त करा दें कि भले ही सौ वर्ष के लगते ना हों परन्तु जन्मतिथि का गणित यह कहता है कि हमारे जुगल जी सौ वर्ष के हो चुके हैं। ●

सम्पर्क : हिन्दुस्थान समाचार कार्यालय, प्राचीन शिव मन्दिर, उदासीन आश्रम के निकट, १०ए, आरामबाग, पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५, मो.-०९८१८४००७१३

वीरभूमि के कर्मवीर : श्री जैथलिया

✍ डॉ. शक्तिदान कविया

राजस्थान की रत्नगर्भा धरती के रजकणों में असंख्य नर-रत्न उत्पन्न हुए, जिन्होंने अपनी प्रज्ञा और प्रतिभा के बल पर छोटे से ग्राम में जन्म लेकर राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि की पताका फहराई। घर-सेवा से पर-सेवा की महत्ता भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों में सन्निहित है। इसीलिए देववाणी में एक सूक्ति 'परोपकाराय संता विभूतय' अर्थात् परोपकार सत्पुरुषों की विभूति है, लोकप्रचलित है। राजस्थान के ये पाँच रत्न विश्व में बेजोड़ हैं। इन पंक्तियों के लेखक डॉ. कविया के शब्दों में:-

संत सती अर सूरमा, सुकवी साहूकार।
पांच रतन मरुप्रांत रा, शोभा सब संसार।।

मुझे यह ज्ञात हुआ कि राजस्थान में जन्मे सुप्रसिद्ध समाजसेवी, विद्वद्रत्न, प्रखर वक्ता, सरस्वती-साधक, मातृ-भक्त और राष्ट्रभक्त 'कर्मयोगी' की उपाधि से अलंकृत माननीय जुगलकिशोरजी जैथलिया का 'अमृत महोत्सव अभिनन्दन' दिनांक २ अक्टूबर २०१२ ई. मंगलवार को 'मंगलभवन अमंगलहारी' दिवस पर भारत की विख्यात महानगरी कोलकाता में सम्पन्न हो रहा है, तो हर्षोल्लास की अनुभूति हुई। 'गुन ना हिरानो गुनग्राह हिरानौ है' ब्रज-लोकोक्ति के अनुसार गुणवान से भी गुणग्राहक अधिक आदरणीय होता है, अत: 'श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय' कोलकाता के समस्त कार्यकर्ताओं की कर्मठता और गुणज्ञता निस्सन्देह प्रशंसनीय एवं प्रेरणास्पद है।

मातृभूमि के महान् सपूत श्रीयुत जुगलकिशोरजी जैथलिया का व्यक्तित्व और कृतित्व अनेक दृष्टियों से विख्यात, वरेण्य एवं वंद्य है। उनके सदृश समस्त मानवीय सद्गुणों के समुच्चय, विनयशील विद्वान, विलक्षण वक्ता, मातृभूमि और मातृभाषा के प्रति समर्पित, राष्ट्रीय स्तर के देदीप्यमान नक्षत्र, सनातन दिव्य संस्कारों के संवाहक और परमार्थी सत्पुरुष आज के दूषित दौर में विरले ही मिलेंगे। जैथलियाजी की जन्मतिथि, जन्मभूमि, जन्मनाम एवं जन्मगोत्र सब के अर्थ में सुखद संयोग का स्वत: द्वियर्थी आभास होता है। जन्मतिथि २ अक्टूबर सम्पूर्ण

राष्ट्र में ऐतिहासिक महत्व का दिन सुविदित है। विक्रम संवत् के अनुसार आश्विन मास का शुक्ल पक्ष पूरा ही दिव्य और देवी-देवताओं की आराधना उपासना से सम्बद्ध माना जाता है। मातुश्री पुष्पाजी, पिताश्री कन्हैयाजी दोनों ही भारतीय संस्कृति में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के प्रतीक एवं पूज्य अर्थ के परिचायक शब्द हैं। जन्मभूमि का नाम 'छोटीखाटू' में जो छोटा रूप व्यक्त हुआ है वह भी शुभकर, जैसे द्वितीया का चन्द्रमा छोटा होता है किन्तु दर्शनीय वही होता है। भारतीय संस्कृति में मंगलकलश की महिमा सर्वविदित है जिसमें सप्त कलशों में सबसे छोटा सबसे ऊपर रखा जाता है। मनुष्य के दाहिने हाथ की सब से छोटी अंगुलि (कनिष्ठिका) में ही रत्न जड़ित स्वर्ण अँगूठी पहनी जाती है। उपनिषदों में ईश्वर के लिए 'अणोरणीयान् महतो महीयान्' अर्थात वह अणु से भी छोटा और बड़े से भी बड़ा सब कुछ है। जन्म नाम जुगल का एक अर्थ भी होता है। (२ अक्टूबर) और युग्म भी। तीसरा अर्थ चरण भी होता है जो अग्रगामी विचरण का सूचक अर्थात् एक पाँव छोटीखाटू में तो दूसरा सबसे बड़े शहर कोलकाता में। छोटीखाटू में कुमार अवस्था में पुस्तकालय की स्थापना की (सन् १९५८ में 'श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय') तो कोलकाता में भी 'श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय' के साथ अभिन्न अंग की भाँति जुड़ गये। 'जन्मगोत्र' जैथलिया का राजस्थानी भाषा में अर्थ किया जाए तो 'जै=जय+थलिया= मरुस्थलिया' अर्थात 'जय हो' का प्रतीक 'मरुस्थलवासी'। छोटे से ग्राम में उदित अश्वत्थ की संकल्प शाखाओं ने इतना विस्तार पाया कि कोलकाता को अपनी कर्मभूमि बनाकर 'कर्मवीर' तथा 'कर्मयोगी' उपाधि को चरितार्थ और कृतार्थ किया।

राजस्थानी में कई प्रसिद्ध दोहों की एक-एक पंक्ति लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त हो रही है, यथा- 'ज्यांरी शोभा जगत में, ज्यांरो जीवण धन्न' अथवा मिनख जगत में मोकला, मिलै न मिनखाचार। एक डिंगल-शैली का दोहा विशेष उल्लेखनीय है जिसमें व्यक्ति के जीवन की सार्थकता और धन्यता परिभाषित हुई है। यथा-

सुख भायां अंजस सयण, आयां सुध अवसांण।
पितु मनसा पूराविया, जो जाया धण जांण।।

अर्थात् जिस व्यक्ति के जन्मने से भाइयों को सुख मिले, शुभचिन्तक मित्रों को गौरव हो, उचित अवसर आने पर उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न किया जाए और जो अपने पिता की इच्छा को पूर्ण करे, वही ख्याति प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक करता है। दूसरे शब्दों में, किसी भी पिता की सर्वप्रथम और सर्वोपरि आकांक्षा यही रहती है कि बेटा अपने बाप से भी अधिक गुणवान हो। संस्कृत की यह उक्ति बहुत सारगर्भित है कि 'पुत्रात् शिष्यात् पराजयेत्' यानी पिता से पुत्र और गुरु से शिष्य आगे बढ़ें, यही हार्दिक कामना एवं शुभाशिष रहती है। श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया उपर्युक्त विशिष्टताओं से विभूषित एक ऐसे कीर्तिवन्त कर्मयोगी एवं

सर्व सहयोगी हैं, जिनसे मानवता और विद्वत्ता की प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। जो राष्ट्र के उत्थान और स्वाभिमान का पक्षधर होगा, वही सतोगुणी सज्जन समस्त भारत और भारतवासियों का सच्चा सेवक एवं शुभाकांक्षी सिद्ध होगा। ऐसे लोगों के लिए ही 'कुलं पवित्रं जननी कृतार्था' संस्कृत सुभाषित रूप में बहुविदित है।

मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मरुभूमि में जन्मे मनीषी एवं लोकहितैषी श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया जैसे सर्वसम्मान्य सदाचारी, परोपकारी तथा माँ भारती के पुजारी आदर्श व्यक्ति को लगभग अर्द्ध शताब्दी से जानता हूँ और अहैतुकी अनुकृपा के कारण उन्हें अग्रज तुल्य मानता हूँ। भारतीय साहित्य जगत के सूर्यवत् आचार्य हजारी प्रसादजी द्विवेदी [सूर्य को सहस्र अर्थात् हजार किरणों वाला प्रकाशपुंज (तिमिरारि) कहा जाता है] के साथ परिचय और एक मंच पर उनके पास बैठ कविता पाठ का सुअवसर मुझे छोटीखाटू में आयोजित भव्य समारोह में सन् १९७३ में प्राप्त हुआ था। महामनीषी आचार्य हजारी प्रसादजी द्विवेदी उस ऐतिहासिक समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सपत्नीक पधारे थे। ग्राम्य जीवन और ग्रामीणजनों के साथ बात-बात पर वे सहर्ष उन्मुक्त हास्य की सुधा रश्मियों से विशाल सभा आलोकित कर रहे थे, वह सुखद दृश्य आजीवन याद रहेगा। वाराणसी में अपने घर 'ए-३३, रवीन्द्रपुरी, वाराणसी' से दिनांक ८ नवम्बर १९७३ को हजारी प्रसादजी के हस्ताक्षर युक्त प्रेषित पत्र में ''प्रिय भाई कवियाजी छोटीखाटू में आपसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई'' लिखते हुए मेरी सम्पादित पुस्तकों में 'सोढायण' (राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से सन् १९६६ में प्रकाशित ऐतिहासिक प्रबंध काव्य) की विशेष सराहना की। इस सम्पूर्ण सारस्वत समारोह एवं रात्रि में काव्य संध्या के आयोजनकर्ता लोकप्रिय विद्वान एवं समाजसेवी श्रीमान् जुगलकिशोरजी जैथलिया ही थे। प्रतिवर्ष अपनी मातृभूमि के प्रांगण में भारत के किसी महान साहित्यकार को आमंत्रित कर उनके व्याख्यान से हजारों व्यक्तियों को लाभान्वित एवं अनुप्रेरित करने का लक्ष्य निरन्तर चलाने की दक्षता एवं कर्मठता प्रतिष्ठित धरती-पुत्र जुगलकिशोरजी जैथलिया अद्यावधि निभा रहे हैं। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के प्रति हार्दिक नमन, जो जीवन के चतुर्थ आश्रम में एक निष्काम कर्मयोगी के रूप में अपना विख्यात व्यवसाय एडवोकेट का लाभकारी पद त्याग कर नया कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। पिंगल के एक सवैये की अन्तिम पंक्ति है-

'हुन्नरदार की भेट है हुन्नर, कवि की भेट कवित के दोहा।'

इसी दृष्टि से मैंने दस छप्पय कवित्त और दो दोहे अभिनन्दन के शुभ अवसर पर प्रीतिकर पुष्पहार के रूप में काव्यमय हृदयोद्गार अर्पित कर माननीय जैथलिया जी महोदय के प्रति मंगलकामनाएँ प्रकट की हैं- 'जीवेम शरदः शतम्'।

कर्मयोगी श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया रै प्रति काव्यमय उद्‌गार

दोहा

दो अक्टूबर शुभ दिवस, हित चित हर्ष हिलोर।
जोय महोत्सव जुगल रौ, विद्वत् भाव-विभोर।।

डिंगल शैली में छप्पय छन्द

दीपै मारू देस, धरा उर्वरा सधीरा।
जलम्या मानव जेथ, हाटकां जड़िया हीरा।
संत सती सूरमा, लोक-देवियां लखीजै।
सतब्रत भामाशाह, देस हित सुदत दखीजै।
वैश्य जन पूरै विश्व में, उद्योगों में अग्रणी।
रणभीनै राजस्थान रा, साहित्यकार शिरोमणी।। १।।

दया धरम रौ दीप, जोत परमाथ जागै।
सदा अहिंसा साच, भाव सूं अभाव भागै।
पुरुषारथ रै पांण, रिद्ध सिद्ध आंण बिराजै।
शाकाहारी शुद्ध, छटा उर सुबुद्ध छाजै।
निज जलमभोम भूलै नहीं, रोम-रोम भलपण रमै।
तन संस्कार धरती तणा, जग रै अन्तस में जमै।। २।।

अखां संवत् उगणीस, वरस चौरांणू विक्रम।
शुक्ल पक्ष आसोज, प्रभा त्रयोदशी पराक्रम।
जैथलिया कुल जोय, दिव्य लक्षण शिशु दरस्यौ।
नांनांणै घण नेह, वेह इमरत रस वरस्यौ।
रजथांन जिलै नागोर में, छोटीखाटू ग्राम छै।
पितु-मात कन्हैया-पुष्पश्री, सुपुत्र जुगल सुनाम छै।। ३।।

खांण जिसौ पाखांण, बीज रै जिसी बाजरी।
कीधी जुगलकिशोर, सतत सेवा समाज री।
देशप्रेम दीपंत, सर्व हितकारी सज्जन।
सफल संगठन संग, जुड़ै जैथलिया जन-जन।
छोटी खाटू सूं सुजस छवि, बंग कोलकाता बढ़ी।
लाखीणी प्रतिभा री लता, चहुंकानी सिखरां चढ़ी।। ४।।

कानूनी आयकर, प्रथमतः प्रसिद्धि पाई।
विगत बड़ाबाजार, सुछवि वर्धन्त सवाई।
वाणी रै वरदान, प्रथुल किय ग्रंथ प्रकाशित।
इनाम मिल्या अनेक, हियै में बस्यौ राष्ट्रहित।
भारत री महा विभूतियां, सांप्रत करी सराहना।
कर्मयोगी उपाधि जैथल सुकृत, चित्त तजी निज चाहना।। ५।।

विदित पिचत्तर वरस, सरस संस्था ज्यूं सक्रिय।
चतुर्थ आश्रम चयन, लोक-कल्याण लक्ष्य लिय।
आर्य-धर्म आलोक, विश्व-विख्यात विलक्षण।
गंगा गीता गाय, सनातन पथ संरक्षण।
शोभित श्री बड़ा बाजार सब, स्वागत-मुदित समाज है।
जैथलिया जुगलकिशोर का, अमृत महोत्सव आज है।। ६।।

मंगलकारी प्रमुद, वार मंगल वरतांणौ।
दो अक्टूबर दिवस, जयंती गांधी जांणौ।
जैथल जुगलकिशोर, धन्य चहुंओर बधाई।
वन्दन भाव-विभोर, दिव्य शोभा दरसाई।
आसोज मास सन ईसवी, दो हजार बारह दखां।
अभिनन्दन जन्म सुयोग इम, पुनि आश्विन शुभ बिहुं पखां।। ७।।

सन तेहोतर सुखद, ग्राम खाटू गौरवान्वित।
उत्सव अभूतपूर्व, मनीषी महा आमंत्रित।
चाव श्रवण आचार्य, हजारी प्रसाद हर्षित।
पधार सह पत्नीक, उभय देखत आनंदित।
जन रुचि लख जुगल किशोरजी, रुचिर काव्य-संध्या रखी।
पढ़ शक्तिदान कवि पास में, पूज्य हजारी पारखी।। ८।।

अखां नवम्बर आठ, तिके उन्नीस तेहोतर।
'ए-तेतीस' आवास, आपियौ प्रमुदित उत्तर।
छोटीखाटू छवि, प्रसन्नता अति प्रगटाई।
'सोढायण' सविशेष, अन्य कृति पसंद आई।
'प्रिय भाई कवियाजी' पढ्यौ, रवीन्द्रपुरी वाराणसी।
हस्ताक्षर हजारी प्रसाद रा, वरेण्य छवि हिय में बसी।। ९।।

सन सत्तावन समर, मातृ-भू नमता माथा।
ओजस्वी आलेक, ग्रथित की गौरव गाथा।
श्री 'सेठिया समग्र' सिरै सम्पादन सोहै।
प्रतिमा राण प्रताप, अश्व चेटक आरोहै।
राष्ट्रीय भाव रग-रग रमै, लोक-हितैषी जस लियो।
श्री जुगलकिशोर सतोगुणी, जैथलिया जुग-जुग जियो।। १०।।

दोहा

छोटी खाटू सुयश छवि, अवनि ज्ञात चंहु ओर।
राष्ट्र-हितेषी नर-रतन, जन्म सु जुगलकिशोर।।

पिंगल काव्य-पुष्प
(कवित्त मनहर)

सम्यक् साहित्यकार कृती सत्कार सार,
प्रचुर पुरस्कार प्रज्ञा पुरजोर है।
दिव्य संस्कार दिया लाखों धन्यवाद लिया,
छोटीखाटू में छविया कलेजे की कोर है।
सुधी सहयोगी सों यशस्वी कर्मयोगी बन,
भव्य होगी राष्ट्र-सेवा आनन्द-विभोर है।
आभा चहुँओर चित्त चन्द्र ज्यों चकोर ऐसे,
कीर्तिवन्त जैथलिया जुगलकिशोर है।।

(सोरठा)

जनहित जैथलियाह, सात्विक जुगलकिशोर सो।
किता सुधार क्रियाह, छोटीखाटू में छता।।

सम्पर्क : डॉ. शक्तिदान कविया, (पूर्व अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय)
'कविया-निवास', पोलो-२ जोधपुर-३४२००६ (राजस्थान), मोबाइल : ०८२३९०५५६२५

राष्ट्रीय चैतन्य के प्रखर पुरुषार्थी

✍ डॉ. देव कोठारी

कोई एक व्यक्ति अपने जीवन में इतना सक्रिय हो सकता है, इतनी और ढेर सारी गतिविधियों का केन्द्र-बिन्दु बन सकता है, यह अविश्वसनीय और अकल्पनीय सा लगता है, किन्तु यह सत्य है। स्वनामधन्य माननीय एवं कर्मशील कर्मयोगी श्रद्धेय श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया ऐसे ही एक दुर्लभ व्यक्तित्व के धनी हैं। सचमुच में वे जीवन्त कृतिकार हैं, नरश्चैव नरोत्तम हैं तथा भारतीय अस्मिता से परिपूर्ण एवं समाज के अमूल्य रत्न हैं।

आपने राष्ट्रीय सौकार्य, सांस्कृतिक उत्थान, समाज सेवा, साहित्य एवं राजनीति के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के कीर्तिमान अर्जित किये हैं तथा मध्यमवर्गीय वैश्यकुल में श्री कन्हैयालालजी एवं श्रीमती पुष्पा देवी के परिवार में जन्म धारण कर आपने अपने सम्माननीय कुल का नाम उज्ज्वल किया है।

मेरा आपसे जब सम्पर्क हुआ, सानिध्य, स्नेह सौहार्द्र प्राप्त हुआ, तब से मैंने पाया कि आप अपने असीम आत्मबल से नव चैतन्य से परिपूर्ण कल्याणकारी प्रवृत्तियों को पल्लवित, पुष्पित एवं फलवती कर मां भारती को धन्य करने का पुनीत कार्य कर रहे हैं। भारतीयता के उत्थान का संकल्प धारण कर आपने भारत माता के मस्तक पर कुंकुम तिलक किया है। इस दृष्टि से आप भारत मां के सच्चे एवं लाडले सपूत ही सिद्ध हुए हैं।

बाल्यकाल में जब खेलकूद और मौज-मस्ती से परिपूर्ण समय होता है, उस अवस्था में ही आप हिन्दू समाज के उत्थान का ध्येय धारण कर आठ-नौ वर्ष की अल्पायु में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये और अपने गांव में लगने वाली शाखा में सक्रिय व ऊर्जावान स्वयंसेवक बनकर माँ भारती के चरणों में समर्पित हो गये। स्वयंसेवक बनने के पश्चात् आपने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा तथा सदियों से घने अन्धेरे से आवृत भारतीय आत्मा की छटपटाहट का आपने निकट से साक्षात्कार किया एवं उसकी वेदना को आत्मसात करते हुए कोटि-कोटि भारतवासियों को खुलते कमल लोचनों में राष्ट्रीय चैतन्य के अमर प्रकाशपुंज को उद्भासित करने का मुखर पुरुषार्थ किया है। इस प्रकार आपश्री ने अल्पायु में ही अपनी प्रगाढ़ और

दूरदर्शी जीवन दृष्टि से युग-चेतन के स्वर्णिम आलोक को अनुभव किया है तथा इस अनुभवजन्य परिपक्व बुद्धिबल से भारतीय अमरत्व का बीजवपन करते हुए आपने भावी जीवन के पुण्य पाथेय को प्रशस्त करने के सुकार्य का शुभारंभ किया है और इस प्रकार आपने राष्ट्रीय चैतन्य को अनुप्राणित ही नहीं किया है, अपितु राष्ट्रीय चैतन्य का मार्ग-प्रशस्त भी किया है।

आपके कार्य एवं जीवन शैली को मैंने बहुत निकट से देखा है और पाया है कि आप स्वयं ऋषि तुल्य हैं तथा समाज को समर्पित जीवन पथ के एक पथिक हैं। सर्वे भवन्तु सुखिन: और कृणवन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष करने वाले भारतीय ऋषियों व मनीषियों की महान दार्शनिक थाती को आपने अपने जीवन का अमूल्य आधार बनाया है। मैंने अनुभव किया है कि आप का हृदय देश, काल एवं विदेशी आक्रान्ताओं की कुदृष्टि तथा कुटील नीतियों के फलस्वरूप खण्ड-खण्ड हो रही भारत की अस्मिता को देखकर द्रवित हो उठता है एवं स्वार्थपरत व कलुषित वातावरण से व्यथित होकर भारतीय समाज के उत्थान में आपने अपने आपको समर्पित करने का भीष्म संकल्प ही मानो धारण कर रखा है। यही कारण है कि पचहत्तर वर्ष की वय में भी आप युवा सदृश्य सक्रिय, निष्ठावान, कर्मठ एवं समर्पित योद्धा की भांति कार्यरत हैं। यही कारण है कि आपके व्यक्तित्व में देवोचित वे समस्त गुण विद्यमान हैं जो आसुरी शक्तियों का संहार करने में ब्रह्मास्त्र की तरह सक्षम हैं।

आप एक संवेदनशील राजनेता के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। पश्चिम बंगाल भाजपा के उपाध्यक्ष व कोषाध्यक्ष रहकर आपने राजनीति में भी एक चरित्रवान, निष्ठावान तथा सक्रिय कार्यकर्ता का ही परिचय दिया है। यही कारण है कि आप भाजपा के राज्यस्तरीय व राष्ट्रीय नेतृत्व के विश्वासपात्र सदस्य के रूप में ही सम्मानित हुए हैं।

आप रचनात्मक कार्यों के अद्भुत शिल्पी हैं। आपने अपनी इस क्षमता को विशिष्ट एवं उल्लेखनीय कार्यों से समय-समय पर प्रमाणित भी किया है। आपके इन चमत्कृत कार्यों को कोलकाता प्रवास के दौरान मैंने अपनी आँखों से स्वयं देखा है। आप के इन सद्भावी एवं प्रेरणादायी रचनात्मक कार्यों के फलस्वरूप ही कोलकाता में प्रात: स्मरणीय महाराणा प्रताप की स्मृति में पार्क, एक सड़क का नामकरण तथा चेतकारूढ़ विशालकाय प्रताप की आवक्ष मूर्ति की स्थापना हो सकी है। इसी क्रम में लौहपुरुष सरदार पटेल की भव्य कांस्य मूर्ति का अनावरण भी आपके रचनात्मक कार्यों का प्रेरणादायी उदाहरण बनकर हम सबको अनुप्राणित कर रहा है।

आप विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं के प्रणेता, संस्थापक एवं संरक्षक रह कर उन संस्थाओं को प्राणवान, ऊर्जावान तथा जीवन्त बनाकर उन्हें समाजोपयोगी कार्यों में सन्नद्ध कर रखा है। चाहे राजस्थान की छोटीखाटू हो अथवा पश्चिम बंगाल की कोई संस्था हो,

सब में आप की रचनात्मक दृष्टि साकार हो उठी है। छोटीखाटू स्थित हिन्दी पुस्तकालय, कोलकाता का श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, राजस्थान परिषद्, मारवाड़ी रिलीफ़ सोसाइटी, कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय आदि संस्थाएं आपके रचनात्मक सौकार्य से जीवन्त हो उठी हैं। बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय तो आपका सदैव ऋणी रहेगा क्योंकि आपकी दूरदृष्टि व सक्रियता के फलस्वरूप यह पुस्तकलाय एक उल्लेखनीय, स्तरीय एवं सन्दर्भ पुस्तकालय का स्वरूप ग्रहण कर सका है।

आपने राष्ट्रीय चैतन्य से परिपूर्ण प्रखर पुरुषार्थ को साहित्य समृद्धि में भी मुखर किया है। आप 'विष्णुकान्त शास्त्री: चुनी हुई रचनाएँ' शीर्षक ग्रन्थ दो खण्डों में तथा महाकवि कन्हैयालाल सेठिया का सम्पूर्ण साहित्य चार खण्डों में सम्पादित कर उसे उपयोगी व सर्वसुलभ कराया है। कालजयी सोहनलाल दूगड़ स्मृति ग्रंथ, तुलसीदास चिन्तन-अनुचिन्तन, फिर से बनी अयोध्या योध्या, अमर आग है, विष्णुकान्त शास्त्री अमृत महोत्सव अभिनन्दन ग्रंथ आदि आप की कुशल एवं वन्दनीय साहित्यिक रुचि के परिचायक व सम्पादित ग्रंथ है। आप के अनुभवी सम्पादकत्व में बीसों संग्रहणीय स्मारिकाएँ भी मील का पत्थर बनकर साहित्य गगन को गौरवान्वित कर रही हैं। मैंने अपनी आँखों से स्वयं साक्षात्कार किया है कि आपकी साहित्यिक रुचि इन मूल्यवान प्रकाशनों तक ही सीमित नहीं रही है, अपितु आपके मार्गदर्शन व दिशा-निर्देशन में डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान, स्वामी विवेकानन्द सेवा सम्मान एवं एकात्म मानववाद के प्रणेता तथा राष्ट्रीय पुरोधा पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य पुरस्कार का शुभारंभ आपके पुण्यभावी पुरुषार्थ के ही परिचायक हैं। इस प्रकार आप साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति के सिद्ध साधक बनकर समादृत हुए हैं।

आपके निस्वार्थ सुकार्यों के देखकर हम पाते हैं कि आप सर्वांगीण चतुर्दिक व्यक्तित्व के धनी हैं। पचहत्तर वर्ष की इस वय में भी आप १२ से १४ घंटे तक एक युवा की भाँति कार्य करते हैं। अनवरत परिश्रम, सतत साधना एवं समर्पित निष्ठा आपके अपराजित जीवन के मूलमंत्र हैं। सहज सम्भाव्य नपी तुली भाषा में वार्ता करना, कहना सो करना, पचने जैसी बात को पचाना, निभाने जैसे काम को निभाना, खुली व खरी बात को अत्यन्त विनम्रता के साथ कहना आपके व्यक्तित्व के अनुकरणीय गुण हैं। बचपन से ही आपका जीवन सादा एवं स्वावलम्बी रहा है। सादा जीवन और उच्च विचार आपके जीवन का मूलमंत्र है। आपकी सीधी-सादी वेशभूषा, सामान्य किन्तु सात्विक खान-पान, मिलनसार व्यक्तित्व, नियमित जीवनचर्या, समय की पाबन्दी आपके दैनिक गुर हैं। आपके जीवन की यह थाती हिन्दू संस्कृति की पहचान बन कर महक उठी है। इस प्रकार आप सादगी व सरलता के पुजारी हैं। बहुआयामी,

सेवाभावी, राष्ट्रीय सौकार्य से परिपूर्ण एवं भारतीय अस्मिता के उन्नायक श्री जैथलियाजी को विभिन्न प्रकार के सम्मान, सम्बोधन, अभिनन्दन आदि से अलंकृत कर उनके सत्कार्यों को समादृत किया गया है। इस प्रकार आप कर्त्तव्यपरायणता की जीवन्त मूर्ति हैं। सत्यान्वेषी साधक हैं, नैतिकता के संस्थापक हैं, सरल हृदय व उदारचेता मनीषी हैं।

कार्य की उपयोगिता, गुणवत्ता एवं सामयिकता की दृष्टि एवं कसौटी पर आपकी कर्तव्यसाधना प्रेरणास्पद है। इतना सब कुछ होते हुए भी आपको अहंकार छू तक नहीं गया है। विनम्र कार्यशैली तथा सबको साथ लेकर चलने के नैसर्गिक गुणों के फलस्वरूप आप सबके चहेते हैं। मधुरवाणी, सरस व दूरदर्शी विचार एवं अपनत्व की भावना से परिपूर्ण आपके व्यक्तित्व की मकरंद से सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज सुवासित है। इस तरह लोकमानस का हृदय जीत लेने की आप में अद्भुत क्षमता है। सचमुच में आप देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में अपनों के मध्य आलोकित हैं।

आपके इस उदारचेता, सेवाभावी, कर्मयोगी एवं प्रखर पुरुषार्थ से पूर्ण व्यक्तित्व को देखकर हम पाते हैं कि आपका सम्पूर्ण अमृतमय जीवन राष्ट्र को समर्पित है। राष्ट्रीय सौकार्य के यशस्वी नायक श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया हम सबके लिये वंदनीय है, अभिनन्दनीय है, अनुकरणीय है। आपका यह प्रखर पुरुषार्थ राष्ट्रीय चैतन्य की महक को विस्तीर्ण करने वाला तथा गंगा-यमुना की भांति चैतन्य को प्रवाहित करने वाला मंगलमय अमृत है जो आज की युवापीढ़ी के लिये वरदान बनकर दिशाबोधक हो गया है तथा नवीन एवं सशक्त भारत के निर्माण में पुण्य व पवित्र पाथेय बनकर मील का पत्थर प्रमाणित हो रहा है। राष्ट्रीय चैतन्य से अनुप्राणित तथा प्रखर पुरुषार्थी ऐसे महामनीषी का अमृत महोत्सव अभिनन्दन करने का अवसर प्राप्त होना हम सबके लिये सौभाग्य एवं आह्लादित करने वाले स्मरणीय व सुखद सुअवसर के रूप में सुवासित हो रहा है। वस्तुतः हम धन्य हैं। ●

सम्पर्क : १३, मेहता जी की खिड़की, मालदास मार्ग, उदयपुर-३१३००१
मोबाइल : ०९४१४१-६३१९६, ०९३५१३-६६६४८

जुगलकिशोरजी जैथलिया : एक प्रेरक व्यक्तित्व

✍ आनन्द मिश्र 'अभय'
सम्पादक 'राष्ट्रधर्म' (मासिक)

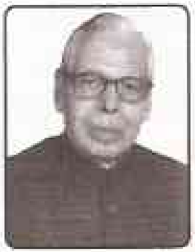

थार के बालुका विस्तार की अपनी महिमा है कि यहाँ के कण-कण का इतिहास विश्व-इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों का अधिकारी है। बप्पा रावल से लेकर आज तक थार का यह विस्तार राजपूताना से राजस्थान बन जाने तक का इतिहास न केवल त्याग, बलिदान, शौर्य-पराक्रम का लेखा-जोखा है, इसमें अर्बुदाचल से लेकर अरावली की पर्वत शृंखला तक ज्ञान, ध्यान, तप, साधना, साहित्य, स्थापत्य, कला आदि जीवन के अंग-प्रत्यंग का वह वैभव, वह सौष्ठव, वह पावित्र, वह दिव्यता, भव्यता और शुचिता है कि देवता भी उससे ईर्ष्या करने लगें। इस्लाम की तलवार की धार का पानी यदि किसी ने पानी-पानी कर डालने का चमत्कार कर दिखाया, तो वह है यही राजस्थान, जहाँ बप्पा रावल, खुम्माण, कुंभा, साँगा, प्रताप और राजसिंह ने महमूद गजनवी, गोरी, खिलजी, तुगलक से लेकर मुगल सत्ता तक को अन्तत: उच्छिद करके ही दम लिया। महारानी पद्मिनी, कर्मवती, किरणदेवी और पन्ना धाय जैसे नारी-रत्नों और जैन-मुनियों की इच्छा-साधना, भामाशाह जैसी दानवीरता के उदाहरण कहीं मिलते हैं विश्व में। महामहोपाध्याय डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा से लेकर राजनेता शंकर भट्ट जैसे इतिहासकारों की लेखनी ने इस सत्य को उजागर करने में कहीं कोई कसर नहीं छोड़ी है। बारहठ जैसे वंश के चारण जहाँ ओज-तेज को स्वर देकर साहित्य को भी समृद्ध और दिग्बोधक बनाते हैं, वहीं यहाँ की मातृशक्ति की भी विश्व में तुलना मिलना असम्भवप्राय है। कृषि, उद्योग, वाणिज्य आदि कौन-सा क्षेत्र ऐसा है, जिसमें अग्रगण्य न हों, यहाँ के निवासी।

राजस्थान के लोगों की देश भर में एक ही पहचान है, एक ही संज्ञा है - मारवाड़ी। इस मारवाड़ी-समाज की सर्वतोमुखी प्रतिभा, उद्यमिता और समाजसेवा के क्षेत्र में धार्मिकता के विभिन्न आयामों के पुञ्जीभूत रूपाकार में दर्शन करने हों, तो एक बार कोलकाता जाना

अपरिहार्य होगा। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, राजस्थान परिषद्, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी जैसी संस्थाओं का निकट से अवलोकन करना होगा और तब यह देखकर विस्मय होगा कि यहां तो राजस्थान कि विविधमार्गी मनीषा प्रत्यक्षीभूत है। बिड़लाओं ने जिस प्रकार देश के विभिन्न तीर्थस्थलों में भव्य मन्दिर और धर्मशालाओं की स्थापना कर उनकी आदर्श व्यवस्था की है; जयपुरिया धर्मशालाओं की भी उसी प्रकार की शृंखला है। गीताप्रेस गोरखपुर जैसा संस्थान भी उसी मारवाड़ी समाज की दिव्य देन है, जिसने अरुणाचल, त्रिपुरा, मणिपुर जैसे सीमान्त प्रदेशों के अन्तस्थ सुदूर कोनों की बस्तियों तक जीवनोपयोगी सभी वस्तुओं की आपूर्ति की सुचारू व्यवस्था शुद्धतापूर्वक न्यूनतम लाभ के साथ स्थापित करने की कठिन यात्रा पीढ़ियों से कर रखी है। मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित धर्मार्थ संस्थाओं की अपनी ख्याति रही है। ऐसे धर्माचारी समाज के विरुद्ध कम्यूनिस्टों, सोशलिस्टों, स्वार्थी कांग्रेसियों ने कितना भी अप्रचार क्यों न किया हो; पर यह समाज, वर्ग अपने पथ से रंचमात्र विचलित नहीं हुआ।

ऐसे उद्योगी, उद्यमी, धर्मपरायण, समाजसेवा के हर क्षेत्र में अग्रणी समाजबन्धुओं से जब पहली बार सम्पर्क आया, तो उनकी आत्मीयता ने अभिभूत कर दिया। यह सुअवसर बन्धुवर विजय कुमार जी (तब राष्ट्रधर्म के सम्पादन सहयोगी) के साथ श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में कोलकाता जाने पर मिला। कोलकाता में आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जिस प्रबुद्ध-मण्डल के प्रेरणा-स्रोत होते थे, उसके शीर्षपुरुष श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी से तभी निकट का परिचय हुआ, जो इसी २ अक्टूबर, २०१२ को अपने यशस्वी जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। जनपद नागौर (राजस्थान) के छोटीखाटू ग्राम में जन्मे जैथलिया जी किस प्रकार अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा अपने पैतृक ग्राम और डीडवाना में पूरी कर कोलकाता पहुँचे और स्वार्जन द्वारा आगे की शिक्षा पूर्ण कर एक सफल आयकर परामर्शदाता (अधिवक्ता) के रूप में कोलकाता जैसे महानगर में प्रतिष्ठित हुए, इसकी कहानी उनकी लगन, सूझ-बूझ, परिश्रमशीलता और व्यवहार में निश्छल आत्मीयता की कहानी है। व्यवसायनिष्ठा के साथ बहुआयामी समाजसेवा के क्षेत्र में उनकी सत्यनिष्ठ शालीन व्यवहारनिष्ठा का कम योगदान नहीं रहा है।

बन्धुवर विजय जी का सम्पर्क जैथलिया जी से पहले के एक कार्यक्रम में हो चुका था और तभी श्री पुरुषोत्तमदास चितलांगिया जी (अब स्वर्गवासी) ने अपने स्वर्गीय पिता श्री राधेश्याम चितलांगिया की स्मृति में उनके नाम से एक अ.भा.कहानी प्रतियोगिता राष्ट्रधर्म (मासिक) के माध्यम से आयोजित कराने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की. ऐसे ही राष्ट्रधर्म के यशस्वी सम्पादक रहे पं. वचनेश त्रिपाठी की स्मृति में एक व्याख्यानमाला का शुभारम्भ कराने

के लिए जुगलजी ने अपने मित्र श्री श्री प्रकाश बेताला जी (भुवनेश्वर) को प्रेरित किया और पं.बचनेश त्रिपाठी स्मृति व्याख्यानमाला का श्री प्रकाश बेताला जी के स्वर्गीय पिता श्री मिलापचन्द बेताला की स्मृति में श्री गणेश हुआ। इसी व्याख्यानमाला का एक आयोजन जब छोटीखाटू में श्रद्धेय सुदर्शन जी (निवर्तमान सरसंघचालक, रा.स्व.संघ) के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, तो राजस्थान की वीरप्रसू बालुकामयी पवित्रभूमि के दर्शन कर धन्यता की जो अनुभूति हुई, वह शब्द-सामर्थ्य के बाहर है। उस अवसर पर सालासर बालाजी (हनुमान जी) के दर्शन के साथ ही जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी तपोनिधि महाप्रज्ञ जी जैसे दिव्य सन्त के दर्शन भी उनके दूरस्थ आश्रम में आकर करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। और विधि-विधान भी कितना विलक्षण, उसके दो-तीन सप्ताह बाद ही उनके कैवल्यप्राप्ति का समाचार आता है। छोटीखाटू कहने को तो गाँव ठहरा; पर प्रथम दृष्टि में ही वह सभी नगरीय सुविधाओं से सम्पन्न सुव्यवस्थित कस्बा लगा। विशेष बात यह कि वहाँ की गलियाँ रेतभरी; पर वह रेत जूता-चप्पल पहने पैरों को कोई कष्ट नहीं देती। वहाँ मयूरों के झुण्ड के झुण्ड सड़कों, छतों और वृक्षों पर केका ध्वनि करते जैसा आनन्ददायक दृश्य उपस्थित करते, वह अवर्णनीय है। तेरापन्थी श्वेताम्बर जैन बन्धुओं की अहिंसामूलक पवित्रता में रमे इन मयूरों के निद्रवन्द्रव विचरण करते समूह छोटीखाटू को जहाँ शोभामयी मयूरनगरी अभिधान प्रदान करते हैं, वहीं खेजड़ी के वृक्ष और करील की झाड़ियाँ पर्याप्त संख्या में देखने को मिलीं। जैथलिया जी ने बताया कि महाभारत का क्षेमकारी वृक्ष ही खेजड़ी है। यह राजस्थान का संरक्षित वृक्ष है। जैथलियाजी एवं बेताला जी का अपने गृहग्राम से कितना प्रगाढ़ लगाव है, यह वहाँ स्थित जैथलिया जी के घर की भव्यता से स्वत: सिद्ध है। वर्ष में कम से कम एक-दो बार उनका वहाँ जाना और विभिन्न पारिवारिक, सामाजिक और साहित्यिक कार्यक्रमों में सहभागिता कर अपने निदेशक में सम्पन्न कराने के क्रम में विक्षेप नहीं होता। जैसे अपने पिता के वे इकलौते पुत्र हैं, वैसे ही उनके भी इकलौता पुत्र है। स्थायी आवास कोलकाता में, तो इस घर में कौन रहे? श्री कपूरचन्द जैन इस घर के अभिरक्षक हैं। श्रद्धेय सुदर्शन जी इसी घर में ठहरे थे। देश का कोई अन्य क्षेत्र होता, तो जैथलिया जी अपने इस घर में बेघर हो गये होते; पर नहीं। उनके मित्रों की टोली अद्भुत है। धार्मिकता में भी एवं आचरण की शुचिता में। जैथलिया जी ने वहाँ अपने एक अभिन्न मित्र से परिचय कराया। ऐसी सादगी कि अरबपति होते हुए भी पैदल घूमते, जबकि उन्हीं के टैवेरा गाड़ी से हमलोग सालासर से महाप्रज्ञ जी के आश्रम आदि घूमे फिरे। ग्राम में श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय को देखकर किसी भी साहित्यसेवी का मन प्रमुदित हुए बिना न रहेगा। द्वितलीय भव्य भवन, साफ-सुथरे रख-रखाव के साथ दुर्लभ ग्रन्थों, पुस्तकों का संचयन वह भी हजारों की संख्या में, पुस्तकालयकर्मियों की प्रतिष्ठित वृत्ति का परिचायक है।

कोलकाता, जो कभी अंग्रेजी काल में भारत की राजधानी रहा और फिर औद्योगिक, वाणिज्यिक राजधानी माना जाता रहा, वह साहित्यिक गतिविधियों, साहित्यकारों, साहित्य संरक्षकों ही नहीं, महान् देशभक्तों का भी केन्द्र रहा। कोलकाता का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा, जिसमें जैथलिया जी लब्धप्रतिष्ठ न हों, प्रेरणा-केन्द्र न हों। श्री बड़ाबजार कुमारसभा पुस्तकालय राष्ट्रीय स्तर के विवेकानन्द सेवा सम्मान तथा डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान दो दशक से अधिक से प्रतिवर्ष नि:स्पृह समाजसेवी एवं साहित्यकार को सादर अर्पित करता है। साहित्य, प्रकाशन आदि प्राय: सभी क्षेत्रों को सतत गति प्रदान करनेवाले आप्तपुरुष जैथलिया जी अपनी आयु का शतक यथावत् स्वस्थ सक्रिय रूप से पूर्ण करें, परमप्रभु यह प्रार्थना स्वीकार कर अपना प्रसाद हम सभी को अवश्य प्रदान करेंगे, ऐसे अपना विश्वास है। ●

सम्पर्क : संस्कृति भवन, राजेन्द्रनगर, लखनऊ-२२६००४ (उत्तर प्रदेश), मो.: ०९४५०९३२२६५

कर्मठ व्यक्तित्व के धनी राष्ट्रसेवी श्री जैथलिया

✍ डॉ. पी.एल. चतुर्वेदी
पूर्व कुलपति

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि आगामी २ अक्टूबर को मेरे अनन्य स्नेही मित्र श्री जुगल किशोर जैथलिया अपने जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं, उनके अमृत महोत्सव का आयोजन श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता की प्रेरणा से गठित अमृत महोत्सव समिति के तत्वावधान में आयोजित हो रहा है। समिति द्वारा इस अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ भी प्रकाशित होगा। सार्वजनिक जीवन में सक्रिय व्यक्तियों के जन्म दिवस पर ऐसे प्रकाशन महत्वपूर्ण हैं। इससे उनके व्यक्तित्व, कृतित्व, सार्वजनिक एवं साहित्यिक योगदान तथा समाजसेवा के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों का प्रकाशन निश्चित रूप से प्रेरणास्पद होगा।

मेरा उनसे परिचय लगभग ५० वर्ष पूर्व हुआ जब मैं नागौर जिले में डीडवाना के राजकीय महाविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत था। श्री जुगलकिशोर जी निकट के छोटीखाटू गाँव से थे और कोलकाता में कार्यरत थे। मेरा सम्बंध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से था और मेरा उसके कार्य हेतु जिला-कार्यवाह के नाते छोटीखाटू की शाखा भी जाना होता था। छोटीखाटू एवं डीडवाना के स्वयंसेवक श्री जुगलकिशोर जी के वहाँ सक्रिय रूप से कार्य का बड़े श्रद्धाभाव से वर्णन करते थे। कलकत्ता से अपने गाँव आने पर वे डीडवाना भी अवश्य आते थे। प्रथम भेंट में ही मैंने उनकी संघ कार्य के प्रति अतीव निष्ठा का अनुभव किया और धीरे-धीरे हर बार के प्रवास में उनके सरल-स्नेहिल व्यवहार एवं श्रेष्ठ कार्यकर्ता के नाते बड़े ही आत्मीय संबंध बन गये। डीडवाना के ही एक और प्रवासी राजस्थानी श्री भंवरलालजी मल्लावत के सम्पर्क से यह संबंध और दृढ़ होता गया।

१९८० ई. के पश्चात मुझे संघ के एक अन्य संगठन भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय दायित्व के कारण कलकत्ता प्रवास के भी अनेक अवसर आते रहे। मेरे और भी कुछ आनुषांगिक संगठनों के संगठनात्मक दायित्व के कारण यह प्रवास बढ़ते रहे। १९९५ से १९९९ तक महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलपति के नाते कलकत्ता जाने के

अनेक अवसर हुए। प्रत्येक प्रवास में श्री जैथलिया जी से भेंट होती ही थी और इस प्रकार कलकत्ता के सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनैतिक गतिविधियों में उनकी अत्यधिक सक्रियता ने उन्हें एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में मुझे प्रभावित किया।

संघ कार्य और राजनैतिक दायित्व के साथ उनकी सामाजिक और साहित्यिक गतिविधियों को देखने का अवसर आया और तभी भी बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी भी कई बार जाना हुआ, जिसे मैंने एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय एवं वाचनालय व उसके तत्त्वावधान में आयोजित गतिविधियों से उनकी साहित्यिक अभिरुचि के साथ एक कुशल संगठनकर्ता का रूप देखा। गत कई दशकों में इस पुस्तकालय द्वारा अनेक साहित्यिक, सामाजिक प्रकृति के विशाल कार्यक्रम नियमित रूप से उनके निर्देशन में वहाँ की सक्रिय टोली द्वारा आयोजित होते रहे हैं, और प्रत्येक कार्यक्रम में देश के मूर्धन्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया। उनके आत्मीयतापूर्ण स्नेहित आग्रह के कारण मुझे भी उनमें से अनेक वृहद कार्यक्रमों में भाग लेने का सौभाग्य मिला है। विभिन्न विधाओं के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों की उपस्थिति उनकी प्रभावी संपर्क क्षमता का परिचय देती है। इन कायक्रमों के अवसर पर देश के अनेक महापुरुषों के नाम पर विशिष्ट पुरस्कारों का आयोजन प्रेरणास्पद प्रसंग रहा है। इन अवसरों पर लोकार्पित अनेक ग्रन्थ देश और समाज को दिशा देने वाले होने के कारण, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय अंक है, जिनसे अतीव प्रेरणा मिलती है।

अपनी कार्यस्थली कलकत्ता के साथ अपने जन्मस्थान छोटीखाटू जैसे छोटे गांव में १९५८ से कार्यरत हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना, उसे साहित्यिक प्रकाशनों से समृद्ध करना, दैनन्दिन गतिविधियों का संचालन और प्रतिवर्ष उच्चस्तरीय वार्षिक सम्मेलन का आयोजन अपने जन्मस्थान के प्रति उनका लगाव इंगित करता है। इन सम्मेलनों में भी वे हर वर्ष देश के किसी न किसी शीर्षस्थ महापुरुष को आमंत्रित कर उस स्थान पर अति भव्य कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। मुझे भी ऐसे अनेक सम्मेलनों में उपस्थित होने का अवसर उनके आग्रह से मिला है।

श्री जैथलिया जी के व्यक्तित्व में आत्मीयतापूर्ण नि:स्वार्थता, सेवा के साथ निरभिमानता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। समाज सेवा करते हुए वे हर मोर्चे पर संघर्ष के लिए तत्पर रहे। राष्ट्रीय मूल्यों के लिये अपनी प्रतिबद्धता उन्होंने जीवनपर्यन्त बनाये रखी है और इसके लिए निरंकुश शासन की नीतियों के विरुद्ध सभी संघर्षों में वे सदैव अग्रणी रहे हैं चाहे इसमें उन्हें कितने भी शारीरिक एवं पारिवारिक कष्ट सहने पड़े हों। भारतीय संस्कृति की आश्रम व्यवस्था के अनुसार ६५ वर्ष की आयु में अपने प्रोफेशनल दायित्वों से मुक्त होकर इस आयु वर्ग के लोगों के समक्ष अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया है। प्रवासी राजस्थानी बंधुओं को विभिन्न

गतिविधियों की ओर उन्मुख करने से वे प्रशंसा के पात्र बने हैं। राजनैतिक क्षेत्र में भी अपने समर्पित व्यक्तित्व से राष्ट्रवादी शक्तियों को बल प्रदान किया है। मैंने तो स्वयं अनेक कार्यक्रमों में भाग लेते हुए कलकत्ता के जनजीवन में उनकी लोकप्रियता अनुभव की है। राजस्थान के अनेक सामाजिक, राजनैतिक कार्यों में उनके संपर्कों के माध्यम से कलकत्ता के प्रवासी राजस्थानियों का विशेष सहयोग मिलता रहा है।

श्री जैथलिया जी ने अपने संस्कार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्राप्त कर उनका प्रगटीकरण विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हुए श्रेष्ठता से किया है। ऐसे राष्ट्रभक्त, समाजसेवी, राजनैतिक नेतृत्व देने वाले, साहित्य सेवक, संगठनकर्ता व्यक्ति के प्रेरणास्पद जीवन से इस कार्यक्रम और इस ग्रन्थ के माध्यम से सभी को निश्चित प्रेरणा मिलेगी, जिससे वे भी समर्पित भाव से राष्ट्र और समाज की सेवा का संकल्प ले सकें, यही अपेक्षा है। मैं उनके स्वस्थ जीवन और दीर्घायु की कामना करता हूँ। ईश्वर उन्हें कर्मक्षेत्र में और भी अधिक सफलतायें दे जिससे वे आनेवाली पीढ़ी को राष्ट्रभक्ति की दिशा में जोड़ने में लगे रहें। ●

सम्पर्क : ३/३०, जवाहरनगर, जयपुर-३०२००४ (राजस्थान), मो.: ०९४१४०५०६६९

सजीव सहृदयता का नाम है श्री जैथलिया

✍ जय कुमार रुसवा
कवि

जीवन-यात्रा में हमारी मुलाकात असंख्य लोगों से होती है। न जाने कितने ही लोगों से मिलना-बिछुड़ना होता है। इस मेल-मुलाकात के क्रम में बहुत कम ऐसे लोग होते हैं जो स्मृति का हिस्सा बनते हैं, उनसे भी बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो हृदय पटल पर अपना नाम अंकित कर पाते हैं, मगर सम्पूर्ण जीवन-यात्रा में मात्र दो-चार ही ऐसे व्यक्तित्व मिलते हैं जिनके प्रति अन्तर्मन में आदर और श्रद्धा की भावना स्वतः मुखर हो उठती है। उनकी सदाशयता, सहजता, विनम्रता और प्रफुल्लता मन को एक ऐसी सुखद आत्मिक अनुभूति देती हैं जिसके वशीभूत उनसे मिलनेवाला सहर्ष नत मस्तक होने को उद्यत हो उठता है। उनका सानिध्य प्राप्त करने को लालायित रहता है। मुझे मेरी जीवन- यात्रा में मिले श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया एक ऐसे व्यक्तित्व ही हैं। उनसे मुझे जो अपनत्व, जो स्नेह मिला है उसको व्यक्त करने में मेरा शब्द सामर्थ्य बहुत बौना प्रतीत हो रहा है। अपने चिन्तन के पखेरू को भावना के उस क्षितिज तक उड़ान भरने में असमर्थ पा रहा हूँ।

उनसे मेरी पहली मुलाकात कब, कहाँ और कैसे हुई यह तो मुझे स्मरण नहीं और ना ही कभी मुझे इस बात को स्मरण करने की कोई आवश्यकता प्रतीत हुई। मैं जैथलिया जी से जब-जब भी मिला हूँ तब-तब मुझे यही बोध हुआ है कि मैं उनके परिवार का ही हिस्सा हूँ और वे एक आदर्श अभिभावक। मेरे अनेक कार्यक्रमों में जैथलियाजी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे हैं, मैं भी श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय और राजस्थान परिषद के अनेक कार्यक्रमों में उपस्थित रहा हूँ, हर जगह उन्होंने मुझे अपने स्नेह व प्रेम की गंगा-यमुना में अवगाहन करवाया है। मेरी अच्छी बात की खुले मन से सराहना की है तो मेरी त्रुटियों पर मेरा उचित मार्गदर्शन किया है। मैं इस बात से गर्वित भी हूँ कि मेरी साहित्य साधना में जैथलियाजी जैसे सुहृद व्यक्ति का मुझे सानिध्य प्राप्त है।

जैथलियाजी के सान्निध्य में गुजरे बहुत सारे क्षण ऐसे भी हैं जो अविस्मरणीय हैं। ऊहापोह इस बात की है कि क्या-क्या लिखूँ ? विशेष रूप से मैं एक प्रसंग अवश्य उद्धृत

करना चाहूँगा। एक दिन मुझे गाँव की बहुत याद आ रही थी, कल्पना में डूबा-डूबा एक गीत लिख गया जिसकी पृष्ठभूमि यही है कि प्रवास में राजस्थान इतना क्यूँ याद आता है। वहाँ ऐसा क्या है? वह गीत मैंने पिलानी से प्रकाशित होनेवाली वार्षिक पत्रिका 'बिणजारो' में प्रकाशनार्थ भेज दिया। प्रकाशनोपरान्त उसकी प्रति जब जैथलियाजी तक पहुंची तो वे बिणजारो का वह अंक लिए मेरे घर आ गए। मैं उस समय गंभीर रूप से ज्वर ग्रस्त था। मन में यही विचार आया कि इनको मेरी अस्वस्थता की सूचना किसी से मिली होगी तो स्नेहवश हाल पूछने आ गये हैं। मैं उनका अभिवादन कर बैठने लगा तो उन्होंने कहा लेटे रहो।

कुछ देर स्वास्थ्य सम्बन्धी बातचीत करने के पश्चात उन्होंने 'बिणजारो' का अंक सामने करते हुए कहा- इस अंक में राजस्थान की गरिमा को व्यक्त करती आपकी एक रचना छपी है। पढ़कर मन गद्‌गद् हो गया। इस रचना के लिए बधाई देने चला आया।

मैंने विनीत भाव से कहा- आदरणीय ! आपके इस कथन ने सारा श्रम सार्थक कर दिया। सुनकर जैथलियाजी ने सहजता से कहा- यह रचना श्रम नहीं, साधना का प्रतिफल है। इसे पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। मैं उसी प्रसन्नता को व्यक्त करते हुए पुरस्कार स्वरूप या आशीर्वाद स्वरूप पाँच सौ रुपये देना चाहता हूँ, ग्रहण कर लेंगे तो मुझे और भी प्रसन्नता होगी। मैंने उनका आग्रह (आदेश भी कह सकते हैं) मानते हुए वे पाँच सौ रुपये ले लिए तो सच उनके अन्तर की खुशी उनके चेहरे पर मुखर हो उठी। उसी प्रसन्नता भरे शब्दों में वे बोले- मंचों पर खूब नौटंकी करते हो, पैसे उसी से मिलते हैं, गृहस्थी चलाने के लिए पैसे बहुत जरूरी हैं, जनता जैसा चाहती है वैसा ही लिखना जरूरी भी है पर कभी-कभी ऐसी रचनाएं भी लिखा करो, इनमें आपका सच्चा कवि-पक्ष झलकता है।

जैथलियाजी स्वयं बड़े सिद्धहस्त रचनाकार हैं, साहित्य मर्मज्ञ हैं। मैंने उनके कई प्रभावशाली वक्तव्य सुने हैं। मन को आन्दोलित करने वाले आलेख पढ़े हैं। मेरी रचना पर जब मुझे घर बैठे उनके द्वारा ऐसा अभिमत, ऐसा स्नेहसिक्त पुरस्कार और मार्गदर्शन मिला तो वह किसी राशि की गणना का मोहताज नहीं था, वह अनमोल था। वह इसलिए अनमोल था क्यूँकि उसमें अपनत्व की मिठास थी। मुझे यही प्रतीत हो रहा था जैसे मुझे 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार ही मिल गया। आदर्श अभिभावक की यही पहचान होती है कि वह अकुंठित रह कर अपने परिवार और समाज की नवोदित प्रतिभाओं का उचित मार्गदर्शन करे, उनको प्रोत्साहित करे, उनको आधार प्रदान करे। उनकी उपलब्धियों को सराहे और उनकी त्रुटियों पर सुधार के लाभ और विकल्प बताए। ये समस्त गुण श्री जैथलियाजी में विद्यमान हैं, इसीलिए मैं सदैव उनके सम्मुख सहर्ष नत हो जाता हूँ।

प्रकरण चाहे राजनीति में सक्रिय रही परिष्कृत छवि का हो, चाहे साहित्य सृजन का हो, चाहे सामाजिक सेवा का श्री जैथलियाजी का व्यक्तित्व हर जगह समर्पित भावनाओं से संलग्न दृष्टिगोचर होता है। कोई भी हौड़, कुंठा, लालसा अथवा प्रलोभन इनकी सहजता, सरलता और विनम्रता को स्पर्श तक नहीं कर पाए हैं। मैं गौरवपूर्ण शब्दों में यही कहूँगा कि सजीव सहृदयता का नाम है श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय जैथलिया जी की जीवन यात्रा के पचहत्तरवें पड़ाव पर उनकी साधना और सेवाओं की अभ्यर्थना में भव्य अमृत महोत्सव का आयोजन कर रहा है, इस अवसर पर श्री जैथलियाजी की व्यक्तित्व-कृतित्व पर एक वृहद् अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित कर रहा है। इस कार्य के लिए मैं पुस्तकालय को साधुवाद देता हूँ। यह ग्रंथ आगत पीढ़ी के लिए प्रकाश-स्तम्भ प्रमाणित होगा और श्री जैथलियाजी के दीर्घायु होने तथा आरोग्य रहने की कामना करते हुए उनको अपनी आन्तरिक प्रणति निवेदित करता हूँ। ●

सम्पर्क : ६६, पाथुरिया घाट स्ट्रीट, कोलकाता-६, मो.: ९४३३२७२७०५

कार्यकर्त्ताओं के निर्माता, मार्गदर्शक एवं प्रेरणा पुरुष हैं श्री जुगलजी

✍ श्रीराम सोनी

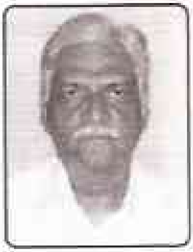

कुछ व्यक्ति इतने श्रद्धास्पद होते हैं कि उनके स्मरण मात्र से सहज रूप से शीश नमित हो जाता है, मन पावन संस्कारों से प्रशस्त होने लगता है। पता नहीं पारस पत्थर का अस्तित्व है या नहीं लेकिन श्रद्धेय जुगलजी समाज की साक्षात् पारसमणि हैं, जिनका सान्निध्य हमें संस्कारित, सुरभित और सक्रिय बना देता है। सहज गरिमामयी आकृति, स्नेहिल प्रकृति तथा व्यवहार में अकृत्रिमता उनके ऐसे गुण हैं जो अपरिचित को भी उनकी ओर आकृष्ट करते हैं। उनके सम्पर्क में जो भी आता है उसे वे यह अनुभव होने ही नहीं देते कि वह अपरिचित हैं।

ध्येय व लक्ष्य प्राप्ति हेतु सामाजिक कार्य में समय देना प्राथमिकता

बात १९६८ ई. की है जब मैं राजस्थान से सर्वप्रथम कलकत्ता आया तब श्री रामगोपाल जी सूंघा ने मुझे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की महावीर सायं शाखा में भेजा। श्री जुगलजी ने उस समय संघ के सायं विभाग की शाखाओं का दायित्व ले रखा था। पेशे से वकील (आयकर अधिवक्ता) ३१ वर्ष के युवा जुगलजी जिन्हें अधिकतर सायं के समय में ही अपने कार्यालय में अपने क्लाइन्ट्स से मिलना पड़ता है - संघ की शाखा में हमारे जैसे १८-२० वर्ष के तरुण ही नहीं बल्कि ७-८ वर्ष के बालक स्वयंसेवकों के साथ अपना समय देकर उन्हें हनुमानजी व अन्य महापुरुषों के बारे में बताये एवं माँ भारती की वन्दना का पाठ सिखाये - यह मेरे लिये सुखद आश्चर्य की बात थी।

तेजोमय मुख मुद्रा, व्यवहार में शालीनता, वार्तालाप में बौद्धिकता, व्यक्तित्व में ज्ञान योग और कर्मयोग का समन्वय और सुगठित देह के धनी श्री जुगलजी का ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा कृतित्व देखकर हम सभी स्वयंसेवक अत्यधिक प्रभावित होते थे।

आज के ३०-३२ वर्ष के नौजवान स्वयंसेवकों को व अन्य युवाओं को मैं अनेक

बार यह उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ कि आपकी आयु में भी श्री जुगलजी सैकड़ों कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शक व अभिभावक के दायित्व का निर्वाह करते थे। उस समय में उनके द्वारा तैयार किए गए अनेक अनगिनत समर्पित कार्यकर्ताओं की मालिका उनके द्वारा प्रदत्त राष्ट्रभक्ति की मशाल को जीवंत रखने हेतु वचनबद्ध हैं।

रहना है तो सहना है- जीना है तो सीना है

आज के युग में शिक्षक व छात्रों के, माता-पिता व बच्चों के सम्बन्धों में वह प्राचीन मधुरता अलभ्य हो चली है, आपने सच्चे आदर्शों में आचार्य बनकर अनकहे ही अनेक कार्यकर्ताओं के जीवन में उच्चादर्शों को ढालते हुये न केवल कार्यकर्त्ताओं के परिवार का वातावरण पवित्र बनाया है बल्कि इस सुगन्ध से पाश्चात्य संस्कृति से ग्रस्त नौजवान आधुनिक पीढ़ी, जो माँ व मातृभूमि के मोह से विमुख होकर उच्छृंखल आचरण कर रही है, को भी व्यष्टि व समष्टि का ठीक से समायोजन करवाकर श्रेष्ठ नागरिक बनने का पाठ सिखाया है। निराश कार्यकर्त्ताओं को भी- 'रहना है-तो सहना है, जीना है-तो सीना है' की सीख देकर उनके जीवन में निराशा की राख में से चैतन्य की अग्नि प्रज्वलित करने का कार्य आप करते रहे हैं। आप कार्यकर्त्ताओं को कहते हैं - 'रहन-सहन शब्द ही रहना है जो सहन से बना है। सहने का मतलब कोई कमजोरी ना समझे, जिम्मेवारी के नाते जहाँ तक हो तो सहें व समझायें, जहाँ तक हो तो साथ लेकर चलें, क्योंकि हमारा लक्ष्य तो बड़ा है-हिन्दू समाज का संगठन करना। संगठन करने वाले व्यक्ति को यश, अपयश की परवाह न कर जीवन संग्राम में वीरता के साथ स्वार्थ का दमन कर सहयोग की भावनाओं को व्यापक बनाते हुये सहिष्णुता, उदारता व पवित्र प्रेम के विस्तार के साथ अपना जीवन जीना पड़ता है।' धारा प्रवाह आपके ऐसे अनमोल शब्दों की माला हजारों कार्यकर्त्ताओं को आत्मबल प्रदान करती रही है।

सिद्धहस्त साहित्य सृजक एवं कार्यकर्त्ताओं के निर्माता

भारत माँ की महिमा एवं गरिमा को पहचानने हेतु आप कार्यकर्त्ताओं को निरन्तर उनके स्वास्थ्य व स्वाध्याय के प्रति रुचि लेने हेतु सचेत करते रहते हैं। आप प्राय: कार्यकर्ताओं को कवि रमानाथ अवस्थी की निम्न पंक्ति के साथ सन्देश देते हैं ह *कुछ कर गुजरने के लिये मौसम नहीं, मन चाहिये।*

आप साहित्य के अध्येता हैं और साथ ही कुशल सर्जक एवं संगठक भी हैं। ४० वर्ष पहले संघ स्थान पर आपसे हमने सुना ह *ध्येय मार्ग पर बढ़े वीर तो पीछे अब न निहारो, हिम्मत कभी न हारो।*

आज भी आप कलकत्ता के नागरिकों को कुमारसभा पुस्तकालय के माध्यम से बौद्धिक

खुराक दे रहे हैं और हजारों कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन कर उन्हें राष्ट्र कार्य में नींव के पत्थर बनने की प्रेरणा दे रहे हैं। आप ऐसे ही अनगिनत वर्षों तक समाज में माँ भारती की सेवा हेतु ज्ञान की गंगा का प्रसार-प्रचार व कार्यकर्ताओं का निर्माण करते रहें यह प्रभु से प्रार्थना है।

'जाहि विधि रहे राम, ताहि विधि रहिये' के प्रणेता

बाल्यकाल से सुनता आया हूँ कि- जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए। पर पाँच-सात वर्ष पूर्व आपका 'जाहि विधि रहे राम, ताहि विधि रहिये' लेख पढ़कर मुझे उत्साह मिला, मैंने यह लेख नटराज युवा संघ के अध्यक्ष श्री कैलाशजी अगरवाला को दिखाया। वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने यह लेख हमारे यहाँ छपने वाली उनके द्वारा सम्पादित 'गृहस्थ गीता' में छपवाया। अत्यधिक धैर्यशीलता एवं संयम का एक कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में आपकी सक्रिय भागीदारी तो है ही, साथ ही श्रद्धेय गुरुवर विष्णुकान्त शास्त्रीजी का सान्निध्य का प्राप्त होना भी है।

सादगी एवं उच्च विचारों के मूर्त-रूप

आपका नियमित, संयमित व सादगीपूर्ण जीवन विचारों की उच्चता एवं दृढ़ता तथा राष्ट्रवादी दृष्टिकोण कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रेरक है। आज के भौतिक युग में यह अपने आप में एक कठिन साधना है। आप कार्यकर्त्ताओं से हर विषय पर चर्चा करते हैं चाहे वह पारिवारिक विषय हो, अथवा समाजिक या राजनीतिक। आप वस्तुतः कार्यकर्त्ताओं के निर्माता ही नहीं, उनके संरक्षक भी हैं, अभिभावक भी हैं।

राजनीति में भी अनुशासन व ईमानदारी

आपने महामनीषी कन्हैयालालजी सेठिया के पूरा काव्य का सम्पादन किया। उन्होंने एक जगह लिखा- 'मरूँगा सबकी तरह, जीऊँगा अपनी तरह'। वस्तुतः आपने भी शायद महाकवि की उपरोक्त बात अपने जीवन में उतार ली है, तभी तो राजनीति में रहते हुये ईमानदारी व अनुशासन के साथ सेवा का ही पथ चुना है।

आपके जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर चराचर सृष्टि के नियन्ता लक्ष्मी पति श्री जगदीश्वर के श्री चरणों में मैं व मेरा परिवार प्रार्थना करता है कि आप चिरकाल तक निरोग रहकर जीयें व इसी प्रकार समाज का मार्गदर्शन करते हुये माँ भारती की सेवा में अधिक से अधिक कार्यकर्त्ताओं का निर्माण करें। इसी भावना के साथ ऐसे जीवन्त आदर्श एवं अनुशासन प्रिय सृजनशील व्यक्तित्व के चरण कमलों में वन्दन। जय श्रीराम। ●

सम्पर्क : २, रूपचंद राय स्ट्रीट, तीन तल्ला, कमरा नं. ३११, कोलकाता-७, मो.: ९८३११३८०५०

सौम्यता की प्रतिमूर्ति : श्री जैथलिया

✍ राजेन्द्र कानूनगो

संभवत: १९७२-७३ में जब मुझे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शंकराचार्य शाखा के मुख्य शिक्षक का दायित्व सौंपा गया, तब प्रथम परिचय हुआ था आदरणीय श्री जुगलकिशोर जैथलिया से। अत्यन्त आत्मीयता से पीठ थपथपाते हुए उन्होंने आगे बढ़ने की प्रेरणा दी थी। उस समय शाखाओं के कार्यक्रमों के दौरान लगातार ही मिलना होता था। कुछ वर्षों बाद शाखा जाना छूटा और जुगलजी से मिलना भी छूट गया। एक लम्बे अन्तराल के बाद जब पुनः मुलाकात हुई तो उन्होंने मुझे मेरा नाम लेकर बुलाया। तब एक सुखद आश्चर्य की अनुभूति हुई कि इतने प्रतिष्ठित ऊँचे कद के इन्सान के मन से मुझ जैसे अदना का नाम विस्मृत नहीं हुआ है। उसी आत्मीयता, अंतरंगता, अपनत्व के साथ गले लगाकर मुझे अप्रतिम वात्सल्य का अधिकारी बना लिया।

लम्बा कद, साधारण काया में छिपा यह असाधारण व्यक्तित्व वाला जब खाकी हॉफ पैंट में कबड्डी खेलते हुए कूदता था तो हमारे लिए प्रेरणा बनकर सामने आता था। आज भी जब कभी उन्हें देखता हूँ तब सहज, सरल, सौम्य, विनम्र, विनयशील, आडम्बर रहित, सकारात्मक सोच के साथ मान, सम्मान, यश, पद, पुरस्कार की कामना से कोसों दूर, शालीनता की प्रतिमूर्ति के रूप में ही पाता हूँ।

जुगलजी द्वारा शाखाओं के बौद्धिक कार्यक्रमों में दिए गए वक्तव्य या किसी अन्य मंच से दिए गए भाषण ही नहीं बल्कि साधारणतया बोल-चाल में भी सधे हुए शब्द और प्रभावशाली सम्प्रेषण किसी के भी मन को स्पर्श कर सकते हैं। मैं समझता हूँ इनसे वैचारिक मतभेद वाले व्यक्ति भी इनकी इस सादगी एवं किसी भी विषय के गहन अध्ययन के कायल होंगे। निष्पक्ष तथा पारदर्शी व्यक्तित्व, निष्काम सेवाभावी जुगलजी के सामने यन्त्रवत् नतमस्तक हो जाना स्वाभाविक ही है, अतिशयोक्ति नहीं।

ऐसे निष्पक्ष और निष्कपट और ऋजु स्वभाव के जुगलजी के अमृत महोत्सव पर स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन के लिए सदैव प्रार्थनाएँ। ●

सम्पर्क : कमलकुंज, १५/२सी, चेतला रोड, कोलकाता-२७, मो.: ९४३३०८८९५२

कर्मठ कार्यकर्ताओं के निर्माता : श्री जैथलिया

गुलाबचन्द कटारिया
पूर्व गृहमंत्री, राजस्थान

कई संस्थाओं के प्रेरक तथा कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के निर्माता श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया प्रारम्भ से ही सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं। मेरा मानना है कि कलकत्ता के प्रवासी बन्धुओं में श्री भंवरलाल जी मल्लावत के बाद संघ को समर्पित रहे तो श्री जैथलिया। संघ का एक आदर्श स्वयंसेवक होने के नाते इन्होंने सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अपनी समर्पित सेवा के लिये सबके दिलों में एक विशिष्ट स्थान बना रखा है। नागौर के एक छोटे से गाँव छोटीखाटू से निकलकर आपने कोलकाता जैसे महानगर में अपने श्रेष्ठ व्यवहार के कारण सहयोगी कार्यकर्त्ताओं को स्नेह और प्रेरणा द्वारा कार्य को पूर्ण करने के लिये पूरी निष्ठा एवं लगन से जुटकर जिस काम को अपने हाथ में लिया उसको ऊँचाईयों तक पहुँचाने का कार्य किया। आपके द्वारा स्थापित श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की भव्यता देखते ही बनती है। वहां देश के जाने माने साहित्यकारों को आमंत्रित कर एक आलौकिक कार्य आपके द्वारा सम्पादित हुआ है। इस कार्य में जाने माने साहित्यकार, समाज सेवक एवं राजनेताओं ने उपस्थित होकर जो भव्यता प्रदान की उसको वहाँ तक लाने का श्रेय उनको व उनकी टीम को जाता है। इसीलिये उपन्यास शिरोमणि वैद्य गुरुदत्त, महादेवी वर्मा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कन्हैयालाल सेठिया, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, भवानी प्रसाद मिश्र, जैनेन्द्र कुमार जैन, नरेन्द्र कोहली और देश के चोटी के विद्वान डॉ. मुरली मनोहर जोशी, त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, सुन्दरसिंह जी भंडारी, केदारनाथ जी साहनी, पूज्यनीय सरसंघचालक मोहनराव जी भागवत, भैयाजी जोशी जैसे कई वरिष्ठ राज एवं समाजनेताओं ने छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय में अपनी उपस्थिति देकर इसे ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

ऐसे महान जुगलकिशोर जी जैथलिया कोलकाता में राजस्थान परिषद के संस्थापक सदस्य एवं विभिन्न पदों पर आसीन रहकर इस संस्था के द्वारा राजस्थान के गौरव को कोलकाता में भी फैलाने में अपनी महती भूमिका निभाई है। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की स्मृति

में कोलकाता में एक पार्क, एक सड़क का नामकरण एवं चेतक पर सवार विशाल एवं भव्य २० फुट की ऊँची भव्य काँस्य प्रतिमा को सेन्ट्रल एवेन्यू (मेट्रो रेल 'सेन्ट्रल' स्टेशन के सामने) स्थापना करवाई।

राजस्थान परिषद के माध्यम से ही आपने महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के सम्पूर्ण साहित्य के सम्पादन एवं प्रकाशन का महत्वपूर्ण कार्य किया। भारतीय जनसंघ, भारतीय जनता पार्टी के विभिन्न पदों पर रहकर पार्टी के एक समर्पित राजनेता के रूप में आपका जीवन आज भी कार्यकर्त्ताओं को प्रेरणा दे रहें हैं। आपके जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६ वर्ष में प्रवेश के अवसर पर आयोजित अमृत महोत्सव, अभिनन्दन समारोह एक समर्पित कार्यकर्त्ता का जीवन अनेकों कार्यकर्त्ताओं को समाजसेवा एवं देशसेवा के लिये प्रेरित करता रहेगा।

मेरी प्रभु से यह कामना है कि वह आपको स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन देकर हम जैसे कार्यकर्त्ताओं को राष्ट्रसेवा में बने रहने का पथ प्रदर्शन करेगा। ●

सम्पर्क : १०१/०१, पटेल मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राज.) दूरभाष : ०१४१-२७८६११६

असहमति में भी सहज व विनम्र

✍ प्रमोद शाह

आज के इस युग में जब भोग-विलास चारों ओर ताण्डव कर रहे हैं, पैसे के अलावा और किसी चीज में कोई आकर्षण नहीं रह गया है, ऐसे में साहित्य, संस्कृति और देश के प्रति समर्पित भाव से काम करने वाले बहुत कम लोग रह गये हैं। उन कम लोगों में एक नाम है – श्री जुगलकिशोर जैथलिया।

आपकी गतिविधियाँ और सेवा का काल यूँ तो बहुत लम्बा है, मगर १९७५-७६ से मैं इसका चश्मदीद गवाह हूँ। मुझे अच्छी तरह याद है कि आपने आपातकाल में विद्यामन्दिर सभागार में देशभक्ति से ओत-प्रोत एक कवि सम्मेलन कुमारसभा पुस्तकालय के मंच से आयोजित किया था। उस आपातकाल के भयावह वातावरण में वह आयोजन कितना जोखिम भरा था, वह आज की पीढ़ी सोच भी नहीं सकती। हालाँकि जुगलजी का नाम तो मैंने पहले भी सुन रखा था लेकिन आपके साहस से वह मेरा पहला परिचय था। उस समय राजस्थानी एवं हिन्दी के मूर्धन्य कवि व साहित्यकार स्व. मणिमधुकर भी मंच पर अचानक आये, हालाँकि वे भूमिगत थे। उस समारोह के एक-दो दिन पहले ही तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा था कि – मेरी तीन पीढ़ियाँ देश की सेवा करती आ रही है। मणि मधुकर ने उसी बात की कटाक्ष करते हुए उस आपातकाल में मंच से गजल पढ़ते हुए वह शेर पढ़ा-

मेहरबानी के तले, दम घुट रहा है कौम का,
भूलकर भी अब ना कोई, मेहरबाँ पैदा करे।

और भी कहा –

एक औरत बेसुरी तो क्या हुआ,
लोग सब क्यों बेसुरा गाने लगे।

आप अन्दाज लगा सकते हैं कि कैसा विद्रोही कवि सम्मेलन रहा होगा वह। श्याम नारायाण पाण्डेय एवं अन्य कवियों ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से तत्कालीन सरकार को चुनौतियाँ दी। श्रोताओं में श्री सीतारामजी सेक्सरिया भी उपस्थित थे और आचार्य

विष्णुकान्त शास्त्रीजी संचालन कर रहे थे। उन्होंने शास्त्रीजी को कहा था कि आप बेवजह आफत मोल ले रहे हैं। तब शास्त्रीजी ने कहा था कि हम तो कफन बाँध कर बैठे हैं। कवि सम्मेलन के बाद दूसरे दिन समाचार पत्रों में खबरें छपी और पुलिस की दमनकारी कार्यवाही प्रारंभ हो गई जिसका जुगलजी एवं उनके मित्रों को नानाविध कष्टों से सामना करना पड़ा।

उसके बाद जैथलियाजी के कार्यों के बारे में बराबर पढ़ता रहा और श्रद्धेय विष्णुकान्तजी शास्त्री के कारण कुमारसभा पुस्तकालय में भी यदा-कदा आना-जाना होता रहा एवं जुगलजी से भी परिचय बढ़ता रहा।

दिसम्बर १९९२ ई. के अंक में मेरा एक लेख 'हिन्दू विचार साम्प्रदायिक विचार नहीं है' प्रकाशित हुआ था। वह अंक २ दिसम्बर को ही बाजार में आगया था। ६ दिसम्बर को अयोध्या में घटना घटी। उस लेख की काफी चर्चा हुई। जैथलियाजी ने मेरे बड़े भाईसाहब नन्दलालजी से कहा था कि हालाँकि प्रमोदजी हमारी विचारधारा में हमारे साथ नहीं हैं लेकिन वे भी देशहित में ही कार्य कर रहे हैं। जुगलजी वय में अपने से छोटों को भी ध्यान से सुनते हैं और उचित मान देते हैं और सबसे अच्छी बात यह है कि विचारों में भिन्नता रहने या असहमत होने पर भी वे सहज और विनम्र रहते हैं।

हम सब जानते हैं कि कुमारसभा पुस्तकालय एवं राजस्थान परिषद के माध्यम से उन्होंने कई विशेषांक व पुस्तकें सम्पादित की हैं। जब वे कुमारसभा से 'सन्त जिन्होंने देश जगाया' विशेषांक तैयार कर रहे थे, उस समय मुझसे भी पूछा कि इस विषय पर कोई सामग्री आपके पास है क्या ? मेरे पास स्व. बाबूराव पटेल द्वारा सम्पादित 'मदर इंडिया' की वे प्रतियाँ सुरक्षित थी जिनमें उन्होंने 'सेंट ऑफ इंडिया' नाम की शृंखला प्रकाशित की थी। जैथलियाजी मेरे घर पर आये। हम दोनों ने गंभीरता से वे अंक देखे। कुछ लेखों का चुनाव किया। तब मैंने महसूस किया कि विशेषांक निकालते समय वे केवल औपचारिकता नहीं निभाते हैं, बल्कि प्रयास करते हैं कि उस विषय विशेष के सम्बन्ध में जो भी महत्वपूर्ण सामग्री हो वह यथासंभव उसमें शामिल हो जाए। इससे उनकी साधना स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

मारवाड़ी युवामंच के समारोहों में आपने अनेक बार शिरकत की है। चूँकि मंच एक सामाजिक संस्था है, अत: आपने कभी भी उन समारोहों में राजनीति की चर्चा नहीं की। समाज को किस तरह सही राह पर लाया जाए, युवा देश को कैसे गति प्रदान कर सकते हैं, इन्हीं बातों पर आपने सदैव विचार रखे, कहीं कोई थोथी आदर्शवादिता नहीं थी।

वे हिन्दुओं के साथ हुए छल और अन्याय या धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हो रही राजनीति से अवश्य दुखी हैं और ऐसा करने वालों का विरोध भी करते हैं लेकिन मुझे लगा कि ऐसा

करके वे हिन्दुओं का भला जरूर चाहते हैं पर मुसलमानों या अन्य किसी का बुरा नहीं चाहते। वे जिस राजनैतिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, उस कारण उनके बारे में अनेक गलतफहमियाँ हो जाना स्वाभाविक है। हो सकता है कि कभी-कभी राजनैतिक दबाव में उन्हें ऐसा करना पड़ता हो लेकिन देश के प्रति उनकी निष्ठा, लगन और समर्पण उन्हें आदरणीय व्यक्तित्व बना देती है। उस पर असहमति का कहीं कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

चाहे हिन्दू संस्कृति हो या समाजसेवा, चाहे भाषा और साहित्य का सवाल हो या युवाओं को प्रेरणा देना, इतने वर्षों तक समाज और देश सेवा में अनवरत कार्यरत रहना बड़ा मुश्किल होता है। इनमें आज भी युवाओं वाली ऊर्जा चकित कर देती है।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें लम्बी आयु दें, शतायु हों और आगे आनेवाली पीढ़ी का कर्मशील रहते हुए मार्गदर्शन करते रहें, यही कामना करते हुए उन्हें कौस्तुभ जयन्ती के अवसर पर प्रणाम करता हूँ।

वे दिनकर जी की ये पंक्तियां सार्थक करते रहें -

जहाँ कहीं है ज्योति जगत में, जहाँ कहीं है उजियाला,
वहाँ खड़ा है कोई अन्तिम मोल चुकाने वाला। ●

सम्पर्क : बी.एफ-५५, साल्टलेक सिटी, सेक्टर-१, कोलकाता-६४, मो.: ०९९०३२४६४२७

प्रेरणा और प्रोत्साहन की जीवंत मूर्ति

✍ सुप्रिया बैद

आदरणीय जुगलदा से मेरा प्रथम परिचय मेरी माँ स्नेहलता बैद के माध्यम से हुआ। माँ ने बताया कि वे कोलकाता की विशिष्ट साहित्यिक एवं सामाजिक विभूति हैं। इस जानकारी से अनायास ही मेरे मन में उनकी जो छवि बनी थी वह एक गंभीर, विद्वान और दिग्गज पुरुष की और इसी नाते मैं उनसे मिलती भी थी- अत्यंत संकोच, आदर और किंचित भय से।

पिछले ३-४ वर्षों से उनका मेरे कार्यक्रमों में आना हो रहा है। कोलकाता के सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मैं मंच संचालन करती हूँ और वे ऐसे कई कार्यक्रमों में बतौर श्रोता उपस्थित रहते हैं। कार्यक्रम शेष होने के उपरांत वे जिस उन्मुक्तता से मेरी तारीफ करते हैं, वह मुझे गद्‌गद् कर देता है। जुगलजी के लिये मेरा लिखना छोटे मुंह बड़ी बात है। पर उन्होंने जब भी मेरे संचालन की तारीफ की है, उनके हृदय की पवित्रता, सरलता और वात्सल्य दिखाई पड़ा है। ऐसी विभूति से सराहना पाकर मैं ऐसे ही मचल उठती हूँ जैसे किसी छोटे बच्चे को लौलीपौप दे दी जाये। मुझे प्रेरणा मिलती है कि मैं और मेहनत करूँ। उनका एक स्नेहपूर्ण वाक्य मेरे लिये अन्य लोगों द्वारा बाँधे गए तारीफों के पुल से अधिक मायने रखता है। आलम यह है कि अब मैं इंतजार करती हूँ कि कोई और आये न आये, जुगलदा मेरे कार्यक्रम में अवश्य आये। उनकी सराहना मेरे लिये अपने प्रमाण पत्र के रूप में कार्य करती है। कई बार संचालन के दौरान ही वे श्रोताओं की प्रथम पंक्ति में मुझे दिख जाते हैं तो मैं उसी क्षण ऊर्जित और उत्साहित महसूस करती हूँ।

मैं अक्सर सोचती थी कि जुगलदा जैसे उच्च साहित्यिक, सांस्कृतिक स्तर के व्यक्ति मुझे इतना प्रोत्साहन क्यों देते हैं। मैं उम्र में छोटी ही नहीं, बल्कि इस क्षेत्र में भी नई और अपरिपक्व हूँ। पर अब समझ में आता है कि यह उनकी ऊँचाई, उनका बड़प्पन है। इस बड़प्पन को समझने के लिये मैं अभी बहुत छोटी हूँ। ●

सम्पर्क : लोकनाथ आवासन, ८-ए, कोलुपुकुर रोड, तेघरिया, कोलकाता-५९, मो. ९८३१०९७८८७

हिन्दी के कर्मठ साधक : श्री जुगलकिशोर जैथलिया

✍ कृष्णचन्द्र टवाणी

प्रधान संपादक: अध्यात्म अमृत

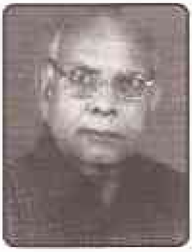

भारतीय संस्कृति के रक्षक, राजनीति के पंडित।
सरस्वती के परम उपासक, नीति निपुण गुण मंडित।।

उपर्युक्त पंक्तियाँ श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के प्रति खरी उतरती हैं। हिन्दी के निष्ठावान साधक, भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक श्री जैथलिया जी का जन्म नागौर जिला अंतर्गत छोटीखाटू में एक संभ्रान्त माहेश्वरी परिवार में दिनांक २ अक्टूबर, १९३७ को हुआ। २ अक्टूबर को जन्में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री की भाँति आप भी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं तथा राष्ट्र और माहेश्वरी समाज की एक विभूति हैं।

आपका स्वभाव शांत, मधुर, विनम्र एवं पूरी आस्तिकता से ओत-प्रोत है। आप एक साहित्य मनीषी, कर्मयोगी एवं निष्काम समाजसेवी हैं। यही कारण है कि आप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, पिंजरापोल सोसाइटी, विश्व हिन्दू परिषद, बनवासी कल्याण आश्रम एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन आदि अनेक राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं से पिछले चार दशक से जुड़े हुए हैं तथा अपनी नि:स्वार्थ सेवायें प्रदान कर रहे हैं।

व्यवसाय से आयकर सलाहकार होते हुए भी आपने साहित्य जगत को जो अनुपम कृतियाँ प्रदान की हैं वह कालजयी हैं। आपके संपादन में विष्णुकांत शास्त्री चुनी हुए रचनाएँ दो खंडों में, कन्हैयालाल सेठिया समग्र चार खंडों में, कालजयी सोहनलाल दुगड़, तुलसीदास चिन्तन-अनुचिंतन, बड़ाबाजार के कार्यकर्ता-स्मरण एवं अभिनंदन, फिर से बनी अयोध्या योध्या, अमर आग है आदि ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं जो बहुत ही सारगर्भित हैं। इनके अध्ययन करने से हमें आपके विशाल ज्ञान तथा संपादन शैली का परिचय मिलता है। ऐसे उपयोगी ग्रंथों के सृजन में आपने जो अथक श्रम किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

आप राजस्थान परिषद् कोलकाता के संस्थापक सदस्य एवं उपाध्यक्ष हैं तथा आपके प्रयत्नों से कोलकाता में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की स्मृति में एक पार्क तथा सड़क

का नामकरण हुआ तथा महाराणा प्रताप की २० फुट ऊँची चेतक पर सवार एक विशाल कांस्य प्रतिमा की सेन्ट्रल मेट्रो रेलवे स्टेशन के सामने स्थापना हुई।

आपकी साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जगत को जो देन है उसका मूल्यांकन कभी नहीं हो सकता। आपको अनेक संस्थाओं ने सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित किया है, जिनमें से कुछ का ही यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ। राष्ट्र भाषा हिन्दी की सेवा एवं भावात्मक एकता हेतु शारदा ज्ञानपीठ संस्थान, डीडवाना (राजस्थान) द्वारा शारदा ज्ञानपीठ सम्मान - २००१ में एवं समाज सेवा हेतु भामाशाह सेवा सम्मान २००४ में प्रदान किया गया। राजस्थानी भाषा की उन्नति हेतु कुरजां पत्रिका, जमशेदपुर द्वारा 'कुरजां सम्मान' एवं विचार मंच कोलकाता द्वारा सन २०११ में 'कर्मयोगी' सम्मान से आपको विभूषित किया गया है।

मेरा श्री जैथलिया जी से पिछले दो दशक से संपर्क रहा है और मैंने आपके साहित्यिक ग्रंथों का न केवल अध्ययन किया है अपितु आपका साहित्य के प्रति समर्पित जीवन 'अध्यात्म अमृत' पत्रिका के संपादन में सदा मेरा प्रेरक तथा मार्गदर्शक रहा है। परम पिता परमात्मा से मेरी आपके अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर यही प्रार्थना है।

स्वस्थ रहे शतायु रहे, तन मन और धन से।
हम सब करते मंगलकामना, हर पल भगवन से।।
दीर्घायु हो जीवन में, आनंद प्राप्त करते रहें।
शुभकार्यों से अपनी कीर्ति, द्विगुणित करते रहें।। ●

सम्पर्क : ज्ञानमंदिर, सिटी रोड, मदनगंज-किशनगढ़-३०५८०१ (राज.), मो.: ०९२५२९८८२२१

जुगलजी - जैसा मैंने देखा

✍ त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी

इस स्मृति ग्रंथ में जुगलजी के विभिन्न रूप देखने को मिलेगें लेकिन मैंने जैसे देखा कि वे एक सरल हृदय, लोगों को विमोहति करने वाले अपने तथ्यात्मक विचारों द्वारा बिना टीका-टिप्पणी के कठिन से कठिन विषय को भी सरल से सरल बना देने वाले व्यक्ति हैं।

वे मेरे गुरु और मार्गदर्शक तथा पिता तुल्य भी हैं। जुगलजी से मेरा परिचय तो बहुत पुराना था पर अंतरंगता एक विचित्र घटना के साथ हुई। उस समय मैं एक शाखा का कार्यवाह था। एक रविवार को शाखा पर मेरे अलावा कोई नहीं आया और उसी दिन जुगलजी आ गए। मैंने झेंपते हुए उनसे कहा 'आज कोई आया नहीं' उनका उत्तर था बड़ी अच्छी बात है, जो कुछ देने आया हूँ सब आपको ही दे दूँगा, कोई हिस्सेदार नहीं होगा। वह कह वह जोर से हँसे और चर्चा शुरू हुई। समय होने पर मैंने कहा प्रार्थना कर लें, उन्होंने स्वीकृति दी। प्रार्थना समाप्त होते ही हम लोग चलने लगे तो उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा और वार्ता फिर शुरू हो गई। रास्ते में मेरे घर की गली के निकट से निकलते हुए मुझे लगा कि वे अब मुझसे कहेंगे ठीक है भाई लेकिन चर्चा चलती रही और उनका घर आगया। मुझे भी साथ ले लिया।

घर पहुँचने पर नौकर नाश्ता लेकर आया पर हमारी वार्ता अबाध चलती रही। कुछ मिलने वाले भी आये जुगलजी ने गर्दन घुमाकर देखा और पूछा - 'कोई खास काम है?' घबराहट के साथ जवाब आया - 'ऐसे ही मिलने आए हैं।' जुगलजी ने 'ठीक है, बाद में आना' कहा और फिर चर्चा शुरू हो गई। कुछ समय बाद माँ आई और बोली 'जुगल जीम ले'। 'हाँ, जीमूं माँ।' वार्ता का विरोध खत्म और अनवरत वार्ता फिर शुरू। माँ दोबारा झुँझलाती हुई आई 'नौकरियों चलो जासी'। तब घड़ी पर निगाह गई, अपराह्न दो बज रहे थे। उनकी धारा प्रवाह चर्चा में मुझे भी होश नहीं था कि कितनी देर हो गई थी। ऐसे विमोहित करने वाले हैं जुगलजी।

हमने माना हो फरिश्ते शैखजी,
इन्सान बनना तो मगर दुश्वार है।

कितने लोग ऐसे है जो अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर अपने कार्यकर्त्ताओं के लिए चिंतित होते हैं। एक अन्य घटना-बृजमंडल नाम की एक संस्था का जन्म हुआ। मैं भी उस संस्था में शामिल था। उस का उद्देश्य गंगासागर मेले में बृज से आए तीर्थयात्रियों की सेवा करना था। संस्था बनी, चंदा इकठ्ठा हुआ, कार्यकर्ताओं का अच्छा समन्व्य हुआ। चूँकि संस्था नई थी इसलिए उसे आउटराम घाट पर जगह नहीं मिली। सब कुछ होने के बाद लोग परेशान कि क्या करें ? कैसे करें ? मैंने सोचा विश्व हिन्दू परिषद् का इतना बड़ा शिविर लगा है उनमें इन कार्यकर्त्ताओं को जोड़ा जाए। मैंने कार्यकारिणी के कुछ परिचितों से बात की। वे खुश हो बोले - कार्यकर्त्ता आएँगे तो धन भी आएगा और अपना कार्य दोगुना हो जाएगा। मैंने बृजमंडल में यह प्रस्ताव रखा तो उन्होंने पण्डाल में एक कोने में बैनर लगाने को कहा जिससे बृज से आने वालों को सुविधा होगी। बात तय हो गयी।

मेले से चार-पांच दिन पहले परिषद की कार्यकारिणी में कुछ लोगों ने बैनर लगाने का विरोध किया। मेरे लिए एक विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गई। मैंने अपने संकटमोचक जुगलजी को पूरी स्थिति फोन पर बताई। उन्होंने मेरी बात को 'हाँ', 'हूँ' करते हुए सुना, मैं समझ गया शायद उनके पास कोई बैठा है जिससे वह अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कर पा रहे हैं। बोले एक घंटे बाद फोन करना।

एक घंटा बीतते-बीतते परिषद के कई बड़े अधिकारियों के फोन मेरे पास स्वीकृति के लिए आए, मैं भौंचक्का रह गया। मैंने जुगलजी को फोन किया और यह घटना बताई तो उनके शब्द थे-'यदि हमारे कार्यकर्त्ता का सम्मान नहीं होगा तो हम कैसे सम्मानित होंगे'?

इन पंक्तियों को लिखते समय एक प्रश्न बार-बार मेरे मन मे उठ रहा है - बड़ा कौन है ? समाज में धन अथवा ऊँचे पद के अधिकारी को बड़ा मानते हैं। समाज के पास तो यही मानदंड है, सफल भी उसे ही माना जाता है जो उन ऊंचाइयों को छूने में सिद्धहस्त हो। विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या सफल और महान दोनों व्यक्ति एक होते हैं ? मनुष्य की महत्ता उसके आंतरिक गुणों में है अथवा बाहरी रूप में ? वास्तविकता यही है कि हर सफल व्यक्ति महान नहीं होता और विरला महान व्यक्ति ही जीवन में सफल होता है। सीधे शब्दों में जो साधारण के बीच असाधारण हो, सामान्य के बीच असामान्य हो वही बड़ा है। पर विडंबना यह है कि जो साधारण दिखता है कईबार वही असाधारण होता है। वस्तुतः जो मन को आकृष्ट करता है वही असाधारण होता है। जीवन के बाहरी मानदंडों के आधार पर जुगलजी से बड़े बहुत लोग हैं। परन्तु इन बड़ों के बीच जुगलजी जैसे को खोज पाना कठिन है।

उनके जैसे धैर्यशील श्रोता भी कठिनता से मिलेगें। संस्कृत में कहते हैं - 'जानन्नपि

ही मेधावी जड़वत् लोक आचरेत।' 'जो तू चाहे अधिक सुख मुरख है के रहु।' मूरख बनकर रहने की क्या कला है यह उनमें ही देखी। सामने वाला वक्ता अपने सतही ज्ञान एक दंभ में बोले जा रहा है और वे चुपचाप बड़े ही धैर्य से सब सुनते रहते हैं। वह वक्ता को अपनी हीनता का बोध नहीं होने देते -'सबहिं मानप्रद आप अमानी।'

मैं जब भी जुगलजी से मिलने उनके घर गया उन्हें लिखते या पढ़ते ही पाया। सोचता कमरे में जाऊँ या नहीं, तब तक वे चश्मा उतार कर कहते -'आओ बैठो, समय है न।' एक दिन 'गुरु' के ऊपर बात चली तो हँसकर बोले - 'आजकल तो गुरुओं की दुकानें लगी हैं जितने चाहो उतने गुरु बनाओ। भई, मेरी निगाह में तो पुस्तकों से बड़ा गुरु कोई नहीं है। न ये डाँटती हैं, न डपटती हैं। जितना इनसे लेना है, आनन्द से ले सकते हैं। इस गुरु के ज्ञान का अंत नहीं है।'

इधर कई वर्षों से वे संपादन-कार्य में ही डूबे मिलते हैं। उनके पास जब कभी बैठो वे अपने संपादित कुछ अंश दिखाते और उस पुस्तक ग्रंथ की चर्चा करते, इस दौरान पता चला कि सम्पादन समुद्र में मणि चुनने के जैसा कार्य है। किसी व्यक्ति के अथाह लेखन से मणियों को निकलना, सम्पादित करना बड़ा ही कठिन कार्य है। मुझे पता नहीं उनके प्रिज्म (Prism) जैसे व्यक्तित्व में और कितने आयाम हैं।

लोहिया जी की जन्मशती पर स्मारिका का सम्पादन हो रहा था। उस दौरान मैं जुगलजी के यहाँ गया तो देखा, लोहिया-समग्र की मोटी-मोटी पुस्तकें अनेक पत्र-पत्रिकाएँ, उन पर प्रकाशित लेख आदि बिखरे पड़े थे और जुगलजी की कलम चल रही थी। मझे देखकर हँसे और कहा -'मुझे लोहियाजी के विषय में इतना ज्ञान नहीं था, जितना अब इन्हे पढ़कर हुआ।' और जब ग्रन्थ छपकर आया तो बोले इससे कहीं अधिक विषय अभी पड़ा है, जो इस ग्रन्थ में नहीं छप सका। कितनी मेहनत होती है, कितना कठिन कार्य है सम्पादन। व्यक्ति उसमें लिप्त हो जाता है, तन्मय हो जाता है तब होता है सम्पादन कार्य।

सम्पादन के अलावा दो-तीन बार प्रूफ-रीडिंग करना सचमुच उबाऊ कार्य है। एक दिन हँस कर बोले 'चतुर्वेदी जी मैं तो कॉमर्स का विद्यार्थी था, फिर कानून की तरफ चला गया, दोनों का ही साहित्य के साथ कोई लगाव नही, फिर रामजी की कृपा हुई और मैं कहाँ खड़ा हो गया। मालूम नहीं रामजी और क्या कराना चाहते हैं, यह मेरे जीवन का बोनस काल चल रहा है, मैं इसे रामजी की ही सेवा में लगाना चाहता हूँ। उनमें पितृतुल्य वात्सल्य, गुरु सम दिशा-निर्देशन तथा मित्रवत् साहचर्य की भावना का अद्भुत मिश्रण है। भगवान करे वे शतायु हों और सदा मेरे ऊपर उनका आशीर्वाद बना रहे।

सम्पर्क : १३ए, पी.के. टैगोर स्ट्रीट, ४ तल्ला, कोलकाता-७००००६, मो.: ९८३१४११९७६

कर्मयोगेश्वर श्री जुगलकिशोर जैथलिया

✍ डॉ. सोनाराम विश्नोई

पूर्व अध्यक्ष: राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

भव्य व्यक्तित्व के स्वामी, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कर्मयोगेश्वर सम्माननीय श्री जुगलकिशोर जैथलिया एक आदर्श समाजसेवी, मर्मज्ञ साहित्यकार तथा उज्ज्वल छवि के प्रेरक राजनेता के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुविख्यात हैं। निःस्वार्थ भाव से समाज सेवा, जन-कल्याण एवं राष्ट्रभक्ति जैसे कल्याणकारी सुकृत्यों में आपकी सक्रियता, कार्यकुशलता, दक्षता एवं उत्साह जैसे सद्गुणों से सम्पन्न आपका गौरवमयी व्यक्तित्व तथा कृतित्व मानव मात्र के लिये प्रेरणा का पुञ्ज है। ईश्वर उत्तम स्वास्थ्य सहित आपको शतायु करें। यही मंगलकामना करता हूँ।

'अमृत महोत्सव' के इस आयोजन के सुअवसर पर प्रकाशित 'अभिनंदन ग्रंथ' के महानायक कर्मयोगेश्वर श्री जैथलिया की प्रशस्ती में पंच पंखुड़ियों का एक पुष्प उनके चरण कमलों में श्रद्धापूर्वक समर्पित करते हुए मैं गौरवान्वित एवं आत्मानंद से आप्लावित हूँ।

जुग चावा जुगल किशोर, सैणां हंदा सैण।
गरब न करै जेथलिया, साचा बोलै बैण।।१।।
लव लागी लोक हित री, बाळपणै सूं ठेट।
कियौ हित हमेसै जन रौ, भेद-भाव सह मेट।।२।।
शोभा लहि थां सांतरी, चहुं दिश चावा हूय।
रलियावण खाटू छोड़, कलकत्ते पुन कमाय।।३।।
जै-जयकार जैथ हुई, कर्मवीर कैवाय।
थळमरू रौ नांव कीधौ, आखै जंग रै मांय।।४।।
लियौ जस ऊजळ जग में, जगल जित्यौ जेथलिया।
याद करसी जुग सारौ, जुगल जीवौ जेथलिया।।५।।
रूड़ी करसी रामजी, सारैला सह कांम।
पंच पंखुड़ी रौ पुहप, समपै सोनारांम।। ●

सम्पर्क : ४१बी, ९-ई रोड, सरदारपुरा, पो.: जोधपुर-३४२००३, मो.: ०८८७५९२७५५२

शलाका पुरुष श्री जुगलकिशोर जैथलिया

✍ सजन कुमार बंसल

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि कर्मयोगी श्री जुगलकिशोर जैथलिया के अमृत महोत्सव पर एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री जैथलिया के साथ मेरे पूज्य पिता श्री साधुराम जी बंसल एवं मेरा भी घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। राजस्थान के छोटीखाटू में जन्मे जैथलियाजी ने अपनी जन्मभूमि के साथ-साथ कर्मभूमि में अपनी विशिष्ट सामाजिक पहचान बनायी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ बाल्यकाल से ही जुड़ाव होने के कारण श्री जैथलिया ने मातृभूमि की सेवा का संकल्प लिया और आज ७५ वर्ष की उम्र में भी पूर्ण सक्रियता के साथ राजनैतिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से अपना योगदान दे रहे हैं।

कोलकाता महानगर में निवास करने वाले प्रवासी लोगों ने धर्म, समाज और राष्ट्र के लिए बहुतेरे कार्य किए हैं लेकिन राजनैतिक स्तर पर हमारी पहचान अब भी नहीं बन पायी है। हालाँकि श्री जैथलिया को इनमें अपवाद माना जा सकता है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में अपनी पहचान बनायी और पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष पद तक पहुँचे। उनके सुचिंतित विचार इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं कि वे अपने चिन्तन के धरातल पर कितने सुलझे हुए हैं।

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के साथ उनके घनिष्ठ सम्बन्धों ने साहित्य के प्रति उनकी अभिरुचि को उत्तरोत्तर बल प्रदान किया। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय और बड़ाबाजार लाइब्रेरी जैसे पुस्तकालयों के विकास में श्री जैथलिया का अप्रतिम योगदान रहा है। कोलकाता महानगर में ये वे पुस्तकालय हैं, जहाँ नियमित रूप से पुस्तक प्रेमी आते हैं। इन पुस्तकालयों में नियमित रूप से होने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों की पृष्ठभूमि में भी इन्हीं की प्रेरणा रहती है। यही नहीं, अपनी जन्मभूमि छोटीखाटू में भी आप पुस्तकालय से गहराई से जुड़े हुए हैं।

मातृभूमि राजस्थान के प्रति उनके हृदय में कितना सम्मान है, इसका अंदाज राजस्थान परिषद के साथ उनके जुड़ाव से लगाया जा सकता है। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की आवक्ष प्रतिमा की कोलकाता महानगर में स्थापना दिवास्वप्न जैसा कार्य था, लेकिन जैथलिया जी की जीवटता के कारण राष्ट्रप्रेमी प्रवासी समाज का यह स्वप्न भी साकार हुआ और आज चित्तरंजन एवेन्यू जैसे महत्वपूर्ण मार्ग पर राणाप्रताप की आवक्ष प्रतिमा राजस्थान का सम्मान बढ़ा रही है।

मेरे परिवार के साथ जैथलियाजी का लगभग ४० वर्षों से अधिक का सम्पर्क रहा है। उनके हृदय में प्राणी मात्र के लिए प्रेम सहज ही महसूस किया जा सकता है। एक ऐसे समय में जब लोग भारतीय संस्कार भूलते जा रहे हैं, जैथलिया जी को देखकर प्रेरणा मिलती है और संतोष होता है कि बदलाव की कैसी भी हवा चले, इन्होंने अपने चिन्तन में कभी बदलाव नहीं किया। जैथलिया जी को उनके सामाजिक योगदानों के लिए देश के विभिन्न अंचलों में सम्मानित भी किया गया है।

राष्ट्रीयता में विश्वास रखने वाले समाज के विभिन्न विशिष्ट व्यक्तिओं को कोलकाता लाकर लोगों से परिचित करवाना तथा उन्हें सम्मान प्रदान करने का भगीरथ उपक्रम जैथलिया जी के प्रयास से निरन्तर चल रहा है। राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा के विकास में आपका विशिष्ट योगदान है। उनकी प्रेरणा से समाज में सैंकड़ों कार्यकर्त्ता तैयार हुए हैं। किसी भी कार्य को गहन चिन्तन के बाद हाथ में लेना और उसे पूरा करना जैथलियाजी से सीखा जा सकता है।

अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर मैं अपने पूरे परिवार की ओर से श्री जैथलिया को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें सदैव स्वस्थ रखें ताकि वे निरन्तर सक्रिय रहकर समाज को अपना योगदान दे सकें। मैं जैथलिया जी के लिए *जीवेम शरदः शतम्* की कामना करता हूँ। ●

सम्पर्क : ३ए, लाउडन स्ट्रीट, कोलकाता-७०००१६, मो.: ९८३०००६७६६

छोटीखाटू का बड़ा आदमी

✍ डॉ. भगवतीलाल व्यास

सम्बन्धों की दुनिया बड़ी निराली है। कई बार एक छत के नीचे बरसों गुजार देने के बाद भी आप वह सम्बन्ध नदारद पाते हैं जो मधुर और आत्मीय सम्बन्ध सैकड़ों मील दूर बैठे किसी ऐसे व्यक्ति के साथ विकसित हो जाते हैं जिसे आप शब्द के माध्यम से जानते हैं। कभी-कभी सोचता हूँ शब्द का भी एक अद्भुत व्यक्तित्व होता है। अपरिचित किन्तु अति परिचित। अनदेखा किन्तु विश्वसनीय। श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया साहब से मेरा सम्बन्ध भी कुछ इसी तरह का है। वे अविस्मरणीय कर्मयोगी हैं। जिस काम को हाथ में लेते हैं उसकी गुणवत्ता के जो मानक ये अपने मन मस्तिष्क में धार लेते हैं उन्हें सौ प्रतिशत प्राप्त करके ही चैन लेते हैं। श्री कन्हैयालाल सेठिया समग्र के चारों खण्डों को तैयार करने में आपने कितना श्रम किया होगा इसकी कल्पना मैं कर सकता हूँ।

मैं आपके लिए 'साहित्य सेवक' विशेषण का प्रयोग सचेत होकर कर रहा हूँ। सेवा हमेशा अहेतुक होती है। सेवा के लिए सेवा। पैसे के लिए नहीं, ख्याति के लिए नहीं, पद के लिए नहीं, प्रतिष्ठा के लिए नहीं। क्योंकि ये सब तो जैथलियाजी के पास प्रभूत मात्रा में हैं। नागौर जिले की मिट्टी में कुछ तो ऐसे तत्त्व हैं जो 'इन्सानियत' की खेती में मददगार होते हैं। वे तत्त्व जैथलिया जी को विरासत में मिले हैं। यह इनके लिए तो अभ्युदयकारी और मंगलमय हैं ही पर हम जैसे इनके शुभचिन्तकों के लिए भी गौरव का सृजन करते हैं।

मेरा उनसे सिर्फ पत्राचार रहा है। पत्रों में व्यक्ति की कई चारित्रिक, व्यक्तिगत, सामाजिक और परिवेशगत विशेषताएँ मुखरित हो जाती हैं। व्यक्ति की लिपि, वाक्य विन्यास, शब्द चयन सम्बोधन और समापन में पूरा का पूरा व्यक्ति हमारे सामने होता है। देह तो आत्मीयता के अनेक माध्यमों में से एक माध्यम है। इस देह के अन्दर जो मन और आत्मभाव है वही अनुराग का केन्द्र है। किसी कवि ने कहा है- 'मिलना तो मन का होता है, तन की क्या दरकार बटोही।' यदि यह सच है तो मैं जैथलिया जी से सशरीर एक बार भी न मिल कर भी हर रोज मिलता हूँ। मैं अपने आपको भाग्यशाली भी मानता हूँ कि मुझ पर जैथलिया जी जैसे अनेक महानुभावों की कृपा और स्नेह प्रतिपल बरसता रहता है जबकि उन महानुभावों से मिलना तो दूर उनका चित्र तक नहीं देखा है।

श्री जैथलिया जी अक्टूबर २०१२ में अपनी पचहतरवीं साल गिरह मनाएंगे- पचहतरवीं साल गिरह यानि अमृत महोत्सव। स्वभाव से तो वे सदैव अमृतमय ही रहे हैं। जो अमृतमय है वही अमृत बाँट सकता है। अमृत बाँटने के लिए शिव की तरह गरलपान करना पड़ता है। श्री जैथलिया जी जिस मुकाम पर आज हैं वहाँ पहुंचने के लिए उन्हें कितना गरल पान करना पड़ा होगा, इस बात को मैं समझ सकता हूँ। छोटीखाटू से कोलकाता के बीच का सफर अमृत की नदी का सफर नहीं है। एक मध्यवर्गीय परिवार से उठ कर राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, शिक्षा, संस्कृति और समाज को अपने अवदान से निरन्तर समृद्ध करने वाले जैथलिया जी ने कोलकाता जैसे महानगर में ही नहीं अपितु संपूर्ण देश में अपनी जो महत्त्वपूर्ण जगह बनाई है वह कोई कर्मयोगी ही कर सकता है। 'जुगलकिशोर तो कर्म का पर्याय ही है। अगर जुगलकिशोर नहीं होते तो कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' का उपबोधन कौन देता? वे जुगलकिशोर कर्मयोग का उपबोधन ही देते हैं पर ये साक्षात् जुगलकिशोर तो 'सावयव-कर्मयोग' के रूप में हमारे बीच उपस्थित हैं।

इस लेख का शीर्षक- 'छोटीखाटू का बड़ा आदमी' रखा है सोच समझकर, क्योंकि मैं जानता हूँ जिन्दगी के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा और कौशल का जलवा दिखाने वाले लोग 'छोटीखाटुओं' से ही निकलते हैं। मेरा अनुमान और आकलन है कि देश की अस्सी प्रतिशत प्रतिभाएं 'छोटीखाटुओं' से ही आती हैं। इन छोटीखाटुओं का पेटा बड़ा और गहरा होता है। कंकर को शंकर बनाने की क्षमता है हमारी इन छोटीखाटुओं में। ये छोटीखाटुएँ देश में पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण यानि सब कहीं आपको मिल जाएँगी। रतन पैदा करती हैं ये बड़े जतन से वतन के लिए।

श्री जुगलकिशोर जैथलिया एक बहुआयामीय व्यक्तित्व हैं। उनके व्यक्तित्व के अनेक आयामों में से मुझे जो आयाम सबसे अधिक आकर्षित करता है वह है उनकी गत्यात्मकता। पेशे से आयकर सलाहकार रहे जैथलिया जी अंकों के आदमी हैं। अंकों की दुनिया अपनी एक अलग दुनिया होती है। इसका अपना कठोर अनुशासन होता है। ऐसी दुनिया का आदमी जब शब्दों की दुनिया का हिस्सा बन जाता है तो शब्दों की दुनिया में अपने साथ अंकों की दुनिया वाला अनुशासन भी लेकर आता है। शब्दों की दुनिया में विभिन्न प्रकल्पों के लिए जैथलिया जी ने जो अवदान दिया है उसको यहाँ दोहराने की आवश्यकता मैं नहीं समझता। उन्हें दिए गए सम्मान एवं पुरस्कारों की लंबी सूची इस बात की गवाह है कि आपकी प्रतिष्ठा शब्दो की दुनिया में भी अंकों की दुनिया से कम नहीं है। हिन्दी के साथ-साथ उन्होंने राजस्थानी भाषा के उत्थान के लिए भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके अमृत महोत्सव के अवसर पर मैं विनत भाव से उन्हें अपनी शुभकामनाएँ एवं प्रणाम अर्पित करता हूँ। ●

सम्पर्क : ३५, खारोल कॉलोनी, फतेहपुरा, उदयपुर-३१३००४ (राज.), मो. ०९४१३५२८५२९

गरिमापूर्ण उत्प्रेरक व्यक्तित्व

✍ स्नेहलता बैद

आदरणीय जुगलदा का ध्यान आते ही उनके जीवन की सारी गरिमा सामने आ जाती है। आचार्य महाप्रज्ञ ने एक स्थान पर लिखा है- *'यह निश्चित मानो कि गरिमा आकाश से नहीं टपकती, ना ही धरती से निकलती है। वह जीवन में आँच सहते सहते आती है।'* जुगलदा को भी वह गरिमा सहज ही नहीं प्राप्त हो गयी है। जुगलदा का सम्पूर्ण जीवन अनथक संघर्ष और श्रम का जीवन रहा है। उन्होंने अनेक प्रकार के ताप सहे हैं और ताप सहते सहते कुंदन बने हैं। कुंदन बनाने के लिये सोने को बहुत तपाना पड़ता है। तपते तपते सोना इतना तप जाता है कि उसकी सारी खाद निकल जाती है और उसकी सारी परतें इतनी स्वच्छ और निर्मल बन जाती हैं कि वह कुंदन बन जाता है।

अपने ही स्वार्थ की अंधी दौड़ एवं वैचारिक अवरुद्धता के इस दौर में भी जुगलदा ने अपने जीवन एवं कर्म से इस बात को प्रमाणित किया है कि व्यक्ति को यदि अपने लक्ष्य की स्पष्टता हो तो रास्ते खुद-ब-खुद बन जाते हैं। बचपन से ही हमारे चित्त पर प्रतिस्पर्धा एवं आपाधापी के संस्कारों की ऐसी छाया पड़ती है कि हमें यह संसार समझ ही नहीं आता। चाहते हम सब सुख और शांति हैं मगर स्व-निर्मित बंधनों के कारण रास्ते ही समझ में नहीं आते। फिर शुरू होती है एक बिना लक्ष्य की यात्रा जिसमें हमें सही मार्ग का ही पता नहीं रहता। जुगलदा को देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में देशभक्ति के जो संस्कार मिले, उसी के अनुरूप इन्होंने स्वयं को ढाला है। इनकी प्रत्येक गतिविधि एवं क्रियाकलाप के केन्द्र में भारत एवं भारतीयता का गौरव अक्षुण्ण रखना एवं 'परम वैभवम् नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्' का शुभ संकल्प है।

महानगर की सभी साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं एवं संगठनों के सभी कार्यक्रमों में समय से पहुँचते हैं। उनकी उपस्थिति मात्र से कार्यक्रम की गरिमा बढ़ जाती है, आयोजकों का उत्साहवर्धन होता है। बड़ाबाजार लाइब्रेरी एवं कुमारसभा पुस्तकालय के तो आप प्राणपुरुष ही हैं। न सिर्फ बड़े आयोजनों में, छोटे आयोजनों में भी आप समय पर पहुँचकर कार्यक्रम की श्रीवृद्धि करते हैं। कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात आयोजकों की पीठ

थपथपाना कभी नहीं भूलते। आपकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से कार्यकर्ताओं में नवीन ऊर्जा एवं उत्साह का संचार होता है। मुझे महापुरुषों का वह कथन स्मरण हो आता है कि 'प्रोत्साहन दो, अल्पशक्ति वाला भी महान बन जायेगा।' अपनी व्यस्तता के बावजूद कुमारसभा के प्रत्येक कार्यक्रम के पूर्व स्वयं फोन करके सूचित करना आपके अद्भुत संगठन कौशल को प्रमाणित करता है। इतना ही नहीं, यदि किसी कारणवश कार्यकर्त्ता उपस्थित न हो तो पुनः फोन कर उसका कुशलक्षेम पूछना, कार्यक्रम की जानकारी देना उनकी गरिमा को प्रतिष्ठापित करता है। इतनी ऊँचाई पर पहुँचने के बाद भी वे विनम्र हैं और सम्बन्धों को संजीदगी से निभाते हैं।

यद्यपि जुगलदा ने अनेक संग्रहणीय स्मारिकाओं का सम्पादन किया है, स्वयं स्वनामधन्य साहित्यकार हैं, समय समय पर पत्र पत्रिकाओं में उनके आलेख हम पढ़ते रहते हैं, हिन्दी के सभी वरिष्ठ साहित्यकारों से आपका अंतरंग परिचय है किन्तु मुझे उनके व्यक्तित्व की जो बात बहुत ही प्रीतिकर लगती है वह है उनका राजस्थानी भाषा से अनन्य अनुराग। कवि मनीषी कन्हैयालाल जी सेठिया के समग्र साहित्य को पुनर्प्रकाशित कर आपने मानो राजस्थान की 'धोरां री धरती' का पूजन वंदन किया है। आपसी वार्तालाप में भी राजस्थानियों से वे सहज रूप से मारवाड़ी में ही बात करते हैं। ऐसा लगता है कि उनके मुँह से निःसृत मायड़ भाषा सीधे हृदय को स्पर्श करती है।

जुगलदा स्वभाव से बहुत ही अध्ययनशील प्रवृत्ति के हैं। अपनी बातों को बड़ी सरल भाषा में किन्तु युक्तिपूर्ण ढंग से और उदाहरण के द्वारा समझाते हैं। धन्यवादज्ञापन जैसी औपचारिक और यांत्रिक प्रक्रिया को भी सरस और रोचक बना देते हैं। आपके श्रीमुख से निकले उद्गार बुझती आशाओं को विश्वास के पंख लगा देते हैं।

एक आदर्श कार्यकर्त्ता की पारिवारिक, सामाजिक तथा व्यावहारिक जीवन पद्धति किस प्रकार की होनी चाहिये, यह आपको देखकर सहज ही समझ आता है। ऐसा लगता है कि वे अपने कार्य व्यवहार और विचार से समाज और देशमाता का ऋण चुका रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ का संदेश है :

जीना हो ज्योति बन जीना, जीना हो मोती बन जीना
बहुत बड़ा अभिशाप जगत में, अंधकार का जीवन जीना।

जुगलदा के ७५वें वर्ष सम्पूर्ति पर उनकी निरामयता और प्रसन्नता की कामना करते हुए वंदन अभिनन्दन। हम आँच सहना सीखें और स्वर्ण से कुन्दन बनने की दिशा में प्रस्थान करें। उनकी अभ्यर्थना और अभिनन्दन ही न करें, उन जैसा पुरुषार्थी, कर्मठ और राष्ट्र समर्पित जीवन जीने के लिये कृत संकल्प बनें। ●

सम्पर्क : लोकनाथ आवासन, ८-ए, कोलुपुकुर रोड, तेघरिया, कोलकाता-५९, मो. ९८३१०३३५१४

जुगल जी : मेरे प्रेरणा स्रोत भी एवं मार्गदर्शक भी

✍ रामगोपाल सूंघा

श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया से मेरा परिचय जुलाई, १९६४ ई. में बड़े आकस्मिक तरीके से आया। मैं राजस्थान के मण्ड्रेला गाँव के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाता था। कोलकाता में १९६२ में आया पर संघ शाखा का परिचय नहीं आया। मेरे गाँव के श्री पुरुषोत्तम जी लाठ जो संघ के अच्छे कार्यकर्त्ता हैं, भी कोलकाता में रहते थे। जुलाई, १९६४ ई. में संघ के द्वितीय सरसंघचालक प. पू. गुरुजी का कोलकाता प्रवास हुआ। श्री पुरुषोत्तम जी लाठ ने जुगलजी से मेरे संघ का कार्यकर्त्ता होने के बारे में बताया तो वे मेरे निवास स्थान पर श्री गुरुजी के कार्यक्रम की सूचना देने आये और वहीं उनसे मेरा प्रथम परिचय हुआ। उनके कहने पर मैंने सायं शाखा में जाना प्रारम्भ किया। उस समय स्व. भंवरलाल जी मल्लावत संघ के कोलकाता महानगर के पश्चिम खण्ड के कार्यवाह थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावी था। वे सायं शाखाओं पर ज्यादा जोर देते थे, क्योंकि प्राय: नए कार्यकर्त्ताओं का निर्माण सायं शाखाओं से ही होता है। उस समय पश्चिम खण्ड में सांय विभाग का कार्य देखने वाले प्रमुख कार्यकर्ता का अभाव था। भँवरजी यह दायित्व जुगलजी को देना चाहते थे। जुगलजी ने कानून (एलएल.बी.) की पढ़ाई पास करके आयकर एवं बिक्रीकर के सलाहकार के रूप में वकालत प्रारम्भ की थी। सायं विभाग का दायित्व लेने से सायं का समय सलाह हेतु पार्टियों को देना चाहिये, उसमें बाधा आती थी अत: जुगलजी ने भँवरजी को यह दायित्व लेने में अपनी असुविधा बताई। भँवरजी ने कहा कि संघ का कार्य यदि बढ़ाना है तो असुविधाओं को तो झेलना ही पड़ेगा अत: आपको यह कार्य देखना है और जुगलजी ने उनका आदेश मानकर सायं विभाग का दायित्व सँभाल लिया तथा अपने चेम्बर का समय जो सायं ६ से ८ बजे तक था, उसे बदलकर ८ से १० बजे तक कर दिया। प्रारंभिक असुविधायें होने पर भी वे विचलित नहीं हुए। जुगलजी द्वारा यह अति दुरूह पर संघ कार्य के लिये साहसिक कदम उठाने पर मुझे भी संघ कार्य की और अधिक जिम्मेदारी निभाने की प्रेरणा मिली और उसी समय से मैंने जुगल जी को अपना आदर्श मान लिया। जुगलजी ने अपने परिश्रम से बहुत नये कार्यकर्त्ता खड़े किए।

संघ कार्य के विस्तार हेतु जुगलजी समाज के विशिष्ट लोगों से भी निरन्तर सम्पर्क रखते थे। जुगलजी की इस लगन व कार्य शैली के बारे में सुनकर स्व. राधाकिशन जी नेवटिया जो बड़ाबाजार के स्वतन्त्रता सेनानी व वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्ता थे उन्होंने जुगलजी को बुलाया और सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय जो कोलकाता का सबसे बड़ा हिन्दी पुस्तकालय है, उसका मंत्री के नाते कार्यभार सम्हालने का आग्रह किया। क्योंकि उसके तत्कालीन मंत्री श्री रामकृष्ण सरावगी, राज्य सरकार में मंत्री बन जाने के कारण पुस्तकालय के लिए समय नहीं दे पा रहे थे। जुगलजी की साहित्य में काफी रुचि थी, वे अपने गाँव छोटीखाटू (राजस्थान) में एक अच्छे पुस्तकालय का संचालन भी कर रहे थे अत: उन्होंने इसे स्वीकार कर उसके कार्य को आगे बढ़ाया। कालान्तर में श्री नेवटियाजी ने, जो एक दूसरे महत्वपूर्ण सार्वजनिक पुस्तकालय 'श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय' के संस्थापक थे उसका भी दायित्व सम्हालने का आग्रह किया क्योंकि उसकी आर्थिक अवस्था एवं व्यवस्था दोनों ही लड़खड़ा रही थी और उन्हें भरोसा था कि जुगलजी उसे फिर से पटरी पर ले आयेंगे। जुगलजी ने दो-दो दायित्व एक साथ लेने से मना कर दिया पर नेवटियाजी के अत्यधिक आग्रह पर जालान पुस्तकालय का दायित्व अपने मित्र श्री सागरमल गुप्ता, चार्टर्ड एकाउन्टेंट को सम्हलाकर स्वयं कुमारसभा के कठिन दायित्व को अपने दो अनन्य सहयोगियों नन्दलालजी जैन एवं शिवरतनजी जासू को साथ लेकर सम्हाला, यह १९७३ ई. का काल था।

श्री जुगलजी की मेहनत रंग लाई और धीरे-धीरे पुस्तकालय की आर्थिक स्थिति में तो सुधार हुआ ही, साहित्यिक गतिविधियाँ भी तेजी से आगे बढ़ीं। यह पुस्तकालय आज सारे देश में हिन्दी जगत में साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में अग्रगण्य है। इस पुस्तकालय से दो बड़े सम्मान (१) स्वामी विवेकानन्द सेवा सम्मान व (२) डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान प्रतिवर्ष दिये जाते हैं। वृहत्तर बड़ाबाजार की शायद ही ऐसी कोई साहित्यिक व सामाजिक संस्था होगी जिसमें जुगलजी किसी न किसी प्रकार से जुड़े नहीं हों।

मैंने अपने जीवन में उनसे बहुत कुछ सीखा है। परिवार, समाज व देश के कार्य के लिये उन्हीं का आदर्श जीवन मुझे निरन्तर प्रेरणा देता है। जुगलजी ने अपनी जीवन बाती से अनेक दीपों की बाती जलाई है, अंधकार से जूझना सिखाया है एवं समाज-जीवन में प्रकाश फैलाया है। उनके इस अमृत महोत्सव पर परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे स्वस्थ रहते हुये दीर्घायु हों एवं समाज व देश की निरन्तर सेवा करते रहें और हम कार्यकर्त्ताओं का इसी तरह मार्गदर्शन करते रहें। ●

सम्पर्क : १-ई, बर्मन स्ट्रीट, कोलकाता-७००००७, मो.: ०९८३१८०५४१२

दृढ़ संकल्पी राष्ट्रवादी चिन्तक श्री जुगलजी

✍ भंवरलाल मूंधड़ा

जुगलजी से मेरा सीधा सम्बन्ध साठ के दशक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से आया और थोड़े ही दिनों में हम एक-दूसरे के घनिष्ठ हो गये क्योंकि इनके पिताजी स्व. कन्हैयालालजी एवं मेरे काकाजी श्री सीतारामजी मूंधड़ा दोनों ही बांगड़ ग्रुप में ही कार्यरत थे एवं बांगड़जी की गद्दी एवं मेरा निवास दोनों बड़ाबाजार के सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट में आमने-सामने ही थे। जुगलजी भी उस काल में अध्ययन रत होने के कारण अपने पिताजी के साथ बांगड़ों की गद्दी में ही रहते थे। इस कारण यह सम्बन्ध क्रमशः पारिवारिक बन गया और जुगलजी की सूझबूझ तथा संकल्प शक्ति से प्रभावित होकर मैंने उन्हें अपना अग्रज और मार्गदर्शक मान लिया। आज तो वे मेरे प्रेरणा स्रोत हैं।

मेरी शुरू से ही रुचि सामाजिक कार्यों तथा राजनीति में थी और जुगलजी की मुख्यतः संघ कार्य तथा थोड़ी-थोड़ी सामाजिक कार्यों में। उन्होंने बड़ाबाजार के क्षेत्र में अपनी तपस्या से अनेक कार्यकर्त्ता निर्माण किये। साहित्यिक रूचि के कारण सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय और श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय जैसी बड़ी संस्थाओं को सम्हाला, सुदृढ़ किया, राष्ट्रवादी साहित्य का प्रकाशन कराया एवं हिन्दुत्व तथा सुसंस्कारों एवं लोक कल्याण से जुड़ी छोटी-बड़ी अनेक संस्थाओं को सहयोग किया। इतना सब करते हुए भी अपनी प्रखर बुद्धि एवं कार्य कुशलता के कारण आयकर सलाहकार के रूप में भी काफी प्रतिष्ठा अर्जित की एवं आर्थिक प्रबन्धन के सम्बन्ध में लोगों का विश्वास अर्जित किया। साहित्यिक क्षेत्र में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं सामाजिक क्षेत्र में राजस्थान परिषद उनकी प्रबन्ध कुशलता के दो बड़े उदाहरण हैं। कुमारसभा पुस्तकालय आज सत्साहित्य के प्रकाशन में एवं लोकसेवकों तथा प्रज्ञा पुरुषों को सम्मानित करने में देश भर में विख्यात है तो राजस्थान परिषद के माध्यम से महाराणा प्रताप की स्मृति में कोलकाता में किए गए तीनों कामों यथा- प्रताप की स्मृति में सड़क का नामकरण, पार्क का नामकरण एवं आवक्ष मूर्ति की स्थापना और चितरंजन एवेन्यू पर विशाल भव्य कांस्य प्रतिमा की स्थापना, ऐसे विशेष काम हैं, जो जुगलजी

के चिन्तन एवं योजना दोनों पर ही भरपूर प्रकाश डालते हैं। अनेकों लोकसेवी संस्थाओं से भी जुगलजी सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं यथा- मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, विश्व हिन्दू परिषद एवं बड़ाबाजार लाइब्रेरी प्रभृति।

राजनीति में तो जुगलजी बहुत बाद में यानि १९८२ ई. में विधानसभा चुनावों के माध्यम से आये। जनसंघ एवं भाजपा के लौहपुरुष सुन्दरसिंह जी भंडारी से जुगलजी के बहुत वर्षों से निकट के सम्बन्ध थे। उन्होंने स्थानीय आवश्यकता को ध्यान रखकर जुगलजी से चुनाव लड़ने एवं भाजपा के कार्य से जुड़ने का आग्रह किया।

आदरणीय विष्णुकान्तजी शास्त्री जो उस समय प्रान्तीय अध्यक्ष थे, उन्होंने भी दबाव बनाया और जैसाकि पहले से साफ था, जुगलजी चुनाव तो नहीं जीत सके पर निष्ठा से भाजपा के कार्य में जुट गए और आज लगभग तीस वर्षों से अपनी भूमिका को कुशलता पूर्वक निभा रहे हैं। वे अभी पार्टी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं एवं साथ ही अर्थ समिति के प्रमुख हैं। चूँकि मैं उनसे पहले से राजनीति में कार्यरत था अत: वे सभा, समितियों में बार-बार सबके सामने कहते हैं कि राजनीति में भंवरजी ही मेरे अग्रज हैं। यह उनकी विनम्रता ही है।

जुगलजी ने आर्थिक दृष्टि से पार्टी का सुदृढ़ आधार तो अपने सम्पर्कों के कारण बनाया ही, हिसाब-किताब की दृष्टि से भी पारदर्शिता एवं सुव्यवस्था स्थापित की। राजनीति में रहकर भी उन्होंने अपनी सादगी, अनुशासन एवं स्वीकृत कार्य के लिए कठोर परिश्रम से उनके सम्पर्क में आने वाले हर किसी व्यक्ति को प्रभावित किया। मेरे तो वे सब कार्यों के मार्गदर्शक हैं।

आज उनके अमृत महोत्सव के अवसर पर प्रभु से यही प्रार्थना है कि वे स्वस्थ रहें एवं दीर्घायु होकर समाज एवं राष्ट्र की सेवा करते रहें एवं हम जैसे कार्यकर्त्ताओं को मार्गदर्शन करते रहें। ●

सम्पर्क : ६०ए, नलिनी सेठ रोड, ३ तल्ला, कोलकाता-७, मोबाइल : ९३३१८९९७०७

श्री जुगलकिशोर जैथलिया-ज्ञान योग और कर्म योग के मणिकांचन संयोग

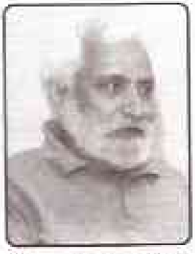

✍ डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, भारत तिब्बत सहयोग मंच

कोलकाता का बड़ाबाजार दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इसकी प्रसिद्धि इसकी व्यवसायिक गतिविधियों के कारण मानी जाती है। आमतौर पर व्यवसाय का सम्बन्ध लक्ष्मी से जोड़ा जाता है। और ऐसा भी कहा जाता है कि लक्ष्मी का सरस्वती से वैर रहता है। इस दृष्टि से बड़ाबाजार को लक्ष्मी का केन्द्र ही मानना चाहिए। और जिन लोगों ने इस स्थल को लक्ष्मी का स्थान बना दिया उनमें प्रमुख योगदान राजस्थान के मारवाड़ी समाज का ही है। मारवाड़ का क्षेत्र संघर्ष और साहस का क्षेत्र रहा है। इसलिए यहाँ के लोग अपने उसी साहस के बलबूते भारत वर्ष के कोने-कोने में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी धाक जमाये हुए हैं परन्तु एक पुछल्ला साथ नहीं छोड़ता। वही लक्ष्मी और सरस्वती की लड़ाई का पुछल्ला, कौन बड़ा है कौन छोटा! कोलकाता के बड़ाबाजार में शायद यही संतुलन बिठाने का प्रयास कभी हुआ था। कुमारसभा पुस्तकालय इन्हीं प्रयासों का फल है। बड़ाबाजार के लक्ष्मी स्थल के बीचों बीच कुमारसभा पुस्तकालय मानों एक प्रकार का सरस्वती मन्दिर है। यह इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों का सशक्त केन्द्र बना हुआ है। इसी बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय में कभी आचार्य विष्णुकान्त शास्त्रीजी ने गीता की नव व्याख्या की थी। और इसी पुस्तकालय के संयोजकत्व में कभी अटलबिहारी वाजपेयी ने भाव विभोर होकर अपनी कविताओं का एकल पाठ किया था।

जब इस कुमारसभा पुस्तकालय के इतिहास, उसके विकास और स्मृद्धि की चर्चा होती है तो जुगल किशोर जैथलिया जी का नाम लिये बिना वह चर्चा अधूरी ही मानी जाती है। बड़ाबाजार के इस सरस्वती मन्दिर की पुन: प्रतिष्ठा करने में जैथलिया जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। राजस्थान के लोग जहाँ रहते हैं वहाँ महाराणा प्रताप की यशगाथा अपने आप ही फैलने लगती है। यह ठीक है कि महाराणा प्रताप को केवल राजस्थान की सीमाओं में नहीं

बांधा जा सकता लेकिन फिर भी प्रत्येक स्थान, समुदाय या भाषा के कुछ न कुछ प्रतीक अपने आप ही उभरने लगते हैं। जिस प्रकार कालीबाड़ी बंगाली समाज के साथ, शिवाजी महाराज महाराष्ट्र के साथ, राजा दाहिर सेन सिंधी समाज के साथ एकाकार हो गए हैं उसी प्रकार महाराणा प्रताप और राजस्थान का सम्बन्ध माना जाता है। जैथलिया जी के प्रयत्न से कोलकाता में राजस्थानी समाज ने घोड़े पर सवार महाराणा प्रताप की एक बहुत ही भव्य मूर्ति कोलकाता के हृदय सेन्ट्रल एवेन्यू में स्थापित की है और प्रत्येक वर्ष राजस्थान परिषद की ओर से महाराणा प्रताप का जन्मदिन मनाने के लिए एक गरिमापूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस आयोजन के पीछे भी जैथलिया जी का प्रयास महत्वपूर्ण होता है। जैथलिया जी का प्रयास रहता है कि इस अवसर पर देश भर के किसी न किसी विद्वान को आमंत्रित कर संवाद रचना की जाए। पिछले वर्ष उन्होंने मुझे इसी निमित्त निमंत्रण भेजा। कुमारसभा की गतिविधियों से मैं थोड़ा बहुत परिचित था, जैथलिया जी की लगन के कुछ किस्से भी मैं सुन ही चुका था। उनकी कर्मशीलता की कुछ कहानियाँ आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जी से सुनी थी, जिन दिनों वे हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल थे। परन्तु उनसे प्रत्यक्ष मिलने का अवसर कभी प्राप्त नहीं हुआ था। कोलकाता पहुँचने पर उन्होंने जिस प्रकार व्यक्तिगत ध्यान देकर मेरे कार्यक्रम की रचना की उससे उनके कार्य करने की शैली का पता चलता है। कोलकाता पहुँचने से लेकर वापिस जाने के एक-एक क्षण की चिन्ता उन्होंने की। उनके निर्देश पर श्री सत्येन्द्र सिंह अटलजी, जो राष्ट्रीय सिक्ख संगत से जुड़े हैं, वे मेरे भोजन से लेकर दैनिक समाचार पत्र मिला या नहीं, तक की चिन्ता करते रहे। जिस होटल में ठहरा था, उसमें जैथलिया जी स्वयं आये, यह जानने हेतु कि भोजन रुचिकर है या नहीं।

जैथलिया जी की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अभिरुचियाँ कुमारसभा पुस्तकालय के प्रकाशनों में परिलक्षित होती हैं। पुस्तकालय द्वारा समय-समय पर प्रकाशित की जाने वाली स्मारिकाएँ शोध छात्रों तक के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। सद्य प्रकाशित राम मनोहर लोहिया स्मारिका की सामग्री इसी कोटि की है।

पश्चिमी बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की विकास यात्रा में भी जैथलिया जी की भूमिका अग्रणी है। वे अपने कॉलेज के दिनों से ही प्रदेश में भारतीय जनसंघ की जड़ लगाने में महत्वपूर्ण हस्तक थे। आज वे भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष हैं साथ ही आर्थिक मामलों की समिति के चेयरमैन भी हैं। लेकिन राजनीति में रहते हुए भी वे सत्ता से निर्लेप हैं। राजनीति उनके लिये सेवा का माध्यम है। आम आदमी के सुख दुःख से जुड़ने का रास्ता। जैथलिया जी वैचारिक आधारभूमि पर राजनीति के कार्यकर्त्ता हैं। सत्ता के लिये राजनीति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिये राजनीति, उनका ध्येय-वाक्य है।

लम्बे अरसे से पश्चिमी बंगाल में रहने और उसके सामाजिक सांस्कृति प्रवाह में गतिशील होने के बावजूद जैथलिया जी राजस्थान में अपनी मातृभूमि की जड़ों से कटे नहीं। राजस्थान में डीडवाना तहसील के ग्राम छोटीखाटू से उनका सम्बन्ध निरंतर बना हुआ है। छोटीखाटू में स्थापित विशाल पुस्तकालय की स्थापना एवं विकास में भी उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रत्येक वर्ष विजयदशमी के उपरान्त वहाँ विशाल साहित्यिक उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिसमें हिन्दी एवं राजस्थानी के प्रमुख एक-एक साहित्यकार को प्रतिवर्ष पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की स्मृति में सम्मानित किया जाता है।

सांसारिक एषणाओं से मुक्त होने की बात प्रायः कही जाती है। वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम का महत्व भी शास्त्रों में सर्वविदित ही है। लेकिन कोई बिरला उदाहरण ही होता है जब कोई इस आश्रम की व्यवस्था के अनुशासन का पालन करता हुआ स्वयं को पारिवारिक दायित्वों से तोड़ता-तोड़ता सामाजिक दायित्व से जोड़ने लगता है। कोलकाता में जो जुगलकिशोर जैथलिया जी को जानते हैं, जिन्होंने उनके सफल वकालत व्यवसाय को नजदीक से देखा है वे भी हैरान हैं कि उन्होंने कितनी सहजता से ६५ वर्ष पूर्ण करते ही स्वयं को तृतीय आश्रम से जोड़ लिया। जैथलिया जी ने जीवन के ७५ बसन्त देख लिए हैं उनकी यह जीवन यात्रा प्रत्येक मायने में सफल कही जा सकती है। कहीं प्रायश्चित का कोई मुकाम नहीं, कोई ऐसा दाग नहीं जिसे छिपाने का प्रयास किया जा सके। जैथलिया जी से अभी भारतीय समाज को बहुत आशा है। उनकी जीवन यात्रा नई पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक तो है ही उसमें उत्साह एवं ऊर्जा का संचार करने वाली भी है। उनका कर्म और संघर्ष ही उनका अभिनन्दन है। उनके लिए शत-शत मंगल कामना। ●

सम्पर्क : चेयरमैन, भीमराव अंबेडकर चेयर, हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, समर हिल,
पो. शिमला-१७१००५ (हिमाचल प्रदेश), मो.: ०९४१८१७७७७८

७५ वर्ष के युवक जुगलजी : यादों के आइने में

✍ अजीत विश्वास

१९५९-६० से ही जुगलजी से मेरा परिचय रहा है जब वे कलकत्ता विश्वविद्यालय में कानून के विद्यार्थी थे एवं बड़ाबाजार अंचल में संघ का कार्य भी सम्हालते थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय में लॉ-कॉलेज में जुगलजी विद्यार्थी परिषद के कार्य में भी सक्रिय थे। १९६२ ई. में चीन-भारत युद्ध के समय देश में काफी हलचल हुई। नाना प्रकार के कार्यों के माध्यम से जनजागरण का कार्य चलाया गया। इसमें भी जुगलजी ने काफी हाथ बँटाया। दो विराट पथ संचलन भी निकाले गए। कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रांगण में कम्यूनिष्टों के विरोध की परवाह न करते हुए, युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में एक शहीद वेदी का निर्माण किया गया, कुछ संघर्ष भी हुआ, उसमें जुगलजी अग्रिम पंक्ति में थे क्योंकि वे वहाँ के छात्र रहे थे।

हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध जून १९६४ में एक माह व्यापी संघ के शिक्षण वर्ग में आया जो रिसड़ा के रामकृष्ण आश्रम में अनुष्ठित हुआ था। मैं एवं जुगलजी दोनों ही उसमें प्रथम वर्ष के शिक्षण हेतु सम्मिलित हुये थे। उन्नत बलिष्ठ शरीर देखने से ही अच्छा लगता था। खूब अच्छा व्यवहार, शिविर में एक मास रहने के कारण अनेक विषयों पर परस्पर वार्तालाप भी हुआ। शिविर में श्री गुरुजी, एकनाथ जी रानाडे, दत्तोपंत ठेंगड़ीजी भी ३-३ दिन के प्रवास हेतु आये थे। इनके साथ घनिष्ठ रूप से मिलने एवं संघ दर्शन को गहराई से समझने का मौका मिला। शिविर में जुगलजी शारीरिक परीक्षा में भी प्रथम आये थे, बौद्धिक में तो वे अच्छे थे ही।

बाद में जब विवेकानन्द शिला स्मारक समिति के अन्तर्गत विवेकानन्दजी की स्मृति में कन्याकुमारी के छोर पर शिला स्मारक निर्माण हेतु अर्थ संग्रह अभियान कलकत्ता में चला, उसमें भी जुगलजी पूर्ण सक्रिय थे। इस अभियान का नेतृत्व श्री एकनाथजी रानाडे के हाथ में था एवं बंगाल में समिति के अध्यक्ष थे प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रमेशचन्द्र मजुमदार। जुगलजी संघ कार्य के साथ-साथ अन्य अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक कार्यों से भी जुड़े

हुए थे। साहित्य के प्रति अनुराग के कारण वे बड़ाबाजार अंचल के विभिन्न पुस्तकालयों से जुड़े हुए थे। १९७३ में उन्होंने श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंत्री के रूप में दायित्व सम्हाला। १९७५ में आपातकाल के समय सारे देश में जब इन्दिराजी ने मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात किया, संवाद पत्र, रेडियो, टी.वी. सभी को नियन्त्रित किया गया, लोकसभा को पंगु बना दिया, रातों-रात जयप्रकाश नारायण, मुरारजी देसाई, अटलबिहारी वाजपेयी एवं कलकत्ता के हरिपद भारती, डॉ. सुजीत धर एवं नरेश गांगुली सहित १ लाख स्वयंसेवकों को देश भर में बन्दी बना लिया गया। उस काल में १९७५ दिसम्बर में कलकत्ता में ३५० स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह किया एवं जेल गये। विप्लव के शहर कलकता में किसी भी विप्लवी ने सत्याग्रह का साहस नहीं किया। उस समय आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, जुगलजी एवं उनकी मित्रमंडली ने श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से हल्दीघाटी की ४००वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में एक विराट 'वीररस कवि सम्मेलन' का आयोजन किया जिसमें श्यामनारायण पाण्डेय सहित वीररस के वरिष्ठ कवि उपस्थित हुए। पूरे सभागृह में देश भक्ति का ज्वार उठ चला जिसके परिणाम स्वरूप पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री नन्दलालजी को जेल जाना पड़ा, उनकी प्रेस बन्द कर दी गई एवं आपातकाल हटने पर ही उसे खोला गया। जुगलजी सहित अन्य कई कार्यकर्त्ताओं पर भी वारंट निकले हुए थे। उन्हें भूमिगत होना पड़ा।

आपात काल उठने पर जुगलजी के नेतृत्व में कुमारसभा पुस्तकालय के संयोजन में स्टेट्समेन के सम्पादक श्री इरानी, आनन्द बाजार पत्रिका के गौरकिशोर घोष एवं वरुण सेनगुप्ता प्रभृति का सार्वजनिक सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम ने बंगाल के जनजीवन पर एक विशेष छाप छोड़ी।

१९८९ ई. में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रतिष्ठाता डॉ. हेडगेवारजी की जन्म शताब्दी पर जुगलजी के नेतृत्व में कुमारसभा पुस्तकालय ने डॉ. हेडगेवारजी की स्मृति में एक वार्षिक पुरस्कार की योजना बनाई जिसमें भारत की सनातन प्रज्ञा को राष्ट्रजीवन के विभिन्न आयामों में सुप्रतिष्ठित करने हेतु कर्मरत किसी भी व्यक्ति या संगठन को सम्मानित करने का निश्चय किया। प्रथम सम्मान संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित श्रीधर भास्कर वर्णेकरजी को दिया गया एवं दन्तोपंत ठेंगड़ी, अशोक सिंहल, के आर. मलकानी, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी, मुजफ्फर हुसैन, डॉ. प्रताप चन्द्र चन्द्र, श्री श्री राघवेश्वर महाभारती, डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र एवं बाबा योगेन्द्र जैसे वरिष्ठ चिन्तकों को सम्मानित किया गया। यह क्रम अबाध रूप से जारी है।

इसके पूर्व स्वामी विवेकानन्द की १२५वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में विवेकानन्द सेवा सम्मान भी जुगलजी के ही प्रयत्न से कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रारंभ किया गया। प्रथम सम्मान नागालैण्ड की संग्रामी रानी गाईदिन्ल्यू को दिया गया। बाद के नामों में स्वामी

लक्ष्मणानन्दजी, बालासाहब देशपांडे, अण्णा हजारे, दामोदर गणेश बापट, स्वामी असीमानन्द, डॉ. नित्यानन्द, जोहड़ बाबा के नाम से प्रसिद्ध राजेन्द्र सिंह, स्वामी संवित सोमगिरिजी एवं आद्यापीठ के मुरालभाई प्रभृति प्रमुख हैं। यह भी २६ वर्षों से निरन्तर जारी है।

वीर सावरकर की स्मृति में भी जुगलजी के सम्पादन में जन्म शताब्दी वर्ष में भी बंगला एवं हिन्दी में पुस्तक तथा स्मारिका निकाली गई एवं १२५वीं जन्म जयन्ती पर २००९ ई. में भी एक वृहत् स्मारिका प्रकाशित की गई जिसका देश भर में स्वागत हुआ। 'जातीयतावादी अध्यापक व गवेषक संघ' के साथ एक अंग्रजी-बंगला द्विभाषी पुस्तक 'वीरसावरकर, डॉ. हेडगेवार एवं नेताजी सुभाष चन्द्र बोस' के जीवन पर भी कुमारसभा पुतकालय के सहयोग से निकाली गई जिसमें जुगलजी का सराहनीय सहयोग रहा।

श्री गुरुजी की जन्मशती पर भी अखिल भारतीय लेख प्रतियोगिता का आयोजन कुमारसभा पुस्तकालय के संयोजन में हुआ, इसमें भी जुगलजी का ही नेतृत्व था। पूर्व क्षेत्र से सर्वाधिक निबन्ध आये।

१९९४ ई. में जब जुगलजी कुमारसभा पुस्तकालय के अध्यक्ष थे, आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री के संचालन में श्री अटलबिहारी वाजपेयी (पूर्व प्रधानमंत्री) की कविताओं का स्वयं श्री वाजपेयीजी ने एकल काव्यपाठ किया, जो देश भर में पहला एवं अनूठा रहा।

कोलकाता में वीरशिरोमणि महाराणा प्रताप की २० फुट ऊँची कांस्य मूर्ति जुगलजी के प्रयत्नों का ही फल है। सरदार पटेल की १२ फुट ऊँची कांस्य मूर्ति की स्थापना में भी आपका सहयोग रहा।

वे कई महत्वपूर्ण पुस्तकों के सम्पादक भी हैं एवं विभिन्न सामयिक विषयों पर समाचारपत्रों में लेख भी लिखते रहते हैं। सुवक्ता एवं अध्ययनशील हैं। उनकी ऊर्जा एवं परिश्रम को देखकर चकित हो जाना पड़ता है। वे एक साथ कई सेवाभावी संस्थाओं से भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। विचारों में स्पष्ट एवं नीति में दृढ़ हैं। भगवान से प्रार्थना है कि उन्हें स्वस्थ रखें एवं दीर्घायु करें ताकि वे भावी पीढ़ी का भी मार्गदर्शन करते रहें। ●

सम्पर्क : जी-३/१६, पूर्वासा हाउसिंग, १६० मानिक तल्ला मेन रोड, कोलकाता-७०० ०५४
मो. ०९३३९८४१९३७

आदर्श नेता एवं समर्पित समाजसेवी श्री जुगलजी

✍ रीतेश तिवारी
सचिव, भाजपा पश्चिम बंगाल

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय और उसके पदाधिकारियों को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ क्योंकि इस संस्था ने श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी के ७५वें जन्मदिन को अमृत वर्ष के समारोह रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इसके लिए सभी लोग बधाई के पात्र हैं। मेरा जुगल जी से परिचय १९७९ ई. के लोकसभा के चुनाव के दौरान कलाकार स्ट्रीट में पार्टी के चुनाव कार्यालय में पहली बार हुआ, उसके बाद कई बार हमलोग मिलते रहे। उस समय मैं उन्हें पार्टी के नेता के रूप में ही जानता था। कई बार राजनैतिक क्षेत्र में काम करते समय मतान्तर भी हुआ। पर उसके बावजूद उन बातों को तुरंत भुला कर, भविष्य की योजनाओं को कैसे पूरा किया जा सके उसके गुर वे मुझे हमेशा सिखाया करते।

जुगल जी अपने जीवन में वकील, राजनैतिक नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, साहित्यकार और एक कुशल प्रशासक के रूप में समाज में अपनी साख को बनाने में सफल रहे हैं। उन्होंने राजनीति में भी अपनी नीति और आदर्श के मामले में कभी भी समझौता नहीं किया। वे हमेशा से ही अपनी बात को दृढ़ता के साथ रखा करते थे कभी भी यह नहीं सोचते थे कि इससे सामने वाला नाराज भी हो सकता है। इसीने उनकी शख्सियत को और भी मजबूती प्रदान की। वे राजनीति के अलावा भी अनेक सामाजिक संस्थाओं के साथ जुड़े रहे। मूल रूप से राजस्थान के रहने वाले होते हुए भी उनके हिंदी साहित्य के लिये किये गए कार्यों के लिए कोलकाता का हिंदी भाषी समाज उनका कृतज्ञ रहेगा। जुगल जी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी द्वारा उनकी ही कविताओं का 'एकल काव्य पाठ' श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंच से करवाया। जो मेरे साथ-साथ सभी कोलकातावासियों के लिए गर्व का विषय बना रहेगा। उस समय वे पुस्तकालय के अध्यक्ष थे।

वे राजनीति में पश्चिम बंगाल भाजपा के लम्बे समय से उपाध्यक्ष हैं, साथ ही अर्थ-व्यवस्था का भी काम देखते रहे हैं। राजग सरकार के समय नेशनल इन्स्योरेंस एवं नेशनल

बुक ट्रस्ट के निदेशक भी रहे। कई केंद्रीय नेताओं के निकट सम्पर्क में भी रहे लेकिन उनमें कार्यकर्त्ता भावना आज भी वही है जो वर्षों पहले हुआ करती थी। एक बहुत पुरानी बात आज मैं बताना चाहता हूँ राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व उप-राष्ट्रपति स्वर्गीय भैरोंसिंह शेखावत उनकी कार्य पद्धति से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपने मित्रों द्वारा तैयार एक ट्रस्ट का दायित्व जुगलजी को देना चाहा लेकिन उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। इसके अलावा आज महाराणा प्रताप की भव्य मूर्ति कोलकाता में स्थापित करने के लिए उनका प्रयत्न सर्वजन विदित है। सरदार पटेल की मूर्ति स्थापना में भी वे सहयोगी रहे हैं। ऐसी ढ़ेर सारी कृतियाँ हमारे ध्यान में है। उन्होंने कभी विचारधारा के विषय में समझौता नहीं किया। एक वैचारिक आन्दोलन के रूप में ही कुमारसभा पुस्तकालय से सावरकरजी, विवेकानंदजी, श्यामाप्रसादजी, दीनदयालजी, हेडगेवारजी और गोलवलकरजी के ऊपर कार्यक्रम करके इन विभूतियों की कृतियों को सारे समाज को बताने का काम आज भी अनवरत करते जा रहे हैं। इसके साथ ही विचारधारा से जुड़े लोगों का सम्मान कर उनको प्रोत्साहित करने का काम लगातार बिना किसी प्रचार के किये जा रहे हैं ताकि लोगों में विचारधारा की सही समझ एवं जुड़ाव जारी रहे।

अत: मैं परमपिता परमेश्वर से जुगल जी के दीर्घायु होने की प्रार्थना करता हूँ ताकि देश, समाज, भाजपा, पुस्तकालय और साहित्य की सेवा और लम्बे समय तक करते रहें। ●

सम्पर्क : भाजपा कार्यालय, ६, मुरलीधर सेन लेन, कोलकाता-७३, मो. ९८३००२१०१३

एक तपस्वी : जीवन-भर जो अविचल चला !

✍ शैवाल सत्यार्थी

जैथलियाजी के अमृत-महत्सव के मंगलमय क्षणों में, उन्हें मैं मंगल आशीष भी दे सकता था - कारण, उनसे मैं तीन वर्ष बड़ा हूँ। किन्तु, ऐसा मैं भूलकर भी करना नहीं चाहूँगा... चौंकिएगा नहीं, जब से उन्हें मैंने बड़ा भाई मान लिया था.. भला मात्र तीन वर्ष - अर्थ भी क्या रखते हैं -गणित के तमाम अर्थों में, वे मुझसे बहुत बड़े हैं - देश के लिए समर्पण में, भारतमाता के लिए वैचारिक-शारीरिक तर्पण में, यश और कीर्ति में, सभी अर्थों में.. किन्तु हाँ, छोटे भाई के नाते, बड़े भाई के स्वरूप एवम् शतायु जीवन की कामना के लिए मैं अपने हृदय की तमाम शुभकामनाएँ, जीवन-भर का संचित स्नेह उन पर न्यौछावर कर सकता हूँ - कर रहा हूँ।

अब थोड़ा पीछे की ओर लौटता हूँ (नवम्बर २००३ ई.) ....सारे तीरथ बार-बार, गंगासागर एक बार - इस मंत्र को धारण कर हम तीन : मैं, पत्नी श्रीमती रश्मि और कवि-मित्र प्रकाश वैश्य, कलकत्ता (अब जो कोलकाता है) के लिए ट्रेन में बैठ गए हैं ... वहाँ पहुँच भी गए, अब समस्या यह कि इस विराट महानगर में - जाएँ तो जाएँ कहाँ ?

प्रकाश दो-एक धर्मशालाओं के पते साथ ले आया था। वहाँ पहुँचे तो सबने हाथ खड़े कर दिए... और तब ही, डूबते को तिनके का सहारा, तिनका नहीं, जब मिले तो हिमालय - से विराट, गंगा सदृश... निर्मल कविवर जलज की पंक्ति, जो कभी निरालाजी महाराणा प्रताप के लिए उन्होंने लिखी थीं, कोलकाता के इस दिव्य-पुरुष को देख, मेरी यादों में उमड़ आई - सचमुच बहुत निराला है व्यक्तित्व तुम्हारा, देह बज्र से और प्राण निर्मित पराग से!) वे जुगलजी याद आ गए। उनसे पत्राचार था। उनके आत्मीय पत्र, मेरी बहुमूल्य निधि हैं। फोन नं. पास था ही, तुरन्त लगा दिया। बोले-बिल्कुल चिन्ता न करें, मैं अभी व्यवस्था करता हूँ। उन्होंने अपने एक सुपरिचित श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी जी, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अत्यन्त निष्ठावान स्वयंसेवक हैं, को भेजा। संघ की प्रातःकालीन शाखा से सीधे ही वे हमारे पास चले आए थे - वही खाकी नेकर और सफेद शर्ट में। अत्यन्त सौम्य और स्नेहिल व्यक्तित्व

के स्वामी। एक झाँका वाले को उन्होंने बुलाया, सामान उसमें रखवाया, और बोले चलिए। ... एक घर की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे, तो हमने पूछा – यहाँ कहाँ ? तो उत्तर मिला – 'घर, आपका'। यह भाषा, हमने सोचा-संघ का स्वयंसेवक ही बोल सकता है ! हालाँकि उन्हें यह भी सन्देश मिला था कि जरा-सी भी परेशानी हो, तो मेरे यहाँ लिए आना। एक पूरा कमरा उन्होंने हमारे लिए आरक्षित कर दिया।

पूरे दिन थकान मिटाने के पश्चात्, त्रिलोकीजी ने बताया कि कल प्रातः आपको उनके यहाँ चलना है, भोजन भी वहीं है। हम लोग वहाँ पहुँचे। वह प्रथम-मिलन-दर्शन ऐसा था, जैसे जन्म-जन्मान्तर से परिचित हों.. समय की तमाम घड़ियों की सुइयां, जहाँ-की-तहाँ थम गई थीं... अतलुनीय प्रेम के पन्नों में, वे कुछ अनमोल क्षण, हमेशा-हमेशा के लिए दर्ज हो गये थे! तभी वहाँ, एक और बन्धुवर के प्रथम-मिलन का सुयोग बना। पत्र-व्यवहार तो उनसे पुराना था। कलकत्ता के प्रसिद्ध समाचार-पत्र छपते-छपते के बहुचर्चित दीपावली-विशेषांकों में उन्होंने, मुझे व बेटी (डॉ.) ऋचा सत्यार्थी को प्रति वर्ष छापा था। वे थे विशेषांक-संपादक, प्रसिद्ध लेखक-श्रीयुत श्रीनिवास शर्माजी। एक साथ भोजन भी हुआ, विविध विषयों पर बातचीत भी हुई। वे आनन्द के क्षण आज भी मेरी अनमोल थाती है।

जैथलिया जी से मेरा पत्र व्यवहार बहुत बरसों से रहा है। एक साहित्यकार के नाते वे श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं राजस्थान परिषद से प्रभावित स्मारिकायें एवं ग्रन्थ भेजते रहते हैं। इन निमित्त पत्राचार भी होता था। उनके पत्र मैंने सहेज कर रखे हैं। कम से कम शब्दों में सीधी सपाट पर शालीन एवं आत्मीयतापूर्ण भाषा। एक पत्र मैं यहाँ उद्धृत करना चाहता हूँ जो उनकी साहित्यिक जागरुकता का प्रमाण है।

बन्धुवर शैवालजी, सप्रेम नमस्कार। दो रचनाएँ आपकी एवं दो ऋचा जी की प्राप्त कर हर्ष हुआ। 'सीमा पर खूनी होली हो' एवं 'सौगन्ध है मुझे' ज्यादा अच्छी लगीं। बधाई... अनुमति दें तो, एक संशोधन का सुझाव है – जब खुशी-खुशी से माँ-बहनें, अर्पित करती हों धन--गहने – इस पंक्ति में धन-गहने के बजाय 'सुत अपने' करने से आगे का संदर्भ भी अच्छा बैठता है – सुत अर्पण करना, धन से ज्यादा मूल्यवान भी है.. रुचे तो, संशोधन स्वीकारें, अन्यथा कवि की मर्जी, कवि की मर्जी भला क्या करेगी – ऐसे सटीक और सार्थक सुझाव के आगे वह नतमस्तक हो गयी। उस रचना को एक स्मारिका के लिए उपयोग करने की भी अनुमति चाहता हूँ। (अनुमति कैसी ? मेरी प्रत्येक रचना, बेटी ऋचा की भी – पर हमारा नहीं, आपका कॉपीराइट है। – शैवाल।) बहन ऋचा की कविता बहुत सुन्दर बन पड़ी है। भवदीय...

एक आयकर का वकील जो रोज गणित और अंकों से खेलता है, साहित्य में भी इतनी गहरी पैठ रखे यह गर्व करने लायक बात है। उनके द्वारा सम्पादित स्मारिकायें (लगभग ५० होगी), एक-एक विषय को केन्द्रित हैं तथा शोध ग्रन्थ ही हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकों का भी सम्पादन किया है जिनमें महाकवि कन्हैयालाल सेठिया का समग्र साहित्य चार खंडों में एवं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की चुनी हुई रचनायें दो खंडों में विशेष उल्लेखनीय है।

वे अनेक प्रमुख संस्थाओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं, साथ ही भारतीय जनता पार्टी जैसे बड़े दल के पश्चिम बंगाल के वर्षों से उपाध्यक्ष भी हैं। इस उम्र में भी तनकर सीधे चलते हैं एवं युवकों की तरह रोज १०-१२ घन्टे समाज एवं देशहित के कार्य करते हैं। अपने भरे-पूरे वकालत के पेशे से तो उन्होंने आज से १० वर्ष पूर्व ही निवृत्ति ले ली थी। कार्यकर्ताओं की भी एक अद्‌भुत टीम उन्होंने अपने व्यवहार से खड़ी की है जो उन्हें इतने सारे काम एक साथ कर लेने में सक्षम बनाती है। ऐसे तपस्वी को प्रभु स्वस्थ रखें एवं दीर्घायु करें ताकि वे इसी तरह लम्बे समय तक माँ भारती की सेवा कर सकें। ●

सम्पर्क : समर्पण प्रिंटर्स, भारत टॉकिज रोड, शिन्दे की छावनी, ग्वालियर- ४७४००९ (म.प्र.)
मोबाइल: ०९४२४६०२६६३

साहित्य चिन्तक, लोकसेवी कर्मयोगी श्री जैथलियाजी

✍ ओंकार श्री

'क्रियावान सः पंडितः' यानी जो क्रियारत है, वह पंडित है। गीता में भी कहा है –

यस्य सर्वे समारम्याः काम संकल्प वर्जितः।
ज्ञानाग्नि दग्धकर्माणं तमाहु पंडितं बुधा।।

अर्थात् जिसके समस्त कार्य बिना कामना और संकल्प के होते हैं तथापि जिनके समस्त कर्म ज्ञान की अग्नि के द्वारा भस्म हो गए हैं, उनको ज्ञानीजन पंडित कहते हैं। पंडित समदर्शी होता है, यही गुण योगी का होता है। यह शब्द किसी वर्गविशेष का बहुमान नहीं है। इस कसौटी पर मैं जिससे खरा उतरता देखता हूँ वो हैं कलकत्ता महानगरी में प्रवासित राजस्थानी मूलवासी श्री जुगलकिशोर जैथलिया, जो निष्काम सेवा का प्रतिक या सिम्बल हैं।

सच्चे अर्थों में कर्मयोगी हैं श्री जैथलिया। सच पूछा जाए तो बहुत से मान-सम्मान, प्रतिष्ठा-पुरस्कार पाने पर भी वे इसकी अंधी दौड़ से सर्वथा परे हैं। श्री जैथलिया ने समाज हितार्थ ही अपनी फलती-फूलती आयकर सलाहकर की सार्थक स्थिति को स्थितप्रज्ञ भाव से समाज के सभी वर्गों की सेवा हेतु स्वेच्छा उत्सर्ग कर हिन्दू संस्कृति व आध्यात्म का एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है। इसलिए इस निष्काम कर्मयोगी बहुमान के वे सात्विक अधिकारी हैं। यह वस्तु सत्य है। प्रशस्ति नहीं मांड रहा हूँ मैं, इनके लिए किसी हैतुक से।

सेवा संस्थानों के केन्द्रीय पुरुष : ८-९ वर्ष के बाल्यकाल में अपने मातृ-कस्बे छोटीखाटू में – संघे शक्ति कलियुगे का मन्त्र धार, ग्राम युवकों की टोली खड़ी की। सन् १९५३ ई. में कलकत्ता आने पर लॉ कॉलेज (१९५८-५९) में विद्यार्थी परिषद के आधार स्तम्भ बने। इसी संदर्भ में डॉ. मुरली मनोहर जोशी जो उस समय विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे, सम्पर्क आया। विद्यार्थी रहते हुए ही जनसंघ जैसी राष्ट्रवादी पार्टी से भी सम्पर्क बना एवं पं. प्रेमनाथ डोगरा एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे वरिष्ठ लोगों से सम्पर्क बना।

आज तो आप शनैः शनैः कोलकाता की अनेक जनहितार्थी संस्थानों से जुड़कर उनके केन्द्रीय पुरुष बन गए हैं। प्रदेश भाजपा के भी आप वर्षों से उपाध्यक्ष हैं। राजस्थान परिषद जिसके प्रयत्न से कोलकाता में महाराणा प्रताप की भव्य काँस्य मूर्ति लगी, के भी आप उपाध्यक्ष हैं।

जन चेतना के निर्भीक लेखक और कवि:

लोक सेवक एवं कुशल संगठक होने के साथ-साथ श्री जैथलिया हिन्दी लेखन प्रतिभा के भी अब तक रहे हैं 'अज्ञात द्वीप' पर जो भी लिखा है उसमें राष्ट्रीय स्वाभिमान के स्वर प्रखर रूप से मुखर हैं। आपके हृदय में कविता की सर्जना प्रेरित हुई दसवीं कक्षा में। कलकत्ता आने पर वह और भी खिली-पनपी एवं सन्मार्ग जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्र में इनकी कई कवितायें एवं लेख छपे।

शान्ति शीर्षक कविता का मूल स्वर है भारत चेतना का। देखें -

"शान्ति विश्व को तभी मिलेगी, जब भारत जागेगा।" और यह काल सत्य है महर्षि अरविन्द, योगीराज विवेकानन्द, विश्वकवि रवींद्र और दक्षिण भारत के जनकवि वल्लतोल का। कविताएँ प्रस्तुत हैं -

वेद ऋचायें जब गूंजेगी, तमसपूर्ण भागेगा,
शांति विश्व को तभी मिलेगी, जब भारत जागेगा।
पश्चिम जिसका तत्वज्ञान, सुख भोगों पर आधारित,
जिसकी सारी राजनीति, छल-बल तिकड़म से प्रेरित।
उनके आडम्बर से जग का कल्याण न होगा,
केवल छलना से मानवता का परिणाम न होगा।

कवि-सत्य इसे कहते हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ सहित समस्त विधायी सदनों में लाखों पृष्ठ छपे शाब्दिक शान्ति प्रलापों के द्वारा लोकतन्त्र की आड़ में एवं अंतिम पंक्ति में खड़े प्रवंचित व्यक्ति के विकास एवं सुरक्षा के नाम पर प्रचुर संहारक शस्त्रों का जखीरा खड़ा कर सभी समर्थ देशों ने केवल छलावा ही किया है पूरी विश्व मानवता के साथ। यह कविता झनझनाती हुई इसका समाधान प्रस्तुत करती है। देखें -

चिर अशान्ति की दीवालों का तब ही होगा भेदन,
जब अन्तरतम में जागेगा, पर दुख का संवेदन।
ओढ़ मुखौटा स्वांग रचा, जो शान्ति-शान्ति चिल्लाते,
रोज शान्ति हित सम्मेलन के जाल रचाते जाते।

शेष ढाक के तीन पात, छल से क्या बुद्ध बनेगा,
शान्ति-विश्व को तभी मिलेगी, जब भारत जागेगा।

आगे भी इसी तरह के प्रेरक भाव है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आलेख जगाती यह कविता देश के करोड़ों लोगों की अन्तरात्मा का ही स्वर है। इन्हीं भावों की एक अन्य कविता शान्ति चाहिए? के स्वर भी देखें -

शान्ति चाहिये हमें किन्तु वह हर कीमत पर नहीं चाहिए,
शान्ति चाहिए स्वाभिमान की, मरघट वाली नहीं चाहिए।

साहित्य की इसी सहित-शक्ति के उपासक हैं कवि श्री जैथलिया।

इनके लेखों का स्वर भी वैसाही प्रखर राष्ट्रवादी एवं संस्कृति की पुनर्स्थापना का है। एक लेख का शीर्षक है-इक्कीसवीं सदी को नोच रहा है नंगापन। वे इसके आगे कहते हैं - समृद्धि के संस्कृति-विहीन होने का यह स्वाभाविक परिणाम है। हम सब जानते हैं कि 'ग्लोबलाइजेसन' के नाम पर मानव देह को किस प्रकार उपभोक्ता वस्तु बनाकर बाजार में बिकने के लिए खुला छोड़ दिया गया है। संचार माध्यमों से ऐसा परोसा जा रहा है मानो - 'जो बिके वे निहाल, जो न बिके वे बेहाल'। जैथलियाजी कहते हैं - 'हमारे समाज में प्रेरक पुरुषों का आज भी अभाव नहीं है। आवश्यकता है हमें कुछ बिगड़ैल स्वच्छन्दतावादियों के साथ खड़े रहने की अपनी मजबूरी को अपने कन्धों से झटकने की। यह हम कर सकते हैं करके दिखायें'। प्रसन्नता का विषय है कि जैथलियाजी के सभी प्रमुख लेख एवं कवितायें इस ग्रन्थ के अन्तिम खंड में पाठकों के लिए उपलब्ध कराई जा रही हैं। धर्मनिरपेक्षता, चीन की चुनौती, हिन्दुत्व एक जीवन पद्धति है के साथ जम्मू-कश्मीर पर सद्य प्रस्तुत 'पड़गांवकर रपट' पर भी बेबाक विचार इस खंड के आलेखों में प्रस्तुत है। 'जाही विधि रहे राम ताही विधि रहिये' लेख जीवन जीने के बारे में नई दिशा देने वाला है। महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के सम्पूर्ण साहित्य को चार विशाल ग्रन्थों में सम्पादित कर प्रकाशित करना इनकी दीर्घ तपस्या का ही फल है। जुगलजी भारत-भारती के ग्रन्थ भंडारों के विकास के भी महारथी हैं। राष्ट्र की पुस्तकालय संस्कृति के विकास के पुरोधा भी हैं। अपने गाँव छोटीखाटू से लेकर कलकत्ता की श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी जैसे उच्चस्थ संस्थाओं के 'ग्रन्थ बन्धु' को प्रणाम। वे शतायु हों। ●

सम्पर्क : ३-ब/१०, गुमेश्वर नगर, हिरणमगरी, सेक्टर-७, उदयपुर-३१३००२ (राज.)
मो.: ०९८२९० ६८१६६

जुगलजी व्यक्ति नहीं संस्थान हैं

✍ सत्यभगवान चाचान

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया का उनके ७५ वर्ष पूर्ति पर अभिनन्दन करने की योजना बना रहा है। इस हेतु मैं कुमारसभा पुस्तकालय को बधाई देता हूँ।

जुगलजी से मेरा प्रथम परिचय १९७४ ई. में चुरू जिला के तत्कालीन संघ प्रचारक श्री शंकरलालजी ने कराया। वे उस समय कलकत्ता आये हुए थे। मैं भी उसी वर्ष कलकत्ता आया था। उन्होंने यहाँ के एक और वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री भंवरलालजी मल्लावत से भी परिचय कराया। उसके बाद क्रमशः परिचय घनिष्ठता में बदलता गया जो आज तक अबाध रूप से चल रहा है।

१९७५ ई. में आपात स्थिति की घोषणा हुई, संघ पर भी प्रतिबंध लगा तो मैंने भी सत्याग्रह कर कारावरण किया, वहाँ मार्च १९७६ तक रहा तब छूटा। १९७७ ई. के परिवर्तनकारी चुनावों में भी सक्रिय भाग लिया। बाद में जुगलजी के निर्देशन से ही संघ कार्य के प्रसार हेतु छात्रावास सम्पर्क का काम सम्हालता था। १९८२ ई. में जुगलजी ने भाजपा के टिकट पर जोड़ाबगान विधानसभा का चुनाव लड़ा, स्वाभाविक ही मैं उनके साथ लगा रहा एवं फिर १९८५ ई. में जुगलजी के कहने से भाजपा की राज्य कार्यकारिणी, राज्य अर्थ समिति एवं राष्ट्रीय परिषद में भी सदस्य बना और जुगलजी के कारण ही श्री सुन्दरसिंहजी भंडारी, केदारनाथजी साहनी, मुरलीमनोहरजी जोशी, आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री एवं तपन सिकदरजी जैसे बड़े लोगों से निकटता का सौभाग्य मिला।

जुगलजी मेरे एवं मेरे मित्रों के सभी सार्वजनिक कामों के प्रेरणास्रोत रहे हैं। उनकी यह सीख थी कि क्षणिक भावावेश में कोई स्थाई कार्य नहीं हो सकता अतः ठीक योजना करके, वास्तविक धरातल का आकलन करके कार्य की शुरूआत करो एवं जब एकबार शुरू किया तो उससे हटो मत। समाज के कार्यों को अपने परिवार में बेटी की तरह समझो और उसका भी खर्च में एक हिस्सा रखो।

काम करते-करते कभी-कभी जुगलजी से असहमति भी हुई है पर मतभेद से कभी मनभेद नहीं हुआ। उनका स्नेह बराबर बना रहा। उन्हें भी जब कभी लगा कि किसी दूसरे का कहना ठीक था तो उन्होंने उसे स्वीकृति देने में कभी हिचक नहीं दिखाई। मैं तो उन्हें मानव नहीं, महामानव मानता हूँ। श्री भंवरजी जैसे समर्पित कार्यकर्ता के अचानक चले जाने से जो रिक्तता आई, उसे जुगलजी ने ही भरा। वे मात्र व्यक्ति नहीं, संस्थान हैं। वे स्वस्थ रहकर सौ वर्ष जीयें एवं हम सभी का मार्गदर्शन करते रहें यही ईश्वर से प्रार्थना है। ●

सम्पर्क : ७-१-६९/१ए, डी.के. रोड, अमीर पेट, हैदराबाद-५०००१६, मो.: ९४४०८९३५२१

समाजसेवा के लिए समर्पित श्री जैथलिया

✍ सीताराम महर्षि

श्री जुगलकिशोर जैथलिया का नाम सुनते ही मुझे अपने एक शेर का स्मरण हो आता है-

जिन्दगी का हर कदम रख इस तरह प्यारे
रोशनी का दायरा कुछ और बढ़ जाये।

जैथलियाजी के हर कदम पर रोशनी का दायरा बढ़ता ही गया है। जन्म से लेकर अब तक आपने निरन्तर समाज सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने जिस क्षेत्र में भी कदम रखा, अपने निष्काम भाव से उस क्षेत्र को अनुकरणीय एवं प्रेरणास्पद बना दिया।

सबसे पहले आपने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक के रूप में समाजसेवा का कार्य आरम्भ किया। ८-९ वर्ष की उम्र में आप संघ से जुड़े और आजतक वह जुड़ाव उसी प्रकार बना हुआ है। कोलकाता में आपने संघ कार्य की अभिवृद्धि के लिए निरन्तर समर्पण भाव से काम किया। संघ के अलावा आपने जनसंघ और भाजपा के माध्यम से राजनीति में शुचिता के महत्व को प्रतिपादित किया। आपकी कार्यकुशलता से प्रभावित होकर अनेक सार्वजनिक संस्थाओं ने आपको महत्वपूर्ण पद देकर आपकी सेवा से अपने स्वरूप को निखारने में सफलता अर्जित की। आपने विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से समाज की अतुलनीय सेवा की। सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के अलावा आपने साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। आपने साहित्य के प्रति लोगों का रुझान पैदा करने की दृष्टि से छोटीखाटू में सार्वजनिक हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की। इस कार्य में उनको अपने अभिन्न मित्र बालाप्रसादजी जोशी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। पुस्तकालय द्वारा प्रत्येक वर्ष हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के प्रख्यात लेखकों को पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। हिन्दी पुरस्कार पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पावन स्मृति में और राजस्थानी पुरस्कार महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की स्मृति में प्रदान किये जाते हैं। अबतक भारत के अनेक लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार पुस्तकालय की ओर से सम्मानित किये जा चुके हैं। और इन समारोहों में अनेक बड़े साहित्यकार, समाजसेवी एवं राजनेता पधार चुके हैं।

आपने १९७२ से १९७६ तक सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय के मंत्री रहकर पुस्तकालय की अनुपम सेवा की है। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंत्री एवं अध्यक्ष बनकर आपने पुस्तकालय के रूप में आमूल-चूल परिवर्तन करने में सफलता अर्जित की है। आपके अथक प्रयास एवं सहयोगियों के अनुपम सहयोग से श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय को माननीय अटलबिहारी वाजपेयी के एकल कविता-पाठ का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है।

जैथलियाजी की हिन्दी सेवा एवं समाजसेवा से प्रभावित होकर देश की अनेक संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है। आपके द्वारा कोलकाता में जो कार्य सम्पादित हुए हैं, उनकी एक लम्बी सूची है। जैथलियाजी की सेवा को शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता।

श्री जैथलियाजी आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं। मैं पिछले अनेक वर्षों से उन्हें जानता हूँ। अनेक बार उनसे मिलना हुआ है। उनका आत्मीय-भाव अविस्मरणीय है। जैथलियाजी निष्काम भाव से काम करनेवाले कर्मयोगी हैं। वैसे तो मैं कोलकाता में अनेक बार मिल चुका हूँ, किन्तु उनके साथ रहने और उनको अच्छी तरह समझने का अवसर उस समय मिला जब बन्धुवर किशोर कल्पनाकांत को पंडित दीनदयाल उपाध्याय साहित्य पुरस्कार मिला था। जब किशोरजी पुरस्कार लेने गये तो मुझे भी अपने साथ ले गये। उस समय जैथलिया के अलावा बालाप्रसादजी जोशी, बेतालाजी एवं अन्यान्य कार्यकर्त्ताओं से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कार्यकर्त्ताओं की वैसी टीम कम ही देखने में आती है। उस समय श्री जैथलियाजी ने उस सब साहित्यकारों के बारे में विस्तार से बताया, जो छोटीखाटू पधार चुके थे। आदरणीय महादेवी वर्मा तो इतनी प्रभावित हुई कि एक दिन के बजाय तीन दिन तक छोटीखाटू में रुकी रहीं। दूसरे साहित्यकार भी पुस्तकालय के समस्त कार्यकर्त्ताओं के व्यवहार से अत्यधिक प्रभावित हुए और छोटीखाटू की मधुर स्मृतियां लेकर लौटे।

सार रूप में कहूँ तो यही कहा जा सकता है कि जैथलियाजी की विशेषताओं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। वे देश एवं समाज को समर्पित ऐसे इंसान हैं, जो सिर्फ देना ही जानते हैं। अपना सम्पूर्ण जीवन इन्होंने राष्ट्र की सेवा में ही अर्पित किया है। इनके जीवन का प्रत्येक क्षण समाज की सेवा और देश की विभिन्न समस्याओं पर चिन्तन करते ही गुजरा है। इन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध किया है कि देश, समाज एवं राष्ट्रीय एकता के लिए मनुष्य को किस प्रकार अपने आपको समर्पित कर देना चाहिए। वे स्थित-प्रज्ञ हैं और जीवन का प्रत्येक क्षण पर-सेवा में ही लगाते हैं। उनके बारे में एक शेर से अपनी बात पूर्ण करूंगा- *'गीत गाना सहज है इन्सानियत के, बहुत मुश्किल है मगर इंसान बनना'।* ●

सम्पर्क : कृष्ण कुटीर, रतनगढ़-३३१०२२ (राजस्थान), मो.: ०९४१३२१८५८६

समर्पित सेवाभावी जैथलियाजी

✍ धनराज दफ्तरी
पूर्व महामंत्री: राजस्थान परिषद

प्रत्येक मानव के अलग-अलग उद्देश्य होते हैं। बहुत बड़ी संख्या में लोग अपना जीवन केवल रोजी-रोटी कमाने में ही खो देते हैं। कुछ लोग धन-दौलत एकत्र करना ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लेते हैं। आज के प्राय: युवकों का तो खाना-पीना और मौज-मस्ती करना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य बनता जा रहा है। बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं जो अपने जीवन को देश और समाज की उन्नति के लिए समर्पित करते हैं। ऐसे ही समर्पित लोगों में से जैथलियाजी एक हैं।

जैथलियाजी से मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क एवं परिचय राजस्थान परिषद के माध्यम से हुआ एवं उसके माध्यम से उनके साथ काम करने का भी सुअवसर मिला। हम दोनों ने संयुक्त रूप से परिषद का विधान बनाकर उसका पंजीकरण भी कराया एवं अन्य सहयोगियों के साथ विभिन्न कार्यक्रमों की रचना की। इसमें आदरणीय कन्हैयालालजी सेठिया का मार्गदर्शन एवं महावीर प्रसादजी नारसरिया का भी विशेष सहयोग मिला। राजस्थान दिवस पर प्रतिवर्ष एक उद्देश्यमूलक सुन्दर स्मारिका का सम्पादन एवं प्रकाशन मुख्यत: जैथलियाजी के जिम्मे ही प्रारंभ से रहा है।

मेरे और जैथलियाजी के राजनैतिक विचारों और सोच में मतभेद था। इस कारण लोगों में यह चर्चा का विषय भी था कि हम दोनों एक जुट होकर कैसे कार्य कर रहे हैं ? लेकिन मैंने पाया कि जैथलियाजी संस्था के हित के कार्यों में सदैव आगे और मेरे से एकमत रहते थे। उनके मन में वैचारिक अन्तर की कोई कुंठा नहीं थी। मैंने विद्यार्थी जीवन में भी संघ के कार्यकर्त्ता श्री सत्यनारायण सोमानी के साथ कार्य किया था। वह मेरा व्यक्तिगत मित्र भी था। जैथलियाजी के साथ कार्य करने के पश्चात् मेरे मन में यह विचार पक्का हो गया कि संघ के लोग संस्था और देशहित के लिए किसी के साथ भी मिलकर कार्य कर सकते हैं। उनमें हठधर्मिता या संकीर्णता नहीं है।

राजस्थान परिषद में हमलोगों ने दो कार्य करने का संकल्प किया था। राजस्थान भवन का निर्माण और महाराणा प्रताप की मूर्ति की स्थापना। पहला कार्य तो सरकारी हठधर्मिता और बाधाओं के कारण नहीं हो पाया पर दूसरा कार्य मेरे जयपुर चले जाने के बाद जैथलियाजी की लगन एवं विशेष प्रयत्नों के कारण पूर्ण हो गया। सेन्ट्रल एवेन्यू में सिर्फ भव्य मूर्ति ही स्थापित नहीं हुई, बल्कि एक पार्क एवं सड़क का नामकरण भी हो गया।

कलकत्ता में एवं अपने गाँव में पुस्तकालयों के प्रति इनका जुड़ाव साहित्य एवं ज्ञान के प्रति इनकी निष्ठा एवं प्रेम दर्शाते हैं। परिषद के तत्त्वावधान में श्री कन्हैयालालजी सेठिया के सम्पूर्ण साहित्य का सम्पादन एवं प्रकाशन जैसा कठिन कार्य पूरा कर जैथलियाजी ने राजस्थानी एवं राजस्थानी समाज की जो सेवा की है वह उनकी निष्ठा दर्शाती है।

अन्त में मैं यही कहना चाहता हूँ कि जैथलिया जी एक धैर्यवान, विवेकशील, कर्त्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी, मिलनसार एवं देश, समाज तथा ज्ञान प्रचार हेतु सम्पूर्ण रूप से समर्पित हैं। प्रभु आपको दीर्घायु करें। ●

सम्पर्क : पी-७१०, लेकटाउन, ए-ब्लॉक, कोलकाता-७०००८९, मो.: ९६८१२६२६८२

आज अपनी जिन्दगी को जिया मैंने,
आज का ये दिन तुम्हें दे दिया मैंने।

✍ श्रीमोहन तिवारी

आदरणीय जैथलिया जी के बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में कुछ भी कहना बड़ा कठिन है। सांसारिक विषयों से निर्लिप्त इस कर्मयोगी का जन्म भी ठीक उसी दिन हुआ, जिस दिन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का; शायद इसी कारण राष्ट्रपिता के कुछ गुण आपमें भी आ गए। सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले जैथलिया जी के विशाल हृदय में भी ममता का एक विराट समुद्र निरंतर उद्वेलित होता रहता है।

प्रथम दर्शन में ही अभिभूत कर देने वाले अद्भुत जादुई व्यक्तित्व के धनी आदरणीय जैथलिया जी एक सरल, सहज, सुहृद, सादगी सम्पन्न, मृदु-भाषी, स्पष्टतावादी, मिलनसार, कर्मठ तथा सहयोगी प्रवृत्ति के सज्जन व्यक्ति हैं। अपने कर्मक्षेत्र के प्रति पूरी तरह निष्ठावान होते हुए भी इन्होंने समाज सेवा को न केवल अपने कर्तव्यों की आचार-संहिता में शामिल किया, बल्कि अपनी मानवधर्मिता की दिव्यज्योति, संवेदनहीन होते मानसों के तमोमय गलियारे में विकीर्ण कर उसे ज्योतिर्मय बना दिया।

एक आयकर सलाहकार के रूप में जीवन आरंभ करने वाले आदरणीय जैथलिया जी कई सामाजिक कार्यों से जुड़े हैं। राजस्थान परिषद एवं सरदार पटेल मेमोरियल कमेटी के संस्थापकों में आप रहे हैं। आपके सहयोग से ही सरदार बल्लभ भाई पटेल की १२ फुट ऊंची एवं महाराणा प्रताप की २० फुट ऊँची भव्य कांस्य मूर्तियों का निर्माण हुआ। आप दोनों संस्थाओं के उपाध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर रहे हैं। कलकत्ता तथा देश की अनेक छोटी बड़ी संस्थाओं के विभिन्न पदों को आपने अलंकृत किया तथा उसके स्वस्थ विकास के लिए अविस्मरणीय योगदान भी दिया। आप नेशनल बुक ट्रस्ट के भी निदेशक रहे। आपके प्रयत्नों का सुफल था कि नेशनल बुक ट्रस्ट ने राजस्थानी भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ किया। तभी तो कह सकते हैं -

दूरी कहीं कोई नहीं केवल समर्पण चाहिए,
कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए।

विशाल व्यक्तित्व वाले इस महामानव की विगलित करुणा की बौछारें अबाध रूप से मेरे ऊपर मेरी किशोरावस्था से ही पड़ती रहीं। इनके सान्निध्य का अमृत फल सदैव मेरे कार्मिक एवं साहित्यिक बुभुक्षा को तृप्ति प्रदान करता रहा है।

जब कभी भी इस निश्छल मार्गदर्शक को, इस विशाल व्यक्तित्व को मैंने अपने समक्ष पाया है ज्ञान प्रकाश का ये शेर अनायास ही मेरे अंतर को गतिमान कर देता है –

दुआ का हाथ है सर पर मेरे बूढ़े दरख्तों का
शहर की धूप क्या करती, खड़ी बस हाथ मलती है।

जीवन के उत्तरार्ध में भी आपकी रगों की अक्षय ऊर्जा निरंतर आपको समाजोन्मुखी बनाए हुए है। मानव जाति के प्रति आपके अंतर का अगाध प्रेम अविरल आपकी अस्थियों को शक्ति प्रदान करता रहता है। इस जिन्दगी में आज जबकि नैतिकता के वाणप्रस्थ का दौर चल रहा है, आपका दुग्धधवल चरित्र निस्संदेह भावी पीढ़ी के लिए एक आदर्श एवं उदाहरण है। अत: आपके स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन की कामना के साथ मैं अमृत महोत्सव पर हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। ●

सम्पर्क : एस.एस. जालान पुस्तकालय, १८६, सी.आर.एवेन्यू, कोलकाता-७, मो. ९१६३९५८८४३

.....जीना इसी का नाम है !!

✍ डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव

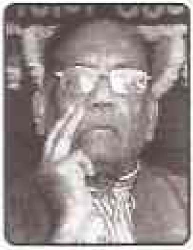

इससे पूर्व कि जुगल भाई का अभिनंदन करूँ और शुभकामनाएँ दूँ एक बात कहने से स्वयं को रोक नहीं पा रहा हूँ।

आज २ अगस्त है, अर्थात् जुगल भाई की 'अमृत जयन्ती' में अभी दो माह शेष है। संयोग से आज 'रक्षाबंधन' का पावन पर्व भी है। पर मेरे लिए आज का दिवस विशेष महत्व रखता है। वह है मेरी स्वयं की अपनी 'अमृत जयन्ती'। ठीक ७५ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश की एक नन्हीं-सी नगरी बदायूँ में जब मैंने पलकें खोलीं तो उस दिन भी राखी का ही पर्व था।

निरन्तर झमेलों और झंझटों की दुनिया में ७५ वर्ष की आयु की यात्रा कोई साधारण बात नहीं होती। इस पड़ाव तक आ पाना कोई हँसी- ठठ्ठा नहीं। बहुत कठिन और कठोर परीक्षाएँ देनी पड़ती हैं। हमारे समय में १०० अंकों के प्रश्न-पत्र में ७५ अंक प्राप्त करने पर डिस्टिंक्शन (विशेष योग्यता) लिखकर विद्यार्थी को सम्मानित किया जाता था। अब यह योग्यता तो प्राप्त कर ही ली है। आगे हरि इच्छा !

मोटे तौर पर समस्त मानव समुदाय को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। एक तो वे लोग जो केवल बड़ी-बड़ी बातें करते हैं; ऊँची-ऊँची डींगे मारते हैं और हर जगह अपना ही ढोल पीटते रहते हैं। दूसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जो केवल काम से काम रखते हैं और काम भी इतना अपने लिए नहीं, जितना परिजनों, साथियों, समाज अथवा राष्ट्र के लिए। वे स्वयं इसलिए भी अधिक नहीं बोलते क्योंकि उनका काम बोलता है। और बहुत समय तक बोलता रहता है। जुगलजी की श्रेणी सर्वविदित है। जुगलजी को यूँ तो मैं कई दशकों से जानता हूँ, उनके विषय में सुनता पढ़ता रहा हूँ, पर प्रत्यक्ष रूप में भेंट हुए अभी एक दशक भी नहीं हुआ। पर जब हुआ तो ऐसा कि पिछले ५-६ वर्षों में लगभग १० कार्यक्रमों में हम लोग सम्मिलित हुए और साथ-साथ मंच पर भी सम्मानित किए गए। इन कार्यक्रमों का क्षेत्र भी कोलकाता से लेकर राजस्थान के जिला नागौर की छोटीखाटू एवं डेगाना तक

फैला हुआ है, जहाँ वर्ष २००९ में बीसवाँ 'पं दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान' मुझे प्रदान किया गया था और अब तो ऐसा लगता है जैसे कई जन्मों का नाता हो।

जुगल भाई के पास आपकी हर समस्या का समाधान है। हर समय हर प्रकार के सहयोग को वे तत्पर रहते हैं। कवि शैलेन्द्र के शब्दों में;

'किसी का दर्द हो सके तो ले उधार,
जीना इसी का नाम है।

ऐसे संस्था रूपी पुरुषों के काम, आने वाली पीढ़ियों को भी जीने की राह सिखाते हैं। इस पर 'नजीर' अकबराबादी का एक शेर याद आ रहा है :-

'कुछ इस तरह से कारवाँ के साथ चल 'नजीर'
जब तू न चल सके, तो तेरी दास्ताँ चले'।

फिलहाल अपने आत्मीय जुगलजी के लिए –

जीवेम शरदः शतम् !! ●

सम्पर्क : विश्राम, २५५-सी, माईवाली कॉलोनी, पो. गुरुग्राम-१२२००१ (हरियाणा)
मोबाइल : ०९५८२२२२८४२

जुगलदा के लिये अमृत महोत्सव पर शुभकामनाएँ

✍ साधक उम्मेदसिंह बैद

हित-मित-मृदु व्यवहार से, अखिल-विश्व को जीत।
सिखा रहे हैं जुगलदा, सीख सके तो सीख।
सीख सके तो सीख, ज्ञान को बना आचरण।
ज्ञान नहीं व्यवहार, सही जीने का व्याकरण।
साधक ने पाये हैं स्वर, साँसों के तार से।
अखिल विश्व को जीत, मृदु-हित-मित व्यवहार से।

एक मन्त्र को साध ले, जीना सार्थक होय।
भटकन सारी व्यर्थ है, घाट-घाट ना डोल।
घाट-घाट ना डोल, 'एक' का मिलना निश्चिति।
'अनेक-चित-विभ्रान्त, संशयात्मा विनश्यति'।
साधक देख जुगलदा, साधे जटिल 'यन्त्र' को।
जीना सार्थक किया, साधकर एक मन्त्र को।

मुश्किल होता झेलना, स्व-विरोध की बात।
कभी ना देते जुगलदा, विरोधियों को घात।
विरोधियों को घात, निमन्त्रण-पत्र युद्ध का।
सर्वनाश का शंखनाद, हर पद संघर्ष का।
साधक कहना सरल है, करना मुश्किल होता।
स्व-विरोध की बात, झेलना मुश्किल होता।

निज गुण-गोपन, अन्य का करते हैं गुणगान।
गले लगाकर मित्रवत, खूब बढ़ाया मान।
खूब बढ़ाया मान, हजारों जन साक्षी हैं।
इस व्यक्ति की मित्र, तीन पीढ़ी साक्षी हैं।
साधक इसी मार्ग से होता सद्गुण रोपण।
सबका हो गुण-गान, सदा निज गुण का गोपन।

शत चन्द्रों की शोभा, स्वस्थ-व्यस्त दिनचर्या।
अनायास जन-गण कहे, सही जुगल की चर्या।
यही जुगल की चर्या, करती पुष्ट नेकता।
जन-जन की कामना जगाये, शुभ्र-एकता।
साधक शुभ-कामना यही है रवि-चन्द्रों की।
स्वस्थ-व्यस्त दिनचर्या, सभी जुगल-चन्द्रों की। ●

सम्पर्क : श्रुति शोध संस्थान, उम्मेद भवन, पहली पट्टी, लाडनूं (राज.), मो. ०९९०३०९४५०८

हमारे प्रेरणास्रोत : श्री जुगलकिशोर जैथलिया

✍ श्रीराम तिवारी

पुस्तकाध्यक्ष: सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय

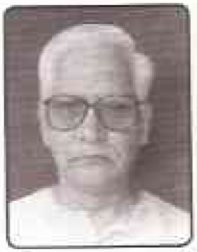

श्रद्धेय श्री जैथलियाजी से मेरा सम्पर्क सन् १९७२ ई. से है जब आप कोलकाता के स्वनामधन्य सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय की कार्यकारिणी समिति में मंत्री के पद पर मनोनित किये गये। जब आप पुस्तकालय में मंत्री के रूप में पधारे उस समय पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों को अपने सहज एवं सरल स्वभाव से प्रथम दिन ही अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। किसी को आभाष ही नहीं हो पा रहा था कि आप पुस्तकालय के विशिष्ट पदाधिकारी हैं। सभी के साथ समान रूप से भ्रातृत्व का व्यवहार करते रहे। आज भी वही सद्भावना, स्नेह और आदर पूर्ववत मिल रहा है।

श्रद्धेय श्री जैथलियाजी का मेरे प्रति स्नेह दिन पर दिन प्रगाढ़ होता गया। आपने अपने गाँव श्री छोटीखाटू में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की है तथा वहाँ पर हिन्दी साहित्य के शीर्षस्थ मनीषी जिनमें उपन्यासकार गुरुदत्त, पद्मभूषण महीयसी महादेवी वर्मा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कवि भवानीप्रसाद मिश्र, जैनेन्द्र कुमार, कन्हैयालाल सेठिया, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, नरेन्द्र कोहली आदि पदार्पण कर चुके हैं। कोलकाता में रहते हुए आप प्रत्येक वर्ष छोटीखाटू पुस्तकालय के लिए स्मारिका का प्रकाशन तथा साहित्यिक अनुष्ठान निरन्तर करते हैं। आपकी इन साहित्यिक गतिविधियों से मैं काफी प्रभावित हुआ और मेरे मन में भी यह अकांक्षा जगी कि मैं भी इसी तरह का कुछ कार्य अपने गाँव में भी करूँ। आपकी सद्प्रेरणा से अपने गाँव बड़ौरा में शिक्षायतन माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की।

सन् १९७५ ई. के आपातकाल के समय पूरे देश में भय का वातावरण था। उस समय श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्वावधान में तथा आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के संयोजकत्व में एक विराट वीर-रस कवि सम्मेलन का आयोजन कर आपने आपातकाल को चुनौती दी जिसके फलस्वरूप आपको कई दिनों तक भूमिगत रह कर कार्य करना पड़ा। उसी आपातकाल में ही सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय द्वारा गोस्वामी तुलसीदासजी की जयन्ती

भी आयोजित करनी थी। मेरे सामने बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गयी कि कार्यक्रम की रूपरेखा किस प्रकार बनेगी तथा अध्यक्षता के लिए किसको आमन्त्रित किया जाय। इसी उधेड़बुन के बीच किसी के द्वारा मुझे सूचना मिली कि भूमिगत स्थिति में श्रद्धेय जी जैथलियाजी जिस जगह पर हैं वहाँ पर केवल मुझे ही बुलाया है। दूसरे दिन मैं वहाँ पहुँचा और अपने किये गये कार्यों से अवगत कराया तथा बाकी कार्यों के लिए परामर्श माँगा। आपने मुझे रास्ता बताया। फिर क्या था ? तुलसी जयन्ती समारोह का सभी कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो गया। ये था श्रद्धेय श्री जैथलियाजी का मेरे प्रति विश्वास और संस्था के प्रति दायित्व बोध।

सितम्बर, सन् १९७२ ई. से बड़ाबाजार अंचल में स्थापित सावित्री गर्ल्स कॉलेज में मेरी नियुक्ति पुस्तकाध्यक्ष के पद पर हुई थी। किन्तु मेरे पास पुस्तकालय विज्ञान की कोई डिग्री नहीं थी। कलकत्ता विश्वविद्यालय के कॉलेज निरीक्षक कॉलेज परिदर्शन के लिए पधारे तो उन्होंने मुझे परामर्श दिया कि मैं पुस्तकालय विज्ञान की डिग्री हासिल कर लू। यह संयोग की बात है कि कलकत्ता विश्वविद्यालय के पुस्तकालय विज्ञान विभाग में प्रवेश की सूचना समाचार पत्र में प्रकाशित हुई। प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र के साथ किसी पुस्तकालय में कार्य करने का अनुभव-पत्र आवश्यक था। मैंने श्रद्धेय श्री जैथलियाजी से निवेदन किया। आपने तत्क्षण पुस्तकालय के मंत्री के रूप में पुस्तकालय में कार्य करने का अनुभव प्रमाण पत्र दिया। फलस्वरूप मुझे पुस्तकालय विज्ञान विभाग में प्रवेश मिल गया। आपकी महती कृपा से ही सांध्यकाल में होने वाली कक्षाओं में जाने की अनुमति भी मिल गयी और कार्यरत रहते हुए पुस्तकालय विज्ञान की डिग्री मिल गयी।

कर्मनाशा नदी के तट पर अवस्थित बिहार प्रदेश के कैमूर जनपद के रामगढ़ प्रखण्ड का बड़ौरा गाँव प्राकृतिक दृष्टि से मोहक तथा सौन्दर्य से परिपूर्ण किन्तु विकास से वंचित गाँव में महापुरुषों की उपस्थिति शुष्क मरुस्थल में उग आये कल्पवृक्ष के समान ही मानी जा सकती है। विद्यालय विकास के निमित्त ही शिक्षायतन माध्यमिक विद्यालय, बड़ौरा के तत्वावधान में श्रीमद्भागवत एवं श्रीरामचरितमानस के मर्मज्ञ आचार्य प्रवर पंडित श्रीकान्त शर्मा 'बालव्यास' के व्यासत्व में दस दिवसीय सुमधुर एवं संगीतमय श्रीराम-कथा आयोजित करने का विचार मन में जागृत हुआ। समारोह का उद्घाटन करने के लिए उत्तर प्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री को आमंत्रित करने की लालसा बलवती होती गयी। मेरे मन में यह विचार आया कि श्रीराम-कथा का उद्घाटन गुरुवर शास्त्रीजी से कराया जाय। श्रीराम-कथा के कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में श्रद्धेय गुरुवर शास्त्रीजी को आमन्त्रित करने तथा कार्यक्रम की रूप रेखा के सम्बन्ध में श्रद्धेय श्री जैथलियाजी तथा बंधुवर डॉ. प्रेमशंकरजी त्रिपाठी से मैंने अपनी अभिलाषा व्यक्ति की। कार्यक्रम की रूपरेखा सुनकर श्रद्धेय श्री

जैथलियाजी तथा डॉ. त्रिपाठीजी ने अपनी सहमति सहर्ष प्रदान की। बंधुवर डॉ. त्रिपाठीजी ने बताया कि कुमारसभा पुस्तकालय के कार्यक्रम में गुरुवर शास्त्रीजी आने वाले हैं उसी समय एक पत्र उनके नाम लिखकर उन्हीं के हाथों में दें तथा बात भी कर लें। दिनांक ६ जनवरी २००१ को कुमारसभा पुस्तकालय के कार्यक्रम के अन्त में गुरुवर शास्त्रीजी से मैं मिला और अपना आशय बताते हुए एक पत्र मैंने उन्हें दे दिया। मेरी अन्तरात्मा में पूरी आशा जगी कि गुरुवर शास्त्रजी श्रीराम-कथा के उद्घाटन समारोह में अवश्य पधारेंगे। अक्टूबर, २००१ के पहले सप्ताह में बंधुवर त्रिपाठीजी और मैंने गुरुवर शास्त्रीजी से फोन पर बात की। मैंने गुरुवर शास्त्रजी से आग्रहपूर्वक कहा कि महानगरों में आपके प्रकाश की व्याप्ति तो है परन्तु इसका सर्वाधिक महत्व ग्रामीण अंचल के अंधेरे में है। हमारे ग्रामीण अंचल में आपके पधारने से प्रकाश बढ़ेगा जो अबतक इस तरह के आयोजनों से अछूता रहा है। गुरुवर शास्त्रीजी ने बंधुवर डॉ. त्रिपाठीजी तथा श्रद्धेय श्री जैथलियाजी से पूछा कि क्या श्रीराम कथा के उद्घाटन समारोह में मेरा जाना ठीक रहेगा? डॉ. त्रिपाठीजी तथा श्रद्धेय श्री जैथलियाजी ने समवेत स्वर में श्रद्धेय शास्त्रीजी से कहा कि श्रीराम-कथा का शुभ उद्घाटन आपके कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हो यही सर्वथा उपयुक्त है। तुरंत ही गुरुवर शास्त्रीजी ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी।

गुरुवर शास्त्रीजी के कार्यक्रम में उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्रद्धेय श्री जैथलियाजी एवं बंधुवर डॉ. त्रिपाठीजी ने उपस्थिति रहने का मेरा आग्रह स्वीकार किया, यद्यपि श्रद्धेय श्री जैथलियाजी का कार्यक्रम छोटीखाटू में था। आने में असुविधा थी, फिर भी मेरे आग्रह को न टालते हुए छोटीखाटू से वापसी यात्रा मुगलसराय में छोड़कर सुदूर ग्राम में पधार कर मुझे कृतार्थ और अभिप्रेरित किया। बंधुवर डॉ. त्रिपाठीजी कोलकाता से हमारे गाँव एक दिन पूर्व यानी ३१ अक्टूबर, २००१ को पधार गये। उद्घाटन समारोह १ नवम्बर, २००१ को सम्पन्न हुआ तथा २ नवम्बर, २००१ को श्रद्धेय श्री जैथलियाजी तथा डॉ. त्रिपाठीजी वापस कोलकाता आये। ऐसी सद्भावना, स्नेह, सद्परामर्श, मार्गदर्शन तथा प्रेरणा जितनी सहजता से मुझे श्री जैथलियाजी से दीर्घ ४० वर्षों से मिली है उतनी और किसी से नहीं। वास्तव में श्रद्धेय श्री जैथलियाजी को अपना अग्रज और प्रेरक मानता हूँ।

माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयीजी के प्रधानमंत्रित्व काल में तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्रालय विभाग के तत्कालीन मंत्री माननीय डॉ. मुरली मनोहर जोशीजी, पूर्व सांसद साहिब सिंह वर्मा, बिहार के उपमुख्य मंत्री श्री सुशील कुमार मोदी को हमने पश्चिम बंगाल कॉलेज पुस्तकाध्यक्ष समिति के वेतनमान को लेकर कई बार सिफारिशी पत्र श्रद्धेय श्री जैथलियाजी से लिखवाकर प्रेषित किया तथा माननीय डॉ. जोशीजी के कोलकाता आगमन

पर आपके सद्प्रयत्नों से ही साक्षात्कार करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ जो पश्चिम बंगाल कॉलेज पुस्तकाध्यक्ष समिति के इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

किसी परामर्श समिति में, किसी पत्रिका या ग्रंथ की प्रकाशन समिति में या किसी आयोजन में पधारने के लिए जब भी मैंने सविनय आग्रह किया श्रद्धेय श्री जैथलियाजी ने अपनी सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

ऐसे प्रेरक, मार्गदर्शक, पूजनीय व्यक्तित्व के आगार श्रद्धेय श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया के अमृत महोत्सव के अवसर पर अपनी आन्तरिक श्रद्धा निवेदित करते हुए भगवान से यही प्रार्थना तथा मंगल कामना करता हूँ कि आने वाले दिनों में भी इसी तरह आप मेरे मार्गदर्शक तथा प्रेरक बनें रहें और समाज तथा देश की अनवरत सेवा करते रहें। ●

सम्पर्क : ६ एवं ७/२, गुलाम अब्बास लेन, सलकिया, हावड़ा-७११९०६, मो.: ९८३०१२६१३८

साहित्य और सेवा को समर्पित :
श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया

✍ जयप्रकाश सेठिया

स्वयं की स्तुति बहुत ही दुरूहकार्य है। श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया पर कुछ लिखने पर मुझे ऐसी ही प्रतीत हो रहा है। मेरा जैथलियाजी से कोई सीधा पारिवारिक सम्बन्ध नहीं है फिर भी एक नि:स्वार्थ आत्मीय गहरा अन्तरंग सम्बन्ध है। हमारे सम्बन्धो में द्वैत नहीं है। जब सम्बन्ध इतने प्रगाढ़ हो जाते हैं तो यह स्मृति में भी नहीं रहता कि कितने पुराने हैं। मुझे तो कभी-कभी ऐसा अहसास होता है कि हमारे परिवार से आपका पूर्व जन्म का संस्कार है।

श्री जैथलियाजी को मैं समर्पित लोक-सेवक एवं साहित्य मर्मज्ञ के रूप में देखता हूँ। आपका व्यक्तित्व बहुआयामी है। मेरे तो इनके जैसा समर्पित, चरित्र निष्ठा, विनम्र, संवेदनशील, सरल, सेवाभावी, शांत, गंभीर, कर्मशील, व्यक्तित्व दूसरा दृष्टि में नहीं है। इनमें संयोजन की अद्भुत क्षमता है। मैं कोलकाता वासियों का भाग्य मानता हूँ कि जैथलियाजी का कर्मक्षेत्र कोलकाता है।

महाकवि मूर्धन्य लोकसेवक स्व. कन्हैयालालजी सेठिया से जैथलियाजी का पितृतुल्य सम्बन्ध रहा है। इनका बराबर घर पर आना होता था और फोन पर भी प्राय: बातचीत होती रहती थी। ये सामाजिक एवं साहित्यिक कामों में महाकवि सेठिया से बराबर विचार विमर्श करते थे और उन कार्यो को यथा संभव पूरा करते थे। मेरा यह व्यक्तिगत विचार है कि जैथलियाजी का साहित्य के प्रति अति अनुराग महाकवि स्व. सेठिया एवं स्व. आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री के सान्निध्य का ही फल है। स्व. सेठियाजी एवं जैथलियाजी का वैचारिक एवं राजनैतिक सामंजस्य नहीं होते हुये भी अत्यन्त घनिष्ठ, अंतरंग सम्बन्ध रहें हैं।

स्व. सेठियाजी द्वारा स्थापित राजस्थान परिषद को इन्होंने नव ऊँचाइयाँ प्रदान की। परिषद ने बंगाल-राजस्थान के बीच एक सुदृढ़ सेतु का काम किया है। अगणित लोकसेवा-

साहित्य के क्षेत्र में काम किया है। महाकवि स्व. सेठियाजी के सम्पूर्ण साहित्य को चार खण्डों में प्रकाशित करना एक बहुत ही श्रमसाध्य कार्य था, पर इन्होंने लगन और अथक श्रम एवं समय देकर यह दुरूह कार्य पूर्ण किया। जैथलियाजी स्व. सेठिया के साहित्यिक एवं लोकसेवा के योगदान से बहुत प्रभावित रहे हैं। इस वर्ष स्व. सेठियाजी की राजस्थानी रचनाओं का बांगला में अनुवाद इन्हीं के प्रयासों से निकला है। कोलकाता में राष्ट्रभाषा हिन्दी और मातृभाषा राजस्थानी को समृद्ध करने में इनका विशेष योगदान है। महाकवि सेठिया की हार्दिक इच्छानुसार मायड़ भाषा राजस्थानी की मान्यता के बारे में आप काफी सक्रिय हैं और इस दिशा में ठीक नीति निर्धारित कर उसपर कार्य कर रहे हैं। जीवन का अर्थ गति है और उस गति की सार्थकता को आत्मसात किया है।

श्री जैथलियाजी का आन्तरिक और बाह्य व्यक्तित्व लोगों को आकर्षित करता है। इनका स्वभाव जितना ही कोमल और भावनायें संवेदनशील हैं, सत्य के प्रति निष्ठा उतनी ही कठोर है। मानव मूल्यों के विकास के लिये इन्होंने आजीवन कार्य किया है एवं विभिन्न रूपों में समाज की सेवा करना अपना उत्तरदायित्व समझा है। इनमें कोई कामना-लिप्सा और यश की भावना नहीं है, ऐसा व्यक्तित्व सबका अपना हो जाता है और सब इनके अपने हो जाते हैं।

श्री जैथलियाजी ने विभिन्न क्षेत्रों में कितना काम किया है इसका लेखा-जोखा करना बहुत कठिन है। साहित्य एवं समाज सेवा के क्षेत्र में इन्होंने अप्रत्याशित कार्य किया है। आज के इस घोर कलयुग में जब लोग स्वयं के आगे नहीं देख पाते हैं - ऐसे समय में इन्होंने स्वयं को गौण कर समाज-साहित्य-कला एवं संस्कृति के बारे में सोचा और आगे बढ़े हैं। प्रेरणा एवं कर्मठता के कारण ही आप जिस किसी संस्था से जुड़े हुये हैं, वहाँ इनके साथ युवा हैं; सक्रिय है। कोलकाता महानगर में शायद ही कोई सप्ताह होगा जिसमें इनकी भागीदारी बाकी संस्थाओं में से एक या कोई न कोई स्तरीय कार्यक्रम न हो। इतनी ऊर्जा, इतना समय दे पाना और इनकी संयोजन क्षमता मुझे कभी-कभी आश्चर्यचकित कर देती है।

मुझे श्री जैथलिया जी का स्नेह, आशीर्वाद, मार्गदर्शन बराबर मिलता रहा है। इन्होंने अग्रज का दायित्व बड़ी सहृदयता से निभाया है अपार स्नेह दिया है। आप समाज के गौरव हैं। ऐसा दूसरा समर्पित व्यक्ति मेरी दृष्टि में नहीं है। मैं जैथलिया साहब के स्वस्थ, कर्ममय, सार्थक और दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि समाज के युवा कार्यकर्ता इनसे प्रेरणा लेकर नि:स्वार्थ भाव से समाज सेवा व साहित्य सेवा के पुनीत यज्ञ में अपना योगदान देते रहेंगे। ●

सम्पर्क : ४०, स्ट्राण्ड रोड, ग्राउन्ड फ्लोर, कमरा नं.: ७८-८१, कोलकाता-७००००१

कर्मठ और प्रेरक व्यक्तित्व

✍ रतन शाह

करीब ४५ वर्ष पहले किसी साहित्यिक सामाजिक आयोजन में जुगलजी से भेंट हुई थी। उस भेंट में अंकुरित सम्बन्धों ने धीरे-धीरे परिचय और पहचान की देहरी को लांघकर आत्मीयता के दलान में प्रवेश करके वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया। उनका फोन आता- 'रतनजी कई दिन हो गये हैं कॉफी पीये हुये, आज आयकर भवन से लौटते वक्त आपके पास आऊँगा', और फिर हम दो, तीन, चार घंटे बैठे-बैठे समाज-साहित्य व राजनीति से जुड़े विभिन्न विषयों पर बातचीत करते रहते, दिल और दिमाग को एक तरह का सकून मिलता था। इतने वर्षों की यात्रा में कितने ही एसे अवसर आयें है जो स्मरणीय होने के साथ-साथ लीक से हटकर हैं, प्रेरक हैं।

जुगलजी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। सफल संगठनकर्ता, प्रबुद्ध वक्ता होने के साथ-साथ गहरी सूझबूझ वाले चिन्तक एवं सम्पादक हैं। मातृभूमि व मातृभाषा के प्रति उनका समर्पण बेजोड़ है। जातीय गौरव व मातृभाषा के प्रति उनमें अगाध प्रेम है जो संघर्ष व सत्याग्रह की सीमाओं को छूने ही नहीं, लांघने तक उद्दत रहता है। साहित्यिक, सामाजिक व राजनीतिक तीनों क्षेत्रों में उनकी गहरी दखल है। एक लेख में सब कुछ समेटना मुश्किल है अत: मैं अपने आपको मातृभाषा राजस्थानी के प्रति उनके समर्पण व सेवाओं की कुछ बातों को यादों के सहारे लिखने की कोशिश कर रहा हूँ। कुमारसभा पुस्तकालय व बड़ाबाजार लाईब्रेरी एक समय मारवाड़ी समाज के गौरव संस्थान थे - लेकिन जिस तरह की जर्जर अवस्था में पहुंच चुके थे वह स्थिति दयनीय थी। उन दोनों संस्थानों को अपने साथियों के साथ मिलकर जुगलजी ने जो ऊँचाई प्रदान की है वह अतुलनीय है, स्तुत्य है। सोये हुए जातीय गौरव को जगाने के लिए इन संस्थानों के द्वारा प्रकाशित स्मारिकायें, मात्र स्मारिकायें नहीं रहकर सन्दर्भ ग्रन्थों की तरह Refer की जाती हैं क्योंकि इनका सम्पादन जुगलजी ने किया है। जातीय गौरव व सम्पादन की बात आती है तो १९८२ ई. में इनके द्वारा सम्पादित व प्रकाशित 'बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता: स्मरण व अभिनन्दन' ग्रन्थ को बड़ी उपलब्धि मानता हूँ और बालचन्द मोदी

द्वारा लिखे गये मारवाड़ी समाज के इतिहास की अगली कड़ी के रूप में इसे देखता हूँ। गौरव की भावना ही थी जिसने राजस्थान परिषद् के माध्यम से महाराणा प्रताप की विशाल प्रतिमा को कोलकाता के महत्वपूर्ण चौराहे पर लगवाया व इण्डिया एक्सचेंज का नाम महाराणा प्रताप सरणी करवाया। इसी सन्दर्भ में हल्दीघाटी चतु:शती समारोह का उल्लेख करना चाहूँगा। एतिहासिक घटना थी वह। जुगलजी का कहना था कि इस आयोजन का ताल्लुक राजस्थान के जातीय गौरव से है अत: कार्ड में संयोजक के रूप में मेरा नाम भी रहे। जुगलजी जब किसी काम के लिये मुझे कहते हैं तो बहुत सोच-समझ कर कहते हैं - जाहिर है उसके बाद मैं 'ना' नहीं कहता हूँ। हिन्दी हाईस्कूल के सभागार में इस समारोह का कवि सम्मेलन २० जून १९७६ ई. को सम्पन्न हुआ। आपातकाल (Emergency) का समय था वह। इमरर्जेंसी के चलते मणिमधुकर को जयपुर छोड़ना पड़ा था वह सपरिवार मेरे पास रह रहा था। कवि सम्मेलन क्या हुआ एक विस्फोट हुआ। मणिमधुकर ने जो कविता पाठ किया और जिस अन्दाज में किया, उसने सारे वातावरण में सरगर्मी पैदा करदी। कुछ लोग स्तब्ध रह गये, कुछ सकते में आ गये कि सरकारी प्रतिक्रिया क्या होगी। जिसका डर था वह हुआ। दूसरे दिन सुबह जिस प्रेस में कार्ड व स्मारिका छपी थी उसपर ताला मार दिया गया। जुगलजी पकड़े जाने से पहले भूमिगत हो गये। मणिमधुकर को उसी सुबह मैंने घर से हटाकर दूसरी जगह स्थानांतरित किया। मैं स्वयं कई दिनों तक चौकस रहा।

इसी तरह मातृभाषा राजस्थानी के प्रति इनका जो प्रेम है वह बेजोड़ है। महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के समग्र को ४ खंडों में सम्पादित व प्रकाशित करके जुगलजी ने राजस्थान के गौरव को सम्पूर्ण भारत में प्रतिस्थापित करने का सफल प्रवास किया है। जो कार्य सरकारी अकादमियाँ नहीं कर पाई, वह कार्य जैथलियाजी ने किया, पूरा राजस्थानी साहित्य समाज इस कार्य के लिए इनका गहरा प्रशंसक ही नहीं, ऋणी है।

मुझे यह लिखने में कहीं भी संकोच नहीं है कि सेठियाजी के निधन के बाद कोलकाता में जुगलजी ही वे व्यक्ति हैं जो मुझे राजस्थानी भाषा का कार्य करने का संबल प्रदान करते हैं, याद दिलाते रहते हैं कि हमें राजस्थानी का काम करना है। पिछले दिनों सम्मेलन के मंच से राजस्थानी भाषा की जानकारी के लिये एक सहज व्याकरण (अंग्रेजी, हिन्दी रूपान्तर के साथ) प्रकाशित करनी थी। सम्मेलन के तत्कालीन अध्यक्ष नन्दलाल रूंगटा मेरे आत्मीय हैं अत: उनके आग्रह को मैं टाल नहीं सका और पुस्तक तैयार करवानी पड़ी। श्री केशरीकान्तजी की लिखी गई इस पुस्तक को कोलकाता में छपवाना था। राजस्थानी का प्रूफ कौन देखे बहुत मुश्किल काम था - समय हम लोगों के हाथ में कम था। जुगलजी ने लगातार १२ घंटे एक साथ बैठकर इस कार्य को पार लगाया और पुस्तक निर्धारित तिथि पर प्रकाशित हो गई।

एक महत्वपूर्ण बात जिसका बहुत कम लोगों को पता होगा। नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत सरकार का बहुत बड़ा प्रकाशन संस्थान है। २००५ – ०६ में जुगलजी इस संस्थान के ट्रस्टी व बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के सदस्य थे। इन्होंने उस समय के चेयरमैन से कहा कि राजस्थानी की भी किताबें प्रकाशित की जानी चाहिये। चेयरमैन ने 'हाँ'-'हूँ' तक ही बात को बढ़ाया तो जुगलजी ने ट्रस्टी के रूप में लिखित में पत्र भेजकर दबाव बनाकर ट्रस्ट से राजस्थानी के प्रकाशन प्रारम्भ करवाये। कठिन से कठिन कार्य को सहजता से करना जुगलजी की फितरत है – मैं इनके दीर्घ व स्वस्थ जीवन का कामना करता हूँ। ●

सम्पर्क : १४, चाँदनी चौक, १ तल्ला, कोलकाता-७२, मो.: ९३३०९४७३७३

सांस्कृतिक संचेतना सम्पन्न व्यक्तित्व : श्री जुगलकिशोर जैथलिया

✍ लक्ष्मण केडिया

आदरणीय जुगलकिशोर जी जैथलिया से परिचिति तो मेरी पुरानी है, लेकिन निकटता नई। इस निकटता के कारण बने जैथलिया जी से उम्र में बड़े, रानीगंज निवासी सर्जन डॉ. गणेश राठी। डॉ. राठी कवि हैं, बांग्ला में इनके ३ कविता संग्रह प्रकाशित हैं और हिंदी का एक संग्रह प्रकाशनाधीन। वे साहित्य के गंभीर पाठक हैं और अच्छे आवृत्तिकार भी। रवीन्द्रनाथ और कन्हैयालाल सेठिया के परम अनुरागी डॉ. राठी ने एक पुस्तक रवीन्द्रनाथ की छोटी कविताओं के राजस्थानी अनुवाद की और मनीषी कवि सेठिया जी के बांग्ला अनुवाद की २ पुस्तकें देकर साहित्य-सेतु का महनीय कार्य किया है। इसी वर्ष भाषा दिवस के अवसर पर लोकार्पित हुई थी, उनकी दूसरी अनुदित पुस्तक *कन्हैयालाल सेठियार निर्वाचित राजस्थानी कविता*। इस पुस्तक के मुद्रण-संयोजन का नमित्त इन पंक्तियों का लेखक बना और वह सब संभव हुआ आदरणीय जैथलिया जी की राजस्थानी भाषा-संस्कृति की निष्ठा तथा कवि सेठिया जी के प्रति समर्पित अनुराग के कारण। जैथलिया जी कन्हैयालाल सेठिया समग्र के ४ खंडों के संपादक हैं। डॉ. गणेश राठी से उनका पहले से ही परिचय था, उनके अनुवाद कार्य के वे प्रशंसक भी थे। उपर्युक्त पुस्तक के प्रकाशन उत्तरदायित्व के मेरे प्रस्ताव को स्वीकृति देने में उन्होंने इसीलिए देर नहीं लगाई और वह कार्य राजस्थान परिषद के माध्यम से फलीभूत हुआ।

जुगल जी का मुझ पर स्नेह है। एक बुजुर्ग की तरह मेरी साहित्यिक सक्रियता पर उनकी नजर रही है और इसी कारण स्नेह भी। समय-समय पर उन्होंने यथासाध्य सहयोग और उत्साह-वर्धन किया है मेरा। जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है जैथलिया जी की निकटता मैंने डॉ. गणेश राठी के निमित्त से ही प्राप्त की। इतना निकट इसके पूर्व कभी नहीं आया। उनके कार्यालय और निवास पर उपर्युक्त सिलसिले में कई दफे जाना हुआ। संवाद बढ़ा। उनके व्यक्तित्व के कई पक्षों से सीधा साक्षात्कार भी हुआ।

उनकी राजनीतिक-सामाजिक सक्रियता को तो जानता था लेकिन खालिस आदमी को नहीं, उसकी कुछ झलकें देखने को मिलीं नजदीक आने के कारण ही। ये छोटी-छोटी चीजें हैं पर होती हैं महत्वपूर्ण। जैथलिया जी मर्यादित व्यवहार और शालीनता में मुझे कई बड़ों से अधिक बड़े लगे। कहना यह भी चाहता हूँ कि उन्होंने अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता को कभी मानवीय सौहार्द के आड़े नहीं आने दिया। यह विरासत उन्हें आचार्य विष्णुकांत शास्त्री से प्राप्त हुई है और शास्त्रीजी का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर है और इसे वे स्वीकार भी करते हैं। दरअसल हमें आत्मवान लोगों के संपर्क में तो कभी भाग्यवश आ जाते हैं लेकिन उनकी आत्मवत्ता का वह आलोक हमारे व्यक्तित्व में भिदता नहीं है। श्रद्धा के अभाव में कोरे के कोरे रह जाते हैं हम। आदरणीय जैथलिया जी के साथ ऐसा नहीं है।

दो-प्रमाण ऊपर कही गई बात के समर्थन में। पहला तथ्य वरिष्ठ कवि ध्रुवदेव मिश्र पाषाण के हवाले से। जैथलिया जी ने विपरीत राजनैतिक विचारधारा के विश्वासी ध्रुवदेव मिश्र पाषाण को कुमारसभा पुस्तकालय के कार्यक्रमों में पूरा सम्मान देकर बुलाया है और दोनों ने अपनी-अपनी मर्यादा और शालीनता का निर्वाह भी किया। जुड़ने और जोड़ने का सूत्र बने स्वर्गीय विष्णुकांत शास्त्री। यह सब संभव हुआ राजनीतिक मतादर्श को जरूरत से ज्यादा प्रधानता न देने के कारण ही। याद है जैथलिया जी पाषाण जी के नये काव्य-संग्रह पतझड़-पतझड़ वसंत पर माहेश्वरी पुस्तकालय में आयोजित गोष्ठी में एक सामान्य श्रोता के बतौर पधारे थे। और भी कई आयोजनों में निरहंकार रूप से साधारण व्यक्ति के तौर पर सम्मिलित होते मैंने उन्हें देखा है। दूसरा उदाहरण महाजाति सदन एनेक्सी में आयोजित आचार्य विष्णुकांत शास्त्री व्याख्यानमाला का है जिसके अध्यक्ष के रूप में डॉ. विजयबहादुर सिंह आमंत्रित थे और व्याख्यानकर्ता थे डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र। विजयबहादुर सिंह ने कई मर्यादाओं का उल्लंघन किया था अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में जिसका विवरण देना यहाँ अनावश्यक है। उल्लेखनीय यह है कि आयोजक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के अध्यक्ष जुगलकिशोर जी जैथलिया ने विजयबहादुर सिंह के प्रत्याक्रमण और अशालीनता का प्रत्युत्तर अत्यंत विनम्रता से एक समुझावन पेश करके दिया और अपने अतिथि के सम्मान पर किंचित् भी आँच न आने दी अपनी असहमति और व्यथा के बावजूद। यह बहुत बड़ी बात है। निरी बौद्धिकता वातावरण को उत्तेजना में बदलती है, वह व्यक्तित्व को संयमित-मर्यादित नहीं कर सकता, यह सच है। मनुष्यता की बात-बात में चर्चा की जाती है लेकिन उसके केंद्रीय आध्यात्मिक सूत्र-प्रेम, पारस्परिकता, सहिष्णुता को बौद्धिकता के फेर में भुला दिया जाता है। प्रतिबद्धता, कट्टर प्रतिबद्धता चारों ओर हुंकारती रहती और सहज पारस्परिक को लहूलुहान करती रहती है। आध्यात्मिक संचेतना इस दुर्घटना से हमें बचाती है। कोलकाता के सांस्कृतिक जीवन

में आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने यह महनीय कार्य किया था और उसका प्रभाव उनके परिमंडल के लोगों पर है। आदरणीय जैथलिया जी ने शास्त्री जी के सांस्कृतिक दाय को ग्रहण किया है और आध्यात्मिक प्रभाव को अपने अणुओं में फैलने दिया है। आपकी सच्ची निष्ठा ने ही आपसे दो महत्वपूर्ण संपादन-कार्य महाकवि कन्हैयालाल सेठिया (४ खंड) और विष्णुकांत शास्त्री चुनी हुई रचनाएँ (दो खंड) करवा लिए हैं। और भी कई कार्य, राजनीतिक छौंक से ही सही, नेतृत्वमूलक सांस्कृतिक कार्य आपने किए हैं।

जैथलिया जी, शास्त्री जी और सेठिया जी के साथ-साथ भवानी भाई के प्रति भी अत्यंत श्रद्धाशील रहे हैं। एक राजनीतिक-सांस्कृतिक कार्यकर्त्ता अपने प्रेरणा के सूत्रों को तलाश ही लेता है। निरा राजनितिक कार्यकर्त्ता, सांस्कृतिक सूत्रों की उपेक्षा करता है अथवा अपने अनुकूल उनका खंडित प्रयोग करता है। सांस्कृतिक व्यक्तित्व दीर्घकालीन राजनीति में विश्वास करता है और आध्यात्मिक-साहित्यिक प्रेरणा स्रोतों से ऊर्जा ग्रहण कर उसे गहराई देता है तथा संकीर्णता, वैमनस्य और कट्टरता का निरसन करता चलता है। आदरणीय जैथलिया जी में मुझे ऐसे कई सूत्र दिखाई पड़ते हैं इसलिए मैं उन्हें राजनीतिक से ज्यादा सांस्कृतिक संपन्नता का व्यक्तित्व मानता हूँ और अपने को कतई उनसे विच्छिन्न करना नहीं चाहता भले ही कोलकाता के मेरे कुछ मित्र इस संलग्नता को प्रश्नांकित करते रहें। राजनीतिक छुआछूत को बढ़ावा देकर विध्वंसवादी पर्यावरण रचने में मेरा विश्वास नहीं। मैं साहित्य का अनुरागी व्यक्ति हूँ और उसी भूमिका से अमृत-वर्ष में प्रवेश करनेवाले कर्मठ, तेजस्वी, साहित्यिक-आध्यात्मिक संचेतना संपन्न सांस्कृतिक कार्यकर्त्ता श्री जुगलकिशोर जैथलिया का इस अवसर पर अभिनंदन करते हुए नमन करता हूँ। ●

सम्पर्क : प्रतिश्रुति प्रकाशन, ७ए, बेंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-७००००१, मो.: ९८३०२२०९८९

चरैवेति चरैवेति का आदर्श

✍ डॉ. वसुमति डागा

हिन्दी विभागाध्यक्ष: बंगवासी कॉलेज, कोलकाता

आदरणीय श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया से मेरा परिचय विगत तीन दशकों से है। लेकिन उन्हें निकट से जानने का अवसर लगभग दो दशक पूर्व तब मिला जब उन्होंने अत्यन्त आत्मीयता के साथ मुझे श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की कार्यकारिणी में शामिल किया एवं पुस्तकालय की गतविधियों में सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया। इसी दौरान मेरा साक्षात्कार उनके विरल व्यक्तित्व से हुआ जिसमें अद्‌भुत संगठन क्षमता और निष्काम सेवा भावना है। उनकी कार्यकुशलता और त्वरित निर्णय क्षमता उनके साथ काम करने वालों में निश्चय ही एक अच्छी सूझ-बूझ को विकसित करती है। शास्त्रों में नीतिवान मनुष्य के लिए जिन गुणों की चर्चा की गई है वे समस्त गुण उनके व्यक्तित्व में समाहित हैं-

अभयं मृदुता सत्यमार्जवं करुणा धृतिः।
अनाशक्तिः स्वावलम्बः स्वशासन सहिष्णुता।।
कर्तव्य निष्ठता व्यक्तिगत संग्रह संयमः।
प्रामाणिकत्वं यस्मिन् स्तुर्नीतिमानुच्यते हि सः।।

जिस व्यक्ति में अभय, मृदुता, सत्य, सरलता, करुणा, धैर्य, अनाशक्ति, स्वावलंबन, स्वशासन, सहिष्णुता, कर्तव्यनिष्ठा, व्यक्तिगत संग्रह का संयम और प्रमाणिकता होती है वह नीतिवान है। श्री जैथलियाजी इस दृष्टि से परम नीतिवान व्यक्ति हैं।

श्री जैथलिया जी में जो खास बात मैंने अनुभव की वह है उनकी संकल्प निष्ठा। उनके मानस में एक बार किसी संकल्प का उदय हो गया तो उसे पूर्णता तक पहुँचाना उनका ध्येय बन जाता है। उनकी लक्ष्य निष्ठा अर्जुन की उस एकाग्रता की भाँति है जिसे मछली की आँख के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता। यही कारण है कि उनके कर्तृत्व से समाज और देश समृद्ध हुआ है।

सेवा-भावना के साथ-साथ गहरी साहित्यिक अभिरुचि ने श्री जैथलियाजी के व्यक्तित्व को वैशिष्ट्य प्रदान किया है। यही कारण है कि श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय से उनके निर्देशन में एवं उनकी प्रेरणा से निरन्तर महत्वपूर्ण साहित्यिक ग्रन्थों का एवं संग्रहणीय स्मारिकाओं का प्रकाशन हुआ है। इतना ही नहीं समय-समय पर बड़े साहित्यकारों, मनीषियों के व्याख्यानों का आयोजन सुधी श्रोता-समाज को परितृप्त करता रहा है।

समाज-सेवा और सारस्वत साधना का विरल संयोग हैं श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया। आपका समग्र जीवन निष्काम कर्म की मिसाल है। पचहत्तर वर्ष की आयु में आपकी कर्मठता किसी भी युवक को चुनौती दे सकती है। चरैवेति-चरैवेति के आदर्श से संपृक्त आपका व्यक्तित्व उपनिषद् की इन पंक्तियों की याद दिला देता है -

चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुसुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरंश्चरैवेति।।

ऐसे महत् व्यक्तित्व का अमृत महोत्सव अभिनन्दन निश्चय ही स्तुत्य है। मैं आपके छिहत्तरवें जन्म वर्ष पर अपनी मंगलकामनाएं अर्पित करती हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि आप शतायु होते हुए इसी प्रकार निरन्तर समाज और देश को अपने सत् संकल्पों को क्रियान्वित करते हुए समृद्ध करते रहें। ●

सम्पर्क : एफ-३३/८, करुणामयी हाऊसिंग इस्टेट, फेज-II, साल्टलेक, कोलकाता-७०००९१
मो.: ९८३०३०४९१८

मेरे आदर्श एवं प्रेरक श्री जुगलजी जैथलिया

✍ सागरमल गुप्त
सी.ए.

प्रथमतः मेरे आदर्श, प्रेरक एवं स्फूर्ति स्रोत श्री जुगल जी के चरणों में शत-शत् नमन। आपकी कौस्तुभ जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह का समाचार पाकर मैं अति हर्षित हूँ, अपने मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत को जीवन की इस ऊँचाई पर पाकर गदगद हूँ। गुरु कि महिमा किसी से छिपी हुई नहीं है। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले का नाम ही गुरु है। माननीय जुगलजी मेरे गुरु ही नहीं बल्कि आदर्श भी हैं।

आपसे मेरा प्रथम परिचय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा पर सायं विभाग प्रमुख के रूप में सन् १९६६ में हुआ। मुझे आपने संघ की प्रार्थना का अर्थ, उच्चारण एवं भाष्य बताया एवं उसका शुद्ध रूप से अभ्यास भी करवाया। आप ओजस्वी वक्ता हैं एवं उसके अनुरूप ही आपने मुझे भी बौद्धिक देने की कला का ज्ञान कराया। उसी गुण की बदौलत मुझे दृढ़ता से अपनी बात रखने की विद्या प्राप्त हुई जो मेरे वर्तमान पेशे में रामबाण सिद्ध हुई।

आप समदर्शी, सहज, सहृदय एवं आदर्श के धनी हैं। आपने अपना जीवन समाज-कार्य, संगठन व व्यक्ति निर्माण में लगाया। आप मितव्ययी व अनावश्यक धनोपार्जन से दूर रहे हैं। आपने त्याग की सही माने में मुझे शिक्षा दी जिसने मेरे जीवन की दशा एवं दिशा ही बदल दी। संघ कार्य करते समय संघ के स्वयंसेवक की निःस्वार्थ भाव से मदद करना एवं आवश्यक हो तो अपने पास से धन खर्च कर भी अभीष्ट की प्राप्ति में सहायता करनी चाहिए। मुझे याद है कि आपने जरूरतमन्द स्वयंसेवकों का आयकर निर्धारण अथवा किसी भी न्यायिक प्रक्रिया में अपनी फीस की बात तो दूर, स्वयं के पास से धन खर्च कर उनका काम, स्वयंसेवक के परिवार में शादी-विवाह के निमित्त भी गुप्त अंशदान करने में भी अग्रणी रहे है। यहां तक की पुस्तकालय के कार्य में जाने पर स्वयं अपने पास से धन खर्च कर यात्रा व्यय उठाया, जो उनके त्याग करने की सहज आदत का रूप दर्शाता है। आप ही की प्रेरणा

से मैं संघ कार्य के प्रति अनुरक्त हुआ एवं धनाभाव में रहते हुए भी संघ शिक्षा वर्ग पूर्ण कर सका। आपने अपने कार्यालय में सहायक के रूप में स्थान दिया। मुझे आयकर में वकालत करना सिखाया एवं एक वर्ष तक मुझे विशेष ज्ञान प्रदान किया। उनकी ही प्रेरणा से मैंने वकालत से संतुष्ट न होकर चार्टर्ड एकाउन्टेंसी की परीक्षा भी पास की। आज जो कुछ अर्जन एवं सृजन कर पाया, उसमें आपकी महती भूमिका है एवं यथासमय आपका मार्गदर्शन मिलता रहा है। आपकी ही प्रेरणा से मैंने समाज सेवा में कदम रखा एवं सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय से जुड़ा हुआ हूँ। आपने कठिन से कठिन समय में मेरी आर्थिक रूप से सहायता की जिसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। आप मेरे अनुकरणीय आदर्श हैं। आप शतायु हों एवं आपकी कृपा दृष्टि मुझ पर बनी रहे। आपका सदैव स्नेहभाजन बना रहूँ, इसी आशा के साथ। ●

सम्पर्क : १, बलराम दे स्ट्रीट, कोलकाता-७००००६, मो.: ९८३००२५०९२

जुगल जी : जैसा मैंने पाया

✍ पद्मश्री सूर्यदेव सिंह
एडवोकेट

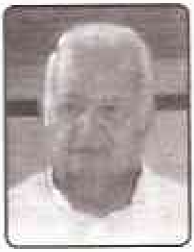

श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया से मिलने का पहला मौका मुझे ८-९ वर्ष पूर्व कलकत्ता के बिड़ला सभागार में मिला। उनके मिलने का तरीका और उसमें बेबाकी व सरल सहज प्यार ने एक स्नेहिल स्पर्श दिया। मेरे प्रति प्रकट आदर भाव में मैंने उनमें साहित्य के प्रति आत्मीय अनुराग की आभा देखी। मैं प्रारम्भ से ही कलकत्ता निवासियों के साहित्य प्रेम के कारण उनका विशेष सम्मान करता हूँ। बंगाल के सभी लोगों के हृदय में राजस्थान व राजस्थानी के प्रति आदरभाव है। जो लोग राजस्थान से उठकर बंगाल में जा बसे हैं चाहे समय के सैंकड़ों वर्ष भी निकल गये हों तो भी उनके मन में अपने पूर्वपुरुषों की धरती के प्रति जुड़ाव में कोई कमी नहीं आई है। भाषा और संस्कृति के रूप में आज भी उनमें राजस्थान जीता है। जहाँ भी है उसने अपनी व्यावसायिक ईमानदारी, मधुर व्यवहार और सौजन्य से अपनी भली अच्छी तथा नेक आदमी की पहचान बनाके रखी है। श्री जैथलिया जी निश्चित ही राजस्थानियों के इस उच्चभाव का पूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं। वे राजस्थान के गौरव-मान-मर्यादा के प्रतीक हैं। उनके आदर्शों का अनुकरण किया जा सकता है। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। मेरी वह पहली भेंट मेरा धन है जिसे मैं संजोए हुए हूँ।

दूसरी बार मेरा श्री जैथलिया जी से मिलना फिर कलकत्ता में ही हुआ। तब तक मैं यह जान चुका था कि श्री जैथलिया जी राष्ट्रीयता से ओतप्रोत राष्ट्र के लिए समर्पित व्यक्ति हैं, जो राष्ट्रहित को सर्वोपरि स्थान देते हैं। मेरी राष्ट्रीय रचनाओं की उन्होंने मुक्त कंठ से प्रशंसा की, भावविभोर होकर सुना, रोमांचित हुए। तब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि इनकी राष्ट्रीयता सामयिक नहीं है यह तो पूर्ण प्रतिबद्धता है।

तीसरी बार मुझे श्री जैथलिया जी की जन्मभूमि छोटीखाटू में उन्हीं के आदेश पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ उनके ग्राम-प्रेम का दिग्दर्शन हुआ। वहाँ हिन्दी पुस्तकालय के विकास व महत्व में उनकी भूमिका को देख कर एक समझ जो मुझे मिली वह यह थी

कि एक बड़े नगर का बड़ा आदमी अपने गांव की जड़ों से जुड़ा रह सकता है, बशर्ते कि उसमें मातृभूमि के प्रति हार्दिक प्रेम हो। उस सामान्य कस्बे छोटीखाटू में भी देश के महान मनीषी, चिन्तनकर्ता, विचारक, प्रबुद्ध विद्वानों का आगमन, भाषण, विचार विमर्श, काव्य पाठ आदि सभी संभव हो सकता है, यदि परदेश में बैठे हुए भी किसी एक व्यक्ति के मन में लगन और तन में अगन हो।

चौथी बार मुझे श्री जैथलिया जी द्वारा ही प्रेरित, आयोजित, एक संक्षिप्त, एक सुमधुर कार्यक्रम में उपस्थित होने का सुअवसर मिला। उसमें कलकत्ता में, उनके सभी वर्गों में संपर्क को देखकर मैं दंग रह गया। इतने बड़े शहर में श्री जैथलिया जी के अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं के सम्बन्धों ने मुझे अभिभूत कर दिया। कितने अधिक काल से कितना अधिक समय देकर इतनी बड़ा तादात में नैकट्य और सामीप्य बनाए रखते होंगे इसका आश्चर्य हुआ। लगभग उस सभा के सभी लोगों का उनसे आदर भाव से मिलना, गजब लोकप्रियता का प्रकट दर्शन मैं देखता रह गया।

श्री जैथलियाजी का अमृत महोत्सव अभिनन्दन हो रहा है। शुभेच्छुओं द्वारा यह आयोजन उनके प्रति आदर का भाव रखने वाले सभी सदाशयी लोगों के लिए प्रसन्नता का विषय है। त्यागी, तपस्वी, साधक, कर्मठ जीवन दानी मनीषियों का सम्मान व्यक्ति का नहीं, उनके गुणों का सम्मान है जो कि अन्य व्यक्तियों में भी उन जैसे गुण रोपित करने के लिए प्रेरित करता है। एक उत्तरदायी पीढ़ी का यह फर्ज बनता है कि वह समाजसेवी की मुक्त कंठ से प्रशंसा करें।

यदि हम बुरे को बुरा कहने का अधिकार मानते हैं तो साथ में इस कर्तव्य से भी जुड़े हैं कि हम अच्छे को अच्छा भी कहें। इस समारोह के मूल में ही भाव है जो सराहनीय है। समारोह समिति में कलकत्ता के ही नहीं, भारत भर के अनेकानेक संस्थाओं के, विचारधाराओं के, साहित्यिक जगत के विचारक, लेखक, प्रमुख व्यवसायी, प्रतिष्ठित कर्मचारी जुड़े हैं यह अद्भुत है। मैं इस समारोह को यज्ञ के रूप में लेता हूं जिसमें उक्त सभी लोग सम्मिलित हैं। हम हजारों-हजारों मील दूर बैठे लोग इस पुनीत व उत्तम आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं और साक्षी होने का मन रखते हैं। जहाँ एक निष्ठा का, निर्लिप्त भाव का, गृहस्थी संत का आस्था के अम्बर का सम्मान होगा जिसमें सभी आस्थावान पूर्ण श्रद्धालु अभिनंदन करेंगे। श्री जैथलियाजी का अभिनंदन अभिनन्दनीय है। श्री जुगलकिशोर जी जैथलिया के पवित्र जीवन व पुनीत कार्यकलापों के प्रति श्रद्धावनत हजारों लोगों में से एक। ●

सम्पर्क : किसनगढ़-बास-३०१४०५, जिला-अलवर (राजस्थान) मो.: ०९४१४०२००४७

राष्ट्रधर्म के प्रहरी : जुगल जी

डॉ. धनपतराम अग्रवाल

यूँ तो समाज एवं देशहित के लिए व्यक्ति के समर्पण के सम्बन्ध में आपने ढेरों दार्शनिक लेख पढ़े होंगे पर इस बात को अपने जीवन में आत्मसात् कर वैसा जीवन जीना आज के भौतिकवादी युग में लगभग असंभव सा दिखता है। आज का बुद्धिजीवी जब आजीविका एवं सुख-भोग की अनन्त सामग्री जुटाने में ही सारी ऊर्जा खर्च कर रहा है एवं सिर्फ बौद्धिक विलास के या तर्क के लिए ही समाज या देश सेवा की बात करके अन्य अपने ही समान बुद्धिजीवियों से वाहवाही लूट कर आत्मसुख प्राप्त कर लेता है तब भला क्यों कोई व्यक्ति अपने गृहस्थ सुखों का बलिदान देकर समाज और देश के प्रति अपने दायित्व को वरीयता देकर स्वीकार करना चाहेगा, यह बड़ा प्रश्न मन में खड़ा होता है। इतना ही नहीं, प्रश्न तो यह भी उठता है कि यदि कोई व्यक्ति इस राह पर चल पड़ा तो क्या आज का बुद्धिजीवी ऐसे व्यक्ति पर ताने मारने में भी संकोच करेगा कि वह अपना जीवन व्यर्थ ही बेकार कर रहा है या फिर उसके पास अपेक्षित बौद्धिक ईंधन नहीं है या उपयुक्त कामधंधे का जुगाड़ नहीं होगा, इत्यादि-इत्यादि।

परन्तु इन सारी परिस्थितियों के बीच भी मैंने एक व्यक्ति को विगत ३५ वर्षों से एकांगीभाव से समाज एवं राष्ट्र सेवा की साधना करते देखा है जो एक अथक यात्री की तरह 'व्यष्टि से समष्टि' भाव की ओर दृढ़ता से बढ़ता जा रहा है।

आज के क्षुद्र स्वार्थी वातावरण में भी निष्ठा के आधार पर अपनी शुचिता को बरकरार रखते हुए एक निष्काम कर्मयोगी की तरह अकर्त्ता भाव से आगे बढ़ते जाना वैसे तो किसी ऋषि-मुनि का ही कार्य हो सकता है पर मैंने उस व्यक्ति में वैसा ही कुछ प्रत्यक्ष देखा है, कथनी एवं करनी की एकरूपता देखी है। इसलिए जब वह व्यक्ति कुछ बोलता है तो लगता है कि उसके माध्यम से हमारी ऋषि परम्परा ही बोल रही है।

ऐसे व्यक्तित्व का नाम है श्री जुगलकिशोर जैथलिया, जो आज बहुत सी लोकसेवी सामाजिक संस्थाओं के स्तम्भ भी हैं, आधारशिला भी हैं। इनसे मेरा प्रथम परिचय १९७७-

७८ में पोद्दार छात्रनिवास में रहते हुए आया। इन्हीं की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में हमलोगों ने एक विचार गोष्ठी का आयोजन रखा जिसका प्रेरक विषय था – 'हम बदलेंगे धारा'। इस नाम से ही छात्रों के मन में एक आलोडन हुआ। इस विषय पर 'भारतीय भाषा परिषद्' के तत्कालीन सचिव एवं प्रभारी तथा प्रकाण्ड विद्वान डॉ. प्रभाकर माचवे ने अपने विचार रखे। उस गोष्ठी की बात आज भी मेरे बहुत से समकालीन युवा-बंधुओं को उद्वेलित करती रहती है। यहां मैं बीसवीं शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक आइन्स्टीन के विचार जो लाखों बुद्धिजीवियों के मन को उद्वेलित करते हैं, उद्धृत करना उचित समझता हूं –

You must warn people not to make intellect their god. The intellect knows methods but seldom knows values. They come from feeling. If one does not play his part in the creative whole, he is not worth being called human– he has betrayed his purpose. (Einstein and the Poet, P-135)

एक दार्शनिक वैज्ञानिक के ये विचार व्यष्टि एवं समष्टि की यात्रा में हृदय की संवेदनशीलता की आवश्यकता पर बल देते हैं जो सिर्फ बुद्धि एवं तर्क की उपज नहीं है।

मैंने जब जुगलजी को 'एकात्म मानववाद' की व्याख्या करते हुए सुना तो मन-मस्तिष्क में रोमांच भर आया। पुंजीवाद एवं साम्यवाद को एक ही सिक्के के दो पहलू बताते हुए उन्होंने दोनों ही दर्शनों को शरीर या भोग केन्द्रित और अर्थ केन्द्रित बताया जबकि भारत का दर्शन अर्थ और काम के साथ-साथ धर्म और मोक्ष की सीमाओं में इन्हें नियन्त्रित रखने की बात करता है। अर्थ और काम की मनाही नहीं पर ये धर्म और मोक्ष की दीवारों को तोड़कर न बहे। उन्होंने कहा कि केवल शरीर सुख का विचार एकांगी एवं अधूरा है। शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा चारों की सन्तुष्टि करनेवाला विचार ही स्थाई हो सकता है। उन्होंने कहा कि शरीर को चाहिये 'आहार', मन को चाहिए 'प्यार', बुद्धि को चाहिए 'विचार' एवं आत्मा को चाहिए 'साक्षात्कार'। केवल आहार और भोग या अर्थ का विचार मानव का कल्याण नहीं कर सकता। अन्य सामाजिक एवं राष्ट्रीय विषयों पर भी उनके गहन विचार एवं पैनी दृष्टि को मैंने समझा।

मेरे सार्वजनिक जीवन का बीजारोपण भी इन्हीं के द्वारा प्रेरित संवेदनशील राष्ट्रीय भावों से हुआ एवं 'स्वदेशी शोध संस्थान' का पहला शंखनाद मैंने इन्हीं के कर्ममय जीवन एवं विचारों को सुन-पढ़कर किया। स्वामी विवेकानन्दजी ने भी इसी स्वदेशी भावना पर बल देते हुए कहा कि जहाँ हमें पश्चिम से कुछ सीखना जरूरी है वहाँ पश्चिम को भी पूर्व से बहुत कुछ सीखना है एवं जिस दिन दोनों संस्कृतियाँ एक दूसरे में समाहित हो जाएगी, उसी

दिन संसार मानवता का सही अर्थ समझ पायेगा एवं शान्ति तथा विकास का उसका स्वप्न पूरा हो जायेगा। श्री जुगलजी के जीवन में स्वावलम्बन, स्वाभिमान एवं संप्रभुता पग-पग पर झलकती है जो सिर्फ उनके तप और त्याग द्वारा ही संभव हुई है।

एक दिन उन्होंने बताया कि मितव्ययिता अगर परामार्थ कार्य में धन का उपयोग करने के उद्देश्य से की जाती है तो यह तप का रूप धारण कर लेती है। उन्होंने उदाहरण दिया कि आप अगर टेक्सी से नहीं जाकर बस से जाते हैं एवं उस बचत का उपयोग किसी जरूरतमंद की सहायता में कर लेते हैं तो वह सात्विक तप ही है। इसी प्रकार सार्वजनिक जीवन में सेवा अथवा ज्ञान के प्रसार हेतु अस्पताल या पुस्तकालय स्थापित करना और विचार गोष्ठियाँ करवाना एक सात्विक यज्ञ ही है। उन्होंने आचार्य विष्णुकान्तजी शास्त्री के उपनिषद् एवं गीता पर सहज एवं सारगर्भित प्रवचन कराये एवं फिर उन्हें प्रकाशित भी कराया, उससे भावी सन्तति कृतज्ञ एवं धन्य होती रहेगी। मैंने जुगलजी के जीवन में सादगी, सरलता एवं वैचारिक स्पष्टता व दृढ़ता जिस रूप में देखी है वह हमारी ऋषि परम्परा का ही स्मरण कराती है।

जुगलजी ने एक कुशल संगठक के रूप में सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक शुचिता का समन्वय बनाते हुए भाजपा की पश्चिम बंगाल शाखा के स्तम्भ के रूप में काम किया है। वे सदा चार बातों पर जोर देते हैं – अच्छा कार्यालय, अच्छे कार्यकर्त्ता, अच्छे कार्यक्रम एवं इन सबके लिए पर्याप्त कोष की व्यवस्था। एक व्यक्ति का इतने निःस्वार्थ भाव से सामाजिक जीवन में सेवाकार्य निष्काम कर्मयोगी द्वारा ही संभव है। आज जुगलजी एक व्यक्ति नहीं अपितु समाज में आदर्श जीवन के प्रतीक हैं, प्रतिबिम्ब हैं। वे स्वस्थ रहें एवं दीर्घायु हों ताकि उनकी व्यष्टि से समष्टि तक की अपनी ७५ वर्षीय समृद्ध यात्रा एवं भावी यात्रा पूरे समाज जीवन को दीप-स्तम्भ बनकर राह दिखाती रहे। ●

सम्पर्क : ६, वाटरलू स्ट्रीट, कमरा नं. ५०४, कोलकाता-७०००६९, मो.: ९८३००४१३२७

जैथलियाजी : एक समर्पित व्यक्तित्व

✍ डॉ. श्रीनिवास शर्मा

साहित्य सम्पादक: 'छपते-छपते' हिन्दी दैनिक

अदम गोंडवी का एक शेर है –

खुदी सुकरात की हो या रूदाद गांधी की,
सदाकत जिन्दगी के मोर्चे पर हार जाती है

जैथलियाजी अदम गोंडवी के उपर्युक्त शेर से इत्तिफाक नहीं रखते। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति दृढ़ आस्थाशील श्री जुगल किशोर जैथलिया 'सत्यमेव जयते नानृतं' में विश्वास करते हैं। उनका यह विश्वास उन्हें आगे बढ़ने में सदैव सहायक रहा है।

मैं जैथलिया जी को एक अरसे से जानता हूँ। कुमारसभा पुस्तकालय जाता रहता हूँ। वहाँ उनसे यदाकदा भेंट हो जाती है। उनके निवास स्थान पर भी जाने का अवसर मिला है। घर आए लोगों का ये 'अतिथि देवो भव' के रूप में सम्मान करते हैं।

जैथलिया जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता अपने कार्यों के प्रति समर्पण का भाव है। वे सदा किसी न किसी सामाजिक-सांस्कृतिक कार्य में लगे रहते हैं। वे सज्जन पुरुष हैं। सज्जनता उनमें कूट-कूट कर भरी है। उनका वैदुष्य सहज ही लोगों को उनके प्रति आकर्षित कर लेता है।

उन्हें वस्तुओं और स्थितियों-परिस्थितियों का गहरा ज्ञान है। वे बहुत ही संवेदनशील तथा ऋजु प्रकृति के हैं। जैथलियाजी का व्यापक कार्यक्षेत्र है। राजनीति, समाज, साहित्य, संस्कृति के प्रति सदा जागरूक रहने वाले जैथलियाजी बहुत बड़े देशभक्त हैं। विचारधारा और सोच की दिशा भले ही भिन्न हो, वे निःस्वार्थ भाव से दूसरे की सहायता के लिए प्रस्तुत रहते हैं। सम्मान करना वे भलीभांति जानते हैं। उनमें कोई दुराव नहीं है, व्यक्ति में कोई फाँक नहीं है। किसी न किसी रचनात्मक कार्य में लगे रहना उनके स्वभाव की विशेषता है। रचनात्मक कार्यों के प्रति अनवरत निष्ठा ने ही जैथलिया जी को समाज में एक विशिष्ट पहचान दी है।

राजनीति और साहित्य दोनों के मध्य संतुलन बना कर चलना असंभव नहीं तो कठिन तो है ही। बहुत से लोग (वामपंथी कामरेड) तो अपने राजनीतिक मताग्रहों के चलते विपरीत विचार या विचारधारा के लोगों के साथ मिलना, बात करना या उठना-बैठना तक पसंद नहीं करते, सहायता करने की बात तो कोसों दूर की है। जैथलियाजी अपवाद हैं। विचारधारा एक बात है, कठमुल्लापन जाहिल होने का सबूत।

जो भी जैथलिया जी के सम्पर्क में आता है, उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। यह उनका बड़प्पन है। अपने प्रियजनों से मिलने, साथ-साथ काम करने तथा साथ रहने में उन्हें आत्मगौरव का बोध होता है। उनकी सर्वसुलभता लोगों को उनके प्रति विस्मय से परितृप्त कर देती है।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। समाज व्यक्तियों से बनता है और व्यक्ति समाज से। सामाजिक कार्य अकेले नहीं हुआ करते पर नेतृत्व की क्षमता सबमें नहीं होती।

हमारे यहाँ जीवन को चार आश्रमों में बाँटा गया है। परन्तु गृहस्थाश्रम का सर्वाधिक महत्व है। शेष सभी आश्रम गृहस्थाश्रम पर निर्भरशील हैं। गृहस्थाश्रम में रहकर अपने कार्यों, उत्तरदायित्वों का सम्यक रूपेण निर्वाह करने वाला व्यक्ति ही समाज को, देश को कुछ दे सकता है। सामूहिकता क्या है, इसे वह अच्छी तरह जानता है।

जैथलिया जी अपने समवयस्कों तथा बड़ों का बखूबी सम्मान करना जानते हैं। संस्थाओं में जुड़ा व्यक्ति एकाकी नहीं रह सकता। ऐसे व्यक्ति के स्वभाव में शालीनता होती है। शालीन व्यक्ति जिन्दगी के अनुभव, बुद्धि और विवेक से निर्णय लेता है। जटिल तथा संश्लिष्ट परिस्थितियों में भी वह सच्चाई को समझने तथा उसका साथ देने का प्रयत्न करता है।

प्रतिबद्धता बड़ी चीज है। अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित व्यक्ति ही प्रतिबद्ध होता है। प्रतिबद्धता जीवन तथा आचरण में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक स्तर पर निखार लाती है। इसके लिए आचरण की शुद्धता एवं विचारों की पवित्रता आवश्यक है। कहना न होगा कि जैथलिया इस कसौटी पर खरे हैं।

'अमृत महोत्सव अभिनन्दन' के अवसर पर मैं उनके शतायु होने की मंगलकामना करता हूँ। ●

सम्पर्क : २६-सी, क्रीक रो, इण्टाली, कोलकाता-७०००१४, मो.: ९६७४६८६३५१

मेरे सार्वजनिक जीवन के मार्गदर्शक जुगलजी

✍ अरुण प्रकाश मल्लावत

महामंत्री: राजस्थान परिषद्, कोलकाता

मैं सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक व राजनैतिक क्षेत्र के जिस पायदान पर कदम रखते हुये आगे बढ़ा और मैंने सफलता प्राप्त की, उसमें राह जिन्होंने दिखाई उनका नाम है श्री जुगलकिशोर जैथलिया। वह ज्ञान उन्होंने ही दिया जिसके दम पर मैं हजारों के बीच अपनी अलग पहचान बना सका।

राजस्थान परिषद्, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय, स्वस्तिका, भारतीय जनता पार्टी (पं. बंगाल) आदि संस्थाओं व पार्टी में आपके बताये दिशा-निर्देशों से ही कार्य कर रहा हूँ।

राजस्थान परिषद् द्वारा महाराणा प्रताप की स्मृति में पार्क का नामकरण, सड़क का नामकरण एवं २० फुट ऊँची भव्य प्रतिमा लगाने के कामों में उनके निर्देशन से ही मैंने दिनरात एक करके मूर्ति निर्माण हेतु सरकार एवं उसके प्रतिनिधियों, स्थानीय पार्षद, विधायक सभी से सम्पर्क साधा एवं एक कठिन कार्य पूरा हुआ। कुमारसभा पुस्तकालय में भी आपके आदेश से ही मैं आर्थिक पक्ष को देख रहा हूँ।

पूज्यपिताजी भंवरलालजी मल्लावत के देहावसान (१९७६ ई.) के पश्चात् मेरे संरक्षकों में से एक श्री जुगलजी का मार्गदर्शन व स्नेह आज भी निरन्तर मिल रहा है। कर्मयोगी भंवरलाल मल्लावत स्मृति व्याख्यान माला के आयोजन कोलकाता व डीडवाना (राजस्थान) में तथा भंवरलाल मल्लावत सेवा केन्द्र कोलकाता का कार्य उनकी प्रेरणा से ही चल रहे हैं।

कर्मयोगी श्री जुगलकिशोर जैथलियाजी को अमृत महोत्सव पर हार्दिक बधाई व श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय को इस आयोजन हेतु साधुवाद। प्रभु श्री जैथलियाजी को शतायु करें ताकि वे हमें आगे भी इसी प्रकार मार्गदर्शन करते रहें। ●

सम्पर्क : ए.बी.एस. सिन्डिकेट, ९५बी, चित्तरंजन एवेन्यू, कोलकाता-७३, मो.: ९८३००८८९१०

कार्यकर्त्ताओं को तलाशना एवं तराशना जुगलजी का सहज स्वभाव है

मोहनलाल पारीक

अध्यक्ष: पारीक सभा, कोलकाता

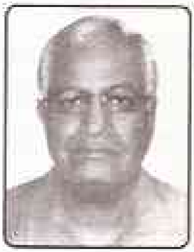

श्री जुगल किशोरजी जैथलिया से मेरा प्रथम परिचय १९७३ ई. में संघ के कार्यकर्त्ता के रूप में ही हुआ। मधुरभाषी एवं आत्मीय व्यवहार। सौम्य, सहज व सरल किन्तु स्पष्ट दृष्टि एवं स्वीकृत कार्य तथा सिद्धान्तों के प्रति हठ। इन्हीं गुणों से आकर्षित होकर मैं क्रमशः उनके घनिष्ठ सम्पर्क में आता गया। संभावित कार्यकर्त्ताओं पर उनकी पैनी दृष्टि रहती थी। वे कार्यकर्त्ताओं को तलासते थे एवं उन्हें तराशते भी थे ताकि वह अच्छा कार्यकर्ता बनकर पारिवारिक जीवन एवं समाज तथा राष्ट्र कार्य में तालमेल बैठा सके। उनका स्वयं का जीवन कार्यकर्त्ताओं के सामने आदर्श के रूप में उपस्थित था। कोई भी वह सरलता से अनुभव कर सकता था कि उनके जीवन में समाज और देश के काम को निजी या पारिवारिक काम से वरीयता थी।

एक घटना इस सम्बन्ध में मैं उल्लेख करना चाहूँगा। जुगलजी आयकर सलाहकार के रूप में वकालत करते थे। स्वाभाविक ही था कि सायंकाल उनके चेम्बर का समय रहता था। वे प्रभात शाखाओं में पदाधिकारी थे। श्री भँवरलालजी मल्लावत पूरे क्षेत्र का कार्य सम्हालते थे। अपनी त्याग-तपस्या के कारण वे हम सभी के श्रद्धेय थे। उन दिनों सायं शाखाओं की स्थिति कुछ गड़बड़ हो रही थी। भँवरजी ने जुगलजी से कहा कि आप सायं शाखायें देखिए। जुगलजी ने अपनी कठिनाई बताई। भँवरजी का कहना था कि संघ कार्य हमने केवल सुविधा से ही करने का तय कर रखा है क्या ? जुगलजी ने कहा, ऐसी तो कोई बात नहीं है। भँवरजी ने कहा कि तब आप सायं शाखाएँ देखने की तैयारी करें - अगले रविवार से ही। मैं जानता हूँ कि जुगलजी ने सभी विरोधों एवं असुविधाओं की अनदेखी कर वकालत करते हुए भी १२-१३ वर्ष तक सायं शाखाओं का दायित्व निभाया एवं अपने चेम्बर का समय रात में

८ से १० बजे तक किया। उनकी नाना प्रकार की पारिवारिक असुविधाओं की भी मुझे जानकारी है। पत्नी एवं सन्तानों की लम्बी बीमारियाँ, वृद्ध माता-पिता की देखभाल एवं इन सबके बीच विविध सामाजिक कार्य एवं रोज का संघ कार्य।

एक दूसरी घटना उल्लेख किये बिना भी मैं अपने को रोक नहीं पा रहा हूँ। १९८२ ई. में आपके होनहार बड़े पुत्र का १६ वर्ष की अल्पायु में ही लम्बी बीमारी के बाद देहान्त हो गया। श्री सुन्दरसिंहजी भंडारी भाजपा के केन्द्रीय प्रभारी थे। बंगाल विधानसभा के चुनाव सामने थे। पदाधिकारियों की राय बनी कि जुगलजी यह चुनाव लड़ें, क्योंकि इसके पहले प्रो. हरिपद भारती वहाँ से विजयी हुए थे अत: कोई लोकप्रिय कार्यकर्त्ता को ही पुन: उतारा जाए। जुगलजी ने अपनी पारिवारिक असुविधायें एवं राजनीति के प्रति अरुचि की बात कही पर भंडारीजी का आदेश हुआ एव दबाव बढ़ा तो न चाहते हुए भी उन्हें हाँ करनी पड़ी। मैं उन सारी परिस्थितियों का स्वयं प्रत्यक्षदर्शी हूँ। उनके परिवार एवं निकट के सभी मित्र इससे असहमत थे पर उनका कहना था कि भंडारीजी की बात को टालना मेरे लिए संभव नहीं है। यद्यपि वे चुनाव तो नहीं जीत सके पर आजतक भाजपा के लिए अविराम कार्यरत हैं। आर्थिक मोर्चे पर भाजपा को पटरी पर बनाए रखने में उनका बहुत बड़ा योगदान है। वे इस समय भाजपा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं।

राजस्थान परिषद, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं उनके अपने गाँव में स्थापित पुस्तकालय के माध्यम से उन्होंने अनेक मील के नए पत्थर अपने परिश्रम एवं दूरदृष्टि से गाड़े हैं जो सर्वविदित है।

मेरे साथ उनकी कई राजनैतिक एवं धार्मिक यात्रायें भी हुई हैं। इन यात्राओं में भी मुझे उनके जीवन एवं व्यवहार को निकट से देखने का सुअवसर मिला। इससे मुझे अपने जीवन को उसी प्रकार जीने की प्रेरणा भी मिली है। उनका कहना है – 'राम जैसे रखे वैसे रहने' की बजाय हम 'राम जैसे रहे वैसे रहें'।

भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे स्वस्थ रहते हुए शतायु हों ताकि नई पीढ़ी को भी उनसे मार्गदर्शन मिलता रहे। ●

सम्पर्क : पारीक एण्ड एसोसियेट्स, १६-बी, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-७०००७१,
मो.: ९८३०२६२७६१

धुन के धनी श्री जैथलिया जी

✍ डॉ. तारा दूगड़

गौर वर्ण हँस मुख सदा, आकृति सुघड़ सुरंग।
अद्‌भुत अपने आप में, है व्यक्तित्व दबंग।।
कुशल प्रवक्ता सादगी, निर्मल नीति निरोग।
धुन के धनी, लेखनी के भी पाया शुभ संयोग।।

एक चिन्तनशील, दायित्वपूर्ण, वात्सल्य एवं आत्मीयता भरे व्यक्तित्व का नाम है - जुगल किशोर जैथलिया। गौरवर्ण, प्रसन्न मुखावृत्ति, ऊँचा कद, भरा हुआ बदन, जिसे देख लोग पहली ही नजर में प्रभावित हो जाते हैं।

सहृदयता, सौहार्द, सेवा, सहयोग, संयम एवं सदुपयोगिता जैथलियाजी के नैसर्गिक गुण हैं। इस प्रकार वे अनेक गुणों के संग्रहालय कहे जा सकते हैं। बचपन में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क ने उनके जीवन में सात्विक संस्कारों का बीज वपन किया जिससे वे आचार निष्ठ बन गये। अनवरत कुछ नया और अच्छा करते रहने की जैथलिया जी की कार्यशैली को देख मुझे अक्सर भगवान महावीर की यह वाणी याद आती है - '*खणं जाणाहि पंडिए*', अर्थात् पंडित वह है जो क्षण को जाने, उसकी नवीनता और उपयोगिता को पहचाने।

राष्ट्रप्रेम के बाद शायद दूसरा नम्बर उनके जीवन में पुस्तक प्रेम का आता है। पुस्तकों का बेजोड़ प्रेम युवावस्था से ही उन्हें पुस्तकालयों की ओर आकर्षित करता रहा है। कई पुस्तकालयों से सक्रिय रूप से संपृक्त जैथलिया जी के ऊर्जस्वित रचनात्मक विचारों ने इन्हें नई दशा एवं दिशा दी है। राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं मातृभाषा राजस्थानी की अहर्निश सेवा में संलग्न जैथलिया जी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति एवं अपने (भारतीय) सामान के उपयोग तथा प्रचार-प्रसार के लिये स्वयं तो सदैव प्रयत्नशील रहते ही हैं दूसरों को भी प्रेरित करते रहते हैं।

कर्तव्य निष्ठा एवं कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण को वे श्रेष्ठजीवन की कुंजी मानते हैं। जीवन के हर मोड़ पर उन्होंने कर्तृत्व से अधिक कर्त्तव्य को अहमियत दी है। समाज में जीवन जीने

के तौर तरीकों में उन्होंने अपनी पारदर्शी छवि निर्मित की है। विपदाओं से जकड़ी अनेक मानसिकताओं को विधायक चिन्तन और स्वस्थ संकल्प देकर समय-समय पर स्फूर्त एवं क्रियाशील बनाया है।

विद्यानुराग, ज्ञान-पिपासा, आतिथ्य-सत्कार गुण-ग्राहकता, प्रेम, वात्सल्य और मृदु व्यवहार ने उनके व्यक्तित्व को भव्यता, तेज़स्विता एवं प्रियता प्रदान की है। जीवन सतत खोज की एक अंत नहीं होने वाली अनजान यात्रा है, इसमें जितने उतार-चढ़ाव, जितने घुमाव आते हैं उतनी ही अनुभूतियां जन्म लेती हैं। अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ावों एवं संघर्षों का सामना करने वाले जैथलिया जी सही अर्थों में अनुभवों के ग्रन्थागार हैं।

प्रगति का अर्थ एक व्यक्ति, एक समाज या एक राष्ट्र की प्रगति ही नहीं होता, प्रगति का वास्तविक अर्थ मानवीय संवेदनाओं का विस्तार होता है। यही मानवीय संवेदना जैथलिया जी के सामाजिक कार्यों का आधार है। आज व्यक्ति आत्म केन्द्रित होता जा रहा है अतः व्यक्तिगत हित के सामने राष्ट्रीय हित संकुचित होता जा रहा है। यह स्थिति चिन्तनीय है। राष्ट्रीय तथा सामाजिक प्रतिबद्धता के प्रति हर नागरिक कैसे सजग रहे, कैसे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहे यह जैथलियाजी के चिन्तन का मूल बिन्दु है। उन्होंने कभी राणा प्रताप तो कभी निराला, कभी श्यामाप्रसाद मुखर्जी तो कभी वीर सावरकर जैसे कर्मठ एवं आदर्श राष्ट्रभक्तों के प्रेरणादायी स्मृति ग्रंथों का प्रकाशन कर आनेवाली पीढ़ी को अनुकरणीय मार्गदर्शन प्रदान किया है। मूल्यहीनता के संकट से आदमी को बचाने के लिये वे यह नहीं मानते कि किसी पत्थर को भगवान या किसी भगवान को धरती पर उतारा जाय बल्कि उनका यह मानना है कि मनुष्य, मनुष्य बन जाये यही इस संकट से मुक्ति का उपाय है। नई-नई रचनात्मक, परिकल्पनाओं को बुनना और फिर उसे साकार करने में जुट जाना उनका स्वभाव है। कर्मयोग पर आधारित गांधीजी के ये वाक्य उनकी विचारधारा से मेल खाते हैं - 'जब कोई दूसरा करेगा तब हम करेंगे, यह काम न करने का बहाना है। हम उचित समझते हैं इसलिये करें, दूसरा जब उचित समझेगा तब करेगा- यही कर्म का रास्ता है।' कई सम्मानों में से एक 'कर्मयोगी सम्मान' से सम्मानित जैथलिया जी ने न जाने कितने ही कर्मयोगियों को तैयार किया है।

कोलकाता महानगर की अनेक सामाजिक सांस्कृतिक, साहित्यिक संस्थाओं से अभिन्न रूप से जुड़े जैथलियाजी नये-नये एवं अधिक से अधिक कार्यकर्त्ताओं को जोड़ना भी बखूबी जानते हैं। आज से तकरीबन १५-२० वर्षों पूर्व जब मैं यदा-कदा सभा संस्थाओं या गोष्ठियों में जाती तो मेरी उपस्थिति पर वे इतना आशीर्वाद एवं ढेर सारा श्रेय मेरी झोली में डाल देते कि मैं घर-गृहस्थी के माहौल में रहते हुए अकारण इतना स्नेह, इतनी आत्मीयता पाकर गद्गद् हो उठती और अगले कार्यक्रम में समय से पहुँचने के लिये सचेष्ट हो जाती। इस प्रकार

जैथलियाजी के वात्सल्य एवं प्रेरणा ने मेरे सामाजिक जीवन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। विशाल हृदय, मानवीय संवेदनाओं से युक्त सहज-सरल व्यवहार के धनी जैथलिया जी अपने आप में एक सशक्त, सक्षम, अनुकरणीय व्यक्तित्व हैं।

प्रेरणा की साँस भर देना थकन में,
चरण मंजिल से कहीं ना रूठ जाएँ।
सींचते रहना नयी हर पौध को तुम,
पल्लवों, फूलों, फलों से लहलहाएँ।

उनके कर्मयोगी जीवन के अमृत अभिनन्दन पर अपने हृदय की अशेष श्रद्धा समर्पित करते हुए ईश्वर से यही प्रार्थना करना चाहूँगी कि वे इसी प्रकार नयी पौध को सींच-सींच कर पुष्पित पल्लवित कर भारत माँ की सेवा करते रहें। ●

सम्पर्क : नीलकण्ठ, २६बी, कैमक स्ट्रीट, ४ तल्ला, कोलकाता-१६, मो.: ९८३०४०१२१२

वामन नहीं विराट

✍ आचार्य सोहनलाल रामरंग

मेरे कलकत्ता प्रवास में श्री अरुणकुमारजी चूड़ीवाल के निवास पर वासंती नवरात्र में 'विभीषण गीता' पर नवदिवसीय प्रवचन के दौरान श्री जुगलकिशोरजी जैथलिया से प्रथम बार कोई एक दशक पूर्व साक्षात्कार हुआ। उसके पूर्व आचार्यवर श्री विष्णुकान्तजी शास्त्री से उनकी साहित्यिक एवं राजनैतिक गतिशीलता के बारे में सुना था। प्रत्यक्ष मिलने के बाद क्रमश: परिचय प्रगाढ़ होता गया। उन्होंने कुमारसभा द्वारा प्रकाशित साहित्य भी मुझे भिजवाया। फिर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय में श्रद्धेय विष्णुकान्तजी शास्त्री के प्रवचन में एवं 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' के कार्यक्रम में भी जुगलजी से मिलना हुआ। मेरी पुस्तक 'नवरंग मानमर्दन' के प्रकाशनार्थ उन्होंने श्रीमंत पुरुषोत्तमदासजी चितलांगिया से कागज की व्यवस्था कराई। एक मन एक प्राण होते चले गए। दूरभाष पर कई बार वार्ताएं हुई। अंतर के भावों की साम्यता ने दिल्ली-कोलकाता की दूरी मिटा दी।

कुछ दिन पूर्व जब आपके अमृत महोत्सव का पत्रक मिला तो इन सुगौरवर्णीय-समुन्नत ललाट और उसी प्रकार सुगौर-धर्मीय विराट हृदय के स्वामी के प्रति मन-मस्तिष्क में संचित भावनाओं का अमृत कलश छलक उठा। लेखनी अनायास ही गतिमय हो गई और फिर 'क्या भूलूं क्या याद करूँ' की स्थिति चित्र का मंथन करने पर जैसे कटिबद्ध हो गई। क्या कहूं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जिन्हें 'त्वदीयाय कार्याय बद्धाकटीयम्' की दीक्षा मिली हो, वे अधर्म को निर्णायक पराजय देकर कुरुक्षेत्र को वस्तुत: धर्मक्षेत्र में परिवर्तित कराने के लिये ही संकल्पित रहते हैं। श्री जुगल किशोरजी इसी कोटि की विभूति हैं, यह उनके समस्त कार्यों से प्रकट है। आपके सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य के लिए अपने परमाराध्य प्रभु श्री सीतारामजी से विनम्र प्रार्थी हूं। ●

सम्पर्क : ११६७, कूचा पातीराम, दिल्ली - ११०००६, मो.: ०९३१२६६५८५५

एक अनुकरणीय विरल व्यक्तित्व

✍ महावीर बजाज
मंत्री: श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

अपने जीवन में मैं जिन चार व्यक्तियों से सर्वाधिक प्रभावित रहा हूँ, वे हैं – श्री बालाप्रसाद जोशी, आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, डॉ. सुजित धर एवं श्री जुगलकिशोर जैथलिया। इन विभूतियों के सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं संबल से मुझे जीवन का समुचित पाथेय प्राप्त हुआ है। इन सबमें भी मुझे सर्वाधिक नैकट्य एवं दीर्घ सान्निध्य श्रद्धेय जैथलियाजी का प्राप्त हुआ है। मैं उन्हें आदर से 'काकाजी' कहकर संबोधित करता हूँ। मैं भाग्यशाली हूँ कि हम दोनों एक ही गाँव (छोटीखाटू, राजस्थान) के हैं अत: बचपन से मुझे उनकी संगति सहज ही सुलभ हुई है। उनकी कार्यशैली, समर्पित जीवन-दृष्टि तथा अनुशासन-प्रियता ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। सामाजिक क्षेत्र में काम करने की सम्यक् दिशा भी मुझे उन्हीं के द्वारा प्राप्त हुई है। कबीर का एक दोहा है –

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सम्हारि दे, बाहर-बाहर चोट।।

जैसे कुम्हार घड़ा बनाते समय कहीं कोमल स्पर्श तो कहीं कठोर चोट प्रदान करता है वैसे ही सच्चा गुरु अपने शिष्य को तैयार करता है। आदरणीय जुगलजी ने मुझे इसी रूप में कहीं दुलार से, कहीं फटकार से तैयार किया है – इस अर्थ में वे मेरे गुरु ही हैं।

कुछ दिनों पहले की बात है कि काकाजी के एक मित्र ने उनसे कहा 'जुगलजी ! आपको इन सामाजिक कार्यों के सम्पादन में मंच एवं माला के अतिरिक्त मिलता ही क्या है'। काकाजी ने तो हँस कर टाल दिया किन्तु मैं सोचता रहा की क्या मालाएँ यों ही प्राप्त होती है? सम्मान प्राप्ति के लिए समाज-हित में कार्य करना होता है, स्वयं को समर्पित करना होता है, किसी क्षेत्र-विशेष में दक्षता प्राप्त करनी होती है। कई लोगों को तो अपना पूरा जीवन खपा देने पर भी मालाएँ नसीब नहीं होती। काकाजी ने बड़े-बड़े कार्यों को सफलता पूर्वक सम्पादित कर अपने जीवन की लम्बी साधना में अनेक गुणों को विकसित किया है

जिसके फलस्वरूप वे आज इस सम्मान के अधिकारी बन पाए हैं। शास्त्रीजी की ये पंक्तियाँ उनके जीवन पर खरी उतरती हैं –

बड़ा काम कैसे होता है ? पूछा मेरे मन ने
बड़ा लक्ष्य हो, बड़ी तपस्या, बड़ा हृदय मृदुवाणी।
किन्तु अहं छोटा हो, जिसे सहज मिलें सहयोगी
दोष हमारा, श्रेय राम का हो प्रवृत्ति कल्याणी।।

उनके साथ रहते हुए मैंने यह लक्षित किया है कि वे जिस कार्य को हाथ में लेते हैं उसे समर्पित भाव से, निष्ठा के साथ सम्पन्न करते हैं। काम जबतक पूरा नहीं हो जाता, वे अशिथिल भाव से सक्रिय रहते हैं, यह अनूठा है। उनका मानना है कि एक बार लक्ष्य तय हो जाने पर उसे पूर्ण करके ही दम लेना चाहिए। शायद यह गुण उनमें संघ-शाखा में इस ध्येय गीत से मिला होगा जिसे वे बातचीत में कभी-कभी उल्लेख भी किया करते हैं –

लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा
लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा ?

उनकी खासियत है कि वे कार्यों के सम्पादन में अपने से छोटी उम्र एवं कम गुणवत्ता वाले कार्यकर्ताओं की सराहना कर उन्हें यह विश्वास दिला देते हैं कि 'तुम यह कार्य अच्छी तरह से कर सकते हो' और बाद में कार्य पूर्ण होने पर कार्य का सारा श्रेय उसे देकर आगे बढ़ने हेतु वे प्रेरित भी करते हैं। उनका सदैव यह भाव रहता है कि –

हम बड़े बन जायें इसकी है नहीं इच्छा जरा भी
किन्तु यह तय है कि हम तुमको बड़ा कर जाएंगे।

सामान्य बातचीत में जीवन जीने का वे समुचित पाथेय भी देते रहते हैं। उनकी स्पष्ट धारणा है कि जो चुनौतियों का योग्य प्रत्युत्तर देते हैं, वे सफल होते हैं और जो चुनौतियाँ का समुचित उत्तर नहीं दे पाते, उन्हें पीछे हटना पड़ता है। इसलिये भगवान ने जो सामर्थ्य हमको दिया है उससे समाज का कार्य करें एवं आगे बढ़ें। दुनिया में कोई स्थिर नहीं रह सकता है अतः आगे बढ़ना ही जीवन है। बच्चन की ये पंक्तियाँ वे प्रायः सुनाते हैं :-

जो न करेगा सीना आगे, पीठ उसे खींचेगी पीछे
जो ऊपर को उठ न सकेगा, उसको जाना होगा नीचे
अस्थिर दुनिया में थिर होकर कोई वस्तु नहीं रहती है
हे मन के अंगार! अगर तुम लौ न बनोगे, क्षार बनोगे।

लौ बनने के लिए देश एवं समाज के प्रति अपने स्वाभिमान को जगाना आवश्यक है और यह तभी संभव है जब हम सत्संग एवं स्वाध्याय से अपने को पुष्ट करेंगे। अपनी संस्कृति एवं इतिहास के बारे में सटीक जानकारी होनी चाहिए। कुछ भी अच्छा एवं नया पढ़ने पर उसका सार-संक्षेप भी वे समझाते हैं। उनके विचार-मंथन से निकले कई सूत्र मुझे सदैव प्रेरणा देते हैं। उन्होंने मुझे बताया कि 'परम्परा विहीन प्रगति हमारी समृद्धि नहीं हो सकती'; 'महाप्रतापी सूर्य भी जब पश्चिम की ओर दौड़ता है तो उसे भी अस्त होना पड़ता है'; 'अपनी आवश्यकताओं को यथासंभव सीमित रखना चाहिए ताकि लम्बे समय तक ईमानदारी पूर्वक समाज-कार्य किया जा सके'; 'मतभेद से मनभेद नहीं होना चाहिए- यह सामाजिक कार्य के लिए क्षतिकारक होता है'; 'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि'; 'किसी की वाणी का प्रभाव तभी होता है जब उसके जीवन में कार्यों के सम्पादन में किए त्याग से उत्पन्न तपस्या होती है'; किसी महत् कार्य के लिए 'जाहि विधि रहे राम, ताहि विधि रहिए' का संकल्प इत्यादि-इत्यादि। उनके सत्संग से प्राप्त ये बहुमूल्य विचार सूत्र मेरे जीवन का पाथेय है।

मैं जब १९७१ ई. में राजस्थान से विज्ञान (गणित) में स्नातक की डिग्री प्राप्त कर आगे की पढ़ाई हेतु अपने भाइयों की तरह कोलकाता आया, परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं; अतः नौकरी करनी पड़ी। मुझे लगा कि विज्ञान का छात्र होने के नाते वाणिज्य (एकाउन्ट्स) की नौकरी कैसे कर पाऊँगा। काकाजी के सान्निध्य में मैंने आगे की तैयारी प्रारम्भ की। मुझे खुशी है कि उनके द्वारा दी गई शिक्षा के कारण आज मैं विज्ञान का छात्र होते हुए एक कम्पनी में एकाउन्ट्स का वरिष्ठ अधिकारी हूँ एवं पुस्तकालय के माध्यम से थोड़ी साहित्य सेवा भी कर लेता हूँ। संघ कार्य के प्रति उनकी अद्‌भुत निष्ठा है। अपने जीवन की एक विशेष घटना जिसका उल्लेख अपने आत्मकथ्य में करते हुए वे कहते हैं कि केवल सुविधा में ही नहीं, असुविधा में भी संघ-कार्य करना चाहिए। गांधी जन्मशताब्दी के समय पढ़ी एक कहानी से प्रेरणा लेने का उल्लेख करते हुए वे बताते हैं कि '१०० रुपये का चश्मा बनाने के लिए अगर फ्रेम ४० रुपये की है तो काँच ६० के लगाने होंगे, तब मेरे मन में यह भाव जगा कि मेरा गाँव (यानी फ्रेम) छोटा है अतः इसे बड़ा बनाने के लिए मुझे पुस्तकालय में माध्यम से वरिष्ठ साहित्यकारों, राजनेताओं एवं चिन्तकों को यहाँ लाना होगा।' उनके सत्प्रयासों एवं सक्रियता के कारण ही सर्वश्री हजारी प्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, जैनेन्द्रजी, कन्हैयालाल सेठिया, विष्णुकान्त शास्त्री, नरेन्द्र कोहली, मोहनजी भागवत जैसे महानुभाव छोटीखाटू पधारे जिनके फलस्वरूप गाँव का नाम जिले में ही नहीं राजस्थान में भी एक विशेष स्थान रखता है।

उन्होंने युवावस्था में छोटीखाटू में पुस्तकालय की स्थापना से लेकर भवन निर्माण एवं संचालन में स्थानीय सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से मिली चुनौतियों को अपने मित्रमण्डली के

सहयोग से निपटाया एवं बिना उनसे आर्थिक सहयोग लिए कार्य को सम्पादित किया। दानवीर श्री सोहनलाल दूगड़ जब पुस्तकालय भवन को देखने आए तो भवन में किसी दानदाता की पट्टी न दिखने पर आश्चर्य तो प्रकट किया ही बल्कि इस अभूतपूर्व मिसाल कायम करने पर इनकी प्रशंसा की। चुनौतियों को झेलने का शायद बचपन से ही स्वभाव रहा हो इसलिए १९७३ ई. में श्री नेवटियाजी से कुमारसभा का दायित्व लेने का आग्रह प्रकट किया। हम सभी जानते हैं कि कुमारसभा को उस माली हालत से उबारकर आज सक्षम संस्थान के रूप में खड़ा करने में जैथलिया जी का महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान रहा है। केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, चिन्तन एवं विचार की दृष्टि से भी सक्षम बनाने हेतु विवेकानन्द सेवा सम्मान, डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान, मातृशक्ति सम्मान, राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान एवं समय-समय पर विभिन्न विषयों पर आयोजन करने-कराने में आपकी विशेष प्रेरणा रही है। छोटीखाटू में भी पं.दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में साहित्य सम्मान एवं कन्हैयालाल सेठिया की स्मृति में मायड़भाषा सम्मान तथा बड़ाबाजार लाइब्रेरी के भाईजी हनुमान प्रसाद पोद्दार राष्ट्र सेवा सम्मान को प्रारंभ करना आपकी सोच का ही परिणाम है। वे बार-बार कहते-रहते हैं कि जिसकी जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। अत: हमें अपनी रचनात्मक दृष्टि विकसित करनी चाहिए एवं उस हेतु सतत प्रयत्नशील भी रहना चाहिए।

एक और सूत्र की चर्चा करना चाहूंगा – वह है 'अर्थ शुचिता' जिसके बारे में वे स्वयं तो सचेष्ट रहते हैं, दूसरों को भी सचेत रहने हेतु प्रेरित करते रहते हैं। वे कहते हैं कि अर्थ का अभाव एवं प्रभाव दोनों ही खतरनाक है। ये दोनों ही व्यक्ति को अपने आदर्श से डिगा देते हैं। ईमानदारी से आवश्यक आर्थिक उपार्जन तो जरूरी है किन्तु उसके पीछे अपने जीवन की सारी शक्ति क्षमता लगा देना उचित नहीं है। अपने द्वारा अर्जित की गई राशि से ही आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए अन्यथा वह दूसरों की नजर में तो गिरता ही है, अपना स्वाभिमान-सम्मान भी खो देता है। कवि की पंक्तियाँ हैं –

व्यर्थ करना है खुशामद रास्तों की
पाँव अपने काम आते हैं सफर में
वह न ईश्वर के उठाए भी उठेगा
गिर गया जो स्वयं ही अपनी नजर में।

उन्होंने एकबार मुझे घटना बताई कि आचार्य शास्त्री के साथ वे शास्त्रीजी के गुरुजी के दर्शन हेतु गए। शास्त्रीजी ने वहाँ गुरुजी से एक शंका निवारण हेतु प्रश्न किया कि गुरुजी, आपने कल यज्ञ के बारे में बहुत अच्छा विवेचन किया किन्तु आज के इस भौतिकतावादी कलियुग में यह कैसे सम्भव है ? गुरुजी ने कहा कि आज भी यह संभव है। उन्होंने समझाया

कि तुम मुझसे मिलने आए तो टैक्सी से आने पर ५०/- खर्च हो सकता था और बस से आने पर ४/-से काम चल सकता था। तो यह बचे हुए ४६/- का उपयोग समाजकार्य में करना ही आज का यज्ञ है। काकाजी बताते हैं कि दिखावा न करते हुए, सीमित आवश्यताओं का उपयोग करते हुए जीवन जीओ और समाज कार्यों को बेटी मानकर उसके खर्च का हिस्सा समाजहित में लगाओ। मैंने प्रत्यक्ष देखा है कि काकाजी अत्यन्त अपरिहार्य स्थिति में ही टैक्सी का व्यवहार करते हैं एवं समाज कार्यों में अर्थ का समुचित उपयोग भी करते हैं तथा मुझे ही नहीं, अन्यों को भी इस हेतु प्रेरित करते हैं। अर्थ शुचिता के बारे में बताई एक बात का और उल्लेख करना चाहूँगा। वे कहते हैं कि मैं ईमानदार हूँ- यह कहना पर्याप्त नहीं है, वरन् लोग कहें कि अमुक आदमी ईमानदार है। इसलिए संस्थाओं का कार्य करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके खातों का लेखा परीक्षक (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट) के द्वारा जाँच हो। वे इसे ईमानदारी के साथ निभाते भी हैं।

ऐसे अनेक प्रसंग हैं जिसके द्वारा वे हम सबको निभाने की प्रेरणा देते रहते हैं एवं कवि अरुण कमल की निम्न पंक्तियों को स्वयं के बारे में उद्धृत करने में कोई संकोच नहीं करते हैं कि -

अपना क्या है इस जीवन में, सब कुछ लिया उधार।
सारा लोहा उन लोगों का, अपनी केवल धार।।

१९८२ ई. में ज्येष्ठ पुत्र गोपाल की असमय मृत्यु, १९८७ ई. में धर्मपत्नी श्रीमती मैना देवी एवं पूज्य पिताजी का देहावसान, कनिष्ठ पुत्र गोविन्द की लम्बी अस्वस्थता इत्यादि विषम परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने मेरे एकमात्र पुत्र मनीष की अक्टूबर १९९३ ई. में असामयिक मृत्यु से उपजे घोर मानसिक संकट में एक पिता, अभिभावक एवं मार्गदर्शक के रूप में ढाढ़स बँधाते हुए मुझे इस स्थिति से न केवल उबारा वरन् विविध कार्यों में पुनः जुटने की प्रेरणा भी दी। मेरे निराश जीवन में उन्होंने आशा और संकल्प का जो दीप जलाया, वह मेरे लिए अविस्मरणीय एवं प्रेरक है। पं. नरेन्द्र मिश्र ने ठीक ही कहा है कि वे परोपकार के पुरोधा, पुरुषार्थ के प्रवक्ता एवं प्रज्ञा के पर्याय हैं। अमृत महोत्सव पर काकाजी को मैं अपनी प्रणति निवेदन करता हुआ उनके स्वस्थ एवं सक्रिय दीर्घ जीवन की प्रभु से प्रार्थना करता हूँ। ●

सम्पर्क : ४२, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट, कोलकाता-७००००७, मो.: ९८३००६३०५२